s are repea d ve
l after the la swa
n interferes mar
anometric a elec
teers. Pres res
esophagus. wo s
fferently dep ding
swallows oc r in
llowed by no hal
wo deglutitio inc
he proximal opha
s stopped by he d
ressure wave eli
gressing or mul
istaltic cont ctio
glutition comlex
taken after te fi
er disturb th firs
mplex is ofte sir
ntraction facitat
riod. The elctro
and distal espha
triated-muscl sp
f all spiking ctiv
lso inhibits th sp
smooth musce sp
allowing is unable
events its dial

T. & Vantrappen,
T., Vantrappe, C
ke J.: Amer. J.
Salducci, J. & R

d very rap
swallow.
man with
electromy
ires were
wo succes
ding upon
ir in rapi
hal perista
increase
ophagus.
he deglutit
elicited b
multaneou
action of th
mlex often b
e first per
th first degl
te simultane
acitates the
elctromyogr
esphagus.
scl spikes,
g ctivity eit
th spiking
sce spikes a
uable to inh
dital propaga

ppn, G.: Ar
ppa, G., Val
r. J. Digest.
J. & Roman,

॥ ओ३म् ॥

संस्कृत-भाषा-प्रथमं पुस्तकम् ॥

परीक्षितगढ़ (ज़ि॰ मेरठ) निवासि-स्वामि-
तुलसीराम-शर्म-विरचितम् ॥

निर्मात्रा तुलसीराम स्वामिना स्वप्रबन्धेन स्वकीये
स्वामियन्त्रालये मुद्रितम् प्रकाशितञ्च ॥

मेरठ

संवत् १९५३ ता॰ २१-२-९७

"ऋग्वादिभाष्यभूमिकेन्दूपरागे द्वितीयोंऽशः"

ऐसा और इतना संक्षेपसे अब तक कोई नहीं छपा ! शब्दप्रमाण द्वारा "मन्त्रब्राह्मण दोनों वेद हैं वा क्या" ? इत्यादिका निर्णय ७१ प्रमाणोंसे किया है। इसमें अथर्ववेद, तैत्तिरीय, शतपथब्रा॰, साङ्ख्य, आपस्तम्ब, प्रातिशाख्य, कात्यायन, बौधायन, परिशिष्ट, मीमांसा, मनुस्मृति, ऐतरेयब्रा॰, अष्टाध्यायी, महाभाष्य, कौशिकसूत्र, अमरकोश, लघुशब्देन्दुशेखर, निरुक्तभाष्य, ऋग्वेद, यजुर्वेद, वेदान्तसूत्र, न्यायदर्शन, तैत्तिरीयआरण्यक, पिङ्गलसूत्र, चरणव्यूह, न्यायविस्तर इन २७ ग्रन्थोंसे बहुत से प्रमाण सङ्ग्रह करके (मैंने) तुलसीराम स्वामीने बनाया -)॥

षष्ठ वार २०००

मूल्य)॥

भूमिका ॥

मैंने इस पुस्तकको इसलिये लिखा है कि भारतके ऋषि महर्षियोंने यद्यपि पुराने समयके अनुसार संस्कृतभाषाके उत्तम २ ग्रन्थ रचे, परन्तु समयके हेर फेरसे आज कलके समयमें नई शिक्षाप्रणाली के समान सुगम प्रतीत नहीं होते। हां, पूर्ण परिश्रम करने पर तो पूर्ण फलदायक हैं, परन्तु जिस प्रकार आज कल छोटे २ विद्यार्थी "प्राइमर" पढ़ते २ ही परस्पर "अंगरेज़ी" शब्द बोल २ कर प्रतिदिन उत्साहको बढ़ाते हैं, जब तक इसी प्रकार हमारी देववाणी की पुस्तकें प्रचरित न की जायें तब तक देववाणीका जीर्णोद्धार दुर्घट है।

द्वितीय कारण पुस्तक लिखनेका यह भी है कि आज कल प्रायः शिक्षित पुरुष संस्कृतमें रुचि करते हैं परन्तु न तो उनको कोई अध्यापक ही सुलभतासे मिलता न अब तक संस्कृतमें कोई ऐसी पुस्तक निर्म्मित हुई कि जिससे विना अध्यापकके स्वयम् कुछ सीख सकें। उनको ये पुस्तकें स्वयम् संस्कृत सिखावेंगी॥

पांच वारकी छपी ६००० प्रथम पुस्तकोंके शीघ्र चुक जानेसे छठी वार छपी है इससे मैंने अपना श्रम सफल समझा। द्वितीय भाग ३ वार और तृतीय भाग दो वार छप चुके हैं। चतुर्थ भाग छप रहा है॥

तुलसीराम स्वामी

ओ३म्

संस्कृत-भाषा-प्रथमं पुस्तकम् ॥

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ अं अः* ॥

व्यञ्जन

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण ।

त थ द ध न । प फ ब भ म । य र ल व ।

श ष स ह ॥

बारह अक्षरी

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ।

इसी प्रकार, ख खा खि खी खु खू खे खै खो इत्यादि जानो ॥

ज के नीचे बिन्दी लगानेसे ज़ होता है। ऐसे ही ख़ क़ ग़ ड़ ढ़ फ़ जानो ॥

चार । भर । अब । तब । जब । हम । तुम । वह । केवल । पाठक । पूजक । शोभन । संवत् । बैठक । शोभाराम । जयदेव । अंगरेज़ ॥ आओ । जाओ । बैठो । चलो । ठहरो । खाओ ॥ काम कर । जल भर । अब घर जा । तब मत पढ़ना । जब हम जावेंगे । तुम कहां जाते हो । वह नहीं जाता । तुम केवल बैठे रहते हो । अड़तालीसवां संवत् है । अपने पाठकसे पढ़ो ॥

संयुक्त अक्षर—उदाहरण सहित ॥

न+त+र=न्त्र, यन्त्रालय छापेख़ानेका नाम है। क+र=क्र, कालचक्रका हेर फेर है। ज+य=ज्य, अंगरेज़का राज्य है। स+त=स्त, हमारी पुस्तक लाओ। न+द=न्द, मन्दिरमें बैठो । ण+ड=ण्ड, पण्डितका कहना मानो । द+द=द्द, यह रद्दी काग़ज़ है । द+य=द्य, र+थ=र्थ, विद्यार्थी पढ़ते हैं। र+व=र्व, गर्व मत करो । व+य=व्य, ख+य=ख्य, व्याख्यान सुननेको चलो । स+क=स्क, तस्कर चोरका नाम है । ग+र=ग्र, यह छोटा ग्राम है । न+त=न्त, सबका अन्त है।

---

*यद्यपि स्वरोंमें अ इ उ ऋ ऌ ह्रस्व, और आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ दीर्घ, तथा अ३ इ३ उ३ ऋ३ ऌ३ ए३ ऐ३ ओ३ औ३ प्लुत हैं इस कारण ९ स्वरोंके २२ भेद हैं तथा "अं, अः" ये दो स्वर नहीं किन्तु अ के साथ अनुस्वार और विसर्ग का स्वरूप है परन्तु सम्प्रति भाषामें ऐसा ही प्रचार होरहा है ॥

प र–प्र, प्रथम पुस्तक पढ़ो। द ऋ–दृ, दृढ़का अर्थ मज़बूत है। र ण–र्ण, कर्ण कानको कहते हैं। श व–श्व, श र–श्र, द ध–द्ध, ईश्वरमें श्रद्धा करो। द व–द्व, यह द्वितीय पुस्तक है। त स–त्स, कुत्सा बुराई कहाती है। र घ–र्घ, अर्घ हाथ धोनेकेलिये जलको कहते हैं। त ऋ–तृ, तृतीय पुस्तक पढ़। म ब–म्ब, च छ–च्छ, कम्बल अच्छा है। प न–प्न, स व–स्व, स्वप्न देखता था। क ऋ–कृ, ष ण–ष्ण, कृष्ण बड़े योगी थे। म म–म्म, गुम्मट ऊंची है। त व–त्व, त्वम् का अर्थ तू है। क य–क्य, क्या करते हो। ष ठ–ष्ठ, षष्ठ छठेका नाम है। कुष्ठ रोगका नाम है। ष ट–ष्ट, दुष्ट बुरेको कहते हैं। ग ऋ–गृ, गृह को जाओ। त त–त्त, मत्त पागलको कहते हैं। श य–श्य, श्याम कम्बल है। ब द–ब्द, शब्द सुनो। क त–क्त, रक्त बहता है। भ य–भ्य, पढ़नेका अभ्यास करो। स य–स्य, त य–त्य, आलस्य त्यागदो। ल द–ल्द, जल्दी मत करो। क स–क्स, ङ क–ङ्क, रुक्सका कङ्कण है। न द र–न्द्र, र य य–र्य्य, इन्द्र सूर्य्यको कहते हैं। स त र–स्त्र, शास्त्रके अनुसार चलो। र ध व–र्ध्व, ग न–ग्न, अग्निशिखा सदा ऊर्ध्वगामिनी रहती है। क ष–क्ष, क्षमा करो। ज ञ–ज्ञ, ज्ञानसे सुख मिलता है॥

संख्या एक से सौ तक॥

१	११	२१	३१	४१	५१	६१	७१	८१	९१
२	१२	२२	३२	४२	५२	६२	७२	८२	९२
३	१३	२३	३३	४३	५३	६३	७३	८३	९३
४	१४	२४	३४	४४	५४	६४	७४	८४	९४
५	१५	२५	३५	४५	५५	६५	७५	८५	९५
६	१६	२६	३६	४६	५६	६६	७६	८६	९६
७	१७	२७	३७	४७	५७	६७	७७	८७	९७
८	१८	२८	३८	४८	५८	६८	७८	८८	९८
९	१९	२९	३९	४९	५९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०	२०	३०	४०	५०	६०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

प्रथमः पाठः १॥

सः—वह	त्वम्—तू	अहम्—मैं
तौ—वे दोनों	युवाम्—तुम दोनों	आवाम्—हम दोनों
ते—वे (सब)	यूयम्—तुम (सब)	वयम्—हम (सब)

गम् (लृ) (धातु)—जाना

सः गच्छति—वह जाता है
तौ गच्छतः—वे दोनों जाते हैं
ते गच्छन्ति—वे (सब*) जाते हैं
त्वम् गच्छसि—तू जाता है
युवाम् गच्छथः—तुम दोनों जाते हो
यूयम् गच्छथ—तुम (सब) जाते हो
अहम् गच्छामि—मैं जाता हूं
आवाम् गच्छावः—हम दोनों जाते हैं
वयम् गच्छामः—हम (सब) जाते हैं

आगम (धातु) आना

सः आगच्छति—वह आता है
तौ आगच्छतः—वे दोनों आते हैं
ते आगच्छन्ति— वे (सब) आते हैं
त्वम् आगच्छसि—तू आता है
युवाम् आगच्छथः—तुम दोनों आते हो
यूयम् आगच्छथ—तुम (सब) आते हो
अहम् आगच्छामि—मैं आता हूं
आवाम् आगच्छावः—हम दोनों आते हैं
वयम् आगच्छामः—हम (सब) आते हैं

द्वितीयः पाठः २॥

(नीचे लिखे वाक्योंका संस्कृत बनाओ)

हम जाते हैं। वे जाते हैं। तुम जाते हो। वह आता है। तू जाता है। हम दोनों आते हैं। तुम दोनों जाते हो। वे दोनों जाते हैं। देवदत्त आता है। शोभाराम आता है। विष्णुदत्त जाता है॥

तृतीयः पाठः ३॥

तिष्ठति†—ठहरता है।	पश्यति—देखता है।
पठति—पढ़ता है।	धावति—दौड़ता है।
क्रीडति—खेलता है।	लिखति—लिखता है।

(नीचे लिखे वाक्योंका संस्कृत बनाओ)

मैं ठहरता हूं। वे पढ़ते हैं। तुम खेलते हो। हम देखते हैं। वह दौड़ता है। तू लिखता है। वे दोनों पढ़ते हैं। तुम दोनों खेलते हो। हम दोनों

*"सब" कहनेसे बहुवचन समझो अर्थात् दो से अधिकका अर्थ समझो।
† ति, तः, न्ति, सि, थः, थ, ामि, ावः, ामः, ये नौ प्रत्यय लगाकर "पठ" आ... नौ नौ २ रूप "गच्छति" आदि के समान बना लो॥

लिखते हैं। वे दोनों जाते हैं। विष्णुमित्र लिखता है। यज्ञदत्त पढ़ता है। शोभाराम खेलता है॥

चतुर्थः पाठः ४॥

गृह शब्दकी सात विभक्तियां—

१	गृहम्= घर गृहे= दोनों घर गृहाणि= (सब) घर	५	गृहात्—घरसे गृहाभ्याम्—दोनों घरोंसे गृहेभ्यः(सब) घरोंसे
२	गृहम्= घरको गृहे= दोनों घरोंको गृहाणि= (सब) घरोंको	६	गृहस्य—घरका, के, की गृहयोः—दोनों घरोंका, के, की गृहाणाम्—(सब) घरोंका, के, की
३	गृहेण=घरसे, के साथ गृहाभ्याम्=दोनों घरोंसे, के साथ गृहैः=(सब) घरोंसे, के साथ	७	गृहे—घरमें, पै, पर गृहयोः—दोनों घरोंमें, पै, पर गृहेषु—(सब) घरोंमें, पै, पर
४	गृहाय=घरके लिये गृहाभ्याम्=दोनों घरोंके लिये गृहेभ्यः—(सब) घरोंके लिये		इसी प्रकार मन्दिर, पुस्तक, धन, वन, पुष्प, फल, स्थान आदि शब्दोंकी विभक्तियां जानो॥

(संस्कृत बनाओ)

तुम घरको जाते हो। हम मन्दिरसे आते हैं। तुम घरसे आते हो। वह घरकेलिये दौड़ता है। वे पुस्तकको लिखते हैं। वह पुस्तक के साथ खेलता है। हम मन्दिरसे जाते हैं। तुम मन्दिरमें पढ़ते हो। वे दोनों पुस्तक को लिखते हैं। तुम दोनों घरकेलिये दौड़ते हो। हम (सब) मन्दिरसे आते हैं। वे (सब) पुस्तकोंको पढ़ते हैं। वह धनसे खेलता है। हम वनमें पुष्पों को देखते हैं। यज्ञदत्त फलोंकेलिये दौड़ता है॥

पञ्चमः पाठः ५॥

न=नहीं। सुष्ठु=अच्छे। वरम्=अच्छे। नितान्तम्=बिल्कुल। त्वरया=जल्दीसे॥

सः न पठति=वह नहीं पढ़ता। ते त्वरया धावन्ति=वे जल्दीसे दौड़ते हैं। यूयम् सुष्ठु पठथ=तुम (सब) अच्छे पढ़ते हो। वयम् नितान्तम् न क्रीडामः=हम बिल्कुल नहीं खेलते। सः त्वरया पठति=वह जल्दीसे पढ़ता है। ते वरम् लिखन्ति=वे अच्छे लिखते हैं। यूयम् त्वरया गच्छथ=तुम जल्दीसे जाते हो। वयम् त्वरया न धावामः=हम जल्दीसे नहीं दौ[illegible] तुम दोनों घरमें नहीं पढ़ते॥

षष्ठः पाठः ६

कः=(पुल्लिङ्ग) कौन । का=(स्त्रीलिङ्ग) कौन । किम्=(नपुंसक) क्या । अस्ति=है । भवति=है । ददाति=देता है, देती है ॥

कः गच्छति=कौन जाता है । का गच्छति=कौन जाती है । विष्णुमित्रः किम् ददाति=विष्णुमित्र क्या देता है । सः कः अस्ति=वह कौन है । यशोदा का भवति=यशोदा कौन है । त्वम् कः=तू कौन ॥

(नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत बनाओ)

विष्णुशर्मा क्या पढ़ता है । रुक्मिणी क्या देती है । मैं क्या पढ़ता हूं । तुम क्या लिखते हो । वह कौन दौड़ता है । मैं क्या लिखता हूं । कौन नहीं पढ़ता । घरसे कौन आता है । मन्दिरमें कौन पढ़ता है । घरमें कौन दौड़ता है । कौन अच्छा लिखता है । कौन नहीं लिखता । कौन घरसे नहीं आता । धर्मदत्त क्या पढ़ता है । विष्णुमित्र क्या लिखता है ॥

सप्तमः पाठः ७ ॥

कुत्र=कहां । तत्र=वहां । अत्र=यहां । उपरि=ऊपर । नीचैः=नीचे ॥

तत्र कः पठति=वहां कौन पढ़ता है । अत्र अहम् लिखामि=यहां मैं लिखता हूं । कृष्णचन्द्रः उपरि गच्छति=कृष्णचन्द्र ऊपर जाता है । अहम् नीचैः न पठामि=मैं नीचे नहीं पढ़ता । सः उपरि किम् पठति=वह ऊपर क्या पढ़ता है ॥

(नीचे लिखे वाक्योंका संस्कृत बनाओ)

वह नीचे नहीं जाता । तुम वहां क्या पढते हो । हम यहां नहीं आते । वे नीचे जाते हैं । ऊपर कौन है । ये (सब) वहां क्या लिखते हैं । मैं वहां बिल्कुल नहीं जाता । वहां कौन नहीं पढ़ता । ऊपर कौन खेलता है । हम नीचे नहीं जाते । तुम घरमें क्या पढ़ते हो । वे वहां नहीं खेलते । हम ऊपर पढ़ते हैं । वे (सब) वहां मन्दिरमें क्या पढ़ते हैं । हम (सब) घरको नहीं जाते । तुम दोनों नीचे क्या पढ़ते हो ॥

अष्टमः पाठ ८ ॥

दूरम्=दूर । च=और । तदनु=उसके बाद । एवम्=ऐसा । एषः=(पुंल्लिङ्ग) यह । एषा=(स्त्रीलिङ्ग) यह । एतत्=(नपुंसक) यह । यः=(पु०) जो । या=(स्त्री०) जो । यत्=(नपु०) जो । यथा=जैसे । तथा=वैसे । सा=(स्त्री०) वह । तत्=(नपुंसक) वह ॥

ते दूरम् गच्छन्ति—वे दूर जाते हैं। एषा का अस्ति—यह (स्त्री) कौन है। या गच्छति सा पठति—जो जाती है वह पढ़ती है। एषः यथा पठति तथा लिखति—यह जैसे पढ़ता है, वैसे लिखता है। वयम् तदनु गच्छामः—हम (सब) उसके बाद जाते हैं। सः यूयम् च कुत्र गच्छथ—वह और तुम कहां जाते हो। यूयम् वयम् च तत्र न पठामः—तुम (सब) और हम (सब) वहां नहीं पढ़ते। अहम् युवाम् च न क्रीडामः—मैं और तुम दोनों नहीं खेलते। अत्र तत्र च वयम् एतत् न पठामः—यहां और वहां हम यह नहीं पढ़ते॥

(नीचे लिखे वाक्योंका संस्कृत बनाओ)

वे और तुम (सब) कहां जाते हो। हम दोनों और तुम दोनों ऐसे नहीं पढ़ते जैसे वह पढ़ता है। वह जो (नपुंसक) पढ़ता है सो नहीं लिखता। विष्णुमित्र कहां जाता है और उसके बाद क्या पढ़ता है। हम दूर नहीं जाते॥

नवमः पाठः ९।

मम—मेरा, मेरी, तव—तेरा, तेरी। तस्य—उसका, के, की। अस्माकम्-हमारा, रे, री। युष्माकम्—तुम्हारा, रे, री। तेषाम्—उनका, के, की। यस्य— जिसका, के, की। येषाम्—जिनका, के, की॥

पुस्तकम्—पोथी। लेखनी--कलम। वस्त्रम्--कपड़ा। मसीपात्रम्--दावात। पत्रम्--कागज़। उपानत्--जूता। उपवस्त्रम्--रूमाल। पाषाणपट्टिका—स्लेट॥

मम पुस्तकम्-मेरी पोथी। तव वस्त्रम्-तेरा कपड़ा। तस्य लेखनी-उसका कलम। तेषाम् पुस्तकम्—उनका पुस्तक। येषाम् पुस्तकम्—जिनका पुस्तक। मम उपानत् कुत्र अस्ति—मेरा जूता कहां है। तव मसीपात्रम् कुत्र अस्ति—तेरी दावात कहां है। सः मम पुस्तकम् न ददाति—वह मेरी पोथी नहीं देता। विष्णुमित्रः तेषाम् गृहं गच्छति—विष्णुमित्र उनके घरको जाता है। एतत् युष्माकम् उपवस्त्रम् अस्ति—यह तुम्हारा रूमाल है। एतत् कस्य अस्ति?—यह किसका है?। मम पाषाणपट्टिका—मेरी स्लेट॥

(नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत बनाओ)

वह मेरी दावात नहीं देता। तुम (सब) मेरा पुस्तक पढ़ते हो। मैं तुम्हारा पुस्तक नहीं पढ़ता। वे सब हमारे घरको जाते हैं। मेरा जूता कहां है। यह (नपुंसक) तुम्हारा पुस्तक है। तुम्हारी स्लेट घरमें है॥

दशमः पाठः १० ॥

माम्—मुझको। त्वाम्—तुझको। तम्—उसको। आवाम्— हम दोनोंको। युवाम्—तुम दोनोंको। तौ—(पु०) उन दोनोंको। अस्मान्—हम (सबों) को। युष्मान्—तुम (सबों) को। तान्—(पु०) उन (सबों) को। मारयति--मारता है। क्रीडयति--खेलाता है। भर्त्सयति--घुड़कता है। भोजयति—खिलाता है। हासयति—हंसाता है। पाठयति—पढ़ाता है। जानाति—जानता है। जानीतः— वे दोनों जानते हैं। जानन्ति—वे (सब) जानते हैं ॥

सः माम् मारयति—वह मुझको मारता है। तौ मां जानीतः-वे दोनों मुझको जानते हैं। सः अस्मान् जानाति—वह हम (सबों) को जानता है। नन्दकिशोरः माम् क्रीडयति—नन्दकिशोर मुझको खेलाता है। विष्णुशर्मा अस्मान् हासयति—विष्णुशर्मा हम (सबों) को हंसाता है। प्रियदर्शनः आवाम् भोजयति-प्रियदर्शन हम दोनोंको खिलाता है। शम्भुशर्मा अस्मान् भर्त्सयति—शम्भुशर्मा हम (सब) को घुड़कता है। अहम् त्वाम् पाठयामि—मैं तुझको पढ़ाता हूं। आवाम् युवाम् भोजयावः—हम दोनों तुम दोनोंको खिलाते हैं। ते युष्मान् जानन्ति-वे (सब) तुम (सबों) को जानते हैं। तौ त्वाम् मारयतः--वे दोनों तुझको मारते हैं। अहम् तम् पाठयामि—मैं उस (पु०) को पढ़ाता हूं। त्वम् तौ (पु०) भर्त्सयसि—तू उन दोनोंको घुड़कता है। सः तान् (पु०) क्रीडयति—वह उन सबों को खेलाता है।

नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत बनाओ)

वे (सब) मुझको मारते हैं। हम (सब) उसको जानते हैं। मैं उसको नहीं जानता हूं। मैं तुझको नहीं जानता। तू मुझको जानता है ॥

एकादशः पाठः ११ ॥ एकादशः

मया—मैंने। त्वया—तूने। तेन—उसने। आवाभ्याम्—हम दोनोंने। युवाभ्याम्—तुम दोनोंने। ताभ्याम्—उन दोनोंने। अस्माभिः—हम (सबों) ने। युष्माभिः—तुम (सबों) ने। तैः—उन (सबों) ने। कृतम्—(नपुंसक) किया। पठितम्-(नपुंसक) पढ़लिया। भुक्तम्-(नपुंसक) खालिया। मारितः-(पुरुष) मारा। पाठितः-(पुरुष) पढ़ाया। अलङ्कृतम्-(नपुंसक) सजायदिया। स्थानम्-मकान॥ मया भुक्तम्-मैंने खालिया। त्वया स्थानम् अलङ्कृतम्-तूने मकान सजायदिया। मया धर्मदत्तः पाठितः-मैंने धर्मदत्त पढ़ाया। तेन अहं मारितः-उसने मुझे मारा। मया सः मारितः-मैंने उसे मारा ॥

(नीचे लिखे वाक्योंका संस्कृत बनाओ)

हम (सबों) ने पढ़ लिया। तुम (सबों) ने नहीं पढ़ा। उन दोनोंने अच्छा पढ़ा। हम दोनोंने स्थान सजाय दिया। उसने बिलकुल नहीं पढ़ा। उन दोनोंने मकान सजाय दिया। हम (सबों) ने नहीं पढ़ा॥

भुक्ता=खाय ली। मारिता=मारी, पीटी। पाठिता=पढ़ा दी। अलङ्कृता—सजाय दी॥ मया पाठशाला अलङ्कृता—मैंने पाठशाला सजाय दी। तेन यशोदा पाठिता--उसने यशोदा पढ़ा दी। युवाभ्याम् यशोदा मारिता--तुम दोनोंने यशोदा मारी, पीटी॥

(नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत बनाओ)

उसने सुभद्रा पढ़ाई। वह उसने पढ़ाई है। मैंने वह (स्त्री) नहीं पीटी। वह (स्त्री) क्या देती है। तुम कहां जाते हो॥

द्वादशः पाठः १२

किं त्वया देवनागरीपाठशाला दृष्टा—क्या तूने देवनागरी पाठशाला देखी? दृष्टा—देखी। तत्र कति छात्राः पठन्ति—वहां कितने विद्यार्थी पढ़ते हैं?। सपा दशतम्—सवासौ। तत्र कीदृशी पाठनव्यवस्थाऽस्ति—वहां कैसी पढ़ाने की रीति है?। किं कथयामि अत्युत्तमाऽस्ति=क्या कहूं अत्युत्तम है। छात्राणां भोजनादि-प्रबन्धस्य का व्यवस्थाऽस्ति—विद्यार्थियोंके भोजनादि प्रबन्धकी क्या व्यवस्था है?। वासार्थं छात्रालयो वर्त्तते भोजनादिप्रबन्धोऽपि देवनागरीप्रचारिण्याः सभायाः सकाशात् सञ्जायते—रहनेको छात्रालय (बोर्डिङ्गहौस) है, और भोजनादि प्रबन्ध भी देवनागरीप्रचारिणी सभाकी ओरसे हो जाता है। परन्तु केवल संस्कृताध्येतृणामेवैष नियमः प्रायो दृश्यते—परन्तु केवल संस्कृत पढ़ने वालोंका ही यह नियम प्रायः देखा जाता है। तत्र गत्वा तावत् भवता किं कृतम्?—वहां जाकर पहिले आपने क्या किया? तावत् छात्राणां पाठः श्रुतः—पहिले विद्यार्थियोंका पाठ सुना। तदनु योग्यतानुसारतः पारितोषिकं दत्तम्—उसके बाद योग्यतानुसार इनाम दिया॥

त्रयोदशः पाठः १३॥

हरिवर्षस्थं प्रति पातालस्थ उवाच।

हरिवर्षस्थ। (इंग्लिशमैनसे पातालस्थ (अमेरिकन्) बोला।

प्रिय मित्र ! इदानीमार्यावर्त्ते कस्य राज्यमस्ति ?=प्यारे मित्र ! आज कल आर्यावर्त्त (हिन्दुस्तान) में किसका राज्य है ? । महाराज्ञ्याः=महाराणीका । तत्र किमपि "कण्टकादि,, तु नास्ति ?=वहां कुछ "झगड़ा बखेड़ा,, तो नहीं है ?। नहि नहि निष्कण्टकं राज्यं वर्त्तते=नहीं २ निष्कण्टक राज्य वर्त्त रहा है। इदानीं भवान् कुत आयाति.=अब आप कहांसे आते हैं ? । गान्धारतः=कन्धारसे। तत्र कस्य राज्यमस्ति ?=वहां किसका राज्य है । तत्रापि महाराज्ञ्याः ?=वहां भी महाराणीका । अहो ! अत्यानन्दम्=अहो ! बड़े आनन्दकी बात है।

चतुर्दशः पाठः १४ ॥

(चिट्ठी लिखनेकी रीति)

महाशय !

अयं ममात्मज उत्तमचन्द्रनामा संस्कृतविद्याध्ययनार्थं मया प्रेषितः सन् आगच्छति तन्ममोपरि महतीं कृपां कृत्वाऽध्यापनीयोऽयम् । अलं विद्वत्सु ॥

आषाढशुक्ला १३ } भवता कृपाकाङ्क्षी
सं० ४४ रविः } चन्द्रदत्तः

यह मेरा पुत्र उत्तमचन्द्र नाम संस्कृत विद्या पढ़नेके लिये मेरा भेजा हुआ आता है सो मेरे ऊपर बड़ी कृपा करके इसे पढ़ाइये विद्वानोंके लिये अधिक क्या लिखूं ॥

इति तुलसीराम स्वामिकृतं प्रथमं पुस्तकम् ॥

—:×:×:—

इति

ओ३म्

संस्कृत-भाषा-द्वितीयं पुस्तकम् ॥

परीक्षितगढ़ (ज़िला मेरट) निवासि-

स्वामि-तुलसीराम-शर्म्मणा विरचितम्

प्रकाशितञ्च

इटावानगरे सरस्वतीयन्त्रालये-तुलसीराम स्वामिनः

प्रबन्धेन मुद्रितम् ॥

संवत् १९५३ । १२ । ४ । ९६

तृतीयवार १००० प्रति]   [मूल्य -)।

पुस्तक मिलने का ठिकाना तुलसी-
रामस्वामी । स्वामियन्त्रालयमेरठ

भूमिका ॥

जिस उद्देश्य से मैंने यह पुस्तक बनाया था वह उद्देश्य सफल होते देख कर (जो कि गुणग्राहकों ने ५००० प्रथम ३००० द्वितीय तथा २५०० तृतीय पुस्तकें हाथों हाथ ले लीं) मुझे उत्साह होता है कि अब की बार इस द्वितीय पुस्तक में कुछ और आवश्यक संशोधन करके अत्यन्त शुद्ध छपाऊं सो इस बार शुद्ध छपने का विशेष उद्योग किया है इतने पर भी यदि मेरी समझ की भूल वा छापे की अशुद्धि कोई पाई जावे तौ पाठकगण क्षमापूर्वक शुद्ध कर के मुझे सूचना दें जिस से अगले मुद्रण में वह न्यूनता न रहे और मैं उन का कृतज्ञ होऊं इति॥

वै० कृ० सं० १९५३] तुलसीराम स्वामी

ओ३म्

संस्कृत-भाषा-द्वितीयं पुस्तकम् ॥

प्रथमः पाठः १ ॥

(गम धातु के भूत भविष्यत् वर्तमान और विधि काल के रूप)

कर्त्ता	भूतक्रिया	कर्त्ता	भविष्यक्रिया
सः	अगच्छत्=वह गया है	सः	गमिष्यति=वह जायगा
तौ	अगच्छताम्=वे दोनों गये हैं	तौ	गमिष्यतः=वे दोनों जायंगे
ते	अगच्छन्=वे सब गये हैं	ते	गमिष्यन्ति=वे सब जायंगे
त्वम्	अगच्छः=तू गया है	त्वम्	गमिष्यसि=तू जायगा
युवाम्	अगच्छतम्=तुम दोनों गये हो	युवाम्	गमिष्यथः=तुम दोनों जाओगे
यूयम्	अगच्छत=तुम सब गये हो	यूयम्	गमिष्यथ=तुम सब जाओगे
अहम्	अगच्छम्=मैं गया हूं	अहम्	गमिष्यामि=मैं जाऊंगा
आवाम्	अगच्छाव=हम दोनों गये हैं	आवाम्	गमिष्यावः=हम दोनों जायंगे
वयम्	अगच्छाम=हम सब गये हैं	वयम्	गमिष्यामः=हम सब जायंगे

द्वितीयः पाठः २ ॥

कर्त्ता	वर्त्तमानक्रिया	कर्त्ता	विधिक्रिया
सः	गच्छति=वह जाता है	सः	गच्छतु, गच्छतात्=वह जावे
तौ	गच्छतः=वे दोनों जाते हैं	तौ	गच्छताम्=वे दोनों जावें
ते	गच्छन्ति=वे सब जाते हैं	ते	गच्छन्तु=वे सब जावें
त्वम्	गच्छसि=तू जाता है	*त्वं	गच्छ, गच्छतात्=तू जा
युवाम्	गच्छथः=तुम दोनों जाते हो	युवां	गच्छतम्=तुम दोनों जाओ
यूयम्	गच्छथ=तुम सब जाते हो	यूयं	गच्छत=तुम सब जाओ
अहम्	गच्छामि=मैं जाता हूं	अहम्	गच्छानि=मैं जाऊं
आवाम्	गच्छावः=हम दोनों जाते हैं	आवां	गच्छाव=हम दोनों जावें
वयम्	गच्छामः=हम सब जाते हैं	वयं	गच्छाम=हम सब जावें

* "त्वम्" इत्यादि में 'म्' को (ं) अनुस्वार भी रहता है जब कि व्यञ्जन परे हो।

नवीन

जिस प्रकार गम (जाना) धातु के रूप हुये इसी प्रकार आगम (आना) धातु के भी जानने चाहियें केवल गम के पूर्व "आ" लगाने से बनते हैं जैसेः-

आगच्छति=आता है। आगच्छत्=आया है। आगमिष्यति=आवेगा। आगच्छ=आव ॥

तृतीयः पाठः ३ ॥

कृत्वा=करके। भुक्त्वा=खा के। गत्वा=जा के। मत्वा=मान के। श्रुत्वा=सुन के। मेलित्वा, मिलित्वा=मिल के। आगत्य=आ के। प्रणम्य=प्रणाम करके। पृष्ट्वा=पूछ के। आदाय=ले कर। दत्वा=दे कर ॥

किं विष्णुमित्रः गृहं गमिष्यति ?=क्या विष्णुमित्र घर को जायगा ?। किं त्वं मन्दिरात् आगमिष्यसि ?=क्या तू मन्दिर से आवे गा ?। अहं मन्दिरात् न आगमिष्यामि=मैं मन्दिर से नहीं आऊंगा। किं तौ मां पृष्ट्वा गमिष्यतः=क्या वे दोनों मुझ को पूछ के जायंगे ?। नो=नहीं। ते पुस्तकं दत्वा गमिष्यन्ति=वे सब पुस्तक को देकर जायंगे। अहं पाठं श्रुत्वा आगमिष्यामि=मैं पाठ को सुन के आऊंगा। किं युवां पठित्वा न गमिष्यथः=क्या तुम दोनों पढ़ के नहीं जाओगे ?। महाशय! आवां पठित्वा एव गमिष्यावः=महाशय! हम दोनों पढ़ के ही जायंगे। मया गत्वा भुक्तम्=मैंने जा के खालिया। किं सः भुक्त्वा गमिष्यति=क्या वह खा के जायगा ?। यूयं कदा गमिष्यथ=तुम सब कब जाओगे। विष्णुमित्रः पुस्तकम् आदाय अगच्छत्=विष्णुमित्र पुस्तक को लेकर गया है। ते मम पुस्तकम् आदाय अगच्छन्=वे सब मेरी पुस्तक को लेकर गये हैं। तौ आवयोः पाषाणपट्टिकाम् आदाय अगच्छताम्=वे दोनों हम दोनों की सलेट् को लेकर गये हैं। अहं भुक्त्वा अगच्छम्=मैं खा कर गया हूं। त्वं पठित्वा अगच्छः=तू पढ़ के गया है। युवां मिलित्वा अगच्छतम्=तुम दोनों मिल के गये हो। वयं मिलित्वा न अगच्छाम=हम सब मिल के नहीं गये हैं। यूयम् आवयोः उपवस्त्रम् आदाय अगच्छत=तुम सब हम दोनों के रूमाल को लेकर गये हो। वयं युवयोः उपवस्त्रम् आदाय न अगच्छाम=हम सब तुम दोनों का रूमाल लेकर नहीं गये हैं। त्वं श्रुत्वा आगच्छ=तू सुन के आ। अहं पठित्वा गच्छानि=मैं पढ़ के जाऊं। † स मम वस्त्राणि आदाय गच्छतु=वह मेरे कपड़े लेकर जावे। युवां

† सः के आगे जो (:) विसर्ग है वह व्यञ्जन परे हो तौ लुप्त कर दिया जाता है।

पठित्वा गच्छतम्=तुम दोनों पढ़ के जाओ । आवां न गच्छाव=हम दोनों न जावें । तौ श्रुत्वा न आगच्छताम्=वे दोनों सुन के न आवें । ते गच्छन्तु=वे सब जावें । यूयं न गच्छत=तुम सब मत जाओ । वयं न गच्छाम=हम सब न जावें । यूयं मम उपानहम् आदाय न गच्छत=तुम सब मेरा जूता लेकर मत जाओ । त्वं तत्र न गच्छतात्=तू वहां मत जा । वयं पठित्वा न गच्छाम=हम सब पढ़ के न जावें । यदा अहं गमिष्यामि तदा त्वम् आगमिष्यसि=जब मैं जाऊंगा तब तू आवेगा ॥

चतुर्थः पाठः ४ ॥

(नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत बनाओ)

वह वहां न जावे । तुम यहां मत आओ । हम वहां जायंगे । तुम वहां आओगे । वे दोनों वहां न जावें । तुम दोनों वहां जाओगे । हम वहां नहीं जायंगे । यहां आओ । वहां मत जाओ । हम सब वहां गये हैं । तुम दोनों यहां नहीं आये हो । वे वहां गये हैं । तुम सब वहां नहीं गये हो । तुम सब पढ़ कर जाओ । हम दोनों मिल के जायंगे । तुम सब खाके जाओ । तुम सब मेरी पुस्तक लेकर मत जाओ । हम दोनों तुम दोनों की स्लेट लेकर जायंगे । क्या तुम व्याख्यान को सुन के नहीं आओगे ? ॥

(संस्कृत से भाषा बनाओ)

अहं पठित्वा गमिष्यामि । त्वं मम वस्त्रम् आदाय गच्छतात् । मम कथनं श्रुत्वा आगच्छ । अहं पुस्तकम् आदाय अगच्छम् । यूयं कुत्र गत्वा आगच्छत । किं स गृहात् न आगमिष्यति ?। अहं वेदं श्रुत्वा गमिष्यामि । स तत्र किं कृत्वा अगच्छत् । किं युवां मम पुस्तके आदाय अगच्छतम् ?। किं स मन्दिरात् आगमिष्यति ?। वयं तत्र न अगच्छाम । किं स उपरि अगच्छत् । आवां नीचैः न अगच्छाव । किं स न पठति । अहं तत्र गत्वा न पठिष्यामि । स गच्छतु तत्र ॥

पञ्चमः पाठः ५ ॥

(स्था=ठहरना)

कर्त्ता,	भूतकालिक क्रिया	कर्त्ता,	वर्तमानकालिक क्रिया
सः	अतिष्ठत्=वह ठहरा है	सः	तिष्ठति=वह ठहरता है
तौ	अतिष्ठताम्=वे दोनों ठहरे हैं	तौ	तिष्ठतः=वे २*ठहरते हैं
ते	अतिष्ठन्=वे सब ठहरे हैं	ते	तिष्ठन्ति=वे ३*ठहरते हैं
त्वम्	अतिष्ठः=तू ठहरा है	त्वं	तिष्ठसि=तू ठहरता है
युवाम्	अतिष्ठतम्=तुम दोनों ठहरे हो।	युवां	तिष्ठथः=तुम २ ठहरते हो
यूयम्	अतिष्ठत=तुम सब ठहरे हो	यूयं	तिष्ठथ=तुम ३ ठहरते हो
अहम्	अतिष्ठम्=मैं ठहरा हूं	अहं	तिष्ठामि=मैं ठहरता हूं
आवाम्	अतिष्ठाव=हम सब ठहरे हैं	आवां	तिष्ठावः=हम २ ठहरते हैं
वयम्	अतिष्ठाम=हम सब ठहरे हैं	वयं	तिष्ठामः—हम ३ ठहरते हैं

कर्त्ता,	भविष्यत्कालिकक्रिया	कर्त्ता,	विधिक्रिया
सः	स्थास्यति=वह ठहरेगा	सः	तिष्ठतु, तिष्ठतात्=वह ठहरे
तौ	स्थास्यतः=वे २ ठहरेंगे	तौ	तिष्ठताम्=वे २ ठहरें
ते	स्थास्यन्ति=वे ३ ठहरेंगे	ते	तिष्ठन्तु=वे ३ ठहरें
त्वं	स्थास्यसि=तू ठहरेगा	त्वम्	तिष्ठ, तिष्ठतात्=तू ठहर
युवां	स्थास्यथः=तुम २ ठहरोगे	युवाम्	तिष्ठतम्=तुम २ ठहरो
यूयं	स्थास्यथ=तुम ३ ठहरोगे	यूयम्	तिष्ठत=तुम ३ ठहरो
अहं	स्थास्यामि=मैं ठहरूंगा	अहम्	तिष्ठानि=मैं ठहरूं
आवां	स्थास्यावः=हम २ ठहरेंगे	आवाम्	तिष्ठाव=हम २ ठहरें
वयं	स्थास्यामः=हम ३ ठहरेंगे	वयम्	तिष्ठाम=हम ३ ठहरें

षष्ठः पाठः ॥

सः तत्र न तिष्ठति=वह वहां नहीं ठहरता । अहम् कुत्र तिष्ठानि=मैं कहां ठहरूं । यूयम् तत्र न तिष्ठत=तुम ३ वहां मत ठहरो । ते गृहे तिष्ठन्ति=वे ३ घर में ठहरते हैं । वयम् उपरि स्थास्यामः=हम ३ ऊपर ठहरेंगे । किं यूयम्

* २ अङ्क से द्विवचन ३ अङ्क से बहुवचन समझना चाहिये ।

नीचैः स्थास्यथ ?=क्या तुम सब नीचे ठहरोगे ? । युवां तत्र न अतिष्ठतम्=तुम दोनों वहां नहीं ठहरे हो । त्वम् दूरम् तिष्ठ=तू दूर ठहर । किं वयम् तत्र न तिष्ठाम ?=क्या हम ३ वहां न ठहरें ? । यूयम् तत्र आगत्य तिष्ठत=तुम ३ वहां आकर ठहरो । वयम् उपरि गत्वा अतिष्ठाम=हम ३ ऊपर जाके ठहरे हैं । त्वं तं प्रणम्य तिष्ठतात्=तू उस को प्रणाम करके ठहर । तौ श्रुत्वा न अतिष्ठताम्=वे २ सुन के नहीं ठहरे हैं । अहं सत्यं मत्वा अतिष्ठम्=मैं सत्य मान के ठहरा हूं । अहं भुक्त्वा स्थास्यामि=मैं खाके ठहरूंगा । विद्यार्थी पृष्ट्वा अगच्छत्=विद्यार्थी पूछ के गया है । सः पठित्वा तिष्ठतु=वह पढ़ के ठहरे । वयं पठित्वा न स्थास्यामः=हम ३ पढ़ के नहीं ठहरेंगे । ते प्रणम्य अतिष्ठन्=वे प्रणाम करके ठहरे हैं । यूयं श्रुत्वा तिष्ठत=तुम ३ सुनके ठहरो । तौ आगत्य तिष्ठताम्=वे २ आके ठहरें । किं त्वं भुक्त्वा न स्थास्यसि ?=क्या तू खाके नहीं ठहरेगा ? । अहं पठित्वा न स्थास्यामि=मैं पढ़ के नहीं ठहरूंगा ॥

सप्तमः पाठः ७ ॥

कर्त्ता	भूतक्रिया,	कर्त्ता,	वर्त्तमानक्रिया,
सः	अपठत्=उस ने पढ़ा है	सः	पठति=वह पढ़ता है
तौ	अपठताम्=उन दोनोंने पढ़ा है	तौ	पठतः=वे २ पढ़ते हैं
ते	अपठन्=उन्हों ने पढ़ा है	ते	पठन्ति=वे ३ पढ़ते हैं
त्वम्	अपठः=तूने पढ़ा है	त्वम्	पठसि=तू पढ़ता है
युवाम्	अपठतम्=तुम २ ने पढ़ा है	युवाम्	पठथः=तुम दोनों पढ़ते हो
यूयम्	अपठत=तुम ३ ने पढ़ा है	यूयम्	पठथ=तुम ३ पढ़ते हो
अहम्	अपठम्=मैंने पढ़ा है	अहम्	पठामि=मैं पढ़ता हूं
आवाम्	अपठाव=हम २ ने पढ़ा है	आवाम्	पठावः=हम २ पढ़ते हैं
वयम्	अपठाम=हम ३ ने पढ़ा है	वयम्	पठामः=हम ३ पढ़ते हैं

कर्त्ता,	भविष्यक्रिया,	कर्त्ता,	विधिक्रिया,
सः	पठिष्यति=वह पढ़ेगा	सः	पठतु, पठतात्=वह पढ़े
तौ	पठिष्यतः=वे २ पढ़ेंगे	तौ	पठताम्=वे २ पढ़ें
ते	पठिष्यन्ति=वे ३ पढ़ेंगे	ते	पठन्तु=वे ३ पढ़ें
त्वम्	पठिष्यसि=तू पढ़ेगा	त्वम्	पठ,पठतात्=तू पढ़

युवाम् पठिष्यथः=तुम २ पढ़ोगे	युवाम् पठतम्=तुम २ पढ़ो
यूयम् पठिष्यथ=तुम ३ पढ़ोगे	यूयम् पठत=तुम ३ पढ़ो
अहम् पठिष्यामि=मैं पढ़ूंगा	अहम् पठानि=मैं पढ़ूं ?
आवाम् पठिष्यावः=हम दोनों पढ़ेंगे	आवाम् पठाव=हम २ पढ़ें ?
वयम् पठिष्यामः=हम ३ पढ़ेंगे	वयम् पठाम=हम ३ पढ़ें ?

अष्टमः पाठः ८ ॥

भोक्तुम्=खाने को। मार्ष्टुम्=बुहारने को। पातुम्=पीने को। गन्तुम्=जाने को। चिन्तयितुम्=याद करने को। स्वप्तुम्=सोने को। पठितुम्=पढ़ने को। जागरितुम्=जागने को। ज्ञातुम्=जानने को। सङ्गन्तुम्=मिलने को। हन्तुम्=मारने को। प्रष्टुम्=बूझने को। आगन्तुम्=आने को। हसितुम्=हँसने को। संमन्तुम्=सलाह देने को। आस्तुम्=बैठने को। जेतुम्=जीतने को। स्थातुम्=ठहरने को। उत्थातुम्=उठने को। पराजेतुम्=हारने को। कर्त्तुम्=करने को। मर्त्तुम्=मरने को। हत्तुम्=मल त्यागने को। मन्तुम्=मानने को। मारयितुम्=मारने को। जीवितुम्=जीने को। सीवितुम्=सीने को। चोरयितुम्=चुराने को॥

नवमः पाठः ९ ॥

[रामशब्द (पुंल्लिङ्ग) की सात विभक्तियां]

१	रामः=राम, ने रामौ=२ रामों, ने रामाः=सब रामों, ने	५	रामात्, द्=राम से रामाभ्याम्=२ रामों से रामेभ्यः=सब रामों से
२	रामम्=राम को रामौ=२ रामों को रामान्=३ रामों को	६	रामस्य=राम का, के, की, रामयोः=२ रामों का, के, की रामाणाम्=३ रामों का, के, की
३	रामेण=राम ने, से, के साथ रामाभ्याम्=२ रामों ने, से, के साथ रामैः=सब रामों ने, से, के साथ	७	रामे=राम में, पै, पर रामयोः=२ रामों में, पै, पर रामेषु=३ रामों में, पै, पर
४	रामाय=राम के लिये रामाभ्याम्=२ रामों के लिये रामेभ्यः=३ रामों के लिये	सम्बोधन	हे राम= ओ राम हे रामौ=२ ” हे रामाः=३ ”

जिस प्रकार राम शब्द की ७ विभक्तियां हैं इसी प्रकार कदम्ब, मुकुन्द, देव, पुरुष, यज्ञदत्त, देवदत्त, विष्णुमित्र आदि अकारान्त (पुंल्लिङ्ग) शब्दों की विभक्तियां जानो ।

दशमः पाठः १० ॥

[तद् शब्द (पुंल्लिङ्ग) की ७ विभक्तियां]

१	सः=वह, उस ने तौ=वे २, उन्होंने ते=वे ३, उन्होंने
२	तम्=उस को तौ=उन २, को तान्=उन ३ को
३	तेन=उस से, ने, के, साथ ताभ्याम्=उन २ से, ने, के साथ तैः=उन ३ से, ने, के साथ
४	तस्मै=उस के लिये ताभ्याम्=उन २ के लिये तेभ्यः=उन ३ के लिये
५	तस्मात्=उस से ताभ्याम्=उन २ से तेभ्यः=उन ३ से
६	तस्य=उस का, के, की तयोः=उन २ का, के, की तेषाम्=उन ३ का, के, की
७	तस्मिन्=उस में, पै, पर तयोः=उन २ में, पै, पर तेषु=उन ३ में, पै, पर
	सम्बोधन इस का नहीं होता

इसी प्रकार यद् (जो) शब्द के भी रूप हैं किन्तु इतना भेद है कि प्रथमा विभक्ति के एक वचन में "यः" ऐसा रूप होता है आगे "यौ, ये, यम्, यौ, यान्, येन, याभ्याम्, यैः इत्यादि सब तद् शब्द के समान हैं सो पढ़ने वालों को बुद्धि से समझने और समझाने चाहियें ॥

एकादशः पाठः ११ ॥

विष्णुमित्रः भं.क्तुं गच्छति=विष्णुमित्र खाने को जाता है । यज्ञदत्तः ग्रामं गन्तुम् आगच्छतु=यज्ञदत्त ग्राम को जाने को आवे । त्वं पठितुं गच्छ–तू पढ़ने को जा । त्वं वेदान् ज्ञातुं पठसि–तू वेदों को जानने को पढ़ता है । किं त्वं प्रष्टुम् अगच्छः ?=क्या तू पूछने को गया है ?। देवदत्तः सम्मन्तुम् गत्वा आगच्छत्=देवदत्त सलाह करने को जाके आया है । किं स तस्मिन् गृहे स्थातुं अगच्छत् ?=क्या वह उस घर में ठहरने को गया है ? । स किं कर्त्तुम् पठतु ?=वह क्या करने को पढ़े ? । अहं वेदं मन्तु अपठम्=मैं ने वेद को मानने को पढ़ा है । स वस्त्रं सीवितुं गच्छति किम् ?=वह कपड़ा (नपु०) सीने को जाता

है क्या ? । शोभारामः गृहं मार्ष्टुं गच्छतु=शोभाराम घर बुहारने को जावे । तौ पाठं चिन्तयितुम् अगच्छताम्=वे दोनों पाठ (को) याद करने को गये हैं । सः गृहम् आगन्तुं धावति=वह घर आने को दौड़ता है । स आसने आस्तुं गच्छतु=वह आसन पै बैठने को जावे । आवाम् आसनात् उत्थातुं न इच्छावः=हम २ आसन से उठने को नहीं चाहते । किं स तेन मर्त्तुम् इच्छति ?= क्या वह उस के साथ मरने को चाहता है ? । त्वं तं मारयितुं गच्छसि=तू उस को मारने को जाता है ॥

द्वादशः पाठः १२ ॥

सः धनं दत्वा अपठत्=वह धन देकर पढ़ा । किं युवां धनाय पठथः=क्या तुम २ धन के लिये पढ़ते हो ? । वयं धनाय न अपठाम=हम धन के लिये नहीं पढ़े हैं । तौ धर्म्माय पठतः=वे दोनों धर्म के लिये पढ़ते हैं । विद्यार्थी नियमं कृत्वा पठतु=विद्यार्थी नियम करके पढ़े । अहं भुक्त्वा पठिष्यामि=मैं खाके पढूंगा । किं त्वं ग्रामं गत्वा पठिष्यसि ?=क्या तू ग्राम को जाकर पढ़ेगा ? । आवां सत्यं मत्वा अपठाव=हम २ सत्य मान के पढ़े हैं । वेदं चोरयितुं पठति=वेद चुराने को पढ़ता है । यूयं जलं पातुं गच्छथ=तुम ३ जल पीने को जाते हो । त्वं स्वप्तुं गच्छ=तू सोने को जा । किम् अहं जागरितुम् तिष्ठानि?=क्या मैं जागने को ठहरूं ? । अहं विष्णुमित्रं हन्तुं न गमिष्यामि=मैं विष्णुमित्र को मारने को नहीं जाऊंगा । तौ हसितुम् अगच्छताम्=वे २ हंसने को गये हैं । यज्ञदत्तः देवदत्तं जेतुम् अगच्छत्=यज्ञदत्त देवदत्त को जीतने गया है । युवां पराजेतुं गमिष्यथः=तुम २ हारने को जाओगे । देवदत्तविष्णुमित्रौ हर्त्तुं गच्छताम्=देवदत्त विष्णुमित्र २ मलत्यागने को जावें । दशरथः जीवितुं न इच्छति=दशरथ जीने को नहीं चाहता । अहं ग्रामं गन्तुम् इच्छामि=मैं ग्राम को जाना चाहता हूं । तौ सुदर्शनेन सङ्गन्तुं आगच्छताम्=वे २ सुदर्शन से मिलने को आवें । अहं यज्ञदत्तविष्णुमित्राभ्यां पुस्तकं दातुं न इच्छामि=मैं यज्ञदत्त विष्णुमित्रों २ के लिये पुस्तक देने को नहीं चाहता ॥

त्रयोदशः पाठः १३ ॥

(संस्कृत से भाषा बनाओ)

स रामाय वस्त्रं ददातु । अहं रामात् उपानहम् आदातुम् इच्छामि । आवां रामस्य उपवस्त्रम् आदाय गमिष्यावः । वयं रामे

विश्वासं कृत्वा आगच्छामः । हे राम ! किं त्वं पठिष्यसि ? । अहं तं पृष्ट्वा गच्छानि ? । त्वं ताभ्याम् मिलित्वा न आगच्छः । युवां तेभ्यः पुस्तकं दत्वा गमिष्यथः किम् ? । अहं तस्मात् न पठिष्यामि । त्वं तयोः पुस्तकं न पठ । स तेषु विश्वासं कृत्वा न आगच्छति । ये पठन्ति ते गमिष्यन्ति । यत् जानामि तत् पठामि । येन सङ्गन्तुम् अगच्छम् स न मिलितः । यस्मै धनं दत्तं स नास्ति । यस्मात् भयं भवति तस्य समीपे न गच्छ ॥

चतुर्दशः पाठः १४ ॥

[भाषा से संस्कृत वाक्य बनाओ]

उस ने क्या पढ़ा है ? । तुम पुस्तक नहीं पढ़ोगे ? । हम ने पुस्तक नहीं पढ़ा है । तुम दुष्ट पुस्तक मत पढ़ो । विद्यार्थी श्रेष्ठ पुस्तक को पढ़े । क्या तुम उस का पुस्तक लेकर गये हो ? । हम ने उन २ का पुस्तक नहीं पढ़ा है । वे २ मेरा पुस्तक पढ़ते हैं । तुम वेद को पढ़ो । तू विद्यार्थी नहीं है । हम३ विद्याध्ययन के लिये जायंगे । क्या तू हमारा पुस्तक लेकर जायगा ? । यदि तू यहां आवे गा तब हम तुझ को नहीं १ पढ़ावेंगे (१ पाठयिष्यामः) ॥

पञ्चदशः पाठः १५ ॥

युष्मद् (अर्थात् तू, तुम) शब्द की ७ विभक्तियां । तीनों लिङ्गों में समान रूप होते हैं ॥

१	त्वम्=तू, तूने युवाम्=तुम २, तुम २ ने यूयम्=तुम ३, तुम ३ ने	४	तुभ्यम्, ते=तेरे लिये युवाभ्याम्, वाम्=तुम्हारे २ लिये युष्मभ्यम्, वः=तुम्हारे ३ लिये
२	त्वाम्, त्वा=तुझ को युवाम्, वाम्=तुम २ को युष्मान्, वः=तुम ३ को	५	त्वत्=तुझ से युवाभ्याम्=तुम २ से युष्मत्=तुम ३ से
३	त्वया=तूने, तुझ से, तेरे साथ युवाभ्याम्=तुम २ ने, से, तुम्हारे साथ युष्माभिः=तुम ३ ने, से, तुम्हारे साथ	६	तव, ते=तेरा, रे, री युवयोः वाम्=तुम दोनोंका, के, की युष्माकम्, वः=३ तुम्हारा, रे, री

७	त्वयि=तुझ में, पै, पर युवयोः=तुम २ में पै, पर युष्मासु=तुम ३ में, पै, पर	युष्मद् और अस्मद् शब्द के सम्बोधन के रूप नहीं होते ॥

षोडशः पाठः १६ ॥

अस्मद् (अर्थात् मैं हम) शब्द की ७ विभक्तियां । इस के भी ३ लिङ्गों में समान ही रूप होते हैं ॥

१	अहम्=मैं वा मैंने आवाम्=२ हम वा हम दोनों ने वयम्=हम ३ वा हम ३ ने	५	मत्=मुझ से आवाभ्याम्=हम २ से अस्मत्=हम ३ से
२	माम्, मा=मुझ को आवाम्, नौ=हम २ को अस्मान्, नः=हम ३ को	६	मम, मे=मेरा, रे, री आवयोः, नौ=हमारा २ रे, री अस्माकम्, नः=हमारा३,रे,री
३	मया=मैंने, मुझ से, मेरे साथ आवाभ्याम्=हम२ने,से,हमारेसाथ अस्माभिः=हम ३ ने,से, हमारेसाथ	७	मयि=मुझ में, पै, पर आवयोः=हम २ में, पै, पर अस्मासु=हम ३ में, पै, पर
४	मह्यम्, मे=मेरे लिये आवाभ्याम्, नौ=हमारे२के लिये अस्मभ्यम्,नः=हमारे ३ के लिये		सम्बोधन नहीं होता ॥

सप्तदशः पाठः १७ ॥

दा धातु=देना के भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान, विधि,

कर्त्ता,	भूतकालिकक्रिया,	कर्त्ता,	भविष्यक्रिया,
सः	अददात्=उस ने दिया, दी है	सः	दास्यति=वह देगा
तौ	अदत्ताम्=उन२ने दिया, दी है	तौ	दास्यतः=वे २ देंगे
ते	अददुः=उन ३ ने दिया, दी है	ते	दास्यन्ति=वे ३ देंगे
त्वम्	अददाः=तूने दिया, दी है	त्वम्	दास्यसि=तू देगा
युवाम्	अदत्तम्=तुम २ने दिया, दी है	युवाम्	दास्यथः=तुम २ दोगे
यूयम्	अदत्त=तुम ३ ने दिया, दी है	यूयम्	दास्यथ=तुम ३ दोगे
अहम्	अददाम्=मैंने दिया, दी है	अहम्	दास्यामि=मैं दूंगा
आवाम्	अदद्व=हम २ ने दिया, दी है	आवाम्	दास्यावः=हम २ देंगे
वयम्	अदद्म=हम३ ने दिया, दी है	वयम्	दास्यामः=हम ३ देंगे

कर्त्ता,	वर्त्तमानक्रिया,	कर्त्ता,	विधिक्रिया,
सः	ददाति=वह देता है	सः	ददातु, दत्तात्=वह देवे
तौ	दत्तः=वे २ देते हैं	तौ	दत्ताम्=वे २ देवें
ते	ददति=वे ३ देते हैं	ते	ददतु=वे ३ देवें
त्वम्	ददासि=तू देता है	त्वम्	देहि, दत्तात्=तू दे
युवाम्	दत्थः=तुम २ देते हो	युवाम्	दत्तम्=तुम २ दो
यूयम्	दत्थ=तुम ३ देते हो	यूयम्	दत्त=तुम ३ दो
अहम्	ददामि=मैं देता हूं	अहम्	ददानि=मैं दूं
आवाम्	दद्वः=हम २ देते हैं	आवाम्	ददाव=हम २ दें
वयम्	दद्मः=हम ३ देते हैं	वयम्	ददाम=हम ३ दें

इस दा धातु=देना, से पहिले आ लगाने से "लेना" अर्थ हो जाता है परन्तु उस दशा में आत्मनेपद के रूप होते हैं जैसे:--

कर्त्ता	भूतक्रिया।	कर्त्ता	भविष्यक्रिया
सः	आदत्त	सः	आदास्यते
तौ	अददाताम्	तौ	आदास्येते
ते	आददत	ते	आदास्यन्ते
त्वम्	आदत्थाः	त्वम्	आदास्यसे
युवाम्	आददाथाम्	युवाम्	आदास्येथे
यूयम्	आदद्ध्वम्	यूयम्	आदास्यध्वे
अहम्	आददि	अहम्	आदास्ये
आवाम्	आदद्वहि	आवाम्	आदास्यावहे
वयम्	आदद्महि	वयम्	आदास्यामहे

कर्त्ता	वर्तमानक्रिया।
सः	आदत्ते
तौ	आददाते
ते	आददते
त्वम्	आदत्से
युवाम्	आददाथे

कर्त्ता	वर्तमानक्रिया
यूयम्	आदद्ध्वे
अहम्	आददे
आवाम्	आदद्वहे
वयम्	आदद्महे

कर्त्ता	विधिक्रिया
सः	आदत्ताम्
तौ	आददाताम्
ते	आददताम्
त्वम्	आदत्स्व
युवाम्	आददाथाम्
यूयम्	आदद्ध्वम्
अहम्	आददै
आवाम्	आददावहै
वयम्	आददामहै

अर्थ परस्मैपद के तुल्य ही है ॥

अष्टादशः पाठः १८ ॥

नरसिंहः मह्यं किं ददाति?=नरसिंह मुझ को क्या देता है ? । विष्णुशर्म्मा आवाभ्याम् भोजनं दास्यति=विष्णुशर्म्मा हम २ दो को भोजन देगा । अहम् युष्मभ्यं वस्त्रं न दास्यामि=मैं तुम ३ को वस्त्र नहीं दूंगा । किं स त्वत् पुस्तकम् आदास्यते ?=क्या वह तुझ से पुस्तक लेगा ? । अहम् तव उपवस्त्रं न ददानि=मैं तेरा रूमाल न दूं । त्वम् तस्य उपानहम् देहि=तू उस का जूता दे । अहम् त्वयि भारं न ददामि=मैं तुझ पर भार नहीं देता । कस्य अपि वस्तु न आदत्ताम्=किसी का भी वस्तु न ले । त्वम् मह्यं पुस्तकं दत्तात्=तू मुझ को पुस्तक दे । स आवाभ्याम् मङ्क्तुम् आगच्छति=वह हम २ से मिलने को आता है । स स्वकीयं पुस्तकं मह्यम् अददात्=उस ने अपना पुस्तक मेरे लिये दिया है । त्वम् तस्मै किमपि अददाः ?=तूने उस के लिये कुछ दिया है ? । अहम् युवाभ्यां किमपि न अददाम्=मैंने तुम २ को कुछ नहीं दिया है । तौ आवाभ्यां किम् अदत्ताम् ?=उन दोनोंने हम २ को क्या दिया है ? । युवां तेभ्यः स्वं पुस्तकम् आददाथाम्=तुम २ उन से अपना पुस्तक ले लो । आवां तुभ्यं वस्त्रं न दास्यावः=हम २ तुझ को कपड़ा नहीं देंगे । त्वं मोहनसिंहस्य पुस्तकम् आदत्स्व=तू मोहनसिंह का पुस्तक ले ले । अहं तव समीपे न आगमिष्यामि=मैं तेरे समीप में नहीं आऊंगा । त्वं मम पुस्तकं लेखनीं च कदा दास्यसि ?=तू मेरा पुस्तक और क़लम कब देगा ? । सः अस्मत् लेखनीं आदत्त=उस ने हम से क़लम लिया है ॥

ऊनविंशः पाठः १९

(भाषा से संस्कृत बनाओ)

वह तुम्हारे लिये कुछ देने को आया है । सहायक वस्त्र देगा । हम उसके समीप में पढ़ने को नहीं जायंगे । वे सब हमारे समीप में पढ़ने को नहीं आये

हैं । क्या तुम उन का पुस्तक नहीं दोगे ? । हम स्वकीय (अपनी) पुस्तक उस के लिये नहीं देंगे । क्या तुम उस के साथ मिलने को जाओगे ? । हम उन से मिलने को नहीं गये । तुम्हारा सुहृद् कब आवेगा । हम मित्र से मिलने को गये । तुम्हारा सुहृद् कौन है ? । वह हमारे साथ नहीं जायगा । उस ने सत्यार्थप्रकाश को पढ़ा है । वह उस के साथ मिलने को नहीं गया है । क्या तुम ने सत्यार्थप्रकाश को नहीं पढ़ा है ? ।

विंशः पाठः ॥

"क्रीड" धातु="खेलना" के भूत, भविष्यत्, वर्तमान और विधि ॥

कर्त्ता,	भूतक्रिया,
सः	अक्रीडत्=वह खेला है
तौ	अक्रीडताम्=वे २ खेले हैं
ते	अक्रीडन्=वे ३ खेले हैं
त्वम्	अक्रीडः=तू खेला है
युवाम्	अक्रीडतम्=तुम २ खेले हो
यूयम्	अक्रीडत=तुम ३ खेले हो
अहम्	अक्रीडम्=मैं खेला हूं
आवाम्	अक्रीडाव=हम २ खेले हैं
वयम्	अक्रीडाम=हम ३ खेले हैं

कर्त्ता	भविष्यत् क्रिया,
सः	क्रीडिष्यति=वह खेलेगा
तौ	क्रीडिष्यतः=वे २ खेलेंगे
ते	क्रीडिष्यन्ति=वे ३ खेलेंगे
त्वम्	क्रीडिष्यसि=तू खेलेगा
युवाम्	क्रीडिष्यथः=तुम २ खेलोगे
यूयम्	क्रीडिष्यथ=तुम ३ खेलोगे
अहम्	क्रीडिष्यामि= मैं खेलूंगा
आवाम्	क्रीडिष्यावः=हम २ खेलेंगे
वयम्	क्रीडिष्यामः=हम ३ खेलेंगे

कर्त्ता	वर्त्तमान क्रिया,
सः	क्रीडति=वह खेलता है
तौ	क्रीडतः=वे २ खेलते हैं
ते	क्रीडन्ति=वे ३ खेलते हैं

इत्यादि,

कर्त्ता	विधिक्रिया,
सः	क्रीडतु,क्रीडतात्=वह खेले
तौ	क्रीडताम्=वे २ खेलें
ते	क्रीडन्तु=वे ३ खेलें
त्वम्	क्रीड, क्रीडतात्=तू खेल
युवाम्	क्रीडतम्=तुम २ खेलो,
यूयम्	क्रीडत=तुम ३ खेलो
अहम्	क्रीडानि=मैं खेलूं,
आवाम्	क्रीडाव=हम २ खेलें
वयम्	क्रीडाम=हम ३ खेलें

इसी प्रकार "हस" धातु "हँसना" के भी रूप, भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान और विधि क्रियाओं के जानने चाहिये । जैसेः—

सः अहसत्=वह हँसा है

इत्यादि

एकविंशः पाठः ॥

"पश्य (दृश्)" धातु="देखना " के भूतक्रिया आदि ॥

कर्त्ता	भूतक्रिया,
सः	अपश्यत्=उसने देखा,
तौ	अपश्यताम्=उन २ ने देखा
ते	अपश्यन्=उन ३ ने देखा
	इत्यादि

कर्त्ता	विधिक्रिया
सः	पश्यतु, पश्यतात्=वह देखे
तौ	पश्यताम्=वे २ देखें,
ते	पश्यन्तु=वे ३ देखें,
त्वम्	पश्य, पश्यतात्=तू देख,
युवाम्	पश्यतम्=तुम २ देखो इत्यादि।

कर्त्ता	भविष्यत् क्रिया
सः	द्रक्ष्यति=वह देखेगा
तौ	द्रक्ष्यतः--वे २ देखेंगे
ते	द्रक्ष्यन्ति=वे ३ देखेंगे
त्वम्	द्रक्ष्यसि=तू देखेगा,
युवाम्	द्रक्ष्यथः=तुम २ देखोगे,
यूयम्	द्रक्ष्यथ=तुम ३ देखोगे,
अहम्	द्रक्ष्यामि=मैं देखूंगा,
आवाम्	द्रक्ष्यावः=हम २ देखेंगे
वयम्	द्रक्ष्यामः=हम ३ देखेंगे,

वर्त्तमानक्रिया—सः पश्यति इत्यादि।

संस्कृत से भाषा बनाओ ॥

नेत्राभ्यां स न पश्यति । अहम् तैः न क्रीडिष्यामि, । त्वं तत्र मां विष्णुमित्रेण सह अपश्यः । अहं त्वा तत्र गत्वा द्रक्ष्यामि । युवाम् बालकैः अक्रीडतम् ? । अहं तु न अक्रीडम् । स अक्रीडत् । यूयं राजगृहं द्रक्ष्यथ न वा ? । स मया क्रीडिष्यति । त्वं मह्यं लेखनीं दास्यसि ? । न अहं तुभ्यं किञ्चित् अपि दास्यामि । पश्य मे ऐश्वर्य्यम् । पश्यत मृगम् ॥

द्वाविंशः पाठः २२ ॥

"लिख" धातु"=लिखना" के भू० भ० वर्त्त० विधि ॥

कर्त्ता	भूतक्रिया
सः	अलिखत्=उस ने लिखा है इत्यादि

कर्त्ता	वर्त्तमानक्रिया
सः	लिखति=वह लिखता है इत्यादि ।

कर्त्ता,	भविष्यक्रिया
सः	लेखिष्यति=वह लिखेगा इत्यादि

कर्त्ता	विधिक्रिया
सः	लिखतु,लिखतात्=वह लिखे इत्यादि

२८० / १२८८   ३३, ८६२

त्रयोविंशः पाठः २३ ॥

"स्मृ" धातु="याद करना" के भू० भ० वर्त्त० विधि ॥

कर्त्ता, भूतक्रिया,	कर्त्ता, भविष्यक्रिया
सः अस्मरत्=उस ने याद किया है इत्यादि	सः स्मरिष्यति=वह याद करेगा इत्यादि
कर्त्ता, वर्तमानक्रिया	**कर्त्ता, विधिक्रिया**
सः स्मरति=वह याद करता है इत्यादि ।	सः स्मरतु,स्मरतात्=वह याद करे इत्यादि

चतुर्विंशः पाठः २४ ॥

सः सूक्ष्माणि अक्षराणि पश्यति=वह बारीक अक्षरों को देखता है । तौ वृथा क्रीडतः=वे २ वृथा खेलते हैं । ते किं लिखन्ति ?=वे क्या लिखते हैं ? । त्वं मातरं स्मरसि=तू माता को याद करता है । युवाम् किं पश्यथः ?=तुम २ क्या देखते हो ? । यूयम् वृथा क्रीडथ=तुम वृथा खेलते हो । अहम् सारस्वतम् लिखामि=मैं सारस्वत लिखता हूं । आवाम् स्वं पाठं स्मरावः=हम २ अपने पाठ को याद करते हैं । वयम् त्वाम् न पश्यामः=हम तुम को नहीं देखते हैं । सः न अक्रीडत्=वह नहीं खेला है । तौ लिखतः=वे २ लिखते हैं । ते पितरम् न स्मरन्ति=वे पिता को नहीं याद करते । त्वम् तं न अपश्यः=तूने उस को नहीं देखा है । युवाम् न अक्रीडतम्=तुम २ नहीं खेले हो । यूयम् किम् अलिखत?=तुम ने क्या लिखा है ? । अहम् आचार्य्यम् अस्मरम्=मैंने गुरु को याद किया है । आवाम् इन्द्रप्रस्थम् अपश्याव=हम २ ने दिल्ली को देखा है । वयम् न अक्रीडाम=हम नहीं खेले हैं ॥

संस्कृत से भाषा बनाओ ॥

स सायं लेखिष्यति । तौ पाठं न स्मरिष्यतः । ते उत्सवं द्रक्ष्यन्ति । किं त्वं न क्रीडिष्यसि ? । युवाम् मध्यान्हे किं लेखिष्यथः ? । यूयम् भ्रातरं न स्मरिष्यथ ? । अहं समाजं द्रक्ष्यामि । आवाम् न क्रीडिष्यावः । वयम् अष्टाध्यायीं लेखिष्यामः ॥

भाषा से संस्कृत बनाओ ॥

वह पाठ को याद करे । वे २ पुस्तक को देखें । वे न खेलें । तू अष्टाध्यायी

को लिख । तुम २ अपने पाठ को याद करो । तुम ३ तत्सव न देखो । अब मैं न खेलूं । हम २ पुस्तक लिखें । हम ३ पाठ को याद करें ॥

पञ्चविंशः पाठः २५ ॥

निम्नलिखित संस्कृत चिट्ठी, ऐसी रीति से लिखी है कि इस पुस्तक के समस्त आशय वाले पद आजायँ ॥

मित्रवर्य !

अस्माकं भृत्यः युष्माकं समीपे अगच्छत् न वा ? अहम् तुभ्यम् प्रणामं कृत्वा तव यशः श्रुत्वा धन्यवादं दत्वा त्वया प्रेषितं पत्रं पठित्वा आनन्दं मत्वा हर्षम् आदाय तुभ्यं किञ्चित्कष्टं दातुं लिखामि; त्वया सह व्याकरणं पठितुम् आगत्य कञ्चित्कालं तव पार्श्वे स्थास्यामि तदा वर्षचतुष्टयं व्याकरणं पठिष्यामि; अहं च वेदपर्य्यन्तं पठितुं, तेषां पारं गन्तुं, तेन ब्रह्म ज्ञातुं, गुरुकुले स्थातुं, पण्डितैः शास्त्रार्थं कर्त्तुं, सत्यं मन्तुम्, अविद्यां मार्ष्टुं, ब्रह्म लोकहितं च चिन्तयितुं, धार्म्मिकैः सङ्गन्तुं, सत्पुरुषेषु आस्तुं, दुर्जनेभ्यः दूरे स्थातुं, अधार्म्मिकान् जेतुम्, इच्छामि; यदि यूयं आशिषो दास्यथ तर्हि स्वनेत्राभ्यां तत्सर्वं द्रक्ष्यामि, वेदार्थान् लेखिष्यामि, शास्त्रविचारे क्रीडिष्यामि, परं ब्रह्म स्मरिष्यामि-इति-आश्विनकृष्णाऽष्टम्यां सोमे संवत् १९४७ वि० ॥

भवन्मित्रवर्यः

भवदत्तः

इति

पुस्तकों की सूची ॥

ऐसा और इतना संक्षेप से अब तक कोई नहीं छपा !

"ऋग्वादिभाष्यभूमिकेन्दुपरागे द्वितीयोंऽशः"

शब्दप्रमाण द्वारा "मन्त्र ब्राह्मण दोनों वेद हैं वा क्या" ? इत्यादि का निर्णय ७१ प्रमाणों से किया है । इस में अथर्ववेद, तैत्तिरीय, शतपथब्रा०, साङ्ख्य, आपस्तम्ब, प्रातिशाख्य, कात्यायन, बौधायन, परिशिष्ट, मीमांसा, मनुस्मृति, ऐतरेय ब्रा०, अष्टाध्यायी, महाभाष्य, कौशिकसूत्र, अमरकोश, लघुशब्देन्दुशेखर, निरुक्त, सायणभाष्य, ऋग्वेद, यजुर्वेद, वेदान्तसूत्र, न्यायदर्शन, तैत्तिरीय आरण्यक, पिङ्गलसूत्र, चरणव्यूह, न्यायविस्तर इन २७ ग्रन्थों से बहुत से प्रमाण संग्रह करके पं० तुलसीराम स्वामी ने बनाया -)॥ प्रथमोंऽशः -)॥

संस्कृत ग्रेमेटिकल प्राइमर ॥

बिना गुरु के संस्कृत सिखाती है--संस्कृत का प्रथम पुस्तक)॥ द्वितीय -)। तृतीय में अब की वार छपाने में सन्धि का विषय बढ़ाया गया है मूल्य घटाया =)॥ चतुर्थ भी तैयार हो रहा है ॥ प्रश्नोत्तरशतक (आर्य्यधर्म पर) =) प्रब-न्धार्कोदय ।-) शिक्षाध्याय)॥ आयुर्वेदशब्दार्णवकोष ॥=) यमयमीसूक्त पादरी विलियम आदि के दिये दूषणों से उद्धारपूर्वक अर्थ संस्कृत तथा भाषा =) भजनेन्दु -) शास्त्रार्थ किराणा =) रामायण का आल्हा पहली लड़ाई)। अष्टाध्यायी ≡) भर्तृहरिनीतिशतक भाषा टीका ≡) गणरत्नमहोदधि कोष १॥) मनुभाष्यभूमिका १॥) "तारीखदुनियां" (नागरी) संसार की उत्पत्ति को कितने वर्ष हुये ज्ञात होता है =) यज्ञोपवीतशं० -) फ़ने तमाशबीनी (उर्दू) (वेश्यागामियों की दुर्दशा दिखाई है =)॥ यही नागरी में ।)॥ कुमारीभूषण -) उपनिषद् संस्कृत और भाषाटीका ईश ≡) केन ।) कठ ॥।) प्रश्न ॥=) मुण्डक ॥।) माण्डूक्य ≡) तैत्तिरीय ॥।) ये सात उप निषद् भिन्न २ तौ ३॥) के हैं परन्तु सातों इकट्ठे ३) में । विदुरनीति =) दशोप निषद् ।-) जीवनयात्रा ४ आश्रमों के धर्म हैं ≡) सीताचरित्र नावल नागरी (प्रथम भाग) ॥।) उर्दू में चारों भाग १॥।) प्रति भाग ॥) दमयन्तीस्वयंवरना-टक ≡) ये दोनों नये छपे हैं ॥

इकट्ठे पुस्तक लेने वालों को ४) में ५) के, ७) में १०) के, २०) में ३०) के और ५०) में १००) के पुस्तक मिलेंगे ।

पता-पं० छुट्टनलाल स्वामी परीक्षितगढ़ (जि० मेरठ)

ओ३म् ॥

संस्कृत-भाषा-तृतीयं पुस्तकम् ॥

परीक्षितगढ़ (ज़िला मेरठ) निवासि—
स्वामि-तुलसीराम-शर्म्म-विरचितम् ॥

A

SANSKRIT-
GRAMMATICAL PRIMER.

THIRD PART, III

BY

Pundit Tulsi Ram Sharma, Parichatgarh District Meerut

Printed at the Saraswati Press Allahabad.

संवत् १९५२ ता० ७।९।९५

Second Edition
1000 Copies.

द्वितीयवार १०००
मूल्य =)॥।

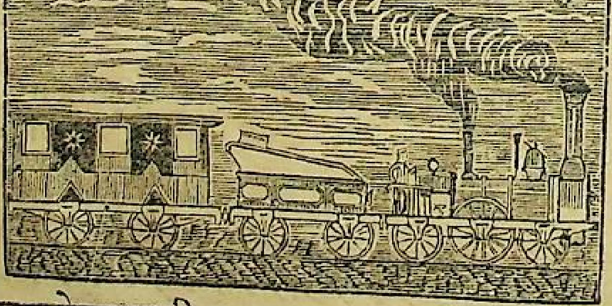
ओ३म्

भूमिका

इस पुस्तक में सामान्यतया व्याकरण का सुबन्तप्रकरण इसलिये पूरा कर दिया है कि अब केवल कारक समास और तद्धित तथा बड़ा प्रकरण तिङन्त रहा है सो चतुर्थपुस्तक में संक्षेप से उस को भी लिख देने का विचार है। प्रथमबार सन्धि विषय में कई सन्धि छूट गई थीं इस बार वे भी सम्मिलित कर दी हैं। जब कि चारों भाग छपकर तैयार हो जावेंगे तब एक छोटासा संस्कृतव्याकरण पूरा हो जायगा। प्रथमबार की छपी १५०० पुस्तकों के इतना शीघ्र बिक जाने के कारण मैंने अपने परिश्रम को सफल समझा और विदित हुआ कि पाठकवर्ग इस पुस्तक को उपयोगी समझते हैं। सो चारों भाग पढ़ने पर निश्चय है कि उन को घर बैठे संस्कृत समझने और लिखने तथा बोलने की शक्ति हो जावेगी। चतुर्थभाग छपना आरम्भ होगया॥

और प्रथम पुस्तक ४००० कापी छपीं थीं सो सब समाप्त हुईं अब चतुर्थवार छपी है॥ इति॥

तुलसीराम स्वामी



रेलगाड़ी

अथ

संस्कृत-भाषा-तृतीयं-पुस्तकम् ॥

(१)-जब इ, उ, ऋ, लृ, वर्णों से कोई स्वर परे होता है तो उक्त चारों वर्णों के स्थान में क्रम से य् व् र् और ल् ये आदेश किये जाते हैं ॥

(२)-जो किसी वर्ण के स्थान में दूसरा वर्ण बनाया जाता है तो उसे "आदेश" कहते हैं ॥ उदाहरण, जैसेः-दधि+ओदनम्=दध्योदनम् यहां इ को य्। और मधु+अत्र=मध्वत्र यहां उ को व्। और पितृ+अर्थः=पित्रर्थः यहां ऋ को र्। और लृ+इत=लित् यहां लृ को ल् होता है ॥

(३)-जब ए ओ ऐ औ से परे कोई स्वर होता है तब उक्त चारों वर्णों को अय् अव् आय् और आव् ये आदेश क्रम से होते हैं। जैसेः-ने+अनम्=नयनम्। भो+अति=भवति। नै+अकः=नायकः। पौ+अकः=पावकः ॥

(४)-परन्तु जब एक पद के अन्त में ए या ओ होते हैं और इन से आगे ह्रस्व अ होता है तब अ का लोप हो जाता है ॥

(५)-जिस शब्द के अन्त में विभक्ति हो उस (विभक्तिसहित) को पद कहते हैं ॥

६-अ इ उ ऋ लृ ह्रस्व, और आ ई ऊ ॠ ए ओ ऐ औ दीर्घ और अ ३, इ ३, उ ३, ऋ३, लृ ३, ए ३, ओ ३, ऐ ३, औ ३, ये प्लुत कहाते हैं ॥

उदाहरण (देखो संख्या ४) जैसेः-ते+अत्र=तेऽत्र। पटो+अत्र=पटोऽत्र ॥

७-अ वर्ण से इ वर्ण मिल के दोनों को ए होता है और अ वर्ण से उ वर्ण मिल के दोनों को ओ आदेश होता है। जैसेः-उप+इन्द्रः=उपेन्द्रः। सूर्य्य+उदयः=सूर्य्योदयः ॥

८-परन्तु जहां २ हमने वर्ण शब्द कहा है वहां २ ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत तीनों समझने चाहिये। जैसेः-संख्या ७ में अवर्ण कहने से अ, आ अ ३, और इवर्ण कहने से इ, ई, इ ३, समझे जाते हैं और संख्या १ में भी इ, उ, ऋ, लृ कहने से ह्रस्व दीर्घ प्लुत तीनों समझे जाते हैं। उदाहरण संख्या ७ का जैसेः-गङ्गा+उद-

कम्=गङ्गोदकम् । ईश्वर+ऊतिः=ईश्वरोतिः । अम्बा+इन्द्रः=अम्बेन्द्रः । देव+ईशः=देवेशः । उदाहरण संख्या १ में जैसेः-लक्ष्मी+आगमनम्=लक्ष्म्यागमनम् । वधू+आसनम्=वध्वासनम् इत्यादि जानो। प्लुत को ११ नियम से सन्धि का निषेध है॥

९-अ, आ, अ ३, ये तीनों आपस में सवर्ण कहाते हैं और इ, ई, इ ३ इत्यादि समस्त स्वरों के ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत तीनो भेद सवर्ण कहाते हैं॥

१०-जब अ इ उ ऋ वर्णों से कोई इन का ही सवर्ण स्वर परे हो तब दोनों को मिल के एक दीर्घ आदेश होता है जैसेः-दैत्य+अरिः=दैत्यारिः श्री+ईशः=श्रीशः । भानु+उदयः=भानूदयः । होतृ+ऋकारः=होतृकारः ॥

११-जब किसी सम्बोधनान्त (दूर से बुलाने) में स्वर हो तो वह प्लुत होता है और प्लुत को अगले स्वर से सन्धि नहीं होती । जैसे-देवदत्त ३ एहि । यहां अ ३+ए को मिल कर ऐ नहीं होता इसी प्रकार पुत्र ३ इति इत्यादि ॥

१२-स और तवर्ग को श और चवर्ग क्रम से होता है यदि श और चवर्ग से मेल हो तो । जैसे-रामस्+चिनोति=रामश्चिनोति । सत्+चित्=सच्चित् । राजन्+जय=राजञ्जय । समिध्+चीयते=समिच्चीयते इत्यादि ॥

१३-स और तवर्ग को क्रम से ष और टवर्ग आदेश होते हैं यदि ष और टवर्ग से मेल हो तो। जैसे—तत्+टीका=तट्टीका । तत्+टीकते=तट्टीकते । अग्निमथ्+टङ्कारः=अग्निमट्टङ्कारः । उद्+टङ्कनम्=उट्टङ्कनम् । टित्+ढाणञ्=टिड्ढाणञ् । पेष्+ता=पेष्टा । शिष्+तः=शिष्टः इत्यादि ॥

१४-पद के अन्त में य व ल ञ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ च ट त क प आदि से परे ङ ञ, ण, न, म, हों तो पूर्वोक्त अक्षरों में जो जिस वर्ग का हो उस को उसी वर्ग का अनुनासिक* अक्षर प्रायः आदेश होता है। जैसे-एतद्+मुरारिः=एतन्मुरारिः। यहां तवर्ग के द् को म परे है इसलिये तवर्ग का अनुनासिक न् होता है । तत्+मात्रम्=तन्मात्रम् । चित्+मयम्=चिन्मयम् इत्यादि ॥

१५-तवर्ग से लकार परे हो तो उस को भी लकार ही हो जाता है । जैसे-तत्+लयः=तल्लयः। विद्वान्+लिखति=विद्वाँल्लिखति न् को अनुनासिक लँ हुवा॥

१६-च ट त क प को ज ड द ग ब आदेश होते हैं यदि स्वर वा हयवरल ञ ढ घ घ भ ज ड द ग ब परे हों। जैसे-अच्+अन्तः=अजन्तः । षट्+अत्र=षडत्र । तत्+अत्र=तदत्र । वाक्+यथा=वाग्यथा । ककुप्+ऐन्द्री=ककुबैन्द्री । वाक्+वज्रम्=वाग्वज्रम् इत्यादि ॥

* जो नाक में बोले जाते हैं जैसे ङ, ञ, ण, न, म, आदि ।

१७–किसी वर्ग के दूसरे तीसरे चौथे अक्षरों को उन २ का पहला अक्षर आदेश होता है यदि ख फ छ ठ थ च ट त क प परे हों तो। जैसे–उद्+थानम्=उत्थानम्। यहां तवर्ग का तीसरा द् वर्ण है उस को पहिला त् आदेश हुआ। त्वग्+तत्र=त्वक्तत्र। इत्यादि॥

१८—यदि किसी वर्ग के प्रथम द्वितीय तृतीय वा चतुर्थ वर्ण से ह् परे हो तो ह् को उसी वर्ग का चतुर्थ अक्षर आदेश होता है। जैसे वाक्+ह्रासः=वाग्घ्रासः। यहां ह् को कवर्ग का चतुर्थ घ् आदेश होकर १६ नियम के अनुसार क् को ग् होगया। ऐसे ही–त्वच्+हीनः=त्वज्झीनः। षट्+हसन्ति=षड्ढसन्ति। तत्+हविः=तद्धविः। ककुप्+हासः=ककुब्भासः। इत्यादि॥

१९–झ भ घ ढ ध ज ब इत्यादि से परे श् को छ आदेश होता है यदि कोई स्वर वा ह य व र ल न ङ म परे हों। जैसे–तच्+शिवः=तच्छिवः इत्यादि॥

२०–यदि अनुस्वार से पांचों वर्गों में से किसी वर्ग का अक्षर परे हो तो उस अनुस्वार को उसी वर्ग का पांचवां अक्षर आदेश होता है। जैसे–त्वं+करोषि=त्वङ्करोषि। यहां अनुस्वार को कवर्ग परे है इसलिये कवर्ग का पञ्चम ङ् होकर ककार में मिल गया। इसी प्रकार त्वं+तनोषि=त्वन्तनोषि। इत्यादि॥

२१–यदि ह्रस्व स्वर से परे ङ् ण् न् हों और इन से परे स्वर हो तो इन को द्वित्व होता है। जैसे सुगण्+इह=सुगण्णिह। राजन्+इह=राजन्निह। प्रत्यङ्+आत्मा=प्रत्यङ्ङात्मा इत्यादि॥

२२–जब थ, त और स परे हों तब विसर्ग (:) को स् होता है। जैसेः–रामः+थं वदति=रामस्थं वदति। देवः+तिष्ठति=देवस्तिष्ठति। यज्ञदत्तः+सनोति=यज्ञदत्तस्सनोति। इत्यादि॥

२३–यदि विसर्ग से ट ठ और ष परे हों तो विसर्ग को ष् आदेश होता है। जैसेः–रामः+टीकते=रामष्टीकते। बालः+ठं पठति=बालष्ठं पठति। कः+षण्ढः=कष्षण्ढः। कः+षष्ठः=कष्षष्ठः इत्यादि॥

२४–यदि च छ और श परे हों तो विसर्ग को श् होता है। जैसेः–हरिः+चन्द्रः=हरिश्चन्द्रः। धनुः+छत्रे=धनुश्छत्रे। शंभुः+शङ्कते=शंभुश्शङ्कते। इत्यादि।

२५–यदि व्यञ्जन परे हो तो म् को अनुस्वार (ं) होता है। जैसेः—

त्वम्+तिष्ठसि=त्वं तिष्ठसि । आवाम्+गच्छावः=आवां गच्छावः । यूयम्+क्रीडथ=यूयं क्रीडथ । वयम्+दास्यामः । वयं दास्यामः। धर्मानुकूलम्+धनम्+देहि=धर्मानुकूलं धनं देहि । हरिम्+वन्दे=हरिं वन्दे इत्यादि ॥

२६–यदि अकार से परे के विसर्ग को अ ही परे हो तो उ होता है । जैसेः–रामः+अर्च्यः=राम+उ+अर्च्यः, इस में संख्या ७ से अ+उ को ओ होकर रामो+अर्च्यः, फिर संख्या ४ से अ का लोप होकर रामोऽर्च्यः ॥

२७–यदि ह, य, व, र, ल, न, म, झ, ढ, ध, घ, भ, ज, ड, द, ग, ब, परे हों तो अः को ओ होता है । जैसेः–चौरः+हरति=चौरो हरति । नरः+याति=नरो याति । अश्वः+रंहति=अश्वो रंहति । वायवः+वान्ति=वायवो वान्ति । कः+लोकः=को लोकः । शिष्यः+नमति=शिष्यो नमति । रुग्णः+म्रियते=रुग्णो म्रियते । वातः+झनझनायति=वातो झनझनायति । कः+ढौकते=को ढौकते । धर्मः+धरति=धर्मो धरति । इन्द्रः+घटते=इन्द्रो घटते । पण्डितः+भवति=पण्डितो भवति । परमेश्वरः+जानाति=परमेश्वरो जानाति । शोभनः+डमरुः=शोभनो डमरुः । देवदत्तः+दास्यति=देवदत्तो दास्यति । दूतः+गमिष्यति=दूतो गमिष्यति । दुष्टः+बाधते=दुष्टो बाधते । इत्यादि ॥

२८–यदि इ, उ, ए, ओ, ऐ, औ, वर्णों से परे विसर्ग हो और विसर्ग से कोई स्वर वा ह, य, व, ल, न, म, झ, ढ, ध, घ, भ, ज,ड, द, ग, ब, ये वर्ण परे हों तो विसर्ग को र् होता है । जैसे–शत्रुः+हतः=शत्रुर्हतः । हरिः+याति=हरिर्याति । हरेः+वचनम्=हरेर्वचनम् । बाह्वोः+लम्बः=बाह्वोर्लम्बः । देवैः+नमस्यः=देवैर्नमस्यः । गौः+गच्छति=गौर्गच्छति । कपिः+मृतः=कपिर्मृतः । वायुः+झञ्झा=वायुर्झञ्झा । शंभुः+ढौकते=शंभुर्ढौकते । वायुः+धरति=वायुर्धरति । इन्दुः+उदेति=इन्दुरुदेति । पत्युः+भार्य्या=पत्युर्भार्य्या । विष्णुः+जागर्त्ति=विष्णुर्जागर्त्ति । शंभोः+डमरुः=शंभोर्डमरुः । पत्युः+दयिता=पत्युर्दयिता । कपेः+गर्जनम्=कपेर्गर्जनम् । पादयोः+बन्धः=पादयोर्बन्धः । इत्यादि ।

२९–यदि सः और एषः से व्यञ्जन परे हो तो विसर्ग का लोप होजाता है । जैसे–सः+गच्छति=स गच्छति । एषः+क्रीडति=एष क्रीडति । इत्यादि ॥

३०–सन्धि उस को कहते हैं जो वर्ण वा पद आपस में मिलकर बोले जाते और उन में जो आदेशादि होते हैं । और वह सन्धि इस नियम से होता है–

संहितैकपदे नित्या, नित्या धातूपसर्गयोः ॥
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते ॥ १ ॥

अर्थः–एक पद में और धातु+उपसर्ग में और समास में सन्धि नित्य अर्थात् अवश्य होता है। और जब पद २ मिलकर वाक्य बनता है तब वक्ता के आधीन है। यह संक्षेप से सन्धि का प्रकरण पूरा हुआ ॥

अब अकारान्तादि क्रम से पुँल्लिङ्गवाचक शब्दों के सात विभक्तियों और सम्बोधन के रूप दिखलाते हैं–

३१–जिस शब्द का कुछ अर्थ हो परन्तु वह केवल धातु वा प्रत्यय न हो वह प्रातिपदिक कहलाता है ॥

३२–प्रातिपदिक से आगे सात विभक्तियां होती हैं। अकारान्त "राम" शब्द की सात विभक्तियों का वर्णन "संस्कृत भाषा द्वितीय पुस्तक" में लिख आये हैं उसी रीति से समस्त अकारान्त शब्दों के रूप होते हैं। परन्तु सर्वनाम संज्ञक शब्दों के रूपों में भेद हैः–

३३–सर्व, विश्व, उभ, उभय, अन्य, अन्यतर, इतर, डतरप्रत्ययान्त, डतमप्रत्ययान्त, सम, सिम, नेम, एक, पूर्व, पर, अवर, दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर, स्व, अन्तर, त्यद्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस्, द्वि, किम्, युष्मद्, अस्मद्, भवत्। ये ३३ प्रातिपदिक सर्वनाम कहाते हैं। इन में से सर्व (सब):–

प्रथमा विभक्ति	एकवचन–सर्वः=सब, सब ने
	द्विवचन–सर्वौ= * २ सब, २ सबों ने
	बहुवचन–सर्वे= * ३ सब, ३ सबों ने
द्वितीया वि०	एकवचन–सर्वम्=सब को
	द्विवचन–सर्वौ=२ सबों को
	बहुवच०–सर्वान्=३ सबों को
तृतीया वि०	एकव०–सर्वेण=सब ने, से, के साथ
	द्विव०–सर्वाभ्याम्=२ सबों ने, से, "
	बहुव०–सर्वैः=३ सबों ने, से, "

* आगे २ अङ्क से द्विवचन और ३ अङ्क से दो से अधिक समझो ॥

चतुर्थी वि०	१ व०—सर्वस्मै=सब के लिये २ व०—सर्वाभ्याम्=२ सबों के लिये ३ बहुव०—सर्वेभ्यः=३ सबों के लिये
पञ्चमी वि०	१ व०—सर्वस्मात्=सब से २ व०—सर्वाभ्याम्=२ सबों से ३ व०—सर्वेभ्यः=३ सबों से
षष्ठी वि०	१ व०—सर्वस्य=सब का, के, की २ व०—सर्वयोः=२ सबों का, के, की ३ व०—सर्वेषाम्=३ सबों का, के, की
सप्तमी वि०	१ व०—सर्वस्मिन्=सब में, पै, पर २ व०—सर्वयोः=२ सबों में, पै, पर ३ व०—सर्वेषु=३ सबों में, पै, पर
सम्बोधन में प्रथमा वि०	१ हे सर्व=हे सब २ हे सर्वौ=२ सबो ३ हे सर्वे=३ हे सबो — सम्बोधन हे शब्द के बिना भी होता है ॥

अकारान्त सर्वनाम "विश्व=सब शब्द"

१*	१ विश्वः २ विश्वौ ३ विश्वे	४	विश्वस्मै विश्वाभ्याम् विश्वेभ्यः	७	विश्वस्मिन् विश्वयोः विश्वेषु
२	१ विश्वम् २ विश्वौ २ विश्वान्	५	विश्वस्मात् विश्वाभ्याम् विश्वेभ्यः	सम्बो-धन १	हे विश्व हे विश्वौ हे विश्वे
३	१ विश्वेन २ विश्वाभ्याम् ३ विश्वैः	६	विश्वस्य विश्वयोः विश्वेषाम्		अर्थ—सर्व शब्द के समान जानो ।

"उभ=दोनों" सर्वनाम से सब विभक्तियों के केवल द्विवचन ही आते हैं। जैसेः—

१ उभौ=दोनों, ने
२ उभौ=दोनों को
३ उभाभ्याम्=दोनों ने, से, के साथ
४ उभाभ्याम्=दोनों के लिये
५ उभाभ्याम्=दोनों से
६ उभयोः=दोनों का, के, की
७ उभयोः=दोनों में, पै, पर
सम्बोधन १ हे उभौ=हे दोनो

*१,२,३,४,५,६,७ ये अङ्क पुस्तक भर में प्रथमा द्वितीयादि विभक्तियों के हैं ॥

अन्य शब्द (और वा दूसरा)

१	अन्यः=और वा दूसरा अन्यौ= २ और वा दूसरे अन्ये= ३ और वा दूसरे	५	अन्यस्मात् अन्याभ्याम् अन्येभ्यः
२	अन्यम्=और को, वा दूसरे को अन्यौ=और दोनों को, वा दूसरों को अन्यान्=और सब को, वा दूसरों को	६	अन्यस्य अन्ययोः अन्येषाम्
३	अन्येन=और से, के साथ अन्याभ्याम्=और दोनों से, के साथ अन्यैः=और सबों से, के साथ	७	अन्यस्मिन् अन्ययोः अन्येषु
४	अन्यस्मै अन्याभ्याम् अन्येभ्यः — पूर्व शब्दों के तुल्य ही विभक्त्यर्थ जानने चाहिये ॥	सम्बोधन	हे अन्य हे अन्यौ हे अन्ये

उभय शब्द (बहुतों वा एक के दो भाग) सर्वनाम से सब विभक्तियों के केवल एकवचन और बहुवचन होते हैं, द्विवचन नहीं होता । जैसेः—

१	१—उभयः ३—उभये	४	१—उभयस्मै ३—उभयेभ्यः	७	१—उभयस्मिन् ३—उभयेषु
२	१—उभयम् ३—उभयान्	५	१—उभयस्मात् ३—उभयेभ्यः	१	१—हे उभय ३—हे उभये
३	१—उभयेन ३—उभयैः	६	१—उभयस्य ३—उभयेषाम्		सम्बोधन प्रथमा विभक्ति के तुल्य जानो ॥

अन्यतर शब्द (कोई एक)—

१	अन्यतरः=कोई एक अन्यतरौ=कोई दो अन्यतरे=कोई सब	२	अन्यतरम्=किसी एक को अन्यतरौ=किन्हीं दो को अन्यतरान्=किन्हीं सब को
३	अन्यतरेण=किसी एक ने, के साथ अन्यतराभ्याम्=किन्हीं दो ने, के साथ अन्यतरैः=किन्हीं सब ने, के साथ	४	अन्यतरस्मै=किसी एक के लिये अन्यतराभ्याम्=किन्हीं दो के लिये अन्यतरेभ्यः=किन्हीं सब के लिये
५	अन्यतरस्मात् इसी प्रकार पञ्चमी अन्यतराभ्याम् षष्ठी वा सप्तमी के अन्यतरेभ्यः रूपों के अर्थ जानो	६	अन्यतरस्य अन्यतरयोः अन्यतरेषाम्
७	अन्यतरस्मिन् अन्यतरयोः अन्यतरेषु		

इसी प्रकार "इतर" (दूसरा) "कतर," "कतम" (कौनसा) "सम" (सब) और "एक" शब्द के रूप तथा अर्थ, जानो ॥

उदाहरण, जैसेः—

सर्वो जनः चन्द्रं पश्यति=सब लोग चांद को देखता है। मया सर्वे गमिष्यन्ति=मेरे साथ सब जायंगे। अहं सर्वान् पाठयामि=मैं सब को पढ़ाता हूं। तैः सर्वैरध्ययनं कृतम्=उन सबों ने पढ़लिया। यजमानः सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो धनं ददाति=यजमान सब ब्राह्मणों के लिये धन देता है। सर्वेभ्यो याचनं वरं नास्ति=सब से मांगना अच्छा नहीं है। सर्वेषां पश्य पराक्रमम्=सबों का पराक्रम देख। सर्वस्मिन् ग्रामे मूर्खा वसन्ति=सब ग्राम में मूर्ख बसते हैं। हे सर्वे यूयं नाट्यं न पश्यत=हे सबो तुम नांच मत देखो। विश्वे देवाः पश्यत यूयम्=हे सब देवताओ तुम देखो। विश्वेभ्यो जनेभ्यः शुभं चिन्तनीयम्=सब लोगों के लिये भलाई सोचनी चाहिये। विश्वे भद्राणि पश्यन्तु=सब, सुखों को देखें। उभौ विद्यासम्पन्नौ भवतः=दोनों विद्यायुक्त हैं। इदम् अन्येषां गृहम्=यह औरों का घर। द्वयोरन्यतरः पण्डितोऽस्ति=दोनों में कोई एक पण्डित है। युष्मास्वन्यतरेण भुक्तम्=तुम सब में किसी एक ने खालिया। सोऽस्मदितरः पुरुषोऽस्ति=वह हम से दूसरा पुरुष है। युष्मासु कतमः शूरोऽस्ति=तुम में कौनसा शूर है। अस्मासु कतरस्मै दास्यसि द्रव्यम्=तू हम में कौन से के लिये द्रव्य देगा। यः पण्डितोऽस्ति तस्मै दास्यामि=जो पण्डित है उस के लिये दूंगा ॥

३४—पूर्व, पर, अवर, दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर, स्व, अन्तर इन ९ सर्वनामों के प्रथमा विभक्ति के बहुवचन और पञ्चमी तथा सप्तमी के एकवचन में दो दो रूप होते हैं। अन्य सब रूप सर्व शब्द के तुल्य हैं। जैसेः—

प्रथमा बहुवचन।

पूर्वे, पूर्वाः=पहिले सब	उत्तरे, उत्तराः=बांयें सब
परे, पराः=अगले सब	अपरे, अपराः=दूसरे सब
अवरे, अवराः=उरले सब	अधरे, अधराः=नीचे के सब
दक्षिणे, दक्षिणाः=दहिने सब	स्वे, स्वाः=अपने सब
	अन्तरे, अन्तराः=भीतर वा बाहर के सब

स पूर्वेषां कीर्त्तिं श्रुत्वा हृष्टो भवति=वह पहलों की कीर्त्ति को सुन कर प्रसन्न होता है। तेऽस्मत् परे भवन्ति=वे हम से अगले हैं। अवरस्य वाक्यं न श्रूयते=उरले का वचन नहीं सुना जाता है।

पञ्चमी का एक वचन–	सप्तमी का एक वचन—
पूर्वस्मात्, पूर्वात्=पहिले से	पूर्वस्मिन्, पूर्वे=पहिले में
परस्मात्, परात्=परले से	परस्मिन्, परे=परले में
अवरस्मात्, अवरात्=उरले से	अवरस्मिन्, अवरे=उरले में
दक्षिणस्मात, दक्षिणात्=दहिने से	दक्षिणस्मिन्, दक्षिणे=दहिने में
उत्तरस्मात्, उत्तरात्=बांयें से	उत्तरस्मिन्, उत्तरे=बांयें में
अपरस्मात्, अपरात्=दूसरे से	अपरस्मिन्, अपरे=दूसरे में
अधरस्मात्, अधरात्=नीचे के से	अधरस्मिन्, अधरे=नीचे के में
स्वस्मात्, स्वात्=अपने से	स्वस्मिन्, स्वे=अपने में
अन्तरस्मात्, अन्तरात्=बाहरी वा भीतरी से	अन्तरस्मिन्, अन्तरे=बाहरी वा भीतरी में

३५–प्रथम, चरम, तय, अल्प, अर्द्ध, कतिपय, और नेम शब्द के प्रथमा विभक्ति के बहुवचन में दो २ रूप होते हैं। जैसे:—

१–प्रथमाः, प्रथमे=पहिले सब।
१–चरमाः, चरमे=पिछिले सब।
१–द्वितयाः, द्वितये=दो प्रकार के सब
१–अल्पाः, अल्पे=थोड़े सब।
१–अर्द्धाः, अर्द्धे=आधे सब।
१–कतिपयाः, कतिपये=कुछ वा कितने ही सब।

शेष रूप राम शब्द के सदृश होते हैं॥

नेमाः, नेमे=आधे सब।

शेष नेम शब्द के रूप सर्व शब्द के तुल्य जानो क्योंकि नेम शब्द की सर्वनाम संज्ञा कह चुके हैं॥

३६–जिन शब्दों के अन्त में तीय (प्रत्यय) है उन के चतुर्थी पञ्चमी और सप्तमी के एकवचनों में दो २ रूप होते हैं। जैसे:—

४ { द्वितीयस्मै, द्वितीयाय=दूसरे के लिये
तृतीयस्मै, तृतीयाय=तीसरे के लिये }

५ { द्वितीयस्मात्, द्वितीयात्=दूसरे से
तृतीयस्मात्, तृतीयात्=तीसरे से }

७ { द्वितीयस्मिन्, द्वितीये=दूसरे में
तृतीयस्मिन्, तृतीये=तीसरे में

३७—"निर्जर" (देवता) शब्द के रूपों में भी भेद है। जैसे:—

१	१ निर्जरः=देवता। २ निर्जरौ, निर्जरसौ ३ निर्जराः, निर्जरसः	५	१ निर्जरात्, निर्जरसः २ निर्जराभ्याम्=२ देवतों से ३ निर्जरेभ्यः=३ देवतों से
२	१ निर्जरम्, निर्जरसम् २ निर्जरौ, निर्जरसौ ३ निर्जरान्, निर्जरसः	६	१ निर्जरस्य, निर्जरसः २ निर्जरयोः, निर्जरसोः ३ निर्जराणाम्, निर्जरसाम्
३	१ निर्जरेण, निर्जरसा २ निर्जराभ्याम् ३ निर्जरैः=देवतों ने	७	१ निर्जरे, निर्जरसि २ निर्जरयोः, निर्जरसोः ३ निर्जरेषु=३ देवतों में
४	१ निर्जराय, निर्जरसे २ निर्जराभ्याम् ३ निर्जरेभ्यः=	सम्बोधन	१ हे निर्जर=हे देवता २ निर्जरौ, हे निर्जरसौ ३ निर्जराः, हे निर्जरसः

उदाहरणानि:—

निर्जरसां मध्ये प्रथमः परमेश्वरोऽस्ति। युष्मासु कतमश्चरमोऽस्ति। द्वितये युद्धाय गच्छन्ति। अल्पेन पुरुषार्थेन कार्य्याणां सिद्धिरपि अल्पा भवति। अहं पण्डिताय दास्यामि। कतिपयाः वीराः युद्धाय समर्था भवन्ति। नेमं मह्यं देहि। द्वितीयस्माद् गृहात् आगच्छामि। तृतीयस्मिन् गृहे कोऽस्ति। कतिपये निर्जरसः प्रत्यक्षाः न भवन्ति। वायुजलयोः निर्जरसोः कोऽधिकोऽस्ति। उभावपि तुल्यौ भवतः॥

(आकारान्ताः)

आकारान्त "विश्वपा" (सर्वरक्षक, सबकी रक्षा करने वाला) शब्द के रूपः—

१	विश्वपाः विश्वपौ विश्वपाः	३	विश्वपा विश्वपाभ्याम् विश्वपाभिः	५	विश्वपः विश्वपाभ्याम् विश्वपाभ्यः
२	विश्वपाम् विश्वपौ विश्वपः	४	विश्वपे विश्वपाभ्याम् विश्वपाभ्यः	६	विश्वपः विश्वपोः विश्वपाम्

७	विश्वपि विश्वपोः विश्वपासु	सं०	हे विश्वपाः हे विश्वपौ हे विश्वपाः

इसी प्रकार "शंखध्मा" (शङ्ख बजाने वाला) आदि शब्दों के रूप होते हैं। जैसेः—

१—शङ्खध्माः २—शङ्खध्मौ ३—शङ्खध्माः इत्यादि ॥

उदाहरणानि—

विश्वपां जगदीश्वरं स्तुत्वा पाठः कार्यः=सर्वरक्षक परमेश्वर की स्तुति कर के पाठ करना । शङ्खध्माः युद्धे शङ्खान् धमन्ति=शङ्ख बजाने वाले युद्ध में शङ्खों को बजाते हैं । विश्वपा ईश्वरेण सर्वेषां रक्षा कृता=सर्वरक्षक ईश्वर ने सब की रक्षा की । वयं विश्वपः प्रार्थनं कर्त्तुं गच्छामः=हम सर्वरक्षक की प्रार्थना करने को जाते हैं । विश्वपि विश्वे जनाः तिष्ठन्ति=सर्वरक्षक में सब जन ठहरते हैं । इत्यादि ॥

(इकारउकारान्त)

इकारान्त पुँल्लिङ्ग "कवि" शब्द के रूप जैसेः—

१	कविः=कवि "शायर" कवी=२ कवि कवयः=३ कवि	५	कवेः=कवि से कविभ्याम्=२ कवियों से कविभ्यः=३ कवियों से
२	कविम्=कवि को कवी=२ कवियों को कवीन्=३ कवियों को	६	कवेः=का, के, की कव्योः=२ का, के, की कवीनाम्=३ का, के, की,
३	कविना=कवि ने, के साथ कविभ्याम्=२ ने, के साथ कविभिः=३ ने, के साथ	७	कवौ=में, पै, पर कव्योः=२ में, पै, पर कविषु=३ " " "
४	कवये= कवि के लिये कविभ्याम्=२ कवियों के लिये कविभ्यः=३ " "	सं०	हे कवे=हे कवि हे कवी=हे २ कवियो हे कवयः=हे ३ कवियो

उकारान्त "भानु" शब्द के रूप जैसेः—

१	भानुः=सूर्य भानू=२ " भानवः=३ "	३	भानुना=सूर्य ने, के साथ भानुभ्याम्=२ " " भानुभिः=३ " "
२	भानुम्=सूर्य को भानू=२ " को भानून्=३ " को	४	भानवे=सूर्य के लिये भानुभ्याम्=२ " भानुभ्यः=३ "

५	भानोः=सूर्य से भानुभ्याम्=२ " भानुभ्यः=३ "	७	भानौ=सूर्य में, पै, पर भान्वोः=२ " " " भानुषु=३ " " "
६	भानोः=सूर्य का, के, की भान्वोः=२ " " " भानूनाम्–३ " " "	सं०	हे भानो हे भानू हे भानवः

३८–इसी प्रकार हरि, ऋषि, मुनि, गिरि, रवि, कलि, निधि, विधि आदि इकारान्तों और वायु, पायु, मायु, विष्णु, शम्भु, प्रभु, विभु आदि उकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप जानने चाहियें। केवल पति शब्द में इतना भेद है किः–

तृतीया–एकवचन–पत्या=पति ने, के साथ

चतुर्थी–एकव०–पत्ये=पति के लिये

पञ्चमी, षष्ठी–एकव०–पत्युः–पति से, वा का, के, की

सप्तमी–एकवचन–पत्यौ=पति में, पै, पर

३९–शेष सब रूप कवि शब्द के सदृश होते हैं। हां, पति शब्द जब किसी शब्द से मिलकर समास में आता है तो यह भेद नहीं होता किन्तु सभी रूप "कवि„ के तुल्य होते हैं। जैसेः–

भूपतिना (तृ०१) प्रजापतये (चतु०१) गोपतेः (षष्ठी१) गोपतौ (सप्तमी१)

इकारान्त "कति„ शब्द (कितने) के रूप केवल बहुवचन में आते हैं। जैसेः–

१ कति=कितने	५ कतिभ्यः=कितनों से
२ कति=कितनों को	६ कतीनाम्= " का, के, की
३ कतिभिः=कितनो ने, के साथ	७ कतिषु= " में, पै, पर
४ कतिभ्यः=कितनों के लिये	

उदाहरणानिः–

कविः काव्यं करोति=कवि काव्य को बनाता है। हरी क्रीडतः=२ हरि खेलते हैं। ऋषयस्तपश्चक्रुः=सब ऋषि तप करते थे। रामो विश्वामित्रं मुनिं पप्रच्छ=रामचन्द्र ने विश्वामित्र मुनि को पूछा था। द्वौ गिरी कीदृशौ शोभेते=दो पर्वत कैसे सुहाते हैं। किं त्वं रवीन् बहून् मन्यसे?=क्या तू सूर्यों को बहुत से मानता है?। कलिनाऽधर्मो वर्धितः=कलियुग ने अधर्म बढ़ाया है। न कलिरधर्महेतुरस्ति=कलियुग अधर्म–हेतु नहीं है। द्वौ निधी पर्य्याप्तौ=दो

खजाने पूरे हैं। तैर्विधिभिः कार्यं करणीयम्=उन विधियों के साथ कार्य करना चाहिये। वायवे स्वाहा=वायु के लिये आहुति। शम्भुविष्णुभ्यां नमः=शम्भु और विष्णु दोनों के लिये नमस्कार। प्रभुभ्यो नमः=प्रभुओं के लिये नमस्कार। अर्शो-रोगे पायोः रुधिरवर्षा भवति=ववासीर-रोग में गुदा से रुधिरवर्षा होती है। शम्भुविष्णुभ्यां धनुषी गृहाण=शम्भु और विष्णु से २ धनुषों को ग्रहण कर। वायूनां कोपः=वायुओं का क्रोध। ज्वरकारके मायौ पर्पटस्य क्राथं पिबेत्=ज्वरकारक पित्त में पितपापड़े का क्राथ (काढ़ा) पीवे। मायुवाय्वोर्महद्बलम्=पित्त वायुवों का बड़ा बल है। कविषु चातुर्यं भवति=कवियों में चतुराई होती है। हे हरे! मां रक्ष=हे हरि मुझ को बचा। हे मुनयो! धर्मं ब्रूत=हे मुनियो! धर्म को बताओ। कति छात्राः पठन्ति?=कितने विद्यार्थी पढ़ते हैं?। कतीनां छात्राणां पाठः श्रुतः?=कितने विद्यार्थियों का पाठ सुना। इत्यादि॥

३९-"द्वि" शब्द केवल द्विवचन में आता है। जैसे:—

१	द्वौ=दो	५	द्वाभ्याम्=दोनों से
२	द्वौ=दोनों को	६	द्वयोः=दोनों का, के, की
३	द्वाभ्याम्=दोनों ने, से, के साथ	७	द्वयोः=दोनों में, पै, पर
४	द्वाभ्याम्=दोनों के लिये		सम्बोधन नहीं होता॥

४०-सखि शब्द में बहुत भेद हैं। जैसे:-

१	सखा=मित्र सखायौ=२ " सखायः=३ "	२	सखायम्=मित्र को सखायौ=२ " सखीन्=३ "	३	सख्या=से, ने सखिभ्याम्=२ " सखिभिः= ३ "
४	सख्ये=के लिये सखिभ्याम्=२ " सखिभ्यः=३ "	५	सख्युः=से सखिभ्याम्=२ " सखिभ्यः=३ "	६	सख्युः=का, के, की सख्योः=२ " " सखीनाम्=३ " "
७	सख्यौ=में सख्योः=२ " सखिषु=३ "	सं०	हे सखे हे सखायौ हे सखायः		

"त्रि" शब्द केवल बहुवचन में आता है
१-त्रयः। २-त्रीन्। ३-त्रिभिः।
४-त्रिभ्यः। ५-त्रिभ्यः। ६-त्रयाणाम्।
७-त्रिषु।

उदाहरणानि-

कति छात्रान् पाठयसि=तू कितने विद्यार्थियों को पढ़ाता है। कतिभिः

सखिभिः क्रीडसि=तू कितने मित्रों के साथ खेलता है। सखिभ्यो हितं करणीयम्=मित्रों के लिये हित करना चाहिये। द्वौ सखायौ परस्परं हसतः=दो मित्र आपस में हंसते हैं। सख्यौ विश्वसिहि=मित्र में विश्वास कर। सखीनां वचनं हितकारि भवति=मित्रों का वचन हितकारी होता है। सख्युर्मा बिभीत=मित्र से मत डरो। त्रयाणां भागः=तीनों का भाग॥

४१—ईकारान्त पपी (सूर्य्य) शब्द के रूप। जैसेः—

१	पपीः	३	पप्या	५	पप्यः	७	पपी
	पप्यौ		पपीभ्याम्		पपीभ्याम्		पप्योः
	पप्यः		पपीभिः		पपीभ्यः		पपीषु
२	पपीम्	४	पप्ये	६	पप्यः	सं०	हे पपीः
	पप्यौ		पपीभ्याम्		पप्योः		हे पप्यौ
	पपीन्		पपीभ्यः		पप्याम्		हे पप्यः

इसी प्रकार "वातप्रमी" आदि शब्दों के रूप हैं॥

पपीः उदेति=सूर्य उदय होता है। वातप्रमीं पश्य=वायुमापने वाले को देख। पप्या शुक्रः उदेति=सूर्य्य के साथ शुक्र उदय होता है। वातप्रम्ये पारितोषिकं देयम्=वायुमापक के लिये इनाम देना चाहिये। पप्यः अर्चिषो निस्सरन्ति=सूर्य्य से किरणें निकलती हैं। वातप्रम्यो बुद्धिं पश्य=वायुमापक की बुद्धि को देख॥

१	बहुश्रेयसी	४	बहुश्रेयस्यै	७	बहुश्रेयस्याम्
	बहुश्रेयस्यौ		बहुश्रेयसीभ्याम्		बहुश्रेयस्योः
	बहुश्रेयस्यः		बहुश्रेयसीभ्यः		बहुश्रेयसीषु
२	बहुश्रेयसीम्	५	बहुश्रेयस्याः	सं०	हे बहुश्रेयसि
	बहुश्रेयस्यौ		बहुश्रेयसीभ्याम्		हे बहुश्रेयस्यौ
	बहुश्रेयसीन्		बहुश्रेयसीभ्यः		हे बहुश्रेयस्यः
३	बहुश्रेयस्या	६	बहुश्रेयस्याः		
	बहुश्रेयसीभ्याम्		बहुश्रेयस्योः		
	बहुश्रेयसीभिः		बहुश्रेयसीनाम्		

४२—बहुलक्ष्मी शब्द में केवल प्रथमा विभक्ति के एकवचन में इतना भेद है कि—"बहुलक्ष्मीः" यह विसर्गान्त रूप होता है। शेष सब रूप बहुश्रेयसी के तुल्य होते हैं॥

ईकारान्त "प्रधी" (पण्डित) शब्द के रूप । जैसेः–

१	प्रधीः	३	प्रध्या	५	प्रध्याः	७	प्रध्यि
	प्रध्यौ		प्रधीभ्याम्		प्रधीभ्याम्		प्रध्योः
	प्रध्यः		प्रधीभिः		प्रधीभ्यः		प्रधीषु
२	प्रध्यम्	४	प्रध्यै	६	प्रध्याः	सं०	हे प्रधि
	प्रध्यौ		प्रधीभ्याम्		प्रध्योः		हे प्रध्यौ
	प्रध्यः		प्रधीभ्यः		प्रधीनाम्		हे प्रध्यः

४३–इसी प्रकार ग्रामणी और सेनानी शब्दों के रूप हैं । परन्तु सप्तमी के एकवचन में इतना भेद है किः–ग्रामण्याम् । सेनान्याम् । शेष प्रधीवत् ॥

४४–जिन शब्दों में केवल एक स्वर है उन के रूप भिन्न हैं । जैसेः–

१	नीः	२	नियम्	३	निया	४	निये
	नियौ		नियौ		नीभ्याम्		नीभ्याम्
	नियः		नियः		नीभिः		नीभ्यः
५	नियाः	६	नियाः	७	नियाम्	सं०	हे नीः
	नीभ्याम्		नियोः		नियोः		हे नियौ
	नीभ्यः		नीनाम्		नीषु		हे नियः

४५–"सुश्री" और "यवक्री" आदि शब्दों के रूप भी "नी" शब्द के तुल्य जानो परन्तु "सुश्री" शब्द के सम्बोधन एकवचन में ह्रस्व इकार रहता है । जैसेः– हे सुश्रि ॥

"सुधी" और "शुद्धधी" शब्द भी "सुश्री" शब्द के तुल्य हैं ॥

४६–"क्रोष्टु" शब्द उकारान्त है परन्तु "भानु" शब्द के तुल्य नहीं क्योंकि उस के रूपों में बहुत भेद है । जैसेः–

१	क्रोष्टा	४	क्रोष्ट्रे, क्रोष्टवे	७	क्रोष्टरि, क्रोष्टौ
	क्रोष्टारौ		क्रोष्टुभ्याम्		क्रोष्ट्रोः, क्रोष्ट्वोः
	क्रोष्टारः		क्रोष्टुभ्यः		क्रोष्टुषु
२	क्रोष्टारम्	५	क्रोष्टुः, क्रोष्टोः	सं०	हे क्रोष्टः
	क्रोष्टारौ		क्रोष्टुभ्याम्		हे क्रोष्टारौ
	क्रोष्टून्		क्रोष्टुभ्यः		हे क्रोष्टारः
३	क्रोष्ट्रा, क्रोष्टुना	६	क्रोष्टुः, क्रोष्टोः		
	क्रोष्टुभ्याम्		क्रोष्ट्रोः, क्रोष्ट्वोः		
	क्रोष्टुभिः		क्रोष्टूनाम्		

उदाहरणानिः—

पपीः उदेति=सूर्य्य उदय होता है। वातप्रम्यौ गच्छतः=दो वायुमापक जाते हैं। कलौ राजानः "बहुश्रेयस्यः" भवन्ति=कलियुग में राजे लोग "बहुत स्त्रियों वाले" हैं। बहुलक्ष्मीं नरं सर्वे चाटु वदन्ति=बहुधन वाले पुरुष को सब लोग खुशामद को कहते हैं। प्रध्यौ पश्य=*२ विशेषबुद्धि वालों को देख। ग्रामण्यः पश्य=ग्राम के नेताओं को देख। सेनान्या महायुद्धं कृतम्=सेनापति ने बड़ा युद्ध किया। नीभ्यां गच्छ=२ ले चलने वालों के साथ जा। सुश्रीभिः राजभिः महान् यज्ञः कृतः=उत्तम धन वाले राजों ने महान् (बड़ा) यज्ञ किया। यवक्रयः यवान् देहि=जौ खरीदने वाले के जौ दे। सुधीभ्यां दक्षिणां देहि=२ उत्तम बुद्धि वालों के लिये दक्षिणा दे। शुद्धधीभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः=पवित्रबुद्धि-ब्राह्मणों के लिये नमस्कार। क्रोष्टुः मा बिभीत=शृगाल से मत डरो। वातप्रमीभ्यां तद्विद्यां गृहाण=२ वायुमापकों से उन की विद्या को ग्रहण कर। बहुश्रेयसीनां धातुः क्षीणो भवति=बहुत स्त्री वालों का धातु क्षीण होता है। बहुलक्ष्म्याः मान्यं सर्वे कुर्वन्ति=बहुधनी का मान्य सब करते हैं। प्रधीभ्यः किं न सिध्यति=तीव्रबुद्धि वालों से क्या नहीं सिद्ध होता ?। ग्रामण्योर्धनं देहि=२ ग्राम के नेताओं का धन दे। सेनानीनां बलं पश्य=सेनापतियों के बल को देख। सुश्रियां "चाटुकाराः" मा भवत=बहुधनियों की "खुशामद करने वाले" मत होओ। यवक्रयोरस्ति धैर्य्यम्=२ जौ खरीदने वालों में धैर्य्य है। क्रोष्टुषु परस्परस्य रुतं शृणु=शृगालों में आपस के शब्द को सुन। हे बहुश्रेयसि ! बहु मा क्रीड्=हे बहुस्त्रीक बहुत मत क्रीडा कर। हे बहुलक्ष्म्यौ गर्वं मा कुरुतम्= २ हे बहु धनियो ! गर्व मत करो। हे ग्रामण्यः कृषकान् दुःखितान् मा कुरुत=हे ग्राम के नेताओ ! कृषकों को दुःखित मत करो। इत्यादि ॥

१	अतिचमूः अतिचम्वौ अतिचम्वः	३	अतिचम्वा अतिचमूभ्याम् अतिचमूभिः	५	अतिचम्वाः अतिचमूभ्याम् अतिचमूभ्यः	७	अतिचम्वाम् अतिचम्वोः अतिचमूषु
२	अतिचमूम् अतिचम्वौ अतिचमून्	४	अतिचम्वै अतिचमूभ्याम् अतिचमूभ्यः	६	अतिचम्वाः अतिचम्वोः अतिचमूनाम्	सं०	हे अतिचमु हे अतिचम्वौ हे अतिचम्वः

*द्विवचन का चिन्ह अङ्क २ है ॥

१	खलपूः खलप्वौ खलप्वः	५	खलप्वः खलपूभ्याम् खलपूभ्यः	१	स्वभूः स्वभुवौ स्वभुवः	५	स्वभुवः स्वभूभ्याम् स्वभूभ्यः
२	खलप्वम् खलप्वौ खलप्वः	६	खलप्वः खलप्वोः खलपूनाम्	२	स्वभुवम् स्वभुवौ स्वभुवः	६	स्वभुवः स्वभुवोः स्वभूनाम्
३	खलप्वा खलपूभ्याम् खलपूभिः	७	खलप्वि खलप्वोः खलपूषु	३	स्वभुवा स्वभूभ्याम् स्वभूभिः	७	स्वभुवि स्वभुवोः स्वभूषु
४	खलप्वे खलपूभ्याम् खलपूभ्यः	सं०	हे खलपूः हे खलप्वौ हे खलप्वः	४	स्वभुवे स्वभूभ्याम् स्वभूभ्यः	सं०	हे स्वभूः हे स्वभुवौ हे स्वभुवः

४७—"स्वयम्भू" शब्द भी "स्वभू" के तुल्य है । परन्तु "वर्षाभू" "पुनर्भू" "दृन्भू" "करभू" ये चार शब्द "स्वभू" के तुल्य नहीं किन्तु "खलपू" शब्द के सदृश हैं । और "सुलू" "यवलू" आदि शब्द तो "खलपू" शब्द के तुल्य हैं ही । जैसे:—

अतिचमूर्विजयते=अधिक सेना वाला जीतता है । खलप्वा कीदृशी स्फूर्त्तिः आविष्क्रियते=बुहारने वाले ने कैसी फुरती प्रकट करी है । जीवात्मा परमात्मा च द्वावपि स्वभुवौ स्तः=जीव और ब्रह्म दोनों ही अजन्मा (स्वभू) हैं । त्रयोऽपि स्वयम्भुवः सन्ति जीव ईश्वरः प्रकृतिश्च=तीनों ही अजन्मा हैं जीव, ईश्वर और प्रकृति । शब्दायमानं वर्षाभ्वं पश्य=बोलते मेंडक को देख । किं शास्त्रं पुनर्भ्वं निन्दति=क्या शास्त्र दूसरे वर को निन्दा करता है । ? "यवल्वः" "सुल्वः" सन्ति="यवकाटने वाले" "अच्छे काटने वाले" हैं । स्वयम्भुवे नमः=स्वयम्भू के लिये नमस्कार । वर्षाभ्वः भयं मा कुरु=मैंडक से भय मत कर । (यवल्वोः, हस्तौ लूनौ=(जव काटने वालों के, २ हाथ कटगये । हे स्वयम्भूः परमेश्वर ३ अस्मान् रक्ष=हे अजन्मा परमेश्वर हम को रक्षा कर । हे खलप्वौ तिष्ठतम्=ऐ बुहारने वालो ठहरो ॥

ऋकारान्त "विधातृ" शब्द ॥

१—विधाता २विधातारौ ३विधातारः २—विधातारम् २विधातारौ ३विधातॄन्
३—विधात्रा २विधातृभ्याम् ३विधातृभिः ४—विधात्रे २विधातृभ्याम् ३विधातृभ्यः

५–विधातुः २विधातृभ्याम् ३विधातृभ्यः ६–विधातुः २विधात्रोः ३विधातॄणाम्
७–विधातरि २विधात्रोः ३विधातृषु सं० हे विधातः हेविधातारौ हेविधातारः
१–पिता २पितरौ ३पितरः २–पितरम् २पितरौ ३पितॄन्
आगे विधातृ शब्द के सदृश है ॥

४८–"धातृ" "नप्तृ" "त्वष्टृ" "क्षत्तृ" "होतृ" "प्रशास्तृ" इत्यादि शब्दों के रूप तो "विधातृ" शब्द के तुल्य हैं परन्तु "जामातृ" "भ्रातृ" और "नृ" शब्द के रूप प्रथमा और द्वितीया के द्विवचन तक "पितृ" शब्द के तुल्य हैं ॥

४९–केवल "नृ" शब्द के षष्ठी बहुवचन में–नृणाम्, नॄणाम् । ये दो रूप होते हैं ।

ओकारान्त "गो" शब्द के रूप ॥

१–गौः २गावौ ३गावः । २–गाम् २गावौ ३गाः ।
३–गवा २गोभ्याम् ३गोभिः । ४–गवे २गोभ्याम् ३गोभ्यः ।
५–गोः २गोभ्याम् ३गोभ्यः । ६–गोः २गवोः ३गवाम् ।
७–गवि २गवोः ३गोषु । सं०–हे गौः २हे गावौ ३हे गावः ।

"द्यो" आदि शब्दों के रूप "गो" शब्द के सदृश हैं ।

ऐकारान्त "रै" शब्द ॥

१–राः २रायौ ३रायः । २–रायम् २रायौ ३रायः ।
३–राया २राभ्याम् ३राभिः । ४–राये २राभ्याम् ३राभ्यः ।
५–रायः २राभ्याम् ३राभ्यः । ६–रायः २रायोः ३रायाम् ।
७–रायि २रायोः ३रासु । सं०–हेराः २हे रायौ ३हे रायः ॥

औकारान्त "ग्लौ" शब्द ॥

१–ग्लौः २ग्लावौ ३ग्लावः । २–ग्लावम् २ग्लावौ ३ग्लावः ।
३–ग्लावा २ग्लौभ्याम् ३ग्लौभिः । ४–ग्लावे २ग्लौभ्याम् ३ग्लौभ्यः ।
५–ग्लावः २ग्लौभ्याम् ३ग्लौभ्यः । ६–ग्लावः २ग्लावोः ३ग्लावाम् ।
७–ग्लावि २ग्लावोः ३ग्लौषु । सं०–हेग्लौः २हेग्लावौ हेग्लावः ॥

सब ऐकारान्त शब्द "रै" शब्द के तुल्य और सब औकारान्त शब्द "ग्लौ" शब्द के तुल्य हैं ॥

उदाहरण–

हे विधातः ! दयां कुरु=हे ईश्वर ! दया कर । पितरौ सेवस्व=२ पितरों की सेवाकर । धात्रा जगत् रचितम्=प्रभु ने जगत् रचा । पितामहो नप्त्रे मिष्टं

ददाति=बाबा पोते के लिये मिठाई देता है। त्वष्टुः मञ्जूषामानय=बढ़ई से सिन्दूकची को ला। सेवा क्षत्तुः धर्मोऽस्ति=सेवा शूद्र का धर्म है। प्रशास्तृणामाज्ञा मन्तव्या=हाकिमों की आज्ञा माननी चाहिये। जामात्रे कन्यां ददाति=जामाता के लिये कन्या को दान करता है। नृषु देवेषु च किमन्तरमस्ति=मनुष्यों और देवतों में क्या अन्तर है। भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ बभूवतुः=रामलक्ष्मण २ भाई थे। गां देहि=गौको दे। द्यौः प्रकाशते=आकाश प्रकाशित होरहा है। राया सर्वाणि कार्याणि सिध्यन्ति=धन के साथ सब कार्य्य सधते हैं। ग्लावः कराः शीतलाः सन्ति=चन्द्रमा की किरणें ठण्ढी हैं। इत्यादि॥

हकारान्त "मधुलिह्" शब्द॥

१–मधुलिट्, ड् २ मधुलिहौ ३ मधुलिहः २–मधुलिहम् २ मधुलिहौ ३ मधुलिहः ३–मधुलिहा २मधुलिड्भ्याम् ३मधुलिड्भिः ४–मधुलिहे२मधुलिड्भ्याम् ३मधुलिड्भ्यः ५–मधुलिहः २मधुलिड्भ्याम् ३मधुलिड्भ्यः ६–मधुलिहः २मधुलिहोः ३मधुलिहाम् ७–मधुलिहि २ मधुलिहोः ३ मधुलिट्सु, मधुलिट्त्सु॥

५०–प्रथमाविभक्ति में हे लगाने से सम्बोधन बनता है॥

१–मित्रध्रुक्, मित्रध्रुग्, मित्रध्रुट्, मित्रध्रुड्। २ मित्रद्रुहौ ३ मित्रद्रुहः। २–मित्रद्रुहम् २मित्रद्रुहौ ३मित्रद्रुहः। ३–मित्रद्रुहा २मित्रध्रुग्भ्याम्, मित्रध्रुड्भ्याम्। ३मित्रध्रुग्भिः, मित्रध्रुड्भिः। ४–मित्रद्रुहे २मित्रध्रुग्भ्याम्, मित्रध्रुड्भ्याम्. ३मित्रध्रुग्भ्यः, मित्रध्रुड्भ्यः। ५–मित्रद्रुहः २मित्रध्रुग्भ्याम्, मित्रध्रुड्भ्याम् ३मित्रध्रुग्भ्यः, मित्रध्रुड्भ्यः। ६–मित्रद्रुहः २मित्रद्रुहोः ३मित्रद्रुहाम्। ७–मित्रद्रुहि २मित्रद्रुहोः ३ मित्रध्रुट्त्सु, मित्रध्रुट्सु, मित्रध्रुक्षु। सम्बोधन प्रथमा के तुल्य है॥

१–गोधुक्, गोधुग् २ गोदुहौ ३ गोदुहः। २–गोदुहम् २ गोदुहौ ३ गोदुहः। ३–गोदुहा २ गोधुग्भ्याम् ३ गोधुग्भिः। ४–गोदुहे २ गोधुग्भ्यांम् ३ गोधुग्भ्यः। ५–गोदुहः २ गोधुग्भ्याम् ३ गोधुग्भ्यः। ६–गोदुहः २ गोदुहोः ३ गोदुहाम्। ७–गोदुहि ३ गोदुहोः ३ गोधुक्षु। सं० प्रथमा के तुल्य है॥

५१–"तत्वमुह्" "स्नुह्" और "स्निह्" शब्दों के रूप "मित्रद्रुह्" शब्द के तुल्य हैं॥

१–भारवाट्, भारवाड् २ भारवाहौ ३ भारवाहः। २–भारवाहम् २ भारवाहौ ३ भारौहः। ३–भारौहा २ भारवाड्भ्याम् ३ भारवाड्भिः। ४—भारौहे

२भारवाड्भ्याम् ३ भारवाड्भ्यः । ५-भारौहः २ भारवाड्भ्याम् ३ भारवाड्भ्यः । ६-भारौहः २ भारौहोः ३ भारौहाम् । ७-भारौहि २ भारौहोः ३ भारवाट्सु । सम्बोधन प्रथमा के तुल्य जानो ॥

१-अनड्वान् २ अनड्वाहौ ३ अनड्वाहः । २-अनड्वाहम् २ अनड्वाहौ ३ अनडुहः । ३-अनडुहा २ अनडुद्भ्याम् ३ अनडुद्भिः । ४-अनडुहे २ अनडुद्भ्याम् ३ अनडुद्भ्यः ५-अनडुहः २ अनडुद्भ्याम् ३ अनडुद्भ्यः । ६-अनडुहः २ अनडुहोः । ३अनडुहाम् । ७-अनडुहि २ अनडुहोः ३ अनडुत्सु । सम्बो०-हे अनड्वन् २ हे अनड्वाहौ ३ हे अनड्वाहः ॥

५२-"तुरासाह्" शब्द "मधुलिह्" के तुल्य है परन्तु इतना भेद है कि जहां २ ह् को ड् वा ट् होता है वहां २ सा को षा ऐसा मूर्धन्य होता है । जैसे—

तुराषाड् । तुराषाट् । इत्यादि ॥

मधुलिट् रसं लेढि=भौंरा रस को चाटता है । मित्रध्रुहः मुखं नाऽवलोकनीयम्=मित्रद्रोही का मुंह न देखना चाहिये । गोदुहम् आह्वयस्व=गौदुहने वाले को बुलाओ । तत्त्वमुहा भ्रमः कृतः=तत्त्वभूला ने भ्रम किया । स्नुहः दन्तधावनं समीचीनं सम्पद्यते=सिहोड़े की दतौन अच्छी बनती है । स्निहे प्रियं वस्तु देहि=प्यारे के लिये प्यारी वस्तु दे । भारौहो भारम् उद्धर=बोझ उठाने वाले से बोझ उतार । अनडुहां बलं पश्य=बैलों का बल देख । तुराषाड् जलवर्षाः करोति=इन्द्र जल वर्षाओं को करता है । इत्यादि ॥

रेफान्त-"चतुर्" शब्द केवल बहुवचन में है जैसेः—

१-चत्वारः । २-चतुरः । ३-चतुर्भिः । ४-चतुर्भ्यः । ५-चतुर्भ्यः । ६-चतुर्णाम् । ७-चतुर्षु ॥

मकारान्त "प्रशाम्" शब्द—

१—प्रशान् २ प्रशामौ ३ प्रशामः । २-प्रशामम् २ प्रशामौ ३ प्रशामः । ३-प्रशामा २ प्रशान्भ्याम् ३ प्रशान्भिः । ४-प्रशामे २ प्रशान्भ्याम् ३ प्रशान्भ्यः । ५-प्रशामः २ प्रशान्भ्याम् ३ प्रशान्भ्यः । ६-प्रशामः २ प्रशामोः ३ प्रशामाम् । ७-प्रशामि २ प्रशामोः ३ प्रशान्सु । हे प्रशान् । हे प्रशामौ । हे प्रशामः ॥

५३-"किम्" शब्द सर्वनाम है और उस के रूप "सर्व" शब्द के तुल्य होते हैं । जैसे-कः कौ के । कम् कौ कान् । इत्यादि ॥

मकारान्त "इदम्" शब्द सर्वनाम । जैसे:—

१—अयम् । इमौ । इमे । २—इमम् । इमौ । इमान्, एनान् ।
३—अनेन, एनेन । आभ्याम् । एभिः । ४—अस्मै । आभ्याम् । एभ्यः ।
५—अस्मात् । आभ्याम् । एभ्यः । ६—अस्य । अनयोः, एनयोः । एषाम् ।
७—अस्मिन् । अनयोः, एनयोः । एषु ॥

उदाहरण—

चतुर्भ्यो देह=चारों के लिये दे । प्रशामं पश्य=प्रशाम् को देख । इमौ कस्य पुत्रौ स्तः=ये २ किस के पुत्र हैं । अनेन व्याकरणम् अधीतम् एनम् न्यायमध्यापय=इस ने व्याकरण पढ़लिया इस को न्याय पढ़ाव । इत्यादि ॥

नकारान्त "राजन्" शब्द । जैसे:—

१—राजा । २राजानौ । ३राजानः । २—राजानम् । २राजानौ । ३राज्ञः ।
३—राज्ञा । २राजभ्याम् ३राजभिः । ४—राज्ञे । २राजभ्याम् । ३राजभ्यः ।
५—राज्ञः । २ राजभ्याम् । ३राजभ्यः । ६—राज्ञः । २राज्ञोः । ३राज्ञाम् ।
७—राज्ञि, राजनि । २राज्ञोः । ३राजसु । सम्बो० हेराजन् । २हेराजानौ । हेराजानः ॥
१—यज्वा । २यज्वानौ । ३यज्वानः । २—यज्वानम् । २यज्वानौ । ३यज्वनः ।
३—यज्वना । २यज्वभ्याम् । ३यज्वभिः ४—यज्वने । २यज्वभ्याम् । ३यज्वभ्यः ।
५—यज्वनः । २यज्वभ्याम् । ३यज्वभ्यः । ६—यज्वनः । २यज्वनोः । ३यज्वनाम् ।
७—यज्वनि । २यज्वनोः । ३यज्वसु । सं०—हेयज्वन् । २हेयज्वानौ । ३हेयज्वानः ॥

५४—"ब्रह्मन्" शब्द भी " यज्वन् " के तुल्य है परन्तु न को ण हो जाता है । जैसे—ब्रह्माणौ । ब्रह्माणः । इत्यादि ॥

१—ब्रह्महा । २ब्रह्महणौ । ३ब्रह्महणः । २—ब्रह्महणम् । २ब्रह्महणौ । ३ब्रह्मघ्नः ।
३—ब्रह्मघ्ना । २ब्रह्महभ्याम् । ३ब्रह्महभिः । ४—ब्रह्मघ्ने । २ब्रह्महभ्याम् । ३ब्रह्महभ्यः ।
५—ब्रह्मघ्नः । २ब्रह्महभ्याम् । ३ब्रह्महभ्यः । ६—ब्रह्मघ्नः । २ब्रह्मघ्नोः । ३ब्रह्मघ्नाम् ।
७—ब्रह्मघ्नि, ब्रह्महणि । २ब्रह्मघ्नोः । ३ब्रह्महसु । सम्बोधन—हे ब्रह्महन् । २ हे ब्रह्महणौ । ३हे ब्रह्महणः ॥
१—मघवा, मघवान् । २मघवानौ, मघवन्तौ । ३मघवानः, मघवन्तः ।
२—मघवानम्, मघवन्तम् । २मघवानौ, मघवन्तौ । ३मघोनः, मघवतः ।
३—मघोना, मघवता । २मघवभ्याम्, मघवद्भ्याम् । ३मघवभिः, मघवद्भिः ।

४–मघोने, मघवते । मघवभ्याम्, मघवद्भ्याम् । मघवभ्यः, मघवद्भ्यः ।
५–मघोनः, मघवतः । मघवभ्याम्, मघवद्भ्याम् । मघवभ्यः, मघवद्भ्यः ।
६–मघोनः, मघवतः । मघोनोः, मघवतोः । मघोनाम्, मघवताम् ।
७–मघोनि, मघवति । मघोनोः, मघवतोः । मघवसु, मघवत्सु ।
संबो० हे मघवन् । हे मघवानौ, हे मघवन्तौ । हे मघवानः, हे मघवन्तः ॥
१—श्वा । श्वानौ । श्वानः । २–श्वानम् । श्वानौ । शुनः ।
३–शुना । श्वभ्याम् । श्वभिः । ४–शुने । श्वभ्याम् । श्वभ्यः ।
५–शुनः । श्वभ्याम् । श्वभ्यः । ६–शुनः । शुनोः । शुनाम् ।
७–शुनि । शुनोः । श्वसु । सम्बो० हे श्वन् । हे श्वानौ । हे श्वानः ॥
१—युवा । युवानौ । युवानः । २–युवानम् । युवानौ । यूनः ।
३–यूना । युवभ्याम् । युवभिः । ४–यूने । युवभ्याम् । युवभ्यः ।
५–यूनः । युवभ्याम् । युवभ्यः । ६–यूनः । यूनोः । यूनाम् ।
७–यूनि । यूनोः । युवसु । सं०–हे युवन् । हे युवानौ । हे युवानः ॥

उदाहरण–

राजा प्रजाः पालयति=राजा प्रजाओं को पालता है । यज्वानः यजन्ति=यज्ञकर्त्ता लोग यज्ञ करते हैं । ब्रह्मणे नमः=ब्रह्मा के लिये नमस्कार । ब्रह्मघ्नः दण्डय=ब्रह्महत्यारों को दण्ड दे । मघवतो भागः=इन्द्र का भाग । श्वभिर्भुक्तः=कुत्तों ने खालिया । यूनां विवाहः कार्य्यः=जवानों का विवाह करना चाहिये । राजानं पश्य=राजा को देख । ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते=ब्रह्म से प्रजा उत्पन्न होती हैं । ब्रह्महणो नरकं यान्ति=ब्रह्महत्यारे नरक को जाते हैं । राक्षसाः शुनो भुञ्जते=राक्षस लोग कुत्तों को खाते हैं । हे राजन् पाहि माम्=हे राजा बचा मुझे। हे युवानौ कुत्र गच्छथः=हे २ जवानो कहां जाते हो । हे ब्रह्महणः धिक् युष्मान्=हे ब्रह्महत्यारो धिक्कार है तुम को । इत्यादि ॥

"पथिन्" शब्द ॥

१–पन्थाः । पन्थानौ । पन्थानः । २–पन्थानम् । पन्थानौ । पथः ।
३–पथा । पथिभ्याम् । पथिभिः । ४–पथे । पथिभ्याम् । पथिभ्यः ।
५–पथः । पथिभ्याम् । पथिभ्यः । ६–पथः । पथोः । पथाम् ।
७–पथि । पथोः । पथिषु । सं० हे पन्थाः । हे पन्थानौ । हे पन्थानः ॥

पथिन् शब्द के तुल्य ही "मथिन्" शब्द है ॥

१—ऋभुक्षाः । ऋभुक्षाणौ । ऋभुक्षाणः । २—ऋभुक्षाणम् । ऋभुक्षाणौ । ऋभुक्षः ।
३—ऋभुक्षा । ऋभुक्षिभ्याम् । ऋभुक्षिभिः । ४—ऋभुक्षे । ऋभुक्षिभ्याम् । ऋभुक्षिभ्यः ।
५—ऋभुक्षः । ऋभुक्षिभ्याम् । ऋभुक्षिभ्यः । ६—ऋभुक्षः । ऋभुक्षोः । ऋभुक्षाम् ।
७—ऋभुक्षि । ऋभुक्षोः । ऋभुक्षिषु । सं०हे ऋभुक्षाः । हे ऋभुक्षाणौ । हे ऋभुक्षाणः ॥

"पञ्चन्" शब्द केवल बहुवचनान्त है । जैसेः—

१—पञ्च २—पञ्च ३—पञ्चभिः ४—पञ्चभ्यः ५—पञ्चभ्यः ६—पञ्चानाम् ७—पञ्चसु ॥

"अष्टन्" शब्द भी बहुवचनान्त है । जैसेः—

१—अष्टौ, अष्ट । २—अष्टौ, अष्ट । ३—अष्टभिः, अष्टाभिः । ४—अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः ।
५—अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः । ६—अष्टानाम् । ७—अष्टसु, अष्टासु ॥

"सप्तन्" और "नवन्" तथा "दशन्" शब्द भी "पञ्चन्" के तुल्य हैं ॥

उदाहरण—

कस्य ग्रामस्य पन्थानं गच्छसि=किस ग्राम के मार्ग को जाता है (तू)। मथा दधि मन्थति=मथनी से दही बिलोता है । ऋभुक्षे भागः=इन्द्र के लिये भाग । पञ्च पुरुषा आगताः=पांच पुरुष आये । सप्तानां सिन्धूनां पारे=सात समुद्रों के पार में । अष्टासु ग्रामेषु भ्रान्तः=आठ ग्रामों में भ्रमा । हे ऋभुक्षाः=हे इन्द्र ॥

जकारान्त "ऋत्विज्" शब्द । जैसेः—

१—ऋत्विक्, ऋत्विग् । ऋत्विजौ । ऋत्विजः । २—ऋत्विजम् । ऋत्विजौ । ऋत्विजः ।
३—ऋत्विजा । ऋत्विग्भ्याम् । ऋत्विग्भिः । ४—ऋत्विजे । ऋत्विग्भ्याम् । ऋत्विग्भ्यः ।
५—ऋत्विजः । ऋत्विग्भ्याम् । ऋत्विग्भ्यः । ६—ऋत्विजः । ऋत्विजोः । ऋत्विजाम् ।
७—ऋत्विजि । ऋत्विजोः । ऋत्विक्षु । सम्बोधन प्रथमा के तुल्य है ॥

इसी प्रकार "रथयुज्" आदि जकारान्त शब्दों के रूप हैं ॥

५५—परन्तु "सम्राज्" "देवेज्*" "विश्वसृज्*" "पात्रमृज्*" आदि कई शब्द "सम्राज्" के तुल्य हैं । यथा—

१—सम्राट्, सम्राड् । सम्राजौ । सम्राजः । २—सम्राजम् । सम्राजौ । सम्राजः ।
३—सम्राजा । सम्राड्भ्याम् । सम्राड्भिः । ४—सम्राजे । सम्राड्भ्याम् । सम्राड्भ्यः ।
५—सम्राजः । सम्राड्भ्याम् । सम्राड्भ्यः । ६—सम्राजः । सम्राजोः । सम्राजाम् ।

* इन शब्दों को भाष्यकार "रथयुज्" के सदृश मानते हैं ॥

७–सम्राजि । सम्राजोः । सम्राट्सु । सम्बोधन प्रथमा के तुल्य है ॥

ऐसे ही परिव्राट् । परिव्राजौ । इत्यादि जानो ॥

१–विश्वाराड्, ट् । विश्वराजौ । विश्वराजः ।

२–विश्वराजम् । विश्वराजौ । विश्वराजः ।

३–विश्वराजा । विश्वाराड्भ्याम् । विश्वाराड्भिः ।

४–विश्वराजे । विश्वाराड्भ्याम् । विश्वाराड्भ्यः । इत्यादि ॥

५६–जहां २ ज् को ड् वा ट् होता है वहां २ विश्व को विश्वा होजाता है॥

उदाहरण–

वेद्याः समन्तात् ऋत्विजः शोभन्ते=वेदी के चारों ओर ऋत्विज् (हवन कर्त्ता) सुहाते हैं। रथयुजम् आह्वय=रथजोता को बुला। तेन सम्राजा को योत्स्यति=उस सम्राट् (शहंशाह) के साथ कौन युद्ध करेगा। देवेजे नमः=देव पूजक के लिये नमस्कार। विश्वसृजः प्रजाः प्रजायन्ते=विधाता से प्रजा उत्पन्न होती हैं। पश्य पात्रमृजो हस्तौ–देख बरतन मांजने वाले के, हाथों को। अयं विश्वाराडस्ति=यह विश्वाराट् है ॥

दकारान्त "तद्" शब्द सर्वनाम द्वितीयपुस्तक में लिख चुके हैं। और "त्यद्" शब्द भी उस के तुल्य ही है। जैसे–स्यः त्यौ त्ये। त्यम् त्यौ त्यान्। त्येन त्याभ्याम् इत्यादि जानो ॥

और "यद्" शब्द भी तद् के ही सदृश है। जैसे–

१–यः । यौ । ये । २–यम् । यौ । यान् । ३–येन । याभ्याम् । इत्यादि ॥

५७–"एतद्" शब्द के रूपों में कुछ ही भेद है। जैसेः–

१–एषः । एतौ । एते । २–एतम्, एनम् । एतौ, एनौ । एतान्, एनान् ।
३–एतेन, एनेन । एताभ्याम् । एतैः । ४–एतस्मै, एताभ्याम् । एतेभ्यः ।
५–एतस्मात् । एताभ्याम् । एतेभ्यः । ६–एतस्य । एतयोः, एनयोः । एतेषाम् ।
६–एतस्मिन् । एतयोः, एनयोः । एतेषु ॥

दकारान्त "युष्मद्" और "अस्मद्" शब्द के रूप द्वितीय पुस्तक में आ-चुके हैं और वे तीनों लिङ्ग अर्थात् पुंल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग में एक से ही रहते हैं ॥

उदाहरण—

स गच्छति=वह जाता है। त्वं पश्य=उस को देख। येन दूषितं तं मारय=जिस ने बिगाड़ किया उस को मार। एतस्मै किं दास्यसि=इस के लिये क्या देगा (तू)। तव गृहं क्वास्ति=तेरा घर कहां है। मयि पापं नास्ति=मुझ में पाप नहीं है॥

१-द्विपात्, द्विपाद्। द्विपादौ। द्विपादः। २—द्विपादम्। द्विपादौ। द्विपदः।
३-द्विपदा। द्विपाद्भ्याम्। द्विपाद्भिः। ४-द्विपदे। द्विपाद्भ्याम्। द्विपाद्भ्यः।
५-द्विपदः। द्विपाद्भ्याम्। द्विपाद्भ्यः। ६-द्विपदः। द्विपदोः। द्विपदाम्।
७-द्विपदि। द्विपदोः। द्विपात्सु। सं०-हे द्विपात् इत्यादि॥

थकारान्त "अग्निमथ्" शब्द। जैसेः-

१-अग्निमत्,द्। अग्निमथौ। अग्निमथः। २-अग्निमथम्। अग्निमथौ। अग्निमथः।
३-अग्निमथा। अग्निमद्भ्याम्। अग्निमद्भिः। ४-अग्निमथे। अग्निमद्भ्याम्।
अग्निमद्भ्यः। इत्यादि॥

चकारान्त "प्रत्यच्" शब्द। जैसेः-

१-प्रत्यङ्। प्रत्यञ्चौ। प्रत्यञ्चः। २-प्रत्यञ्चम्। प्रत्यञ्चौ। प्रतीचः।
३-प्रतीचा। प्रत्यग्भ्याम्। प्रत्यग्भिः। ४-प्रतीचे। प्रत्यग्भ्याम्। प्रत्यग्भ्यः।
५-प्रतीचः। प्रत्यग्भ्याम्। प्रत्यग्भ्यः। ६-प्रतीचः। प्रतीचोः। प्रतीचाम्।
७-प्रतीचि। प्रतीचोः। प्रत्यक्षु। सं०—हे प्रत्यङ् इत्यादि॥

"उदच्" शब्द के रूप। जैसेः-

१-उदङ्। उदञ्चौ। उदञ्चः। २-उदञ्चम्। उदञ्चौ। उदीचः।
३-उदीचा। उदग्भ्याम्। उदग्भिः। ४-उदीचे। उदग्भ्याम्। उदग्भ्यः।
५—उदीचः। उदग्भ्याम्। उदग्भ्यः। इत्यादि॥

१-सम्यङ्। सम्यञ्चौ। सम्यञ्चः। २-सम्यञ्चम्। सम्यञ्चौ। समीचः।
३-समीचा। सम्यग्भ्याम्। सम्यग्भिः। ४-समीचे। इत्यादि॥

१-सध्र्यङ्। सध्र्यञ्चौ। सध्र्यञ्चः। २-सध्र्यञ्चम्। सध्र्यञ्चौ। सध्रीचः।
३-सध्रीचा। सध्र्यग्भ्याम्। सध्र्यग्भिः। ४-सध्रीचे। इत्यादि॥

१-तिर्यङ्। तिर्यञ्चौ। तिर्यञ्चः। २-तिर्यञ्चम्। तिर्यञ्चौ। तिरश्चः।
३-तिरश्चा। तिर्यग्भ्याम्। तिर्यग्भिः। ४-तिरश्चे। तिर्यग्भ्याम्। तिर्यग्भ्यः। इत्यादि॥

१–पयोमुग्, क्। पयोमुचौ । पयोमुचः । २–पयोमुचम्। पयोमुचौ। पयोमुचः।
३–पयोमुचा । पयोमुग्भ्याम् । पयोमुग्भिः । ४–पयोमुचे । इत्यादि।
७–बहुवचने–पयोमुक्षु ॥

उदाहरण–

द्विपाद् मनुष्यः चतुष्पाद्भ्यो बुद्धिमान् भवति=दुपाया मनुष्य चौपायों से बुद्धिमान् है। अग्निमथाऽग्निः उन्मथितः=अग्निमथ् ने अग्नि मथा। प्रत्यञ्चं पश्य=पीछे चलते को देख। उदीचा कुत्र विश्रामः कृतः=उत्तर को चलने वाले ने कहां विश्राम किया। समीचे नमः=सीधा चलने वाले के लिये नमस्कार। समीचः पन्थाः=सीधा चलने वाले का मार्ग। समीचि प्रसीदति लोकः=सीधा चलने वाले पर प्रसन्न–होता है संसार। हे अग्निमत् क्व यासि=हे अग्निमथ् कहां जाता है (तू)। शृणु तिरश्चां कीदृशः शब्दः=सुन तिरछा चलने वालों (सर्पादि) का कैसा शब्द है। पयोमुचः प्रावृषि वर्षन्ति=बादल वर्षा में बरसते हैं। पयोमुचां गर्जनं शृणु=बादलों के गर्जने को सुन ॥

तकारान्त "महत्" शब्द ॥

१–महान्। महान्तौ। महान्तः। २–महान्तम्। महान्तौ। महतः।
३–महता। महद्भ्याम्। महद्भिः। ४–महते। महद्भ्याम्। महद्भ्यः।
५–महतः। महद्भ्याम्। महद्भ्यः। ६–महतः। महतोः। महताम्।
७–महति। महतोः। महत्सु। सं०–हे महन्। हे महान्तौ। हे महान्तः॥
१–भवान्। भवन्तौ। भवन्तः। २–भवन्तम्। भवन्तौ। भवतः।
३–भवता। भवद्भ्याम्। इत्यादि आगे महत् शब्द के सदृश जानो॥

"ददत्" शब्द (ददतृ के ऋकार का लोप हुवा है)॥

१–ददन्। ददतौ। ददतः। २–ददतम्। ददतौ। ददतः।
३–ददता। ददद्भ्याम्। आगे "महत्" के सदृश है॥

इसी "ददत्" के तुल्य "जक्षत्" "जाग्रत्" "दरिद्रत्" "शासत्" और "चकासत्" के रूप भी जानो। जैसे:–

महानयं तरुः=यह बड़ा वृक्ष है। भवते नमस्करोमि=आप को नमस्कार करता हूं। धनं ददता क्रोधः कृतः=धन देते हुए ने क्रोध किया। जक्षते ब्राह्मणायाऽन्नं परिवेषय=खाते हुए ब्राह्मण के लिये अन्न परोस। जाग्रतश्चोरा वि-

स्थति=जागते हुए से चोर डरते हैं। दरिद्रतः हास्यं सर्वे कुर्वन्ति-दरिद्र होते की हंसी सब करते हैं। शासति रामे प्रजाः प्रसीदन्ति स्म=राज्य करते हुए रामचन्द्र जी पर प्रजा प्रसन्न होती थीं। चकासतम् रविं पश्य=चमकते हुए सूर्य को देख। हे महन् गर्वं मा कुरु=बड़े! गर्व मत कर॥

पकारान्त "गुप्" शब्द ॥

१-गुप्, गुब्। गुपौ। गुपः। २-गुपम्। गुपौ। गुपः ३-गुपा। गुब्भ्याम्। गुब्भिः। ४-गुपे। गुब्भ्याम्। गुब्भ्यः। ५-गुपः। गुब्भ्याम्। गुब्भ्यः। ६-गुपः। गुपोः। गुपाम्। ७-गुपि। गुपोः। गुप्सु। सं०-हे गुप्, ब्। हे गुपौ। हे गुपः॥
इसी प्रकार "असुतृप्" "दृप्" आदि के रूप हैं॥

शकारान्त "तादृश्" शब्दः-

१-तादृक्, तादृग्। तादृशौ। तादृशः। २-तादृशम्। तादृशौ। तादृशः।
३-तादृशा। तादृग्भ्याम्। तादृग्भिः। ४-तादृशे। तादृग्भ्याम्। तादृग्भ्यः।
५-तादृशः। तादृग्भ्याम्। तादृग्भ्यः। ६-तादृशः। तादृशोः। तादृशाम्।
७-तादृशि। तादृशोः। तादृक्षु। हे तादृक्, ग्। हे तादृशौ। हे तादृशः॥

इसी प्रकार "यादृश्" "ईदृश्" "कीदृश्" "दिश्" आदि जानो॥

५८-"विश्" शब्द में भेद इतना है कि-

१--विट्, ड्। विशौ। विशः। २--विशम्। विशौ। विशः।
३-विशा। विड्भ्याम्। विड्भिः। ४--विशे। इत्यादि। ७--विट्सु॥

५९-"शत्रुनश्" शब्द में अधिक भेद है। जैसेः-

१--शत्रुनट्, ड्, ग्, क्। शत्रुनशौ। शत्रुनशः। इत्यादि।
३-द्विव० शत्रुनड्भ्याम्, शत्रुनग्भ्याम्। इत्यादि॥

"मर्मस्पृश्" शब्द "तादृश्" के तुल्य है। जैसेः—

अयं मर्मस्पृक् शरोऽस्ति=यह मर्म-(मुलायम जगह) भेदी बाण है। धनगुपम् उत्थापय=धनरक्षक को उठा। "असुतृपो" राक्षसा भवन्ति="केवल अपना ही प्राण पालने वाले" (असुतृप्) राक्षस होते हैं। दृपे मा देहि=अहङ्कारी के लिये मत दे। तादृशस्तु ईदृक् एव साधु=वैसे से तो ऐसा ही अच्छा। यादृशः पार्श्वे तिष्ठति तादृक् स्वयं भवति=जैसे के पास बैठता है वैसा स्वयं होजाता है। कीदृशि पुरुषे विश्वसितव्यम्=कैसे पुरुष में विश्वास करना चाहिये?। हे विट्

घृतं विक्रीणीषे=हे वैश्य घृत बेचता है (तू)। विशो राज्ञो हितं कुर्युः=प्रजाएं राजा का हित करें। शत्रुनट् अयं योद्धा=शत्रुनाशक है यह सिपाही ॥

६०-“दधृष्” शब्द षकारान्त है पर “तादृश्” के तुल्य रूप हैं ॥

१-रत्नमुट्, ड्। रत्नमुषौ। रत्नमुषः। २-रत्नमुषम्। रत्नमुषौ। रत्नमुषः। ३-रत्नमुषा। रत्नमुड्भ्याम्। इत्यादि ॥

“षष्” शब्द केवल बहुवचनान्त है। जैसेः—

१-षट्, ड्। २-षट्, ड्। ३-षड्भिः। ४-षड्भ्यः। ५-षड्भ्यः। ६-षण्णाम्। ७-षट्सु॥

“पिपठिष्” शब्द।

१-पिपठीः। पिपठिषौ। पिपठिषः। २-पिपठिषम्। पिपठिषौ। पिपठिषः। ३-पिपठिषा। पिपठीर्भ्याम्। पिपठीर्भिः। ४-पिपठिषे। पिपठीर्भ्याम्। पिपठीर्भ्यः। ५-पिपठिषः। पिपठीर्भ्याम्। पिपठीर्भ्यः। ६-पिपठिषः। पिपठिषोः। पिपठिषाम्। ७-पिपठिषि। पिपठिषोः। पिपठीष्षु। सम्बो० प्रथमा के तुल्य है ॥

“चिकीर्ष्” शब्द।

१-चिकीः। चिकीर्षौ। चिकीर्षः। २-चिकीर्षम्। चिकीर्षौ। चिकीर्षः। ३-चिकीर्षा। चिकीर्भ्याम्। चिकीर्भिः। ४-चिकीर्षे। चिकीर्भ्याम्। चिकीर्भ्यः। ५-चिकीर्षः। चिकीर्भ्याम्। चिकीर्भ्यः। ६-चिकीर्षः। चिकीर्षोः। चिकीर्षाम्। ७-चिकीर्षि। चिकीर्षोः। चिकीर्षु। हे चिकीः। हे चिकीर्षौ। हे चिकीर्षः ॥

“विद्वस्” शब्द (विद्वसु के उकार का लोप हुआ है)

१-विद्वान्। विद्वांसौ। विद्वांसः। २-विद्वांसम्। विद्वांसौ। विदुषः। ३-विदुषा। विद्वद्भ्याम्। विद्वद्भिः। ४-विदुषे। विद्वद्भ्याम्। विद्वद्भ्यः। ५-विदुषः। विद्वद्भ्याम्। विद्वद्भ्यः। ६-विदुषः। विदुषोः। विदुषाम्। ७-विदुषि। विदुषोः। विद्वत्सु। सं०—हे विद्वन्। हे विद्वांसौ। हे विद्वांसः ॥

“पुंस्” शब्द के रूप—

१-पुमान्। पुमांसौ। पुमांसः। २-पुमांसम्। पुमांसौ। पुंसः। ३-पुंसा। पुंभ्याम्। पुंभिः। ४-पुंसे। पुंभ्याम्। पुंभ्यः। ५-पुंसः। पुंभ्याम्। पुंभ्यः। ६-पुंसः। पुंसोः। पुंसाम्। ७-पुंसि। पुंसोः। पुंसु। सं०—हे पुमन्। हे पुमांसौ। हे पुमांसः ॥

"उशनस्" शब्द—

१—उशना । उशनसौ । उशनसः । २—उशनसम् । उशनसौ । उशनसः ।
३—उशनसा । उशनोभ्याम् । उशनोभिः । ४—उशनसे । उशनोभ्याम् । उशनोभ्यः ।
५—उशनसः । उशनोभ्याम् । उशनोभ्यः । ६—उशनसः । उशनसोः । उशनसाम् ।
७—उशनसि । उशनसोः । उशनस्सु । सं०—हे उशनः, हे उशन, हे उशनन् । हे उशनसौ । हे उशनसः ॥

६१—इसी प्रकार "पुरुदंशस्" और "अनेहस्" शब्द के रूप हैं परन्तु सम्बोधन में केवल एक ही रूप होता है । जैसेः—हे पुरुदंशः । हे अनेहः ॥

६२—"वेधस्" शब्द भी "उशनस्" के तुल्य है परन्तु प्रथमा के एकवचन में—वेधाः । ऐसा विसर्गान्त रूप होता है ॥

६३—और "चन्द्रमस्" "सुयशस्" "वृद्धश्रवस्" आदि सकारान्त शब्द "वेधस्" के ही तुल्य हैं ॥

६४—"अदस्" शब्द सर्वनाम में भेद है । जैसे—

१—असौ । अमू । अमी । २—अमुम् । अमू । अमून् ।
३—अमुना । अमूभ्याम् । अमीभिः । ४—अमुष्मै । अमूभ्याम् । अमीभ्यः ।
५—अमुष्मात् । अमूभ्याम् । अमीभ्यः । ६—अमुष्य । अमुयोः । अमीषाम् ।
७—अमुष्मिन् । अमुयोः । अमीषु ॥

६५—साधारण (अमुक) अर्थ में "अदस्" शब्द के रूप इस प्रकार होते हैं । जैसे—
१—अमुकः । अमुकौ । अमुके । २—अमुकम् । अमुकौ । अमुकान् ।
३—अमुकेन । अमुकाभ्याम् । अमुकैः । ४—अमुकस्मै । अमुकाभ्याम् । अमुकेभ्यः ।
५—अमुकस्मात् । आगे "सर्व" शब्द के तुल्य जानो ॥

यह अकारादि क्रम से प्रायः सब शब्दों की प्रक्रिया (जो पुल्लिङ्ग हैं) दिखाई ॥

उदाहरण—

रत्नमुट् नरकं याति=रत्नचोर नरक को जाता है । षट्सु ऋतुषु वसन्त आनन्ददः=छहों ऋतुओं में वसन्त आनन्ददायक है । पिपठिषं पाठय=पढ़ना चाहने वाले को पढ़ाव । चिकीर्षः कार्य्याणि सिद्ध्यन्त्येव=करना चाहने वाले के काम सिद्ध ही होते हैं । विदुषां भूषणं विद्या=विद्वानों का भूषण विद्या है । पुं-

सु धैर्यं भवति=पुरुषों में धीरज होता है । उशनसः दैत्याः शिक्षां गृह्णन्तिस्म=शुक्राचार्य से दैत्यों ने शिक्षा को ग्रहण किया था । अनेहा पुनर्नाऽयाति=समय फिर नहीं आता । वेधाः देवानां मध्ये प्रथमः=ब्रह्मा देवतों के बीच में पहिला है । चन्द्रमसः कराः शीतलाः सन्ति=चन्द्रमा की किरणें ठण्ढी हैं । सुयशसां यश एव धनम्=नेकनामों की कीर्त्ति ही धन है । वृद्धश्रवाः स्वर्गराजोऽस्ति=इन्द्र स्वर्ग का राजा है । असुं देवदारुं पुरः पश्य=इस देवदारु (वृक्षविशेष) को आगे देख । अमुकस्मै दीयताम्—फलाने के लिये दीजिये ॥

इति पुल्लिङ्ग स्वरूपम्

अथ स्त्रीलिङ्गस्वरूपनिरूपणम्—

आप् प्रत्ययान्त "गङ्गा" शब्दः—

१—गङ्गा । गङ्गे । गङ्गाः । २—गङ्गाम् । गङ्गे । गङ्गाः ।
३—गङ्गया । गङ्गाभ्याम् । गङ्गाभिः । ४—गङ्गायै । गङ्गाभ्याम् । गङ्गाभ्यः ।
५—गङ्गायाः । गङ्गाभ्याम् । गङ्गाभ्यः । ६—गङ्गायाः । गङ्गयोः । गङ्गानाम् ।
७—गङ्गायाम् । गङ्गयोः । गङ्गासु । हे गङ्गे । हे गङ्गे । हे गङ्गाः ।

इसी प्रकार दुर्गा, अम्बिका, रमा, शिवा, सीता, आदि के रूप जानो ॥

"सर्वा" शब्द सर्वनाम—

१—सर्वा । सर्वे । सर्वाः । २—सर्वाम् । सर्वे । सर्वाः ।
३—सर्वया । सर्वाभ्याम् । सर्वाभिः । ४—सर्वस्यै । सर्वाभ्याम् । सर्वाभ्यः ।
५—सर्वस्याः । सर्वाभ्याम् । सर्वाभ्यः । ६—सर्वस्याः । सर्वयोः । सर्वासाम् ।
७—सर्वस्याम् । सर्वयोः । सर्वासु । सम्बोधन—गङ्गावत् ॥

इसी प्रकार विश्वा, उभा, अन्या, अन्यतरा, इतरा आदि के रूप जानो (जो शब्द पुल्ँलिङ्ग सर्वनाम में गिनाये हैं "एका" पर्य्यन्त)

६६—जब दूसरे शब्द से मिलकर सर्वनाम आता है तो कहीं २ गङ्गा के तुल्य भी रूप, स्त्रीलिङ्ग में होते हैं और पुल्ँलिङ्ग में राम शब्द के तुल्य । जैसे—उत्तरपूर्वस्यै, उत्तरपूर्वायै । इत्यादि ॥

द्वितीया, तृतीया में भी ऐसे ही दो २ रूप होते हैं ॥

६७—"जरा" शब्द को गङ्गा से भेद है । जैसेः—

१–जरा । जरसौ, जरे । जरसः, जराः । २–जरसम्, जराम् । जरसौ, जरे । जरसः, जराः । ३–जरसा, जरया । जराभ्याम् । जराभिः । ४–जरसे, जरायै । जराभ्याम् जराभ्यः । ५–जरसः, जरायाः । जराभ्याम् । जराभ्यः । ६–जरसः, जरायाः । जरसोः, जरयोः । जरसाम्, जराणाम् । ७–जरसि, जरायाम् । जरसोः, जरयोः । जरासु । सं० हे जरे । हे जरसौ, हे जरे । हे जरसः, हे जराः ॥

गोपा, विश्वपा, निधिपा, आदि स्त्रीलिङ्ग शब्द भी "पुल्लिँङ्ग विश्वपा" शब्द के ही तुल्य हैं ॥

इकारान्त "मति" शब्द । जैसेः—

१–मतिः । मती । मतयः । २–मतिम् । मती । मतीः । ३–मत्या । मतिभ्याम् । मतिभिः । ४–मत्यै, मतये । मतिभ्याम् । मतिभ्यः । ५–मत्याः, मतेः । मतिभ्याम् । मतिभ्यः । ६–मत्याः, मतेः । मत्योः । मतीनाम् । ७–मत्याम्, मतौ । मत्योः । मतिषु । सं०–हे मते । हे मती । हे मतयः ॥

इसी प्रकार गति, धृति, बुद्धि, रुचि, कृति, भूति, रति, शुद्धि, भक्ति, पङ्क्ति, मूर्त्ति, कीर्त्ति, ख्याति आदि शब्दों को भी जानो ॥

उदाहरण–

हिमवतो गङ्गाऽवतरति=हिमवान् (पर्वत) से गङ्गा उतरती है । सर्वां गृहस्थसामग्रीं कः संस्करोति=सब, गृहस्थसामग्री को कौन संस्कारकरता है । विश्वया रुच्या ईश्वरं चिन्तय=सारी रुचि से ईश्वर को यादकर । उभे कृती कस्य स्तः=दोनों करतूत किसकी हैं । अन्यस्यै कन्यायै दीयताम्=और कन्या के लिये दीजिये । अष्टासु अन्यतरा रुक्मिणी भवति=आठों में कोई एक रुक्मिणी है । सर्वाभ्य इतरा यशोदा प्रतीयते=सब से निराली यशोदा प्रतीतहोती है । एकस्याः ललनायाः भाषणं साधुतममस्ति=एक स्त्री का बयान बहुतअच्छा है । उत्तरपूर्वस्यां दिशि धूमकेतुरुदेति=उत्तरऔरपूर्व (दिशा) में पूंछलतारा उगता है । उत्तरपूर्वायां ज्यैष्ठे मासे सूर्य्य उदेति=उत्तरपूर्व (दिशा) में ज्येष्ठ मास में सूर्य्य उगता है । द्वितीयस्यां तृतीयायां वा कक्षायां रक्षको जागर्त्ति=दूसरी वा तीसरी कक्षा में चौकीदार जागता है । जरया पलितो देवदत्तः=बुढापे से देवदत्त पलित (जिस के शिरके बाल पकगये) है । जरसि पितॄन् सेवस्व=बुढापे में पितरों की सेवाकर । गोपे जलं देहि=गौपालनेवाली के लिये जल दे । ईश्वरस्य शक्ति-

विश्वपाऽस्ति=ईश्वर की शक्ति सबकीरक्षिका है । क्वचिद् गृहस्थे स्त्रियो निधिपाः भवन्ति=किसी २ गृहस्थ में स्त्रियां धनरक्षिका होती हैं। वृद्धत्वे मतिः प्रायः नश्यति=बुढापे में बुद्धि बहुधा नष्टहोजाती है । गतिरपि शिथिला जायते=चाल भी ढीली होजाती है । धृतिं धर्मस्य लक्षणं जानीहि=धैर्य को धर्म का लक्षण जान । बुद्ध्या विचारय=बुद्धि से विचार । रुचेरधिकं न भक्षणीयम्=रुचि से अधिक न खानाचाहिये । साधोः कृतिं पश्य=साधु की करनी को देख । भूत्यै यतस्व=ऐश्वर्य के लिये यत्नकर । रतेर्विरम=रति से विरामकर । ख्यात्यै लोको म्रियते=यश के लिये संसार मरता है । इत्यादि और भी ॥

६८—"त्रि" शब्द बहुवचनान्त है और यहां स्त्रीलिङ्ग में उस के रूप ऐसे होते हैं । जैसेः—

१—तिस्रः । २—तिस्रः । ३—तिसृभिः । ४—तिसृभ्यः । ५—तिसृभ्यः । ६—तिसृणाम् । ७—तिसृषु ॥

उदाहरण—

तिस्रः कन्याः क्रीडन्ति=तीन कन्या खेलती हैं । तिसृषु कन्यासु नास्ति दोषः=तीनों कन्याओं में दोष नहीं है । इत्यादि ॥

६९—"चतुर्" शब्द रेफान्त है पर रूप "त्रि" शब्द के तुल्य हैं । जैसे—
१—चतस्रः । २—चतस्रः । ३—चतसृभिः । ४—चतसृभ्यः । ५—चतसृभ्यः । ६—चतसृणाम् । ७—चतसृषु ॥

"द्वि" शब्दः—

१—द्वे । २—द्वे । ३—द्वाभ्याम् । ४—द्वाभ्याम् । ५—द्वाभ्याम् ६—द्वयोः । ७—द्वयोः ॥

(ईप्) ईकारान्त "गौरी" शब्दः—

१—गौरी । गौर्यौ । गौर्यः । २—गौरीम् । गौर्यौ । गौरीः ।
३—गौर्या । गौरीभ्याम् । गौरीभिः । ४—गौर्यै । गौरीभ्याम् । गौरीभ्यः ।
५—गौर्याः । गौरीभ्याम् । गौरीभ्यः । ६—गौर्याः । गौर्योः । गौरीणाम् ।
७—गौर्याम् । गौर्योः । गौरीषु । सम्बो०—हे गौरि । हे गौर्यौ । हेगौर्यः ॥

इसी प्रकार नदी, गोमती, देवी, काली आदि के रूप जानो ॥

७०—"लक्ष्मी" "तरी" "तन्त्री" आदि में इतना भेद है कि प्रथमा के एकवचन में विसर्गान्त रहता है । जैसेः—१—लक्ष्मीः । १—तरीः । १—तन्त्रीः । इत्यादि । शेष रूप "गौरी" के तुल्य हैं ॥

७१–"स्त्री" शब्द को लक्ष्मी शब्द से भेद है। जैसे:—

१–स्त्री। स्त्रियौ। स्त्रियः। २–स्त्रियम्, स्त्रीम्। स्त्रियौ। स्त्रियः, स्त्रीः।
३–स्त्रिया। स्त्रीभ्याम्। स्त्रीभिः। ४–स्त्रियै। स्त्रीभ्याम्। स्त्रीभ्यः।
५–स्त्रियाः। स्त्रीभ्याम्। स्त्रीभ्यः। ६–स्त्रियाः। स्त्रियोः। स्त्रीणाम्।
७–स्त्रियाम्। स्त्रियोः। स्त्रीषु। सम्बो०–हे स्त्रि। हे स्त्रियौ। हे स्त्रियः॥

७२–"श्री" शब्द को स्त्री से भी भेद है। जैसे—

१–श्रीः। श्रियौ। श्रियः। २–श्रियम्। श्रियौ। श्रियः।
३–श्रिया। श्रीभ्याम्। श्रीभिः। ४–श्रियै, श्रिये। श्रीभ्याम्। श्रीभ्यः।
५–श्रियाः, श्रियः। श्रीभ्याम्। श्रीभ्यः। ६–श्रियाः, श्रियः। श्रियोः। श्रीणाम्।
७–श्रियि, श्रियाम्। श्रियोः। श्रीषु। सम्बोधन–हे श्रीः। हे श्रियौ। हे श्रियः॥

उकारान्त "धेनु" शब्दः—

१–धेनुः। धेनू। धेनवः। २–धेनुम्। धेनू। धेनूः।
३–धेन्वा। धेनुभ्याम्। धेनुभिः। ४–धेन्वै, धेनवे। धेनुभ्याम्। धेनुभ्यः।
५–धेन्वाः, धेनोः। धेनुभ्याम्। धेनुभ्यः। ६–धेन्वाः, धेनोः। धेन्वोः।
धेनूनाम्। ७–धेन्वाम्, धेनौ। धेन्वोः। धेनुषु। हे धेनो। हे धेनू। हे धेनवः॥

"क्रोष्टृ" शब्द "गौरी" शब्द के सदृश है॥

"भ्रू" शब्द "श्री" के तुल्य है॥

"स्वयम्भू" शब्द जैसे पुंल्लिङ्ग में लिखा है वैसे ही यहां भी जानो॥

७३—"स्वसृ" शब्द पुंल्लिङ्ग "धातृ" के तुल्य है केवल द्वितीया बहुवचन में इतना भेद है कि–स्वसृः॥

७४—"मातृ" शब्द पितृ के तुल्य है केवल द्वितीया बहुवचन में इतना भेद है। जैसे:–मातृः॥

"द्यो" शब्द "गो" के तुल्य है। "रै" शब्द पुंल्लिङ्ग के तुल्य है॥

"नौ" शब्द "ग्लौ" के तुल्य है तथा और शब्द भी जो पुंल्लिङ्ग औकारान्त हैं स्त्रीलिङ्ग में भी उसी प्रकार हैं॥

हकारान्त "उपानह्" शब्द–

१–उपानत्, उपानद्। उपानहौ। उपानहः। २–उपानहम्। उपानहौ। उपानहः।
३–उपानहा। उपानद्भ्याम्। उपानद्भिः। ४–उपानहे। उपानद्भ्याम्। उपानद्भ्यः।

५—उपानहः। उपानद्भ्याम्। उपानद्भ्यः। ६—उपानहः। उपानहोः। उपानहाम्।
७—उपानहि। उपानहोः। उपानत्सु। सं०—हे उपानत्, द् ॥
१—उष्णिग्, क्। उष्णिहौ। उष्णिहः। इत्यादि। ३—उष्णिग्भ्याम्। उष्णिग्भिः।
४—उष्णिग्भ्यः। ७—उष्णिक्षु। शेष बीच २ के रूप उपानह् के सदृश हैं ॥

"दिव्" शब्द—

१—द्यौः। दिवौ। दिवः। २—दिवम्। दिवौ। दिवः।
३—दिवा। द्युभ्याम्। द्युभिः। ४—दिवे। द्युभ्याम्। द्युभ्यः।
५—दिवः। द्युभ्याम्। द्युभ्यः। ६—दिवः। दिवोः। दिवाम्।
७—दिवि। दिवोः। द्युषु। सं०—हे द्यौः। हे दिवौ। हे दिवः ॥
"गिर्" शब्दः—१—गीः। गिरौ। गिरः। २—गिरम्। गिरौ। गिरः।
३—गिरा। गीर्भ्याम्। गीर्भिः। ४—गिरे। गीर्भ्याम्। इत्यादि। ७—गीर्षु ॥

"पुर्" शब्दः—

१—पूः। पुरौ। पुरः। ३, ४, ५—पूर्भ्याम्। ७—पूर्षु। इत्यादि ॥

उदाहरण—

चतसृणां दिशां मध्ये तमो व्याप्तम्=चारों दिशाओं के बीच में अन्धकार व्याप्त है। द्वे गती स्तो मनस्विनाम्=दो गतियां हैं धीरों की। गौर्या शिवः आयाति=गौरी के साथ शिव आता है। नद्याः कूलं विघटयति पूरः=नदी के किनारे को तोड़ता है बाढ़। गोतम्यै देहि=गोतमी के लिये दे। हे देवि किमहं करवाणि=देवि मैं क्या करूं। कालीं पश्य=काली को देख। व्यापारे लक्ष्मीर्निवसति=व्यापार में लक्ष्मी रहती है। तर्यामुपविश्य पारं गच्छ=नाव में बैठकर पार को चल। तन्त्रीं वादय=सितार को बजा। स्त्रियो भीरवः सन्ति=स्त्रियां डरपोक हैं। श्रिये यतस्व=लक्ष्मी के लिये यत्नकर। धेनूनां पयो मधुरमस्ति=गौवों का दुग्ध मीठा है। क्रोष्ट्राः खरतरः शब्दः=गिदड़ी का कड़ा शब्द है। स्त्रीणाम् भ्रुवौ प्रशस्येते=स्त्रियों की भौंहें प्रशंसा की जाती हैं। स्वयम्भुवः प्रकृत्याः कार्यं जगत्=अनादि प्रकृति का कार्य्य जगत् है। स्वसुः पुत्रोऽयम्=यह बहिन का बेटा है। मातुः, मातरं स्मर=माता को स्मरणकर। दिवि चन्द्रः प्रकाशते=आकाश में चन्द्र प्रकाशता है। नावमारुह=नाव को चढ़। उपानहां प्रहारः=जूतों की चोट। उष्णिहाधीते=उष्णिग् (छन्द) के साथ

पड़ता है। शरदि द्यौः* स्वच्छा भवति=शरद् में आकाश स्वच्छ होता है ॥ पक्षिणां गिरः शृणु=पक्षियों की वाणियों को सुन। आसु पूर्षु के निवसन्ति=इन पुरियों में कौन बसते हैं ॥

"किम्" शब्द सर्वनाम स्त्रीलिङ्ग में "सर्वा" के तुल्य है। जैसे :-

१—का। के। काः। २—काम्। के। काः। ३—कया। काभ्याम्। काभिः। ४-कस्यै। काभ्याम्। काभ्यः। ५—कस्याः। इत्यादि ॥

"इदम्" शब्द सर्वनाम स्त्रीलिङ्ग :-

१—इयम्। इमे। इमाः। २—इमाम्। इमे। इमाः। ३-अनया। आभ्याम्। आभिः। ४—अस्यै। आभ्याम्। आभ्यः। ५—अस्याः। आभ्याम्। आभ्यः। ६-अस्याः। अनयोः। आसाम्। ७-अस्याम्। अनयोः। आसु ॥

त्यद्, तद्, यद्, एतद्, ये सर्वनाम स्त्रीलिङ्ग में:—

१-स्या। त्ये। त्याः। २-त्याम्। त्ये। त्याः। आगे सर्वा के तुल्य ॥

१-सा। ते। ताः। २-ताम्। ते। ताः। आगे सर्वा के तुल्य ॥

१-या। ये। याः। २-याम्। ये। याः। इत्यादि ॥

१-एषा। एते। एताः। २—एनाम्, एताम्। एते, एने। एताः। एनाः। ३-एतया, एनया। ६, ७-एतयोः, एनयोः। शेष सर्वा के तुल्य ॥

चकारान्त "वाच्" शब्दः—

१-वाक्, ग्। वाचौ। वाचः। २-वाचम्। वाचौ। वाचः। ३-वाचा। वाग्भ्याम्। वाग्भिः। ४-वाचे। वाग्भ्याम्। वाग्भ्यः। ५—वाचः। वाग्भ्याम्। वाग्भ्यः। ६—वाचः। वाचोः। वाचाम्। ७-वाचि। वाचोः। वाक्षु। हे वाक्, ग्। इसी प्रकार "त्वच्" शब्द भी जानो ॥

पकारान्त "अप्" शब्द केवल बहुवचन में आता है (जल का नाम है)

१-आपः। २-अपः। ३-अद्भिः। ४अद्भ्यः। ५-अद्भ्यः। ६-अपाम्। ७-अप्सु ॥

शकारान्त "दिश्" शब्द "वाच्" के तुल्य है। जैसेः—

१-दिक्, दिग्। दिशौ। दिशः। २-दिशम्। दिशौ। इत्यादि ॥

*आकाशवाचक स्त्रीलिङ्ग है ॥

इसी प्रकार "दृश्" शब्द भी जानो ॥

षकारान्त "त्विष्" शब्दः-१-त्विट्, त्विड् । त्विषौ । त्विषः । आगे "रत्नमुष्" (देखो पृष्ठ ३०) के तुल्य जानो ॥

"सजुष्" और "आशिष्" शब्दों के रूप "पिपठिष्" के तुल्य (देखो पृष्ठ ३०) जानो ॥

सकारान्त "अदस्" शब्द सर्वनामः—

१—असौ । अमू । अमूः । २—अमूम् । अमू । अमूः । ३—अमुया । अमूभ्याम् । अमूभिः । ४—अमुष्यै । अमूभ्याम् । अमूभ्यः । ५—अमुष्याः । अमूभ्याम् । अमूभ्यः । ६—अमुष्याः । अमुयोः । अमूषाम् । ७—अमुष्याम् । अमुयोः । अमूषु ॥

उदाहरण=

सुपुत्रोऽयं कस्याः कुक्षौ जातः=यह सुपुत्र किस की कुक्षि में उत्पन्न हुआ है ? । अस्याः साध्व्याः=इस साध्वी (पतिव्रता) की । यस्याः देव्याः कन्येयं सा क्वाऽस्ति?=जिस देवी की यह कन्या है वह कहां है ? । एषा अस्ति=यह है । तया किं प्राप्तम्=उस ने क्या पाया ? । एताः कन्याः=ये कन्यायें । वाच्यर्था नियताः सर्वे=वाणी में अर्थ, नियत हैं सब । वृक्षस्य त्वचमुत्पाटय=वृक्ष की त्वचा (बक्कल) को उधेड़ । अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति=जल से शरीर शुद्ध होते हैं । पूर्वस्यां दिशि सूर्य उदेति=पूर्वदिशा में सूर्य उगता है । दृशं वर्धय=दृष्टि को बढ़ा । त्विषो बिभ्यति=तेज से डरते हैं । आशिषां पात्रम्=असीसों का पात्र । अमूषां महिषीनां अहोभाग्यम्=इन रानियों का अहोभाग्य । अमुष्यै पुत्रमीश्वरो ददातु=इस के लिये पुत्र ईश्वर देवे ॥

इति सङ्क्षेपतः स्त्रीलिङ्गशब्दनिरूपणम् ॥

अथ नपुंसकलिङ्गशब्दनिरूपणम् ॥

अकारान्त "ज्ञान" शब्दः-१-ज्ञानम् । ज्ञाने । ज्ञानानि । आगे गृहशब्द (देखो प्रथमपुस्तक) के तुल्य और समस्त अकारान्त नपुंसक इसी के तुल्य हैं । जैसे-वनम् । धनम् । फलम् । पुष्पम् । मन्दिरम् । इत्यादि ॥

७५-केवल डतरप्रत्ययवाले, डतमप्रत्ययवाले, अन्य, अन्यतर और इतर इन सर्वनामों में प्रथमा के एकवचन में इतना भेद हैः-

१-कतरत् । कतमत् । अन्यत् । अन्यतरत् । इतरत् । आगे गृहशब्द के तुल्य हैं ॥

श्रीपा, मधुपा, विश्वपा आदि आकारान्त भी नपुंसक में ह्रस्वान्तहोकर-

१–श्रीपम् । श्रीपे । श्रीपाणि । १–मधुपम् । मधुपे । मधुपानि । इत्यादि गृह-शब्द के तुल्य ही होजाते हैं ॥

इकारान्त "वारि" (जल) शब्दः–१–वारि । वारिणी । वारीणि । २–वारि । वारिणी । वारीणि । ३–वारिणा । वारिभ्याम् । वारिभिः । ४–वारिणे । वारिभ्याम् । वारिभ्यः । ५–वारिणः । वारिभ्याम् । वारिभ्यः । ६–वारिणः । वारिणोः । वारीणाम् । ७–वारिणि । वारिणोः । वारिषु । हे वारे, हे वारि । हे वारिणी । हे वारीणि ॥

७६–इसी प्रकार "सुधी" शब्द भी ह्रस्व होकर जानना चाहिये परन्तु तृतीयादि विभक्तियों में पुलँलिङ्ग (देखो पृष्ठ १७ पं० २०) तुल्य ही होता है ॥

७७–इकारान्तों में केवल अस्थि, दधि, सक्थि और अक्षि इन चार शब्दों का तृतीयादि विभक्तियों में भेद है । जैसे–३–अस्थ्ना । दध्ना । सक्थ्ना । अक्ष्णा । ४–अस्थ्ने । दध्ने । सक्थ्ने । अक्ष्णे । ५व६–अस्थ्नः । दध्नः । सक्थ्नः । अक्ष्णः । ६ । ७–अस्थ्नि, अस्थनि । अस्थ्नोः । दध्नि, दधनि । दध्नोः । सक्थ्नि, सक्थनि । सक्थ्नोः । अक्ष्णि, अक्षणि । अक्ष्णोः । शेष सब रूप वारि शब्द के तुल्य जानो ॥

उकारान्त "मधु" शब्द वारि शब्द के तुल्य है ॥

७८–"सुलु" शब्द ह्रस्व होकर सुधी के तुल्य हो जाता है ॥

ऋकारान्त "धातृ" शब्दः–१–धातृ । धातृणी । धातॄणि । २–धातृ । धातृणी । धातॄणि । ३–धातृणा इत्यादि वारि शब्द के तुल्य जानो । ऐसे ही "ज्ञातृ" आदि भी ।

७९–"प्रद्यु" और "सुनु" आदि भी ह्रस्व होकर मधु के तुल्य हैं ॥

८०–ऐकारान्त "प्रै" को ह्रस्व होकर–प्रि होजाता है और वारि के तुल्य होता है केवल ३–४–५–प्राभ्याम् । ३–प्राभिः । ४–५–प्राभ्यः । ७–प्रासु । इतना भेद है ॥

उदाहरण–ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः=सिवाय ज्ञान से मुक्ति नहीं । धनानि के न सेवन्ते=धनों को कौन नहीं सेवा करते । वनानि दहत्यग्निः=वनों को फूंकता है अग्नि । द्वे फले गृहाण=दो फल ले । कतरत् कुलं सुशीलम्=कौनसा कुल सुशील है । कर्मणोऽन्यदेव फलम्=कर्म का अन्य ही फल है । द्वयोरन्यतरत् फलं गृहाण=दो में किसी एक फल को लेले । अहमितरदेव ग्रहीष्यामि=मैं और ही लूंगा । विश्वपं दैवतं किमस्ति=विश्वरक्षक दैवत कौन है । ब्रह्मैव=ब्रह्म ही है । मधुपानि भ्रमरकुलानि रुवन्ति=मधु पीने वाले भौंरों के-झुण्ड बोलते हैं । वारीणि वर्षन्ति=जल वर्षते हैं । वारिभिरापूरितं नभः=जलों से भरगया आकाश ।

एषां कुलमेव सुधि=इन का कुल ही सुबुद्धि है । अस्थ्नां संयोगः=हड्डियों का जोड़ । दधि पिब=दही पी । अक्षिणी उन्मीलय=२ आंखें खोल । अस्थ्नि आघातो जातः=हड्डी में चोट लगी है । सर्पिः दुग्धं मैरेयं वा मधु वदन्ति=घी, दूध वा मदिरा को मधु करते हैं । सुष्ठु भृत्यकुलम्=अच्छा काटने वाला नौकरों का झुण्ड । एकं ब्रह्म जगतो धातृ वर्त्तते=एक ब्रह्म जगत् का धर्त्ता है । तदेव सर्वस्य ज्ञातृ=वही सब का जानने वाला ॥

हकारान्त "स्वनडुह्" शब्दः—१=स्वनडुत्, स्वनडुद् । स्वनडुही । स्वनड्वांहि । इसी प्रकार द्वितीया में । और तृतीया से लेके पुल्ँलिङ्ग के तुल्य जानो (देखो पृष्ठ २२)

रेफान्त "वार्" शब्द :—१—वाः । वारी । वारि । इसी प्रकार द्वितीयाविभक्ति भी । ३—वारा । वार्भ्याम् । वार्भिः । ४—वारे । वार्भ्याम् । वार्भ्यः । ५—वारः । वार्भ्याम् । इत्यादि ॥

"चतुर्" शब्द बहुवचन में ही होता है—१—चत्वारि । २—चत्वारि । आगे पुल्ँलिङ्ग के तुल्य (देखो पृष्ठ २२) हैं ॥

मकारान्त "किम्" शब्द सर्वनाम—१—किम् । के । कानि । २—किम् । के । कानि । आगे पुल्ँलिङ्ग सर्वशब्द के तुल्य (देखो पृष्ठ २२) है ॥

१—इदम् । इमे । इमानि । २—इदम्, एनत् । इमे, एने । इमानि, एनानि । आगे पुल्ँलिङ्ग (देखो पृष्ठ २३) के तुल्य है ॥

नकारान्त "अहन्" शब्द—१—अहः । अह्नी, अहनी । अहानि । २—अहः । अह्नी, अहनी । अहानि । ३—अह्ना । अहोभ्याम् । अहोभिः । ४—अह्ने । अहोभ्याम् । अहोभ्यः । ५—अह्नः । अहोभ्याम् । अहोभ्यः । ६—अह्नः । अह्नोः । अह्नाम् । ७—अह्नि, अहनि । अह्नोः । अहस्सु । सम्बो० प्रथमा तुल्य है ॥

"दण्डिन्" शब्दः—१—दण्डि । दण्डिनी । दण्डीनि । २—दण्डि । दण्डिनी । दण्डीनि । आगे पुल्ँलिङ्ग के तुल्य है ॥

"सुपथिन्" शब्दः-१—सुपथि । सुपथी । सुपन्थानि । २—सुपथि । सुपथी । सुपन्थानि । आगे पुल्ँलिङ्ग पथिन् शब्द (देखो पृष्ठ २४) के तुल्य जानो ॥

दकारान्त " तद् " शब्द सर्वनाम—१—तद् । ते । तानि । २ तद् । ते । तानि । आगे पुल्ँलिङ्ग के तुल्य है । इसी प्रकार त्यद्, यद्, एतद्, भी जानो ॥

तकारान्त "शकृत्" शब्द-१—शकृत् । शकृती । शकृन्ति । २—शकृत् । शकृती । शकृन्ति । आगे महत् शब्द (देखो पृष्ठ २८) के तुल्य जानो ॥

"ददत्" शब्दः—१—ददत् । ददती । ददति, ददन्ति । २—ददत् । ददती । ददति, ददन्ति । आगे पुल्लिङ्ग के तुल्य है इसी प्रकार शासत्, चकासत्, जाग्रत, जक्षत् और दरिद्रत् के रूप भी जानो ॥

षकारान्त-"धनुष्" शब्दः-१-धनुः। धनुषी । धनूंषि । २-धनुः । धनुषी । धनूंषि । ३-धनुषा । धनुर्भ्याम् । धनुर्भिः । ४-धनुषे । धनुर्भ्याम् । धनुर्भ्यः । ५-धनुषः । धनुर्भ्याम् । धनुर्भ्यः । ६-धनुषः । धनुषोः । धनुषाम् । ७-धनुषि । धनुषोः । धनुष्षु ॥

स्वनडुत् यानं गच्छति--अच्छे बैल वाला यान (रथ) जाता है । वारि निमग्नो बालः=जल में डूब गया बालक। चत्वारि वेदपुस्तकानि सन्ति=वेद पुस्तकें चार हैं । कानि २ ?=कौन २ ? । ऋग्यजुःसामाऽथर्वनामकानि=ऋग् १ यजुः २ साम ३ अथर्व ४ नामक । इमानि धर्मपुस्तकानि सन्ति=ये धर्म-पुस्तक हैं । अह्नी व्यतीते=दो दिन बीतगये । दण्डीनि यतिकुलानि शोभन्ते=दण्ड वाले संन्यासियों के झुण्ड सुहाते हैं । वनान्यपि सुपन्थानि जातानि=वन भी सुमार्ग वाले होगये । तद्दिनं व्यर्थम्=वह दिन व्यर्थ है । एतान्यहानि उष्णानि=ये दिन गर्म हैं । यानि दिनानि गतानि तानि पुनर्नाऽऽगमिष्यन्ति=जो दिन गये वे फिर न आवेंगे । तस्य शकृत् अवरुद्धम्=उस का दस्त (पाखाना) रुक गया । असत्यं महत् पापम्=झूठ बड़ा पाप है। गृहं हर्षं ददत् प्रतीयते=घर हर्ष देता प्रतीत होता है । राजकुलं शासत् महीयते=हुकूमत करता हुवा राजकुल महिमा पाता है। चकासत् रुक्ममयं हर्म्यं पश्य=चमकते हुए सुनहरे महल को देख । जाग्रत् ज्योतिः पश्य=जागती ज्योति को देख । जक्षत् वानरकुलं त्वरयति=खाते हुए वानरों का झुंड जल्दी करता है । सम्प्रति गृहाणि दरिद्रन्ति सन्ति=आज कल घर ग़रीब होते हुए हैं। ऐन्द्रं धनुः पश्य=इन्द्र के धनुष (अर्थात् सूर्य्य का प्रकाश जलकणों पर पड़ के उत्पन्न हुए) को देख । धनुषि बाणः सन्धीयते=धनुष में बाण (तीर) लगाया जाता है ।

सकारान्त "पयस्" शब्द ।

१=पयः । पयसी । पयांसि २-पयः । पयसी पयांसि । ३-पयोभ्याम् आगे पुँल्लिङ्ग "वेधस्" के तुल्य है । (देखो पृष्ठ ३१) ॥

"अदस्" शब्दः—१—अदः । अमू । अमूनि । २—अदः । अमू । अमूनि । आगे पुल्लिङ्ग के तुल्य है । (देखो पृष्ठ ३१) ॥

पयो वर्षन्ति जलदाः=बादल जल बर्षाते हैं । पयसा कमलानि शोभन्ते=जल से कमल सुहाते हैं। निर्म्मलमदः पयः=यह जल निर्मल है । अमूनि वनानि शुष्कानि=ये वन सूख गये । अमू सरसी स्वच्छे स्तः=ये दो तालाब स्वच्छ हैं इत्यादि ॥

इति नपुंसकलिङ्गस्वरूपनिरूपणम् समाप्तोऽयं

तृतीयश्च भागः ॥

नीचे लिखे पुस्तकादि

पं० छुट्टनलाल स्वा . परीक्षितगढ ज़ि० मेरठ से मिलेंगे ॥

ओ३म्

संस्कृत-भाषा-चतुर्थं पुस्तकम् ॥

परीक्षितगढ़ (ज़ि० मेरठ) निवासि-स्वामि

तुलसीराम-शर्म्म-विरचितम् ॥

"वेदप्रकाश" नामक मासिकपत्र सम्पादकेन

निर्मात्रा स्वीय "स्वामियन्त्रालये"

मुद्रितं प्रकाशितं च

मेरठ ५।७।९७॥ १०००

मूल्यम् ॥)

ओ३म्

भूमिका ॥

आज इस चतुर्थ पुस्तक का प्रथम मुद्रण समाप्त होगया और ग्राहक वर्ग के सम्मुख है। मैं आशा करता हूं कि जिस प्रकार प्रथम द्वितीय तृतीय पुस्तकों की १५००० प्रति रुचिपूर्वक ग्राहकों ने ग्रहण कीं और मेरे श्रम को सफल किया इसी प्रकार नीचे लिखे विषयों से विभूषित इस पुस्तक के द्वारा भी मेरे श्रम का साफल्य और पाठकों का उपकार होगा। इस पुस्तक का प्रथम भाग ८ वीं, द्वि० भा० ७ वीं, तृ० भा० छठी और यह चतुर्थ भाग ५ वीं कक्षा वर्तमान अंग्रेज़ी स्कूलों में दूसरी भाषा संस्कृत लेने वालों को उपयोगी है और देवनागरी स्कूल मेरठ आदि कई जगह इस का प्रचार भी है। यही कारण है कि प्रथम पुस्तक का २००० मुद्रण छठी वार हुवा और इतने अधिक प्रचार से आशा है कि यह चतुर्थ भाग भी इसी प्रकार उपयोगी समझा जायगा। अब ४ भागों में व्याकरणसम्बन्धी विषय थोड़े २ सब आगये हैं इस लिये इतने ही पर इसे समाप्त किया जाता है॥

मेरठ २। ७। ९७

तुलसीराम स्वामी

सम्पादक "वेदप्रकाश"

विषयानुक्रमणिका ॥

२८ पृष्ठ तक सरस्वती प्रेस—इटावा, और शेष तथा टाटिल पेज स्वामिप्रेस में छपा

अथ

संस्कृत-भाषा-चतुर्थं पुस्तकम् ॥

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु ॥
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥१॥

अर्थ-जो शब्द, पुरुष स्त्री नपुंसक इन तीनों लिङ्गों में तथा प्रथमा द्वितीयादि सप्त विभक्तियों में और एक, द्वि, बहु इन तीनों वचनों में (सदृशं) एक ही रूप से रहे उस में कुछ दूसरा विकार न हो, वह अव्यय कहाता है। सो उदाहरण सहित कुछ अव्यय नीचे लिखे जाते हैं:-

स्वर्=स्वर्ग। प्रातर्=प्रातःकाल। पुनर्=फिर। उच्चैः। नीचैः। शनैस्=धीरे। ऋते=बिन। युगपत्=एक साथ। आरात्=दूर, समीप। पृथक्। ह्यस्=गत दिन। श्वस्=आगामि दिन। दिवा=दिन। रात्रौ=रात्रि। सायम्=संध्या, सूर्यास्त काल। चिरम्=विलम्ब। ईषत्=किञ्चित्। तूष्णीम्=चुप। बहिस्=बाहर। समया=साथ। स्वयम्=आप। वृथा। नक्तम्=रात्रि। न (अ)=नहीं। अद्धा=साक्षात्। तिरस्=तिरछा वा छिपा। अन्तरा, अन्तरेण=बिन। सहसा=शीघ्र। विना=बिन। नाना=अनेक। स्वस्ति=शुभ। स्वधा=पितृदान। अलम्=बस, काफ़ी, फ़कत्। दोषा=दिन। मृषा, मिथ्या, मुधा=झूठ। पुरा=पूर्वकाल। मिथस्, मिथो=परस्पर। प्रायस्=बहुधा, अकसर। मुहुस्=बार २। साकम्, सार्धम्, समम्=साथ। नमस्=नमस्कार। धिक्=धिक्कार। अधुना, इदानीम्=अब ॥

स्वर् आदि से इदानीम् पर्यन्त अव्ययों के क्रम से उदाहरण लिखते हैं:-
(स्मरण रक्खो कि अव्यय-सब लिङ्ग, वचन, विभक्तियों में समान रहते हैं-)

ऋषयः स्वर्गताः। पयीः प्रातरुदितः। पुनरागमिष्यामि। उच्चैः पठ। नीचैर्न पश्यति। शनैरभ्यासो भवति। ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः। युगपत्सर्वे आगताः। आराद्वनं वर्तते। पृथक् पृथक् गङ्गा यमुना च नद्यौ गच्छतः। ह्यः और आगतः। श्वोऽगन्तास्मि (कल जाऊंगा)। दिवा जागर्ति लोकः। रात्रौ स्वपिति

च। सायं संध्योपासनम् कुरु। चिरं न कर्त्तव्यम्। ईषल्लवणमस्ति। तूष्णीं तिष्ठ। छात्रो बहिर्गतः। चन्द्रः शुक्रश्च समया उदितः। स्वामी स्वयं द्रक्ष्यति। वृथा वादो न कार्यः। नक्तं जागरणं न शोभनम्। नञ् (न)—श्रावयो र्नाऽस्ति भेदः। सूर्योऽह्ना प्रकाशते। तिरोगच्छति, तिरो भूतः। व्याकरणमन्तराऽन्यः। पादमन्तरेण कथं गच्छति सर्पः। सहसा पठति वेदम्। नेत्रं विना काणः। विष्णुमित्रेण नाना शास्त्राणि पठितानि। राज्ञे स्वस्ति। पितृभ्यः स्वधा। अलं महीपाल! तव श्रमेण। दोषा व्यापारः प्रवर्त्तते। मृषा वदति। मिथ्या हठः। मुधा कथितम्। पुरा रामो राजा बभूव। मिथो युध्यन्ते श्वानः। वर्षासु प्रायो मेघो वर्षति। मुहुर्बालकः खादति। साकं, सार्धं, समं वा गुरुणाऽऽ गच्छति छात्रः। गुरवे नमः। पाषण्डिनं धिक्। अथ पञ्चमं पुस्तकं लिखामः। अधुनाऽव्ययानि पठामः। इदानीं न्यायं पठ॥

निम्नलिखित (च) आदि अव्यय निपात भी कहाते हैं:—

च=और, भी। वा=अथवा, या। ह=प्रसिद्ध। अह=सत्कार, अहा। एव=ही, निश्चय। एवम्=ऐसे। नूनम्=निश्चय। शश्वत्=सदा। भूयस्=फिर भी। चेत्=यदि। यत्र। कच्चित्=क्या (प्रश्न)। नह=नहीं करना। हन्त=दुःख। नकि=मा, उपमार्थ। यावत्=जब तक। तावत्=तब तक। स्वाहा=देवनिमित्त दान। तथाहि=ऐसे ही। खलु=निश्चय। किल=सुनते हैं। अथ=अब से। स्म=पूर्वसमय।

(प्र) आदि २० अव्यय, उपसर्ग भी कहाते हैं ये प्रायः क्रिया के पूर्व आते हैं और क्रिया में मिलकर ही अर्थ भी होता है।

प्र। परा। अप। सम्। अनु। अव। नि। निर्। दुर्। वि। अधि। सु। उत्। परि। प्रति। अभि। अति। अपि। उप। आ (ङ्)॥

यथाकथाच=जैसे कैसे। है, हे=सम्बोधन। भोस्=सम्बोधन। जिन के अन्त में तस् हो जैसे—सर्वतः=सब से। उभयतः=दोनों ओर से इत्यादि।

तथा जिन के अन्त में शस् हो। जैसे—बहुशः=बहुतसा। प्रायशः=विशेष करके इत्यादि।

जिन के अन्त में त्वा, वत् हों—जैसे कृत्वा, भुक्त्वा, ब्राह्मणवत्, क्षत्रियवत्। इत्यादि।

अब क्रम से (च) आदि के उदाहरण लिखते हैं यथा- त्वमहं च गच्छावः। अहं च पठामि। माता पिता वा पुत्रं रक्षति। वृद्धेभ्यो ह श्रूयते=वृद्धों से प्रसिद्ध

सुना है । अह माणवको भुंक्ते=अहा! बालक खाता है । अहमेव पठामि । एवं पठ । नूनं शरद्रतुः कासाः प्रफुल्लाः । शश्वद्वदति कुशिक्षितः । भूयः पठति । शान्तिश्चेदमृतेन किम् । यत्र धर्मस्तत्र जयः । कच्चिज्जीवति ते माता । नह पठामि । हन्त बालो भक्षितो व्याघ्रेण । सर्पो नकिर्गच्छति । यावन्न दास्यति । तावन्न गमिष्यामि । अग्नये स्वाहा । तथाहि स पठति । दिनेशः खलु धनी । पुरा किल दशरथो राजा बभूव । अद्य चतुर्थं पुस्तकं पठामः । वसति स्म रावणो लङ्कायाम् ॥

(प्र) आदि २० उपसर्गों के उदाहरण कुछ धातुरूप लिखकर पश्चात् लिखेंगे क्योंकि वे धातु के प्रथम आते हैं ॥

यथाकथाच सञ्चितं धनम् । हे वरानने । हे जगदीश्वर । भो विष्णुमित्र । सर्वतो ग्रामं जनाः सन्ति । उभयतो राजानौ युध्येते । बहुशः प्रमाणानि सन्ति । प्रायशो रोगिणो म्रियन्ते । भुक्त्वा पठिष्यामि । पाठं कृत्वा लिखामि । ब्राह्मणवत् शान्तो वैश्यः । क्षत्रियवत् पराक्रमो नटेषु ॥

ये संकेतमात्र अव्यय तथा उन के उदाहरण लिखे हैं यथार्थ में एक २ अव्यय के अनेक अर्थ होते हैं जो प्रकरणानुसार पढ़ने पढ़ाने वालों को ज्ञात हो जाते हैं-उक्तञ्च—

धातवश्चोपसर्गाश्च निपाताश्चेति ते त्रयः ।
अनेकार्था हि विज्ञेयाः पाठस्तेषां निदर्शनम् ॥

अर्थात् धातु उपसर्ग निपात इन तीनों के अनेक अर्थ हैं परन्तु जो कुछ इन के अर्थ पुस्तकों में लिखे हैं वे भी निदर्शनमात्र हैं ॥

अब कुछ धातुओं के रूप लिखें गे ॥

१-भू, स्था, गम्, पठ आदि धातु कहाते हैं । धातुओं के गण दश हैं यथा, भ्वादि, अदादि, जुहोत्यादि, दिवादि, स्वादि, रुधादि, तनादि, तुदादि, क्र्यादि और चुरादि ॥

२-इन में से भ्वादिगण के धातुरूप प्रथम लिखें गे ॥

३-धातु में जो विभक्तियां १८० लगती हैं वे तिङ् कहाती हैं अतएव इस धातु प्रकरण को तिङन्त प्रकरण कहते हैं ॥

४—धातु के कालभेद से दश प्रकार के रूप हैं उन दश के नाम ये हैं—यथा प्रथम (लट्) यह वर्त्तमान काल में होता है। द्वितीय (लिङ्) और तृतीय (लोट्) यह दोनों विधिकाल में होते हैं। चतुर्थ (लङ्) यह समीप के भूतकाल में होता है इसे 'अनद्यतनभूत, कहते हैं। पञ्चम (लिट्) प्राचीनभूतकाल में होता है इसे "परोक्षभूत" कहते हैं। षष्ठ (आशीर्लिङ्) यह आशीर्वाद का सूचक होता है। सप्तम (लुट्) यह अगले दिन के भविष्यत्काल में ही होता है। अष्टम (लृट्) यह सामान्य भविष्यत् में होता है। नवम (लृङ्) यह हेतुहेतुमद्भाव (अर्थात् शर्त्त) के भविष्यत्काल में होता है जैसे सुवृष्टि होती वा होगी तौ सुभिक्ष होता वा होगा इत्यादि। दशम(लुङ्) यह सामान्यभूतकाल में होता है॥

५—इन १० लकारों में तीन "पुरुष" होते हैं—जिस क्रिया का वाच्य अस्मद् (मैं) हो वह "उत्तम" पुरुष जानों जिस का वाच्य युष्मद् (तू) हो वह "मध्यम" पुरुष जानो। युष्मद् अस्मद् से भिन्न अन्य कोई वाच्य समझा जावे तो "प्रथम" पुरुष होता है॥

६—सुबन्त के समान तिङन्त में भी एकवचन द्विवचन और बहुवचन के तीन २ रूप होते हैं। इस प्रकार तीनों पुरुष तीनों वचनों से मिलकर ९ रूप हुवे फिर एक एक (लट्) आदि १० लकारों के मिलकर ९० रूप होते हैं फिर ९० परस्मैपद और ९० आत्मनेपद मिलकर उपरोक्त १८० रूप एक २ धातु के होंगे परन्तु कोई धातु केवल परस्मैपद में ही रहता है कोई केवल आत्मनेपद में ही रहता है इन के केवल ९०। ९० ही रूप होंगे परन्तु जो उभयपदी धातु हैं उन के १८० रूप होंगे॥

अब नीचे क्रम से "भू" आदि धातुओं के रूप लिखते हैं यथा—

१ "भू" धातु (अर्थ, होना) के लट् लकार वर्त्तमानकाल के रूप—

प्रथमपुरुष—एकव०—भवति=१*है। द्विव०—भवतः=२*हैं। बहुव०—भवन्ति=३*हैं।
मध्यमपु०—भवसि=तू है। भवथः=तुम २ हो। भवथ=तुम ३ हो।
उत्तमपु०—भवामि=मैं हूं। भवावः=हम २ हैं। भवामः=हम ३ हैं।

२ लिङ्लकार विधि आदि अर्थ में जैसे :—

प्रथमपु०—भवेत्=१ होवे। भवेताम्=२ होवें। भवेयुः=३ होवें।

*नोट—१अङ्क से एकवचन। २सेद्विवचन। और ३से बहुवचन समझो पुस्तक भर में।

मध्यमपु०—भवेः=तू होवे । भवेतम्=तुम २ होवो । भवेत=तुम ३ होवो ।
उत्तमपु०—भवेयम्=मैं होऊं । भवेव=हम २ होवें । भवेम=हम ३ होवें ।

३—विधि आदि अर्थ में (लोट्)

प्रथमपु०—भवतु, भवतात्=१ होवे । भवताम्=२ होवें । भवन्तु=३ होवें
मध्यमपु०—भव, भवतात्=१ तू होवे । भवतम्=२ तुम होओ । भवत=३ तुम होवो
उत्तमपु०—भवानि=१मैं होऊं । भवाव=२ हम होवें । भवाम=३ हम होवें

४—अनद्यतन भूतकाल में (लङ्)

प्रथमपु०—अभवत्=१ हुवा है । अभवताम्=२ हुवे हैं । अभवन्=३ हुवे हैं
मध्यमपु०—अभवः=१ तू हुवा है । अभवतम्=२ हुवे हो । अभवत=३ हुवे हो
उत्तमपु०—अभवम्=१ हुआ हूं । अभवाव=२ हम हुवे हैं । अभवाम=३ हुवे हैं

५—परोक्ष भूतकाल में (लिट्)

प्रथमपु०—बभूव=१ हुवा था । बभूवतुः=२ हुवे थे । बभूवुः=३ हुवे थे
मध्यमपु०—बभूविथ=१ तू हुवा था । बभूवथुः=२ तुम हुवे थे । बभूव=३ तुम हुवे थे
उत्तमपु०—बभूव=१ मैं हुवा था । बभूविव=२ हम हुवे थे । बभूविम=३ हुवे थे

६—आशीर्वाद में (आशीर्लिङ्)

इस का अर्थ भाषा में दूसरे (लिङ्) के तुल्य बोला जाता है यथा "स पुत्रवान् भूयात्"=वह पुत्रवाला होवे । अहं पण्डितो भूयासम्=मैं पण्डित होऊं । इत्यादि ॥
प्रथमपु०—भूयात् । भूयास्ताम् । भूयासुः ॥ मध्यमपु०—भूयाः । भूयास्तम् । भूयास्त ॥
उत्तमपु०— भूयासम् । भूयास्व । भूयास्म ॥

७—आगामिदिन (कल्ह) के अर्थ में भविष्यत् (लुट्)

इस का अर्थ भाषा में यथा "देवदत्तः राजा भविता=देवदत्त कल्ह को राजा होगा । अहं धनी भवितास्मि=मैं कल्ह को धनी होऊंगा । इत्यादि ॥
प्रथमपु०—भविता । भवितारौ । भवितारः ॥ मध्यमपु०—भवितासि । भवितास्थः । भवितास्थ ॥ उत्तम पु०—भवितास्मि । भवितास्वः । भवितास्मः ।

८—सामान्य भविष्यत् काल में (लृट्)

प्रथमपु०—भविष्यति । भविष्यतः । भविष्यन्ति ॥ मध्यमपु०—भविष्यसि । भविष्यथः । भविष्यथ ॥ उत्तमपु०—भविष्यामि । भविष्यावः । भविष्यामः ॥

उदाहरण, जैसे मरु-देवापी राजानौ भविष्यतः=मरु और देवापि २ राजा होंगे। व्यापारेण त्वं धनाढ्यो भविष्यसि=व्यापार से तू धनाढ्य होगा। इत्यादि॥

९-हेतुहेतुमद्भाव (शर्त) में (लृङ्)

प्रथमपु०-अभविष्यत्। अभविष्यताम्। अभविष्यन्॥ मध्यमपु०-अभविष्यः। अभविष्यतम्। अभविष्यत॥ उत्तमपु०-अभविष्यम्। अभविष्याव। अभविष्याम॥

उदाहरण-जैसे, "यदि उद्यममकरिष्यन् तर्हि लक्ष्मीवन्तोऽभविष्यन्=यदि उद्यम करेंगे तो लक्ष्मीवन्त होंवे। इत्यादि॥

१० सामान्य भूतकाल में (लुङ्)

प्रथमपु०-अभूत्। अभूताम्। अभूवन्॥ मध्यमपु०=अभूः। अभूतम्। अभूत॥ उत्तमपु०-अभूवम्। अभूव। अभूम॥

उदाहरण-जैसे, आवां दुःखितौ अभूव=हम २ दुःखी हुवे। सरः शुष्कमभूत्=तालाब खुश्क हुआ॥

२"चित्" धातु-चेतना, चीन्हना, स्मरण। १-वर्त्तमान काल में (लट्)

प्रथमपु०-चेतति। चेततः। चेतन्ति॥ मध्यमपु०-चेतसि। चेतथः। चेतथ॥ उत्तमपु०-चेतामि। चेतावः। चेतामः। त्वं मातरं चेतसि=तू माता को चीन्हता है॥

२-लिङ् (विधि अर्थ में)

चेतेत्। चेतेताम्। चेतेयुः॥ चेतेः। चेतेतम्। चेतेत॥ चेतेयम्। चेतेव। चेतेम॥ साक्षिणश्चेतेयुः=साक्षी लोग चीन्हैं॥

३ लोट् (ऊपर के ही अर्थ में)

चेततु, चेततात्। चेतताम्। चेतन्तु॥ चेत, चेततात्। चेततम्। चेतत॥ चेतानि। चेताव। चेताम॥ भवान् ब्रह्म चेततु॥

४ लङ् (अनद्यतन भूत में)

अचेतत्। अचेतताम्। अचेतन्॥ अचेतः। अचेततम्। अचेतत॥ अचेतम्। अचेताव। अचेताम॥ त्वं ह्यः पाठमचेतः=तूने कल्ह पाठ याद किया।

५ लिट् (परोक्षभूत)

चिचेत। चिचितुः। चिचितुः॥ चिचेतिथ। चिचितथुः। चिचित॥ चिचेत चिचितिव। चिचितिम॥ सीता रामं चिचेत=सीता ने राम को स्मरा था।

६ आशीर्लिङ्

चित्यात् । चित्यास्ताम् । चित्यासुः ॥ चित्याः । चित्यास्तम् । चित्यास्त ॥ चित्यासम् । चित्यास्व । चित्यास्म ॥ सर्वं सुखं चित्यासुः=सब सुख को चेत करें ॥

७ लुट् (अनद्यतन भविष्यत्)

चेतिता । चेतितारौ । चेतितारः ॥ चेतितासि । चेतितास्थः । चेतितास्थ ॥ चेतितास्मि । चेतितास्वः । चेतितास्मः ॥ अद्य पठितं श्वः चेतितास्मि=आज पढ़े को कल्ह याद करूंगा ॥

८ लृट् (भविष्यत्)

चेतिष्यति । चेतिष्यतः । चेतिष्यन्ति ॥ चेतिष्यसि । चेतिष्यथः । चेतिष्यथ ॥ चेतिष्यामि । चेतिष्यावः । चेतिष्यामः ॥ वृद्धत्वे चेतिष्यसि=तू बुढापे में याद करेगा ॥

९ लृङ् (हेतुहेतुमद्भाव)

अचेतिष्यत् । अचेतिष्यताम् । अचेतिष्यन् ॥ अचेतिष्यः । अचेतिष्यतम् । अचेतिष्यत ॥ अचेतिष्यम् । अचेतिष्याव । अचेतिष्याम ॥ पाठम् अचेतिष्याम पण्डिताः अभविष्याम=पाठ याद करेंगे तो पण्डित होवेंगे ॥

१० लुङ् (सामान्य भूत)

अचेतीत् । अचेतिष्टाम् । अचेतिषुः ॥ अचेतीः । अचेतिष्टम् । अचेतिष्ट ॥ अचेतिषम् । अचेतिष्व । अचेतिष्म ॥

यूयं मातरं पितरं च नाऽचेतिष्ट=तुमने माता और पिता को नहीं याद किया॥

३ "शुच्„ धातु-शोक शोच करना ॥

१ लट्

शोचति । शोचतः । शोचन्ति ॥ शोचसि । शोचथः । शोचथ ॥ शोचामि । शोचावः । शोचामः ॥ वृद्धा मृतं पुत्रं शोचति=बुढिया मृत पुत्र को शोचती है ॥

२ लिङ्

शोचेत् । शोचेताम् । शोचेयुः ॥ शोचेः । शोचेतम् । शोचेत ॥ शोचेयम् । शोचेव । शोचेम ॥ गतं किं शोचेयम्=गये को क्या शोककरूं ॥

३ लोट्

शोचतु, शोचतात् । शोचताम् । शोचन्तु ॥ शोच, शोचतात् । शोचतम् । शोचत ॥ शोचानि । शोचाव । शोचाम ॥

४ लङ्

अशोचत् । अशोचताम् । अशोचन् ॥ अशोचः । अशोचतम् । अशोचत ॥ अशोचम् । अशोचाव । अशोचाम ॥ स भ्रातरमशोचत्=उस ने भाई को शोक किया है।

५ लिट्

शुशोच । शुशुचतुः । शुशुचुः ॥ शुशोचिथ । शुशुचथुः । शुशुच ॥ शुशोच । शुशुचिव । शुशुचिम ॥ शुशोच सीता लङ्कायाम् । इत्यादि ॥

६ आशीर्लिङ्

शुच्यात् । शुच्यास्ताम् । शुच्यासुः ॥ शुच्याः । शुच्यास्तम् । शुच्यास्त ॥ शुच्यासम् । शुच्यास्व । शुच्यास्म ॥ गतं न शुच्याः=तू गये को मत शोचे ॥

७ लुट्

शोचिता । शोचितारौ । शोचितारः ॥ शोचितासि । शोचितास्थः । शोचितास्थ ॥ शोचितास्मि । शोचितास्वः । शोचितास्मः ॥ येऽद्य न पठन्ति ते श्वः शोचितारः । इत्यादि ॥

८ लृट्

शोचिष्यति । शोचिष्यतः । शोचिष्यन्ति ॥ शोचिष्यसि । शोचिष्यथः । शोचिष्यथ ॥ शोचिष्यामि । शोचिष्यावः । शोचिष्यामः ॥ ये बाल्ये न पठन्ति ते स्थविरत्वे शोचिष्यन्ति । यौवने धनं नाऽर्जयसि वार्द्धे शोचिष्यसि । इत्यादि ॥

९ लृङ्

अशोचिष्यत् । अशोचिष्यताम् । अशोचिष्यन् ॥ अशोचिष्यः । अशोचिष्यतम् । अशोचिष्यत ॥ अशोचिष्यम् । अशोचिष्याव । अशोचिष्याम ॥ धनमऽलप्स्येथाम् तर्हि नाऽशोचिष्यथः । इत्यादि ॥

१० लुङ्

अशोचीत् । अशोचिष्टाम् । अशोचिषुः ॥ अशोचीः । अशोचिष्टम् । अशोचिष्ट ॥ अशोचिषम् । अशोचिष्व । अशोचिष्म ॥ धीरो गतं नाशोचीत्=धीर ने गये को नहीं शोचकिया ।

४ "गद्" धातु (बोलना, कहना)

१ लट्–	२ लिङ्–	३ लोट्–	४ लङ्–
प्रथमपु०	प्रथमपु०	प्रथमपु०	प्रथमपु०
१ गदति	गदेत्	गदतु, गदतात्	अगदत्
२ गदतः	गदेताम्	गदताम्	अगदताम्
३ गदन्ति	गदेयुः	गदन्तु	अगदन्
मध्यमपु०	मध्यमपु०	मध्यमपु०	मध्यमपु०
१ गदसि	गदेः	गद, गदतात्	अगदः
२ गदथः	गदेतम्	गदतम्	अगदतम्
३ गदथ	गदेत	गदत	अगदत
उत्तमपु०	उत्तमपु०	उत्तमपु०	उत्तमपु०
१ गदामि	गदेयम्	गदानि	अगदम्
२ गदावः	गदेव	गदाव	अगदाव
३ गदामः	गदेम	गदाम	अगदाम

५ लिट्	६ आशीर्लिङ्	७ लुट्	८ लृट्
प्रथमपु०	प्रथमपु०	प्रथमपु०	प्रथमपु०
१ जगाद	गद्यात्	गदिता	गदिष्यति
२ जगदतुः	गद्यास्ताम्	गदितारौ	गदिष्यतः
३ जगदुः	गद्यासुः	गदितारः	गदिष्यन्ति
मध्यमपु०	मध्यमपु०	मध्यमपु०	मध्यमपु०
१ जगदिथ	गद्याः	गदितासि	गदिष्यसि
२ जगदथुः	गद्यास्तम्	गदितास्थः	गदिष्यथः
३ जगद	गद्यास्त	गदितास्थ	गदिष्यथ
उत्तमपु०	उत्तमपु०	उत्तमपु०	उत्तमपु०
१ जगद, जगाद	गद्यासम्	गदितास्मि	गदिष्यामि
२ जगदिव	गद्यास्व	गदितास्वः	गदिष्यावः
३ जगदिम	गद्यास्म	गदितास्मः	गदिष्यामः

९ लृङ्-	१० लुङ्-सामान्यभूतकाल
प्रथमपु०	
१ अगदिष्यत्	अगादीत्, अगदीत्
२ अगदिष्यताम्	अगादिष्टाम्, अगदिष्टाम्
३ अगदिष्यन्	अगादिषुः, अगदिषुः
मध्यमपु०	
१ अगदिष्यः	अगादीः, अगदीः
२ अगदिष्यतम्	अगादिष्टम् अगदिष्टम्
३ अगदिष्यत	अगादिष्ट, अगदिष्ट
उत्तमपु०	
१ अगदिष्यम्	अगादिषम्, अगदिषम्
२ अगदिष्याव	अगादिष्व, अगदिष्व
३ अगदिष्याम	अगादिष्म, अगदिष्म

शम्भुः सत्यं गदति । साक्षी तथ्यं गदेत्, गदतु । तौ मिथ्याऽगदताम् । जगाद वाक्यं देवर्षिः । शास्त्राणि गद्यासुः पुत्रास्तव । प्रवः पुराणं वेदं वा गदितास्मि । निगदिष्यति सर्वमात्मनः । असत्यमगदिष्यामाऽविश्वस्ता अभविष्याम । अगदिष्ट यथेप्सितं तथा=तुमने कहा जैसा चाहा वैसा ॥

संस्कृत बनाओ-

युधिष्ठिर सत्यवादी हुवा था । आत्मकृत को मत शोचकरो । सत्य कहो । असत्य कहोगे तौ अविश्वस्त होओगे । सत्य कहूंगा तौ विश्वासयोग्य होऊंगा । तुमने परमेश्वर को स्मरण किया इस से आस्तिक हुए । तुम पिता के साथ जाओ । पाठशाला में गुरु बैठे हैं । तुम भी वहां जाओ और पाठ पढ़ो । यदि तुम्हारा अपराध हो तौ गुरु के-समक्ष में सत्य कहो । और सब विद्यार्थियों के साथ तुम भी पढ़ो । आज नहीं यादकरोगे तौ कलह कैसे कहोगे । अतः अपने पाठ को सम्यक् यादकरो ॥

५ "अर्च" धातु-पूजना, सत्कार करना ॥

१ लट्	२ लिङ्	३ लोट्	४ लङ्
प्रथम पु०			
१ अर्चति	अर्चेत्	अर्चतु, अर्चतात्	आर्चत्
२ अर्चतः	अर्चेताम्	अर्चताम्	आर्चताम्
३ अर्चन्ति	अर्चेयुः	अर्चन्तु	आर्चन्

१-लट्	२-लिङ्	३-लोट्	४-लङ्-
मध्यमपु०-			
१ अर्चसि	अर्चेः	अर्च, अर्चतात्	आर्चः
२ अर्चथः	अर्चेतम्	अर्चतम्	आर्चतम्
३ अर्चथ	अर्चेत	अर्चत	आर्चत
उत्तमपु०			
१ अर्चामि	अर्चेयम्	अर्चानि	आर्चम्
२ अर्चावः	अर्चेव	अर्चाव	आर्चाव
३ अर्चामः	अर्चेम	अर्चाम	आर्चाम
५-लिट्	६ आशीर्लिङ्	७ लुट्	८ लृट्
१ आनर्च	अर्च्यात्	अर्चिता	अर्चिष्यति
२ आनर्चतुः	अर्च्यास्ताम्	अर्चितारौ	अर्चिष्यतः
३ आनर्चुः	अर्च्यासुः	अर्चितारः	अर्चिष्यन्ति
१ आनर्चिथ	अर्च्याः	अर्चितासि	अर्चिष्यसि
२ आनर्चथुः	अर्च्यास्तम्	अर्चितास्थः	अर्चिष्यथः
३ आनर्च	अर्च्यास्त	अर्चितास्थ	अर्चिष्यथ
१ आनर्च	अर्च्यासम्	अर्चितास्मि	अर्चिष्यामि
२ आनर्चिव	अर्च्यास्व	अर्चितास्वः	अर्चिष्यावः
३ आनर्चिम	अर्च्यास्म	अर्चितास्मः	अर्चिष्यामः
९-लृङ्	१० लुङ्		
१ आर्चिष्यत्	आर्चीत्		
२ आर्चिष्यताम्	आर्चिष्टाम्		
३ आर्चिष्यन्	आर्चिषुः		
१ आर्चिष्यः	आर्चीः		
२ आर्चिष्यतम्	आर्चिष्टम्		
३ आर्चिष्यत	आर्चिष्ट		
१ आर्चिष्यम्	आर्चिषम्		
२ आर्चिष्याव	आर्चिष्व		
३ आर्चिष्याम	आर्चिष्म		

गुरूमर्चन्ति छात्राः । ईशमर्चन्तु । मातरमानर्च पितरं च श्रवणः । सुखमर्चति वेश्या । प्रतिष्ठार्थी राजानमर्चेस्त्वम् । पितरमर्च्यात् भवान् । अहं तु पुस्तकमेवाऽऽर्चम् । मान्याऽऽर्चः । अर्चन्त्यर्कमर्किणः । मार्चीः केवलं सुखम् । किन्तु धियमप्यर्चतात् ॥

६ "गुपू" (गुप्) धातु=रक्षण, रक्षाकरना ।

१—लट्	२ लिङ्	३ लोट्
१ गोपायति	गोपायेत्	गोपायतु, गोपायतात्
२ गोपायतः	गोपायेताम्	गोपायताम्
३ गोपायन्ति	गोपायेयुः	गोपायन्तु
१ गोपायसि	गोपायेः	गोपाय, गोपायतात्
२ गोपायथः	गोपायेतम्	गोपायतम्
३ गोपायथ	गोपायेत	गोपायत
१ गोपायामि	गोपायेयम्	गोपायानि
२ गोपायावः	गोपायेव	गोपायाव
३ गोपायामः	गोपायेम	गोपायाम

४—लङ्
१ अगोपायत्
२ अगोपायताम्
३ अगोपायन्
१ अगोपायः
२ अगोपायतम्
३ अगोपयत
१ अगोपायम्
२ अगोपायाव
३ अगोपायाम

५—लिट्
१ गोपायाञ्चकार, गोपायामास, गोपायाम्बभूव, जुगोप । २ गोपायाञ्चक्रतुः, गोपायामासतुः, गोपायाम्बभूवतुः, जुगुपतुः । ३ गोपायाञ्चक्रुः, गोपायामासुः, गोपायाम्बभूवुः, जुगुपुः । मध्यमपु० १ गोपायाञ्चकर्थ, गोपायामासिथ, गोपायाम्बभूविथ, जुगोपिथ, जुगोप्थ । २ गोपायाञ्चक्रथुः, गोपायामासथुः, गोपायाम्बभूवथुः, जुगुपथुः । ३—गोपायाञ्चक्र, गोपायामास, गोपायाम्बभूव, जुगुप । उत्तम पु० १—गोपायाञ्चकार, गोपायाञ्चकर, गोपायामास, गोपायाम्बभूव, जुगोप । २—गोपायाञ्चकृव, गोपायामासिव, गोपायाम्बभूविव, जुगुपिव, जुगुप्व । ३—गोपायाञ्चकृम, गोपायामासिम, गोपायाम्बभूविम, जुगुपिम, जुगुप्म ॥

६ आशीर्लिङ्—प्रथम पु० १—गोपाय्यात्, गुप्यात् । २—गोपाय्यास्ताम्, गुप्यास्ताम् । ३—गोपाय्यासुः, गुप्यासुः । मध्यम पु० १ गोपाय्याः, गुप्याः । २—गोपाय्यास्तम् । गुप्यास्तम् । ३—गोपाय्यास्त, गुप्यास्त । उत्तमपु० १ गोपाय्यासम्, गुप्यासम् २—गोपाय्यास्व, गुप्यास्व । ३—गोपाय्यास्म, गुप्यास्म ॥

७—लुट् १ गोपायिता, गोपिता, गोप्ता । २—गोपायितारौ, गोपितारौ, गो-

प्तारौ । ३-गोपायितारः, गोपितारः, गोप्तारः। मध्यमपु०१ गोपायितासि, गोपितासि, गोप्तासि । २-गोपायितास्थः, गोपितास्थः, गोप्तास्थः । ३ गोपायितास्थ, गोपितास्थ, गोप्तास्थ । उत्तम पु० १-गोपायितास्मि, गोपितास्मि, गोप्तास्मि । २-गोपायितास्वः, गोपितास्वः, गोप्तास्वः । ३-गोपायितास्मः, गोपितास्मः, गोप्तास्मः ॥

८ लृट्-प्रथम पु० १ गोपायिष्यति, गोपिष्यति, गोप्स्यति । २-गोपायिष्यतः, गोपिष्यतः, गोप्स्यतः । ३-गोपायिष्यन्ति, गोपिष्यन्ति, गोप्स्यन्ति । मध्यम पु० १-गोपायिष्यसि, गोपिष्यसि, गोप्स्यसि । २-गोपायिष्यथः, गोपिष्यथः, गोप्स्यथः । ३-गोपायिष्यथ, गोपिष्यथ, गोप्स्यथ । उत्तम पु० १-गोपायिष्यामि, गोपिष्यामि, गोप्स्यामि । २-गोपायिष्यावः गोपिष्यावः, गोप्स्यावः । ३ गोपायिष्यामः, गोपिष्यामः, गोप्स्यामः ॥

९ लृङ्-प्रथमपु० १ अगोपायिष्यत्, अगोपिष्यत्, अगोप्स्यत् । २-अगोपायिष्यताम्, अगोपिष्यताम्, अगोप्स्यताम् । ३-अगोपायिष्यन्, अगोपिष्यन्, अगोप्स्यन् । मध्यम पु० १-अगोपायिष्यः, अगोपिष्यः, अगोप्स्यः । २-अगोपायिष्यतम्, अगोपिष्यतम्, अगोप्स्यतम् । ३-अगोपायिष्यत, अगोपिष्यत, अगोप्स्यत । उत्तमपु० १-अगोपायिष्यम्, अगोपिष्यम्, अगोप्स्यम् । २-अगोपायिष्याव, अगोपिष्याव, अगोप्स्याव । ३ अगोपायिष्याम, अगोपिष्याम । अगोप्स्याम ॥

१० लुङ्-प्रथमपु०१ अगोपायीत्, अगोपीत्, अगौप्सीत् । २-अगोपायिष्टाम्, अगोपिष्टाम्, अगौप्ताम् । ३-अगोपायिषुः, अगोपिषुः, अगौप्सुः । मध्यमपु०१-अगोपायीः, अगोपीः, अगौप्सीः । २-अगोपायिष्टम्, अगोपिष्टम्, अगौप्तम् । ३-अगोपायिष्ट, अगोपिष्ट, अगौप्त । उत्तमपु०१-अगोपायिषम्, अगोपिषम्, अगौप्सम् । २-अगोपायिष्व, अगोपिष्व, अगौप्स्व । ३ अगोपायिष्म, अगोपिष्म, अगौप्स्म ॥

इस प्रकार " गुप् " धातु के रूप लिट् लिङ् लुट् लृट् लृङ् लुङ् इन छः लकारों में एक २ प्रयोग तीन २ प्रकार से और कभी इस से अधिक प्रकार के होते हैं

७ "क्षि" धातु (क्षय=नाश और निवास= रहना)

१-लट्-क्षयति । क्षयतः । क्षयन्ति ॥ क्षयसि । क्षयथः । क्षयथ । इत्यादि ।

२-लिङ्-१-क्षयेत् २-क्षयेताम् ३-क्षयेयुः । १-क्षयेः । २ क्षयेतम् । इत्यादि ।

३-लोट्-१-क्षयतु, क्षयतात् २-क्षयताम् ३-क्षयन्तु इत्यादि ।

४-लङ्-१-अक्षयत् २-अक्षयताम् ३-अक्षयन् । १ अक्षयः । अक्षयतम् । इत्यादि ।

५—लिट्—१—चिक्षाय २ चिक्षियतुः ३ चिक्षियुः । १ चिक्षयिथ, चिक्षेथ । २ चिक्षियथुः । ३ चिक्षिय ॥ १ चिक्षाय, चिक्षय । २ चिक्षियिव । ३ चिक्षियिम ॥

६—आशीर्लिङ्—१—क्षीयात् । २ क्षीयास्ताम् ३ क्षीयासुः । १ क्षीयाः इत्यादि

७—लुट्—१ क्षेता क्षेतारौ क्षेतारः । १ क्षेतासि क्षेतास्थः इत्यादि ।

८—लृट्—१ क्षेष्यति २ क्षेष्यतः ३ क्षेष्यन्ति । क्षेष्यसि क्षेष्यथः इत्यादि ।

९—लृङ्—१ अक्षेष्यत् २ अक्षेष्यताम् इत्यादि ।

१०—लुङ्—१ अक्षैषीत् २ अक्षैष्टाम् ३ अक्षैषुः । १ अक्षैषीः २ अक्षैष्टम् ३ अक्षैष्ट । १ अक्षैषम् २ अक्षैष्व ३ अक्षैष्म ॥

ह्यश्चतुर्दश्यामक्षयत् चन्द्रः । राजा प्रजाः गोपायेत् । युधिष्ठिरो धर्मेण प्रजाः गोपायाञ्चकार । क्षीयात् पापिनः सम्पत् । गोपाय कुटुम्बम् । आत्मानं गोपायतु सर्वथा । युवामत्र गेहे क्षयतम् (रहो) । स्तेन आत्मानमेवाऽगोपायत् । चिक्षाय रावणः सकुटुम्बो रामद्रोहेण । सुभगे पुत्रं गोपाय्याः गुप्याः वा । योऽद्य पापी स ध्रुवः क्षेता कालान्तरे जन्मान्तरे वा क्षेष्यति । धर्मात्मनो गोपायिष्यति, गोप्स्यति जगदीशः । यदि वीर्य्यमगोपायिष्यो वलवानऽभविष्यस्त्वम् । अक्षैषुर्धनानि बहुव्ययशीलस्य । इत्यादि ॥

८ "तप धातु (सन्ताप, गरमी करना, गरम होना, दुःखना)

१ लट्—तपति इत्यादि । लिङ्—तपेत् इत्यादि । लोट्—तपतु, तपतात् इत्यादि । ४ लङ्—अतपत् इत्यादि । ५ लिट्—ततप २ तेपतुः ३ तेपुः । १ तेपिथ, ततप्थ २ तेपथुः ३ तेप । १ ततप, ततप । २ तेपिव । ३ तेपिम ॥ ६ आशीर्लिङ्—१ तप्यात् २ तप्यास्तामित्यादि । ७ लुट्—तप्ता तप्तारौ इत्यादि । ८—लृट्—तप्स्यति इत्यादि । ९ लृङ्—अतप्स्यत् इत्यादि । १० लुङ्—१ अताप्सीत् २ अताप्ताम् ३ अताप्सुः । १ अताप्सीः २ अताप्तम् ३ अताप्त । १ अताप्सम् २ अताप्स्व ३ अताप्स्म ॥

९ इसी प्रकार "पत्लृ" धातु (पतन, गिरना) के रूप हैं परन्तु ५ लिट्—मध्यम पुरुष एक वचन में, "पेतिथ" एक ही रूप है ७ लुट् में पतिता, पतितारौ इत्यादि । ८ लृट्—पतिष्यति इत्यादि । ९ लृङ् अपतिष्यत् इत्यादि । १०—लुङ्—अपप्तत् अपप्तताम् इत्यादि जानो ॥

धावतोऽश्वादऽपप्तत् । पपात मूर्छया भूमौ । पापिनः पतिष्यन्ति नरके । सूर्य्यस्तपति इत्यादि ॥

१० – "क्रमु" धातु (पादविक्षेप=चरण, पांव रखना)

१ लट् —१ क्राम्यति, क्रामति २ क्राम्यतः, क्रामतः ३ क्राम्यन्ति, क्रामन्ति इत्यादि दो २ रूप — लिङ् —१ क्राम्येत्, क्रामेत् २ क्राम्येताम् इत्यादि दो २ ॥ लोट्–१क्राम्यतु, क्राम्यतात्, क्रामतु, क्रामतात् २ क्राम्यताम्, क्रामताम् ३ क्राम्यन्तु, क्रामन्तु इत्यादि दो २ ॥ लङ्–१ अक्राम्यत्, अक्रामत् २ अक्राम्यताम्, अक्रामतामित्यादि दो २ ॥ लिट्–१चक्राम २ चक्रमतुः ३ चक्रमुः । १ चक्रमिथ २ चक्रमथुः ३ चक्रम । १ चक्राम, चक्रम २ चक्रमिव ३ चक्रमिम ॥ आशीर्लिङ्–क्रम्यात् इत्यादि ॥ लुट्–क्रमिता इत्यादि ॥ लृट्–क्रमिष्यति ॥ लृङ्–अक्रमिष्यत् । लुङ्–अक्रमीत् इत्यादि ॥

११ "पा" धातु (पीना) यथा–

लट्–पिबति । पिबतः । पिबन्ति इत्यादि ॥ लिङ्—पिबेत् । पिबेताम् । पिबेयुः इत्यादि ॥ लोट्–पिबतु, पिबतात् । पिबताम् । पिबन्तु इत्यादि ॥ लङ्–अपिबत् । अपिबताम् इत्यादि ॥ लिट्–१ पपौ । २ पपतुः । ३ पपुः ॥ १ पपिथ, पपाथ । २ पपथुः । ३ पप ॥ १ पपौ । २ पपिव । ३ पपिम ॥ आशीर्लिङ्–१ पेयात् । २ पेयास्ताम् इत्यादि ॥ लुट्–पाता, पातारौ इत्यादि ॥ लृट्–पास्यति । पास्यतः इत्यादि ॥ लृङ्–अपास्यत् इत्यादि ॥ लुङ्–अपात् । अपाताम् । अपुः ॥ अपाः । अपातम् । अपात ॥ अपाम् । अपाव । अपाम ॥

सूर्य्यस्तपति । वृक्षात्पत्राणि पतन्ति । अश्वः सुष्ठु क्राम्यति । दुग्धं पिबन्ति बालाः । दिवा भानुरतापसीत् । पतन्ति पापिनः नरके घोरे ॥

१२ "ग्लै" धातु (हर्षक्षय, वीर्यक्षय, सुस्ती)

लट्–ग्लायति । ग्लायतः ॥ लिङ्–ग्लायेत् । ग्लायेताम् । लोट्–ग्लायतु, ग्लायतात् । ग्लायताम् । ग्लायन्तु । लङ्–अग्लायत् । लिट्–जग्लौ । जग्लतुः । जग्लुः ॥ जग्लिथ, जग्लाथ । जग्लथुः । जग्ल ॥ जग्लौ । जग्लिव । जग्लिम ॥ आशीर्लिङ्–ग्लेयात् । ग्लेयास्ताम् । अथवा, ग्लायात् । ग्लायास्ताम् इत्यादि ॥ लुट्–ग्लाता । ग्लातारौ ॥ लृट्–ग्लास्यति ॥ लृङ्–अग्लास्यत् । अग्लास्यताम् ॥ लुङ्–अग्लासीत् । अग्लासिष्टाम् । अग्लासिषुः ॥ अग्लासीः । अग्लासिष्टम् । अग्लासिष्ट ॥ अग्लासिषम् । अग्लासिष्व । अग्लासिष्म ॥ चन्द्रमाः ग्लायति । इत्यादि ॥

१३ "श्रु" धातु (सुनना, श्रवण)

लट्-शृणोति । शृणुतः । शृण्वन्ति ॥ शृणोषि । शृणुथः । शृणुथ ॥ शृणोमि । शृणुवः, शृण्वः । शृणुमः, शृण्मः ॥ लिङ्-शृणुयात् । शृणुयाताम् । शृणुयुः ॥ शृणुयाः इत्यादि ॥ लोट्-शृणोतु, शृणुतात् । शृणुताम् । शृण्वन्तु ॥ शृणु, शृणुतात्। शृणुतम् । शृणुत ॥ शृणवानि । शृणवाव । शृणवाम ॥ लङ्-अशृणोत् । अशृणुताम् अशृण्वन् ॥ अशृणोः । अशृणुतम् । अशृणुत ॥ अशृणवम् । अशृण्व, अशृणुव । अशृण्म, अशृणुम ॥ लिट्-शुश्राव । शुश्रुवतुः । शुश्रुवुः ॥ शुश्रोथ । शुश्रुवथुः । शुश्रुव ॥ शुश्राव, शुश्रव । शुश्रुव । शुश्रुम ॥ आशीर्लिङ्-श्रूयात् । श्रूयास्ताम् इत्यादि ॥ लुट्-श्रोता । श्रोतारौ इत्यादि ॥ लृट्-श्रोष्यति । श्रोष्यतः ॥ लृङ्-अश्रोष्यत् । लुङ्-अश्रौषीत् । अश्रौष्टाम् । अश्रौषुः ॥ अश्रौषीः । अश्रौष्टम् । अश्रौष्ट ॥ अश्रौषम् । अश्रौष्व । अश्रौष्म ॥ बधिरो न शृणोति । धनिनो न शृण्वन्ति प्रायशः । अहं सिंहनादमशृणवम् । राजा वः प्रार्थनां श्रोष्यति न चेत् ईश्वरः श्रोष्यति खलु । शृणु मम वचनं शुभम् । सावधानाः सर्वे शृण्वन्तु ॥ शास्त्रं शृणुतात् त्वम् । गानं मा शृणुत गाने मनो विषयि भवति । अश्लीलवादिनां वचनानि साधुर्न शृणुयात् । शुश्राव रामः शास्त्राणि इत्यादि ॥

१४ "गम्लृ" धातु=चलना, जानना, प्राप्त होना ।

लट्-गच्छति । लिङ्-गच्छेत् । लोट्-गच्छतु । लङ्-अगच्छत् । लिट्-जगाम । जग्मतुः । जग्मुः ॥ जगमिथ, जगन्थ । जग्मथुः । जग्म ॥ जगाम, जगम । जग्मिव । जग्मिम ॥ आशीर्लिङ्-गम्यात् । गम्यास्ताम् इत्यादि ॥ लुट्-गन्ता गन्तारौ ॥ लृट्-गमिष्यति । लृङ्—अगमिष्यत् । लुङ्-अगमत् । अगमताम् । अगमन् ॥ अगमः । अगमतम् । अगमत ॥ अगमम् । अगमाव । अगमाम ॥

बालो गच्छति। पण्डिताः शास्त्रस्यार्थं गच्छन्ति । वनं जगाम रामः । इत्यादि ॥

१५ "घ्रा" धातु=सूंघना ॥

लट्-जिघ्रति । लिङ्-जिघ्रेत्। लोट्-जिघ्रतु । लङ्-अजिघ्रत् । लिट्-जघ्रौ । जघ्रतुः । जघ्रुः ॥ जघ्रिथ, जघ्राथ । जघ्रथुः । जघ्र ॥ जघ्रौ । जघ्रिव । जघ्रिम । आशीर्लिङ्-घ्रायात्, घ्रेयात् । लुट्-घ्राता । लृट्-घ्रास्यति । लृङ्-अघ्रास्यत् । लुङ्-अघ्रासीत् । अघ्रासिष्टाम् । अघ्रासिषुः ॥ अघ्रासीः । अघ्रासिष्टम् । अघ्रासिष्ट ॥ अघ्रासिषम् । अघ्रासिष्व । अघ्रासिष्म ॥

१६ "ध्मा" धातु=धौंकना, फूंक मारना ॥

लट्–धमति । लिङ्–धमेत् । लोट्–धमतु । लङ्–अधमत् । लिट्–दध्मौ । दध्मतुः । दध्मुः ॥ दध्मिथ, दध्माथ । दध्मथुः । दध्म ॥ दध्मौ । दध्मिव । दध्मिम ॥ आशीर्लिङ्–ध्मायात्, ध्मेयात् । लुट्–ध्माता । लृट्–ध्मास्यति । लृङ्–अध्मास्यत् । लुङ्–अध्मासीत् । अध्मासिष्टाम् । अध्मासिषुः ॥ अध्मासीः । अध्मासिष्टम् । अध्मासिष्ट ॥ अध्मासिषम् । अध्मासिष्व । अध्मासिष्म ॥

उपवनं गत्वा तत्र पुष्पाणि घ्रास्यामः । भ्रमरो जिघ्रति । स्वर्णकारो मुखेनाग्निं धमति । शंखं दध्मौ प्रतापवान् ॥

१७ "स्था,=तिष्ठ" धातु=ठहरना, रहना, बैठना ॥

लट्–तिष्ठति । लिङ्–तिष्ठेत् । लोट्–तिष्ठतु, तिष्ठतात् । लङ्–अतिष्ठत् । लिट्–तस्थौ । तस्थतुः । तस्थुः ॥ तस्थिथ, तस्थाथ । तस्थथुः । तस्थ ॥ तस्थौ । तस्थिव । तस्थिम ॥ आशीर्लिङ्–स्थेयात् । लुट्–स्थाता । लृट्–स्थास्यति । लृङ्–अस्थास्यत् । लुङ्–अस्थात् । अस्थाताम् आगे "पा" धातु के समान रूप हैं ॥

१८ "दाण्=यच्छ" धातु=दान, देना ॥

लट्–यच्छति । लिङ्–यच्छेत् । लोट्–यच्छतु । लङ्–अयच्छत् । लिट्–ददौ । ददतुः । ददुः "पा" धातु के तुल्य ॥ आशीर्लिङ्–देयात् । लुट्–दाता । लृट्–दास्यति । लृङ्–अदास्यत् । लुङ्–अदात् आगे "पा" धातु के सदृश ॥

१९ "दृशिर्" पश्य धातु=देखना ॥

लट्–पश्यति । लिङ्–पश्येत् । लोट्–पश्यतु । लङ्–अपश्यत् । लिट्–ददर्श । ददृशतुः । ददृशुः ॥ ददर्शिथ, दद्रष्ठ । ददृशथुः । ददृश । ददर्श । ददृशिव । ददृशिम ॥ आशीर्लिङ्–दृश्यात् । लुट्–द्रष्टा । लृट्–द्रक्ष्यति लृङ्–अद्रक्ष्यत् । लुङ्–अदर्शत् अदर्शताम् वा, अद्राक्षीत् अद्राष्टाम् अद्राक्षुः । अद्राक्षीः अद्राष्टम् अद्राष्ट । अद्राक्षम् अद्राक्ष्व अद्राक्ष्म ॥ वृक्षस्तिष्ठति । धनं यच्छति । कुमारं ददर्श । गृहे तस्थौ । पुस्तकं ददौ । रूपं पश्यति इत्यादि ॥

२० म्लै धातु=हर्षक्षय, ग्लानि ॥

लट्–म्लायति । लिङ्–म्लायेत् । लोट्–म्लायतु, म्लायतात् । लङ्–अम्लायत् । लिट्–मम्लौ । मम्लतुः । मम्लुः ॥ मम्लिथ, मम्लाथ । मम्लथुः । मम्ल ॥ मम्लौ । मम्लिव । मम्लिम ॥ आशीर्लिङ्–म्लायात्, म्लेयात् । म्लायास्ताम्, म्लेयास्ताम् ।

स्नायासुः, स्लेयासुः ॥ इत्यादि दो २ रूप होंगे ॥ लुट्-स्नाता । लृट्-स्नास्यति । लृङ्-अस्नास्यत् । लुङ्-अस्नासीत् । अस्नासिष्टाम् । अस्नासिषुः । इत्यादि "ध्यै" धातु के तुल्य जानो ॥

२१ ह्वृ धातु=कौटिल्य, कुटिलपना, वक्रता ॥

लट्-ह्वरति । लिङ्-ह्वरेत् । लोट्-ह्वरतु, ह्वरतात् । लङ्-अह्वरत् । लिट्-जह्वार । जह्वरतुः । जह्वरुः ॥ जह्वर्थ । जह्वरथुः । जह्वर ॥ जह्वार, जह्वर । जह्वरिव । जह्वरिम ॥ आशीर्लिङ्-ह्वर्यात् । लुट्-ह्वर्त्ता । लृट्-ह्वरिष्यति । लृङ्-अह्वरिष्यत् । लुङ्-अह्वार्षीत् । अह्वार्ष्टाम् । अह्वार्षुः ॥ अह्वार्षीः । अह्वार्ष्टम् । अह्वार्ष्ट ॥ अह्वार्षम् । अह्वार्ष्व । अह्वार्ष्म ॥

मांसं रुधिरं च दृष्ट्वा मनो ग्लायति । धूर्तो ह्वरति । वचनं शृणुतात् । ग्रामं गच्छति । पापिना ग्लायेत् । केञ्चिदपि न ह्वरेत् । वेदं शृणुयात् । धर्मेण गच्छेत् । मित्रेण न ह्वरन्तु । पापे ग्लायन्तु । सत्यं शृण्वन्तु । मार्गेण गच्छन्तु । मनो-ऽग्लायत् । वञ्चकोऽह्वरत् । वचोऽशृणोत् । गृहमगच्छत् । ऋषयः किल्बिषे जग्लुः । शौनकादयः शुश्रुवुः । रावणो जह्वार । मृगयां जगाम । मनस्ते न ग्लायात्, ग्लेयात् । धर्मे न ह्वर्यात् । मङ्गलानि शृणुयाः । सद्गतिं गम्यास्म् । अद्य पापी प्रको ग्लाता । श्रोतास्मि पाठम् । गन्तास्मो ग्रामम् । मलिने ग्लास्यामि । धूर्तैः ह्वरिष्यामि । व्याख्यानं श्रोष्यामि । आश्रमादाश्रमं गमिष्यामि । कालोऽगमत् । उपदेशमश्रौषम् ॥

अथात्मनेपदप्रकरणम् ॥

२२—"एध" धातु=वृद्धि, बढ़ना। यहां से आत्मनेपदी धातुओं के रूप लिखते हैं—

लट्—एधते। एधेते। एधन्ते॥ एधसे। एधेथे। एधध्वे॥ एधे। एधावहे। एधामहे॥ लिङ्—एधेत। एधेयाताम्। एधेरन्॥ एधेथाः। एधेयाथाम्। एधेध्वम्॥ एधेय। एधेवहि। एधेमहि॥ लोट्—एधताम्। एधेताम्। एधन्ताम्॥ एधस्व। एधेथाम्। एधध्वम्॥ एधै। एधावहै। एधामहै॥ लङ्—ऐधत। ऐधेताम्। ऐधन्त॥ ऐधथाः। ऐधेथाम्। ऐधध्वम्॥ ऐधे। ऐधावहि। ऐधामहि॥ लिट्—एधाञ्चक्रे। एधाञ्चक्राते। एधाञ्चक्रिरे॥ एधाञ्चकृषे। एधाञ्चक्राथे। एधाञ्चकृढ्वे॥ एधाञ्चक्रे। एधाञ्चकृवहे। एधाञ्चकृमहे॥ एधामास इत्यादि। एधाम्बभूव। इत्यादि॥ आशीर्लिङ्—एधिषीष्ट। एधिषीयास्ताम्। एधिषीरन्॥ एधिषीष्ठाः। एधिषीयास्थाम्। एधिषीध्वम्॥ एधिषीय। एधिषीवहि। एधिषीमहि॥ लुट्—एधिता। एधितारौ। एधितारः॥ एधितासे। एधितासाथे। एधिताध्वे॥ एधिताहे। एधितास्वहे। एधितास्महे॥ लृट्—एधिष्यते। एधिष्येते। एधिष्यन्ते॥ एधिष्यसे। एधिष्येथे। एधिष्यध्वे॥ एधिष्ये। एधिष्यावहे। एधिष्यामहे॥ लृङ्—ऐधिष्यत। ऐधिष्येताम्। ऐधिष्यन्त॥ ऐधिष्यथाः। ऐधिष्येथाम्। ऐधिष्यध्वम्॥ ऐधिष्ये। ऐधिष्यावहि। ऐधिष्यामहि॥ लुङ्—ऐधिष्ट। ऐधिषाताम्। ऐधिषत॥ ऐधिष्ठाः। ऐधिषाथाम्। ऐधिध्वम्॥ ऐधिषि। ऐधिष्वहि। ऐधिष्महि॥

२३—"कम" धातु=कान्ति, इच्छा॥

लट्—कामयते। कामयेते। कामयन्ते॥ कामयसे। कामयेथे। कामयध्वे॥ कामये। कामयावहे। कामयामहे॥ लिङ्—कामयेत। कामयेयाताम्। कामयेरन्॥

कामयेथाः । कामयेयाथाम् । कामयेध्वम् ॥ कामयेय । कामयेवहि । कामयेमहि ॥ लोट्—कामयताम् । कामयेताम् । कामयन्ताम् ॥ कामयस्व । कामयेथाम् । कामयध्वम् ॥ कामयै । कामयावहै । कामयामहै ॥ लिट्—चकमे । चकमाते । चकमिरे ॥ चकमिषे । चकमाथे । चकमिध्वे ॥ चकमे । चकमिवहे । चकमिमहे ॥ वा—कामयाञ्चक्रे । कामयाञ्चक्राते इत्यादि ॥ कामयामास । कामयामासतुः इत्यादि ॥ कामयाम्बभूव । कामयाम्बभूवतुः ॥ इत्यादि एध धातु के समान जानो ॥ आशीर्लिङ्—कामयिषीष्ट । कामयिषीयास्ताम् कामयिषीरन् ॥ कामयिषीष्ठाः । कामयिषीयास्थाम् । कामयिषीध्वम्, कामयिषीढ्वम् ॥ कामयिषीय । कामयिषीवहि । कामयिषीमहि ॥ लुट्—कामयिता । कामयितारौ । कामयितारः ॥ कामयितासे । कामयितासाथे । कामयिताध्वे ॥ कामयिताहे । कामयितास्वहे । कामयितास्महे ॥ वा—कमिता । कमितारौ । कमितारः ॥ कमितासे । कमितासाथे । कमिताध्वे ॥ कमिताहे । कमितास्वहे । कमितास्महे ॥ लृट्—कामयिष्यते । कामयिष्येते । कामयिष्यन्ते ॥ कामयिष्यसे । कामयिष्येथे । कामयिष्यध्वे ॥ कामयिष्ये । कामयिष्यावहे । कामयिष्यामहे ॥ वा—कमिष्यते । कमिष्येते । कमिष्यन्ते ॥ कमिष्यसे । कमिष्येथे । कमिष्यध्वे ॥ कमिष्ये । कमिष्यावहे । कमिष्यामहे ॥ लृङ्—अकामयिष्यत । अकामयिष्येताम् । अकामयिष्यन्त ॥ अकामयिष्यथाः । अकामयिष्येथाम् । अकामयिष्यध्वम् ॥ अकामयिष्ये । अकामयिष्यावहि । अकामयिष्यामहि ॥ वा—अकमिष्यत । अकमिष्येताम् । अकमिष्यन्त ॥ अकमिष्यथाः । अकमिष्येथाम् । अकमिष्यध्वम् ॥ अकमिष्ये । अकमिष्यावहि । अकमिष्यामहि ॥ लुङ्—अचीकमत । अचीकमेताम् । अचीकमन्त ॥ अचीकमथाः । अचीकमेथाम् । अचीकमध्वम् ॥ अचीकमे । अचीकमावहि । अचीकमामहि ॥ वा—अचकमत । अचकमेताम् । अचकमन्त ॥ अचकमथाः । अचकमेथाम् इत्यादि ॥

२४—"अय" धातु=गति=ज्ञान, गमन, प्राप्ति ॥

उपसर्ग के रेफ को ल होता है अय धातु परे हो तो ॥ लट्—अयते । अयेते । अयन्ते ॥ अयसे । अयेथे । अयध्वे ॥ अये । अयावहे । अयामहे ॥ परा+अयते=पलायते । प्र+अयते=प्लायते । इत्यादि ॥ लिङ्—अयेत । अयेयाताम् । अयेरन् ॥ अयेथाः । अयेयाथाम् । अयेध्वम् ॥ अयेय । अयेवहि । अयेमहि ॥ लोट्—अयताम् । अयेताम् । अयन्ताम् ॥ अयस्व । अयेथाम् । अयध्वम् ॥ अयै । अयावहै । अयामहै ॥ लङ्—आयत । आयेताम् । आयन्त ॥ आयथाः । आये-

थाम् । आयध्वम् ॥ आये । आयावहि । आयामहि ॥ लिट्–अयाञ्चक्रे । अयाञ्चक्राते । अयाञ्चक्रिरे ॥ अयाञ्चकृषे । अयाञ्चक्राथे । अयाञ्चकृढ्वे ॥ अयाञ्चक्रे । अयाञ्चकृवहे । अयाञ्चकृमहे ॥ वा–अयामास । अयामासतुः तथा–अयाम्बभूव । अयाम्बभूवतुः इत्यादि ॥ आशीर्लिङ्–अयिषीष्ट । अयिषीयास्ताम् । अयिषीरन् ॥ अयिषीष्ठाः । अयिषीयास्थाम् । अयिषीढ्वम्, अयिषीध्वम् ॥ अयिषीय । अयिषीवहि । अयिषीमहि ॥ लुट्–अयिता । अयितारौ । अयितारः ॥ अयितासे । अयितासाथे । अयिताध्वे ॥ अयिताहे । अयितास्वहे । अयितास्महे ॥ लृट्–अयिष्यते । अयिष्येते । अयिष्यन्ते ॥ अयिष्यसे । अयिष्येथे । अयिष्यध्वे ॥ अयिष्ये । अयिष्यावहे । अयिष्यामहे ॥ लृङ्–आयिष्यत । आयिष्येताम् । आयिष्यन्त ॥ आयिष्यथाः ॥ आयिष्येथाम् । आयिष्यध्वम् ॥ आयिष्ये । आयिष्यावहि । आयिष्यामहि ॥ लुङ्–आयिष्ट । आयिषाताम् । आयिषत ॥ आयिष्ठाः । आयिषाथाम् । आयिढ्वम्, आयिध्वम् ॥ आयिषि । आयिष्वहि । आयिष्महि ॥

२५-द्युत धातु=दीप्ति॰ प्रकाश ॥

लट्–द्योतते । द्योतेते । द्योतन्ते ॥ द्योतसे । द्योतेथे । द्योतध्वे ॥ द्योते । द्योतावहे । द्योतामहे ॥ लिङ्–द्योतेत । द्योतेयाताम् । द्योतेरन् ॥ द्योतेथाः । द्योतेयाथाम् । द्योतेध्वम् ॥ द्योतेय । द्योतेवहि । द्योतेमहि ॥ लोट्—द्योतताम् । द्योतेताम् । द्योतन्ताम् ॥ द्योतस्व । द्योतेथाम् । द्योतध्वम् ॥ द्योतै । द्योतावहै । द्योतामहै ॥ लङ्–अद्योतत । अद्योतेताम् । अद्योतन्त ॥ अद्योतथाः । अद्योतेथाम् । अद्योतध्वम् ॥ अद्योते । अद्योतावहि । अद्योतामहि ॥ लिट्–दिद्युते । दिद्युताते । दिद्युतिरे ॥ दिद्युतिषे । दिद्युताथे । दिद्युतिध्वे ॥ दिद्युते । दिद्युतिवहे । दिद्युतिमहे ॥ आशीर्लिङ्–द्योतिषीष्ट । द्योतिषीयास्ताम् । द्योतिषीरन् ॥ द्योतिषीष्ठाः । द्योतिषीयास्थाम् । द्योतिषीध्वम् ॥ द्योतिषीय । द्योतिषीवहि । द्योतिषीमहि ॥ लुट्–द्योतिता । द्योतितारौ । द्योतितारः । द्योतितासे । द्योतितासाथे । द्योतिताध्वे ॥ द्योतिताहे । द्योतितास्वहे । द्योतितास्महे ॥ लृट्–द्योतिष्यते । द्योतिष्येते । द्योतिष्यन्ते ॥ द्योतिष्यसे । द्योतिष्येथे । द्योतिष्यध्वे ॥ द्योतिष्ये । द्योतिष्यावहे । द्योतिष्यामहे ॥ लृङ्–अद्योतिष्यत । अद्योतिष्येताम् । अद्योतिष्यन्त ॥ अद्योतिष्यथाः । अद्योतिष्येथाम् । अद्योतिष्यध्वम् ॥ अद्योतिष्ये । अद्योतिष्यावहि । अद्योतिष्यामहि ॥ लुङ्–

अद्युतत् । अद्युतताम् । अद्युतन् ॥ अद्युतः । अद्युततम् । अद्युतत ॥ अद्युतम् । अद्युताव । अद्युताम ॥ अथवा—अद्योतिष्ट । अद्योतिषाताम् । अद्योतिषत ॥ अद्योतिष्ठाः । अद्योतिषाथाम् । अद्योतिध्वम् ॥ अद्योतिषि । अद्योतिष्वहि । अद्योतिष्महि ॥ इसी प्रकार—

२६—"श्वित" धातु=वर्ण, रंगना ॥

लट्—श्वेतते । लिङ्—श्वेतेत । लोट्—श्वेतताम् । लङ्—अश्वेतत । लिट्—शिश्विते । आशीर्लिङ्—श्वेतिषीष्ट । लुट्—श्वेतिता । लृट्—श्वेतिष्यते । लृङ्—अश्वेतिष्यत । लुङ्—अश्विवतत्, अश्वेतिष्ट । इत्यादि ॥

२७—मिद धातु=मित्रता, मिलना ॥ २८ ष्विद धातु=स्नेह-चिकनाना और छुड़ाना तथा मोहित करना ॥ २९ क्ष्विद धातु भी उक्त अर्थ में ही । ३० रुच धातु=प्रकाशन और प्रीति ॥ ३१ घुट धातु=घोटना ॥ ३२ शुभ धातु=शोभा ॥ ३३ क्षुभ धातु=क्षोभ, गुस्सा ॥ ३४ । ३५ नभ, तुभ धातु=हिंसा ॥ ३६ स्रंस ३७ भ्रंस धातु=रपटना ॥ ३८ ध्वंस धातु=रपटना और गिरना तथा चलना ॥ ३९—स्रम्भ धातु=भरोसा, विश्वास ॥ इन सब के प्रयोग भी "श्वित" धातु के तुल्य जानो ॥

उदाहरणानि—यः सम्प्रति अधर्मेण एधते सः पश्चात् महद्दुःखं प्राप्स्यति । धनं कामयते जनः । उदयते निशि चन्द्रमण्डलम् । दिवि वि-द्योतते विद्युत् । रजकः श्वेतते वस्त्रम् । मेदन्ते मिथो माणवकाः ॥ मासे ज्येष्ठे स्वेदते सर्वगात्रम् । क्ष्वेदन्ते ललना बहून् । वसन्ते रोचते दधि । मध्याह्ने रोचते रविः । विजयां घोटते मल्लः। शुशुभे सरसीव चन्द्रमाः । शोभन्ते दिवि देवतागणाः । चुक्षुभे हृदयं तस्य । तुतुभे मृगयागतान्मृगान् । नभते वन्यपशूंश्च केसरी । स्रंसते वर्पासु पादः । गर्वेण भ्रंसते ज्ञानम् । सुखात् ध्वंसते मानी । सस्रम्भेऽहमतस्त्वयि प्रभो । वंशस्ते एधिषीष्ट । धर्मेण धनानि कामयध्वम् । युवतिं चकमे युवा । अयेत दूरं पापात् । द्योतन्ते नक्षत्राणि आकाशे । रजको न सुष्ठु वस्त्राणि अश्वितत् । मेदिषीष्ट जनः परस्परम् । स्वेदते हृदयेन सहृदयः । कामिनीषु न मनः क्ष्वेदेत । तक्रं न रोचतेऽस्माकम् । जुघुटेऽपूर्वमिवौषधम् । शोभिषीष्ट तव पुत्रमण्डलम् । रात्येनाऽक्षुभद्धृदयं

धूर्त्तस्य । नभिषीष्टाऽरिकुलानि भूमिपः । तोभिषीष्ट रिपुमखलं नृपः । स्त्रंसिता स्वविभवात् खलःखलु । ध्वंसिष्ये रिपुवाहिनीम् । वेदेष्वस्त्रंसिष्यामहि दुःखं नाश्याम ॥

४०—वृतु=वर्त्तमान, होना ॥

लट्—वर्त्तते । वर्त्तेते । वर्त्तन्ते ॥ वर्त्तसे । वर्त्तेथे । वर्त्तध्वे ॥ वर्त्ते । वर्त्तावहे । वर्त्तामहे ॥ लिङ्—वर्त्तेत । वर्त्तेयाताम् । वर्त्तेरन् ॥ वर्त्तेथाः । वर्त्तेयाथाम् । वर्त्तेध्वम् ॥ वर्त्तेय । वर्त्तेवहि । वर्त्तेमहि ॥ लोट्—वर्त्तताम् । वर्त्तेताम् । वर्त्तन्ताम् ॥ वर्त्तस्व । वर्त्तेथाम् । वर्त्तध्वम् ॥ वर्त्तै । वर्त्तावहै । वर्त्तामहै ॥ लङ्—अवर्त्तत । अवर्त्तेताम् । अवर्त्तन्त ॥ अवर्त्तथाः । अवर्त्तेथाम् । अवर्त्तध्वम् । अवर्त्ते । अवर्त्तावहि । अवर्त्तामहि ॥ लिट्—ववृते । ववृताते । ववृतिरे ॥ ववृतिषे । ववृताथे । ववृतिध्वे ॥ ववृते । ववृतिवहे । ववृतिमहे ॥ आशीर्लिङ्—वर्त्तिषीष्ट । वर्त्तिषीयास्ताम् । वर्त्तिषीरन् ॥ वर्त्तिषीष्ठाः । वर्त्तिषीयास्थाम् । वर्त्तिषीध्वम् ॥ वर्त्तिषीय । वर्त्तिषीवहि । वर्त्तिषीमहि ॥ लुट्—वर्त्तिता । वर्त्तितारौ । वर्त्तितारः ॥ वर्त्तितासे । वर्त्तितासाथे । वर्त्तिताध्वे ॥ वर्त्तिताहे । वर्त्तितास्वहे । वर्त्तितास्महे ॥ वृतु, वृधु, शृधु और स्यन्दू इन ४ धातुओं के लृट्लृङ् लुङ् में परस्मैपद और आत्मनेपद दोनो रूप होते हैं । यथा—लृट्—वर्त्स्यति । वर्त्स्यतः । वर्त्स्यन्ति ॥ वर्त्स्यसि । वर्त्स्यथः । वर्त्स्यथ ॥ वर्त्स्यामि । वर्त्स्यावः । वर्त्स्यामः ॥ वर्त्तिष्यते । वर्त्तिष्येते । वर्त्तिष्यन्ते ॥ वर्त्तिष्यसे । वर्त्तिष्येथे । वर्त्तिष्यध्वे ॥ वर्त्तिष्ये । वर्त्तिष्यावहे । वर्त्तिष्यामहे ॥ लृङ्—अवर्त्स्यत् । अवर्त्स्यताम् । अवर्त्स्यन् ॥ अवर्त्स्यः । अवर्त्स्यतम् । अवर्त्स्यत । अवर्त्स्यम् । अवर्त्स्याव । अवर्त्स्याम ॥ अवर्त्तिष्यत । अवर्त्तिष्येताम् । अवर्त्तिष्यन्त ॥ अवर्त्तिष्यथाः । अवर्त्तिष्येथाम् । अवर्त्तिष्यध्वम् ॥ अवर्त्तिष्ये । अवर्त्तिष्यावहि । अवर्त्तिष्यामहि ॥ लुङ्—अवृतत् । अवृतताम् । अवृतन् ॥ अवृतः । अवृततम् । अवृतत ॥ अवृतम् । अवृताव । अवृताम ॥ अवर्त्तिष्ट । अवर्त्तिषाताम् । अवर्त्तिषत ॥ अवर्त्तिष्ठाः । अवर्त्तिषाथाम् । अवर्त्तिध्वम् ॥ अवर्त्तिषि । अवर्त्तिष्वहि । अवर्त्तिष्महि ॥

४१=वृधु=बढ़ना, वृद्धि ॥

लट्—वर्धते इत्यादि—लिङ्—वर्धेत इत्यादि । लोट्—वर्धताम् इत्यादि । लङ्—अवर्धत इत्यादि । लिट्—ववृधे इत्यादि । आशीर्लिङ्—वर्धिषीष्ट इत्यादि ।

लुट्–वर्धिता इत्यादि । लृट्–वर्त्स्यति । वर्धिष्यते इत्यादि । लृङ्–अवर्त्स्यत् । अवर्धिष्यत इत्यादि । लुङ्–अवृधत् । अवर्धिष्ट इत्यादि ॥ इसी प्रकार–

४२–शृधु=शब्दनिन्दा । और ४३–स्यन्दू=टपकना, चूना ।

यथा–शृधु–लट्–शर्धते । लिङ्–शर्धेत । लोट्–शर्धताम् । लङ्–अशर्धत । लिट्–शशृधे । आशीर्लिङ्–शर्धिषीष्ट । लुट्–शर्धिता । लृट्–शर्त्स्यति । शर्धिष्यते ॥ लृङ्–अशर्त्स्यत् । अशर्धिष्यत ॥ लुङ्–अशृधत् । अशर्धिष्ट ॥ स्यन्दू–लट्–स्यन्दते । लिङ्–स्यन्देत । लोट्–स्यन्दताम् । लङ्–अस्यन्दत । लिट्–सस्यन्दे । आशीर्लिङ्–स्यन्दिषीष्ट, स्यन्त्सीष्ट । लुट्–स्यन्दिता । स्यन्ता । लृट्–स्यन्त्स्यति । स्यन्दिष्यते, स्यन्त्स्यते । लृङ्–अस्यन्त्स्यत् । अस्यन्दिष्यत । अस्यन्त्स्यत । लुङ्–अस्यदत् । अस्यन्दिष्ट, अस्यन्त ॥ दिनं वर्त्तते । वक्तारं शर्धन्ते श्रोतारः । दाक्षारी वर्धन्ताम् । स्यन्दते घृतं खण्डितपात्रात् । इत्यादि ॥

४४–दद=दान, देना ॥

ददते । ददेत ददताम् । अददत । ददे । ददिषीष्ट । ददिता । ददिष्यते । अददिष्यत । अददिष्ट ॥

४५–त्रपूष्=लज्जा, शर्म ॥

त्रपते । त्रपेत ।त्रपताम् । अत्रपत । त्रेपे त्रेपाते त्रेपिरे इत्यादि । त्रपिषीष्ट वा–त्रप्सीष्ट । त्रपिता वा–त्रप्ता । त्रपिष्यते वा–त्रप्स्यते । अत्रपिष्यत वा–अत्रप्स्यत । अत्रपिष्ट वा–अत्रप्त ॥ ददे दानमतीव यज्ञकृत् । न त्रपन्ते निर्लज्जाः कुलटा इत्यादि ॥ इत्यात्मनेपदिनः ॥

अथोभयपदप्रकरणम् ॥

४६–श्रिञ्=सेवा, सहारालेना, अनुकूलता ॥

लट्–श्रयति । श्रयते ॥ लिङ्–श्रयेत् । श्रयेत ॥ लोट्–श्रयतु । श्रयताम् ॥ लङ्–अश्रयत् । अश्रयत ॥ लिट्–शिश्राय. शिश्रियतुः इत्यादि । शिश्रिये. शिश्रियाते इत्यादि ॥ आशीर्लिङ्–श्रीयात् । श्रयिषीष्ट ॥ लुट्–श्रयिता । श्रयिता ॥ लृट्–श्रयिष्यति । श्रयिष्यते ॥ लृङ्–अश्रयिष्यत् । अश्रयिष्यत ॥ लुङ्–अशिश्रियत् । अशिश्रियत. अशिश्रियेताम्. अशिश्रियन्त इत्यादि ॥

४७–भृञ्=पालन, भरण, पोषण ॥

भरति । भरते॥ भरेत् । भरेत॥ भरतु । भरताम् ॥ अभरत् अभरत ॥ बभार. बभ्रतुः. बभ्रुः । बभर्थ. बभ्रथुः. बभ्र । बभार, बभर. बभृव. बभृम । बभ्रे. बभ्राते. बभ्रिरे । बभृषे. बभ्राथे. बभृढ्वे । बभ्रे. बभृवहे. बभृमहे ॥ भ्रियात् । भृषीष्ट ॥ भर्त्ता । भर्त्ता ॥ भरिष्यति । भरिष्यते ॥ अभरिष्यत् । अभरिष्यत ॥ अभार्षीत्. अभार्ष्टाम्. अभार्षुः । अभार्षीः. अभार्ष्टम्. अभार्ष्ट । अभार्षम्. अभार्ष्व. अभार्ष्म ॥ अभृत. अभृषाताम्. अभृषत. । अभृथाः. अभृषाथाम् अभृढ्वम् । अभृषि. अभृष्वहि. अभृष्महि ॥

४८–हृञ्=हरण, चुराना ॥

लिट्–जहार । जह्रतुः । जह्रुः इत्यादि ॥ जह्रे । जह्राते । जह्रिरे इत्यादि ॥ शेषरूप भृञ् के समान हैं ॥

४९–धृञ्=धारण, रखना ॥

लिट्–दधार दध्रतुः इत्यादि । दध्रे दध्राते इत्यादि ॥ शेषरूप भृञ् के तुल्य हैं ॥

५०–नीञ्=पहुंचाना, लेजाना, प्रापण ॥

नयति नयते । नयेत् नयेत । नयतु नयताम् । अनयत् अनयत । निनाय ॥ निन्यतुः इत्यादि । निन्ये निन्याते इत्यादि ॥ नीयात् । नेषीष्ट ॥ नेता । नेता ॥ नेष्यति । नेष्यते ॥ अनेष्यत् । अनेष्यत ॥ अनैषीत्. अनैष्टाम्. अनैषुः । अनैषीः. अनैष्टम्. अनैष्ट । अनैषम्. अनैष्व. अनैष्म ॥ अनेष्ट. अनेषाताम्. अनेषत । अनेष्ठाः. अनेषाथाम्. अनेढ्वम् । अनेषि. अनेष्वहि. अनेष्महि ॥

५१–पच्=पकाना, पाक ॥

पचति पचते । पचेत् पचेत । पचतु पचताम् । अपचत् अपचत । पपाच. पेचतुः इत्यादि । पचे पेचाते इत्यादि ॥ पच्यात् पक्षीष्ट । पक्ता पक्ता । पक्ष्यति पक्ष्यते । अपक्ष्यत् अपक्ष्यत । अपाक्षीत् अपक्त ॥

५२–भज=भजन, सेवन ॥

लिट्–बभाज भेजतुः भेजुः । इत्यादि भेजे भेजाते इत्यादि ॥ शेषरूप पच के तुल्य जानो ॥

५३–यज=देवपूजा, सङ्गति, दान ॥

लिट्—इयाज ईजतुः ईजुः । इयजिथ, इयष्ठ ईजथुः ईज । इयाज, इयज

ईजिव ईजिम । ईजे ईजाते इत्यादि ॥ लुट्—यष्टा । आशीर्लिङ्—इज्यात् यक्षीष्ट । लुङ्—अयष्ट । शेष पच के तुल्य हैं ॥

५४—वह=पहुंचाना, ढोना वहना ॥

लिट्—उवाह । ऊहतुः ऊहुः ॥ उवहिथ, उवोढ़ । ऊहथुः । ऊह ॥ उवाह, उवह । ऊहिव । ऊहिम ॥ ऊहे । ऊहाते इत्यादि ॥ आशीर्लिङ्—उह्यात् । वक्षीष्ट ॥ लुट्—वोढा वोढारौ इत्यादि ॥ लुङ्—अवाक्षीत् । अवोढाम् । अवाक्षुः ॥ अवाक्षीः । अवोढम् । अवोढ ॥ अवाक्षम् । अवाक्ष्व । अवाक्ष्म ॥ अवोढ । अवक्षाताम् । अवक्षत ॥ अवोढाः । अवक्षाथाम् । अवोढ्वम् ॥ अवक्षि । अवक्ष्वहि । अवक्ष्महि ॥ शेष पच के तुल्य है ॥

धनिनं श्रयन्ते दरिद्राः । भरते स्वकुटुम्बं जनः । धरति लोकं धर्मः । पाकं पचति सूदः । ईश्वरं भज । देवान् यजस्व । भारं वहति गर्दभः ॥

प्रायः इसी प्रकार धातुपाठ में लिखे भ्वादिगणस्थ अन्य धातु भी जानो ॥

इति उभयपदप्रकरणम्

भ्वादि गणश्च

अथ अदादिगणप्रकरणम् ॥

तत्र परस्मैपदिनः

५५—अद=भक्षण, खाना ॥

अत्ति । अत्तः । अदन्ति ॥ अत्सि । अत्थः । अत्थ ॥ अद्मि । अद्वः । अद्मः ॥ अद्यात् । अद्याताम् । अद्युः ॥ अद्याः । अद्यातम् । अद्यात ॥ अद्याम् । अद्याव । अद्याम ॥ अत्तु, अत्तात् । अत्ताम् । अदन्तु ॥ अद्धि, अत्तात् । अत्तम् । अत्त ॥ अदानि । अदाव । अदाम ॥ आदत् । आत्ताम् । आदन् ॥ आदः । आत्तम् । आत्त ॥ आदम् । आद्व । आद्म ॥ लिट्—आद । आदतुः । आदुः ॥ आदिथ । आदथुः । आद ॥ आद । आदिव । आदिम ॥ अथवा, जघास । जक्षतुः । जक्षुः ॥ जघसिथ जघस्थ । जक्षथुः । जक्ष ॥ जघास, जघस । जक्षिव । जक्षिम ॥ आशीर्लिङ्—अद्यात् अद्यास्ताम् इत्यादि ॥ लुट्—अत्ता अत्तारौ इत्यादि ॥ लृट्—अत्स्यति ॥ लृङ्—आत्स्यत् ॥ लुङ्—अघसत् । अघसताम् । अघसन् ॥ अघसः । अघसतम् । अघसत ॥ अघसम् । अघसाव । अघसाम ॥

५६—हन् = हिंसा, मारना, वध करना, वा गति ॥

हन्ति हतः घ्नन्ति। हंसि हथः हथ। हन्मि हन्वः हन्मः ॥ हन्यात् हन्यातान् इत्यादि ॥ हन्तु, हतात्। हताम्। घ्नन्तु ॥ जहि, हतात्। हतम्। हत ॥ हनानि। हनाव। हनाम ॥ अहन् अहताम् अघ्नन्। अहन् अहतम् अहत। अहनम् अहन्व अहन्म ॥ जघान जघ्नतुः जघ्नुः। जघनिथ, जघन्थ। जघ्नथुः। जघ्न। जघान, जघन जघ्निव जघ्निम ॥ वध्यात् इत्यादि ॥ हन्ता ॥ हनिष्यति ॥ अहनिष्यत् ॥ अवधीत् इत्यादि ॥

५७—यु = मिलाना और पृथक् करना ॥

यौति युतः युवन्ति। यौषि युथः युथ। यौमि युवः युमः ॥ युयात् इत्यादि॥ यौतु, युतात्। युताम्। युवन्तु ॥ युहि, युतात्। युतम्। युत ॥ यवानि। यवाव। यवाम ॥ अयौत् अयुताम् अयुवन्। अयौः अयुतम् अयुत। अयवम् अयुव अयुम ॥ युयाव युयुवतुः युयुवुः ॥ युयविथ युयुवथुः युयुव। युयाव, युयव युयुविव युयुविम ॥ यूयात् इत्यादि ॥ यविता इत्यादि ॥ यविष्यति इत्यादि ॥ अयविष्यत् इ० ॥ अयावीत् इत्यादि ॥

५८—या = यान, जाना, पहुंचना, पाना ॥

याति। यातः इत्यादि ॥ यायात् ॥ यातु ॥ अयात्। अयाताम्। अयुः, अयान् इत्यादि ॥ ययौ ययतुः ययुः। ययिथ, ययाथ ययथुः यय। ययौ ययिव ययिम ॥ यायात् यायास्ताम् ॥ याता। यास्यति। अयास्यत्। अयासीत् इ० ॥

५९—वा = गति, गन्धन, बू करना ॥ ६०—भा = चमकना, प्रकाश ॥ ६१—स्ना = स्नान, न्हाना ॥ आशीर्लिङ्—स्नायात्, स्नेयात् ॥ ६२—श्रा = पकाना ॥ श्रायात्, श्रेयात् ॥ ६३—द्रा = बुरीचाल चलना ॥ द्रायात्, द्रेयात् ॥ ६४—प्सा = भक्षण, खाना॥ प्सायात्, प्सेयात् ॥ ६५—रा = देना ॥ ६६—ला = लेना ॥ ६७-(दाप्) दा = काटना ॥ ६८--ख्या = कहना, बोलना ॥ ख्यायात्, ख्येयात् ॥ इन धातुओं के शेषरूप भी "५८-या" के तुल्य हैं ॥

अन्नमत्ति। शत्रुं हन्ति। दुग्धं मिष्टं च यौति। ग्रामं याति। वायुर्वाति सूर्यो भाति। ब्राह्मणः स्नाति। सूपं श्राति पाचकः। द्राति धूर्त्तः। प्साति मृगं व्याघ्रः। धनं राति लाति वा। दान्ति धान्यं क्षेत्रे कृषकाः। ख्याति धर्मं गुरुः शिष्याय ॥

६९--विद् = ज्ञान, जानना ॥

लट्—वेत्ति वित्तः विदन्ति । वेत्सि वित्थः वित्थ । वेद्मि विद्वः विद्मः । अथवा—वेद विदतुः विदुः । वेत्थ विदथुः विद । वेद विद्व विद्म * विद्यात् * वेत्तु, वित्तात् । वित्ताम् । विदन्तु ॥ विद्धि, वित्तात् । वित्तम् । वित्त ॥ वेदानि । वेदाव । वेदाम अथवा—विदाङ्करोतु इत्यादि * अवेत् अवित्ताम् अविदुः । अवेः,अवेत् । अवित्तम् । अवित्त ॥ अवेदम् अविद्व अविद्म* विदाञ्चकार इत्यादि अथवा—विवेद विविदतुः इत्यादि * विद्यात् विद्यास्ताम् * वेदिता * वेदिष्यति * अवेदिष्यत् * अवेदीत् ॥

७०-अस = होना, सत्ता ॥

अस्ति स्तः सन्ति । असि स्थः स्थ । अस्मि स्वः स्मः * स्यात् स्याताम् इत्यादि * अस्तु, स्तात् । स्ताम् । सन्तु ॥ एधि, स्तात् । स्तम् । स्त ॥ असानि । असाव । असाम * आसीत् आस्ताम् आसन् । आसीः आस्तम् आस्त । आसम् आस्व आस्म * शेष बभूव इत्यादि "भू" धातु के तुल्य जानो ॥

७१--इ = गति, चलना,पहुंचना, पाना ॥

एति इतः यन्ति । एषि इथः इथ । एमि इवः इमः * इयात् इत्यादि * एतु इत्यादि * ऐत् ऐताम् आयन् । ऐः ऐतम् ऐत । आयम् ऐव ऐम * इयाय ईयतुः ईयुः । इययिथ, इयेथ ईयथुः ईय । ईयाय, इयय ईयिव ईयिम * ईयात् * एता * एष्यति * ऐष्यत् * अगात् अगाताम् अगुः । अगाः अगातम् अगात । अगाम् अगाव अगाम ॥

वेत्ति सर्वमीश्वरः । विदाञ्चकार कृष्णः चतुःषष्टिकलाः । विदाङ्कुर्वन्तु भवन्तः शास्त्रोक्तं धर्मम् । अस्ति धान्यम् । ग्राममेति पान्थः । पद्भ्यामियात् किमपि दूरं नित्यम् । भुवोन्तमियाय ॥

इति परस्मैपदप्रकरणम् ॥ अथात्मनेपदप्रकरणम् ॥

७२-शीङ् = सोना, शयन करना, नींद लेना ॥

शेते शयाते शेरते । शेषे शयाथे शेध्वे । शये शेवहे शेमहे * शयीत शयीयाताम् शयीरन् शयीथाः शयीयाथाम् शयीध्वम् । शयीय शयीवहि शयीमहि * शेताम् शेयाताम् शेरताम् । शेष्व शयाथाम् शेध्वम् । शयै शयावहै शयामहै * अशेत अशयाताम् अशेरत । अशेथाः अशयाथाम् अशेध्वम् । अशयि अशेवहि अशेमहि * शिश्ये शिश्याते शिश्यिरे । शिश्यिषे शिश्याथे शिश्यिध्वे । शिश्ये शिश्यिवहे शिश्यिमहे * शयिषीष्ट * शयिता * शयिष्यते * अशयिष्यत * अशयिष्ट अशयिषाताम् अशयिषत । अशयिष्ठाः अशयिषाथाम् अशयिध्वम् । अशयिषि अशयिष्वहि अशयिष्महि ॥

७३—इङ्—पढना, अध्ययन ॥

इससे पूर्व "अधि" उपसर्ग नहीं विछुड़ता किन्तु सदा साथही रहता है यथा—अधीते अधीयाते अधीयते। अधीषे अधीयाथे अधीध्वे। अधीये अधीवहे अधीमहे* अधीयीत अधीयीयाताम् अधीयीरन्। अधीयीथाः अधीयीयाथाम् अधीयीध्वम्। अधीयीय अधीयीवहि अधीयीमहि * अधीताम् अधीयाताम् अधीयताम्। अधीष्व अधीयाथाम् अधीध्वम्। अध्ययै अध्ययावहै अध्ययामहै* अध्यैत अध्यैयाताम् अध्यैयत। अध्यैथाः अध्यैयाथाम् अध्यैध्वम्। अध्यैयि अध्यैवहि अध्यैमहि * अधिजगे अधिजगाते अधिजगिरे। अधिजगिषे अधिजगाथे अधिजगिध्वे। अधिजगे अधिजगिवहे अधिजगिमहे * अध्येषीष्ट अध्येषीयास्ताम् इत्यादि * अध्येता अध्येतारौ * अध्येष्यते अध्येष्येते * अध्यगीष्यत अध्यगीष्येताम् अध्यगीष्यन्त। अध्यगीष्यथाः अध्यगीष्येथाम् अध्यगीष्यध्वम्। अध्यगीष्ये अध्यगीष्यावहि अध्यगीष्यामहि * अथवा-अध्यैष्यत अध्यैष्येताम् अध्यैष्यन्त। अध्यैष्यथाः अध्यैष्येथाम् अध्यैष्यध्वम्। अध्यैष्ये अध्यैष्यावहि अध्यैष्यामहि * अध्यगीष्ट अध्यगीषाताम् अध्यगीषत। अध्यगीष्ठाः अध्यगीषाथाम् अध्यगीढ्वम्। अध्यगीषि अध्यगीष्वहि अध्यगीष्महि अथवा—अध्यैष्ट अध्यैषाताम् अध्यैषत। अध्यैष्ठाः अध्यैषाथाम् अध्यैढ्वम्। अध्यैषि अध्यैष्वहि अध्यैष्महि ॥ बालः शेते। छात्रोधीते ॥

इत्यात्मनेपदप्रकरणम् ॥ अथोभयपदप्रकरणम् ॥

७४—दुह—दुहना, प्रपूरण, भरना ॥

परस्मै०—दोग्धि दुग्धः दुहन्ति। धोक्षि दुग्धःदुग्ध। दोह्मि दुह्वः दुह्मः * दुह्यात् दुह्याताम् इत्यादि* दोग्धु, दुग्धात् दुग्धाम् दुहन्तु। दुग्धि, दुग्धात् इत्यादि* अधोक्,ग् अदुग्धाम् अदुहन्। अधोक्,ग् अदुग्धम् अदुग्ध। अदोहम् अदुह्व अदुह्म * दुदोह दुदुहतुः दुदुहुः। दुदोहिथ, दुदोग्ध दुदुहथुः दुदुह। दुदोह दुदुहिव दुदुहिम * दुह्यात् दुह्यास्ताम् इत्यादि * दोग्धा दोग्धारौ * धोक्ष्यति * अधोक्ष्यत् * अधुक्षत् अधुक्षताम् अधुक्षन्। अधुक्षः अधुक्षतम् अधुक्षत। अधुक्षम् अधुक्षाव अधुक्षाम ॥ आत्मने०—दुग्धे दुहाते दुहते। धुक्षे दुहाथे धुग्ध्वे। दुहे दुह्वहे दुह्महे*दुहीत दुहीयाताम् दुहीरन् इत्यादि*दुग्धाम् दुहाताम् दुहताम्। धुक्ष्व दुहाथाम् धुग्ध्वम्। दुहै दुहावहै दुहामहै*अदुग्ध अदुहाताम् अदुहत। अदुग्धाः अदुहाथाम् अधुग्ध्वम्। अदुहि अदुह्वहि अदुह्महि* दुदुहे दुदुहाते दुदुहिरे इत्यादि * धुक्षीष्ट धुक्षीयास्ताम् इत्यादि * दोग्धा दोग्धारौ दोग्धारः। दोग्धासे इत्यादि * धोक्ष्यते * अधोक्ष्यत * अदुग्ध, अधुक्षत। अधुक्षाताम्। अधुक्षन्त ॥ अदुग्धाः, अधुक्षथाः। अधुक्षाथाम्। अधुग्ध्वम्, अधुक्षध्वम् ॥ अधुक्षि। अदुह्वहि, अधुक्षावहि। अधुक्षामहि ॥ रक्षकः शेते। विद्या-

र्थिनोधीयते । गां पयोदोग्धि गोपालः = ग्वाल गौ से दूध दुहता है। दुह धातु के दो कर्म होते हैं जैसे १गौ २दूध इत्यादि ।

७५ दिह--उपचय, सञ्चय, जुड़ना, लीपना ॥

देग्धि दिग्धे। दिह्यात् दिहीत । देग्धु दिग्धाम् । आगे दुहधातु के तुल्यजानो॥

७६ लिह–आस्वादन, चाटना ॥

लेढि लीढः लिहन्ति। लेक्षि लीढः लीढ। लेह्मि लिह्वः लिह्मः ॥ लीढे लिहाते लिहते। लिक्षे लिहाथे लीढ्वे । लिहे लिह्वहे लिह्महे ॥ लिह्यात् । लिहीत ॥ लेढु, लीढात् लीढाम् लिहन्तु । लीढि, लीढात् लीढम् लीढ । लेहानि लेहाव लेहाम ॥ लीढाम् लिहाताम् लिहताम्।लिक्ष्व लिहाथाम् लीढ्वम् लेहै लेहावहै लेहामहै ॥ अलेट् अलीढाम् अलिहन् । अलेट् अलीढम् अलीढ । अलेहम् अलिह्व अलिह्म ॥ अलीढ अलिहाताम् अलिहत । अलीढाः अलिहाथाम् अलीढ्वम् । अलिहि अलिह्वहि अलिह्महि ॥ लिलेह लिलिहतुः लिलिहुः । लिलेहिथ लिलिहथुः लिलिह । लिलेह लिलिहिव लिलिहिम ॥ लिलिहे लिलिहाते लिलिहिरे । लिलिहिषे लिलिहाथे लिलिहिध्वे । लिलिहे लिलिहिवहे लिलिहिमहे ॥ लिह्यात् । लिक्षीष्ट ॥ लेढा लेढारौ लेढारः । लेढासि॥लेढा लेढारौ लेढारः लेढासे॥लेक्ष्यति लेक्ष्यते॥अलेक्ष्यत् अलेक्ष्यत॥अलिक्षत्॥ अलीढ, अलिक्षत । अलिक्षाताम् । अलिक्षन्त । अलीढाः, अलिक्षथाः । अलिक्षाथाम् । अलीढ्वम्, अलिक्षध्वम् । अलिक्षि । अलिह्वहि, अलिक्षावहि। अलिक्षामहि ॥ युवा शरीरं देग्धि। भ्रमरो रसं लेढि इत्यादि ॥

७७ ब्रूञ्–बोलना, कहना ॥

ब्रवीति, आह । ब्रूतः, आहथुः । ब्रुवन्ति, आहुः ॥ ब्रवीषि, आत्थ । ब्रूथः, आहथुः । ब्रूथ ॥ ब्रवीमि । ब्रूवः ब्रूमः ॥ ब्रूते ब्रुवाते ब्रुवते । ब्रूषे ब्रुवाथे ब्रूध्वे, ब्रुवे ब्रूवहे ब्रूमहे॥ब्रूयात् ब्रूयाताम् । ब्रुवीत ब्रुवीयाताम्॥ ब्रवीतु, ब्रूतात् ब्रूताम् ब्रुवन्तु । ब्रूहि, ब्रूतात् ब्रूतम् ब्रूत । ब्रवाणि ब्रवाव ब्रवाम ॥ ब्रूताम् ब्रुवाताम् ब्रुवताम् । ब्रूष्व ब्रुवाथाम् ब्रूध्वम्। ब्रवै ब्रवावहै ब्रवामहै ॥ अब्रवीत् अब्रूताम् अब्रुवन् । अब्रवीः अब्रूतम् अब्रूत । अब्रवम् अब्रूव अब्रूम॥ अब्रूत अब्रुवाताम् अब्रुवत । अब्रूथाः अब्रुवाथाम् अब्रूध्वम्। अब्रुवि अब्रूवहि अब्रूमहि ॥ उवाच ऊचतुः ऊचुः । उवचिथ, उवक्थ ऊचथुः ऊच। उवाच, उवच ऊचिव ऊचिम ॥ ऊचे ऊचाते ऊचिरे इत्यादि॥ उच्यात् । वक्षीष्ट॥ वक्ता । वक्ता ॥ वक्ष्यति । वक्ष्यते ॥ अवक्ष्यत् अवक्ष्यत ॥ अवोचत् अवोचताम् इत्यादि । अवोचत अवोचेताम् इत्यादि ॥

७८ ऊर्णुञ्–आच्छादन, ढकना, ओढना ॥

ऊर्णोति, ऊर्णौति । ऊर्णुतः । ऊर्णुवन्ति ॥ ऊर्णोषि, ऊर्णौषि, ऊर्णुथः । ऊर्णुथ ॥ ऊर्णोमि, ऊर्णौमि । ऊर्णुवः । ऊर्णुमः ॥ ऊर्णुते ऊर्णुवाते ऊर्णुवते । ऊर्णुवे इत्यादि * ऊर्णुयात् ॥ ऊर्णुवीत * ऊर्णोतु, ऊर्णौतु, ऊर्णुतात् । ऊर्णुताम् । ऊर्णुवन्तु ॥ ऊर्णुहि, ऊर्णुतात् । ऊर्णुतम् । ऊर्णुत ॥ ऊर्णवानि । ऊर्णवाव । ऊर्णवाम ॥ ऊर्णुताम् ऊर्णुवाताम् ऊर्णुवताम् । ऊर्णुष्व इत्यादि * और्णोत् और्णुताम् और्णुवन् । और्णोः और्णुतम् और्णुत । और्णवम् और्णुव और्णुम * और्णुत और्णुवाताम् और्णुवत । और्णुथाः इत्यादि * ऊर्णुनाव ऊर्णुनुवतुः ऊर्णुनुवुः ॥ ऊर्णुनविथ, ऊर्णुनुविथ । ऊर्णुनुवथुः । ऊर्णुनुव ॥ ऊर्णुनाव, ऊर्णुनव । ऊर्णुनुविव, ऊर्णुनविव । ऊर्णुनुविम, ऊर्णुनविम ॥ ऊर्णुनुवे ऊर्णुनुवाते ऊर्णुनुविरे ॥ ऊर्णुनुविषे, ऊर्णुनविषे । ऊर्णुनुवाथे । ऊर्णुनुविध्वे, ऊर्णुनविध्वे ॥ ऊर्णुनुवे । ऊर्णुनुविवहे, ऊर्णुनविवहे । ऊर्णुनुविमहे, ऊर्णुनविमहे * ऊर्णूयात् ॥ ऊर्णविषीष्ट, ऊर्णुविषीष्ट * ऊर्णविता२, ऊर्णुविता२ * ऊर्णविष्यति, ऊर्णुविष्यति ॥ ऊर्णविष्यते, ऊर्णुविष्यते * और्णविष्यत्, और्णुविष्यत् ॥ और्णविष्यत, और्णुविष्यत * और्णवीत्, और्णावीत्, और्णुवीत् ॥ और्णविष्ट, और्णुविष्ट इत्यादि ॥

गुरुर्हितं वचनं ब्रूते ब्रवीति वा । ऊर्णोति वस्त्रेण देहम् । उवाच वचनं सत्यम् । अवोचद्धृदयङ्गमम् । इत्यादि ॥

इत्यदादिगणप्रकरणम् ॥

——×*×——

अथ तिङन्ते जुहोत्यादिगणप्रकरणम् ॥

तत्र परस्मैपदिनः ।

७९—हु = दान और खाना वा हवन करना ॥

जुहोति जुहुतः जुह्वति ॥ जुहोषि जुहुथः जुहुथ ॥ जुहोमि जुहुवः जुहुमः * जुहुयात् * जुहोतु, जुहुतात् । जुहुताम् । जुह्वतु ॥ जुहुधि, जुहुतात् । जुहुतम् । जुहुत ॥ जुहवानि जुहवाव जुहवाम * अजुहोत् अजुहुताम् अजुहवुः ॥ अजुहोः अजुहुतम् अजुहुत ॥ अजुहवम् अजुहुव अजुहुम * जुहवाञ्चकार जुहवाञ्चक्रतुः इत्यादि ॥ अथवा—जुहाव । जुहुवतुः । जुहुवुः ॥

जुहोथ जुहुवथुः जुहुव ॥ जुहाव, जुहव जुहुव जुहुम * हूयात् * होता * होष्यति * अहोष्यत् * अहौषीत् अहौष्टाम् अहौषुः । अहौषीः अहौष्टम् अहौष्ट । अहौषम् अहौष्व अहौष्म ॥

८०—(ञि) भी = भय, डरना ॥

बिभेति । बिभीतः, बिभितः । बिभ्यति ॥ बिभेषि । बिभीथः, बिभिथः । बिभीथ, बिभिथ ॥ बिभेमि । बिभीवः, विभिवः । बिभीमः, बिभिमः * बिभीयात्, बिभियात् इत्यादि * बिभेतु, बिभीतात्, बिभितात् । बिभीताम्, बिभिताम् । बिभ्यतु ॥ बिभीहि, बिभिहि, बिभीतात्, बिभितात् । बिभीतम्, बिभितम् । बिभीत, बिभित ॥ बिभयानि बिभयाव बिभयाम * अबिभेत् । अबिभीताम्, अबिभिताम् । अबिभयुः ॥ अबिभेः । अबिभीतम्, अबिभितम् । अबिभीत, अबिभित ॥ अबिभयम् । अबिभीव, अबिभिव । अबिभीम, अबिभिम * बिभयाञ्चकार वा—बिभाय बिभ्यतुः बिभ्युः ॥ बिभेथ । बिभ्यथुः । बिभ्य ॥ बिभाय, बिभय । बिभ्यिव । बिभ्यिम * भीयात् भीयास्ताम् इत्यादि * भेता * भेष्यति * अभेष्यत् * अभैषीत् इत्यादि ॥

८१—ह्री = लज्जा करना, शर्म करना ॥

जिह्रेति । जिह्रीतः, जिह्रितः । जिह्रियति ॥ जिह्रेषि इत्यादि * जिह्रीयात्, जिह्रियात् * जिह्रेतु * अजिह्रेत् * जिह्रयाञ्चकार, इत्यादि ॥ वा—जिह्राय । जिह्रियतुः इत्यादि * ह्रीयात् * ह्रेता * ह्रेष्यति * अह्रेष्यत् * अह्रैषीत् ॥

८२—पॄ = पालन और पूरण = भरना ॥

पिपर्त्ति पिपूर्त्तः पिपुरति ॥ पिपर्षि पिपूर्थः पिपूर्थ ॥ पिपर्मि पिपूर्वः पिपूर्मः * पिपूर्यात् * पिपर्त्तु, पिपूर्त्तात् । पिपूर्त्ताम् । पिपुरतु ॥ पिपूर्हि, पिपूर्त्तात् । पिपूर्त्तम् । पिपूर्त्त ॥ पिपराणि पिपराव पिपराम * अपिपः अपिपूर्त्ताम् अपिपरुः । अपिपः अपिपूर्त्तम् अपिपूर्त्त ॥ अपिपरम् अपिपूर्व अपिपूर्म * पपार । पप्रतुः, पपरतुः । पप्रुः, पपरुः ॥ पपरिथ । पप्रथुः, पपरथुः । पप्र, पपर ॥ पपार, पपर । पपरिव पपरिम । * पूर्यात् * परिता, परीता । परितारौ, परीतारौ * परिष्यति, परीष्यति * अपरिष्यत्, अपरीष्यत् * अपारीत् अपारिष्टाम् अपारिषुः । अपारीः अपारिष्टम् अपारिष्ट । अपारिषम् अपारिष्व अपारिष्म ।

८३—(ओ) हा (क्) = त्याग. छोडना ॥

जहाति । जहितः, जहीतः । जहति ॥ जहासि । जहिथः, जहीथः । इत्यादि * जह्यात् * जहातु, जहितात्, जहीतात् । जहिताम्, जहीताम् । जहतु ॥ जहाहि, जहिहि, जहीहि । जहितम् । जहीतम्, जहित, जहीत ॥ जहानि । जहाव । जहाम * अजहात् । अजहिताम्, अजहीताम् । अजहुः ॥ अजहाः । अजहितम्, अजहीतम् । अजहित, अजहीत ॥ अजहाम् । अजहिव, अजहीव । अजहिम, अजहीम * जहौ जहतुः जहुः ॥ जहिथ, जहाथ । जहथुः । जह ॥ जहौ जहिव जहिम * हेयात् * हाता * हास्यति * अहास्यत् * अहासीत् अहासिष्टाम् अहासिषुः । अहासीः अहासिष्टम् अहासिष्ट । अहासिषम् अहासिष्व अहासिष्म ॥

(भाषा बनाओ)

ब्राह्मणाय दक्षिणां जुहोति । मिष्टं जुहोति । अग्नौ घृतं जुहोति । दुष्टाद्बिभेति । पापात् जिह्रीहि, जिह्रिहि । शूरः प्रतिज्ञां पिपर्त्ति । पात्रं दुग्धेन पिपूर्धि । सुखं जहाति धनाय कृपणः ॥

इति परस्मैपदिनः ॥ अथात्मनेपदिनः ॥

८४–मा(ङ्) = मान, मापना वा मानना वा मान्यकरना और बोलना ॥

मिमीते मिमाते मिमते । मिमीषे मिमाथे मिमीध्वे । मिमे मिमीवहे मिमीमहे * मिमीत मिमीयाताम् मिमीरन् । मिमीथाः मिमीयाथाम् मिमीध्वम् । मिमीय मिमीवहि मिमीमहि * मिमीताम् मिमाताम् मिमताम् । मिमीष्व मिमाथाम् मिमीध्वम् । मिमै मिमावहै मिमामहै * अमिमीत अमिमाताम् अमिमत । अमिमीथाः अमिमाथाम् अमिमीध्वम् । अमिमि अमिमीवहि अमिमीमहि * ममे ममाते ममिरे । ममिषे ममाथे ममिध्वे । ममे ममिवहे ममिमहे * मासीष्ट मासीयास्ताम् * माता * मास्यते * अमास्यत * अमास्त अमासाताम् अमासत । अमास्थाः अमासाथाम् अमाध्वम् । अमासि अमास्वहि अमास्महि ॥

८५–(ओ) हा(ङ्) = गति = ज्ञान, गमन, प्राप्ति ॥

जिहीते जिहाते जिहते । जिहीषे इत्यादि * जिहीत जिहीयाताम् * जिहीताम् * अजिहीत * जहे * हासीष्ट * हाता * हास्यते * अहास्यत * अहास्त ॥ इत्यात्मनेपदिनः ॥

अथोभयपदिनः ॥

८६—(डु) भृ(ञ्) = धारण और पोषण, पालन ॥

परस्मै०—बिभर्त्ति * बिभृयात् * बिभर्त्तु, बिभृतात् । बिभृताम् । बिभ्रतु * अबिभः अबिभृताम् अबिभरुः । अबिभः अबिभृतम् अबिभृत । अबिभरम् अबिभृव अबिभृम * बिभराञ्चकार वा—बभार * भ्रियात् * भर्त्ता * भरिष्यति * अभरिष्यत् * अभार्षीत् अभार्ष्टाम् अभार्षुः । अभार्षीः अभार्ष्टम् अभार्ष्ट । अभार्षम् अभार्ष्व अभार्ष्म * आत्मने०—बिभृते बिभ्राते बिभ्रते । बिभृषे बिभ्राथे बिभृध्वे । बिभ्रे बिभृवहे बिभृमहे * बिभ्रीत बिभ्रीयाताम् * बिभृताम् बिभ्राताम् बिभ्रताम् । बिभृष्व बिभ्राथाम् इत्यादि * अबिभृत अबिभ्राताम् अबिभ्रत । अबिभृथाः अबिभ्राथाम् अबिभृध्वम् । अबिभ्रि अबिभृवहि अबिभृमहि * बिभराञ्चक्रे बिभराञ्चक्राते वा—बभ्रे बभ्राते * भृषीष्ट * भर्त्ता * भरिष्यते * अभरिष्यत * अभृत अभृषाताम् ॥

८७—(डु) दा(ञ्) = दान, देना ॥

ददाति दत्तः ददति । ददासि दत्थः दत्थ । ददामि दद्वः दद्मः ॥ दत्ते ददाते ददते । दत्से ददाथे दद्ध्वे । ददे दद्वहे दद्महे * दद्यात् दद्याताम् दद्युः । दद्याः दद्यातम् इत्यादि ॥ ददीत ददीयाताम् * ददातु, दत्तात् । दत्ताम् । ददतु ॥ देहि, दत्तात् । दत्तम् । दत्त ॥ ददानि ददाव ददाम * दत्ताम् ददाताम् ददताम् । दत्स्व ददाथाम् दद्ध्वम् । ददै ददावहै ददामहै * अददात् अदत्ताम् अददुः । अददाः अदत्तम् अदत्त । अददाम् अदद्व अदद्म ॥ अदत्त अददाताम् अददत * ददौ ददतुः ददुः ॥ ददिथ, ददाथ । ददथुः । दद ॥ ददौ ददिव ददिम ॥ ददे ददाते ददिरे । ददिषे * देयात् देयास्ताम् ॥ दासीष्ट * दाता ॥ दाता * दास्यति ॥ दास्यते * अदास्यत् ॥ अदास्यत * अदात् ॥ अदित अदिषाताम् अदिषत । अदिथाः अदिषाथाम् अदिध्वम् । अदिषि अदिष्वहि अदिष्महि ॥

८८—(डु) धा(ञ्) = धारण और पोषण, पालना ॥

दधाति धत्तः दधति । दधासि ॥ धत्ते दधाते दधते * दध्यात् ॥ दधीत * दधातु, धत्तात् । धत्ताम् । दधतु ॥ धत्ताम् दधाताम् दधताम् । धत्स्व * अदधात् ॥ अदधात * दधौ ॥ दधे * धेयात् ॥ धासीष्ट * धाता ॥ धाता * धास्यति ॥ धास्यते * अधास्यत् ॥ अधास्यत * अधात् ॥ अधित * ॥

८९—णिजिर् = शुद्धकरना, शौच और पोषण ॥

नेनेक्ति नेनिक्तः नेनिजति । नेनेक्षि नेनिक्थः नेनिक्थ । नेनेज्मि नेनिज्वः नेनिज्मः ॥ नेनिक्ते नेनिजाते नेनिजते । नेनिक्षे नेनिजाथे नेनिग्ध्वे । नेनिजे नेनिज्वहे नेनिज्महे * नेनिज्यात् ॥ नेनिजीत * नेनेक्तु, नेनिक्तात् । नेनिक्ताम् , नेनिजतु ॥ नेनिग्धि, नेनिक्तात् , नेनिक्तम् , नेनक्त ॥ नेनेजानि नेनेजाव नेनेजाम ॥ नेनिक्ताम् नेनिजाताम् नेनिजताम् । नेनिक्ष्व नेनिजाथाम् नेनिग्ध्वम् । नेनेजै नेनेजावहै नेनेजामहै * अनेनेक् अनेनिक्ताम् अनेनिजुः । अनेनक् अनेनिक्तम् अनेनिक्त । अनेनेजम् अनेनिज्व अनेनिज्म ॥ अनेनिक्त अनेनिजाताम् अनेनिजत ॥ अनेनिक्थाः अनेनिजाथाम् अनेनिग्ध्वम् । अनेनिजि अनेनिज्वहि अनेनिज्महि * निनेज निनिजतुः निनिजुः । निनेजिथ, निनेक्थ । निनिजथुः । निनिज ॥ निनेज निनिजिव निनिजिम ॥ निनिजे निनिजाते * निज्यात् ॥ निक्षीष्ट * नेक्ता ॥ नेक्ता * नेक्ष्यति ॥ नेक्ष्यते * अनेक्ष्यत् ॥ अनेक्ष्यत * अनिजत् अनिजताम् अनिजन् इत्यादि ॥ अथवा—अनैक्षीत् अनैक्ताम् अनैक्षुः । अनैक्षीः अनैक्तम् अनैक्त । अनैक्षम् अनैक्ष्व अनैक्ष्म ॥ अनिक्त अनिजाताम् अनिजत । अनिक्थाः अनिजाथाम् अनिग्ध्वम् । अनिजि अनिज्वहि अनिज्महि ॥

(भाषा बनाओ)

मातर पुत्रं मिमीते । विद्यार्थी शास्त्रस्यार्थं जिहीते । बिभर्त्ति त्रैलोक्यं विष्णुः । बिभृते कुटुम्बं गृही । ददाति दक्षिणां यजमानः पुरोहिताय। दधाति मालां माणवकः। धत्ते पुत्रं माता । नेनेक्ति वासांसि रजकः । नेनिक्ते क्षुधार्त्तान् दयालुः । इत्यादि ॥

॥ इति जुहोत्यादिगणप्रकरणम् ॥

—×:*:×—

अथ तिङन्ते दिवादिगणप्रकरणम् ॥

तत्र परस्मैपदिनः ॥

९०–दिवु = क्रीडा, जीतनेकी इच्छा, जुवा खेलना, व्यवहार, चमकना, स्तुति, हर्ष, मद, स्वप्न, इच्छा और गति ॥

दीव्यति * दीव्येत् * दीव्यतु * अदीव्यत * दिदेव दिदिवतुः दिदिवुः इत्यादि * दीव्यात् * देविता * देविष्यति * अदेविष्यत् * अदेवीत् अदेविष्टाम् अदेविषुः । अदेवीः अदेविष्टम् अदेविष्ट इत्यादि ॥

९१ षिवु = सींना, सूचीकर्म, तारपूरना ॥

सीव्यति * सीव्येत् * सीव्यतु * असीव्यत् * सिषेव * सीव्यात् * सेविता * सेविष्यति * असेविष्यत् * असेवीत् ॥

९२–नृती = नाचना, नृत्यकरना ॥

नृत्यति * नृत्येत् * नृत्यतु * अनृत्यत् * ननर्त्त ननृततुः ननृतुः । ननर्त्तिथ ननृतथुः ननृत । ननर्त्त ननृतिव ननृतिम * नृत्यात् नृत्यास्ताम् * नर्त्तिता * नर्त्तिष्यति, नर्त्स्यति * अनर्त्तिष्यत्, अनर्त्स्यत् * अनर्त्तीत् अनर्त्तिष्टाम् अनर्त्तिषुः । अनर्त्तीः इत्यादि ॥

९३–त्रसी = दुखःपाना. डरना ॥

त्रस्यति, त्रसति * त्रस्येत्, त्रसेत् * त्रस्यतु, त्रसतु * अत्रस्यत्, अत्रसत् * तत्रास । तत्रसतुः, त्रेसतुः । तत्रसुः, त्रेसुः ॥ तत्रसिथ, त्रेसिथ । तत्रसथुः, त्रेसथुः । तत्रस, त्रेस ॥ तत्रास, तत्रस । तत्रसिव, त्रेसिव । तत्रसिम, त्रेसिम * त्रस्यात् * त्रसिता * त्रसिष्यति * अत्रसिष्यत् * अत्रासीत्, अत्रसीत् ॥

९४–शो = तनूकरण, बारीक करना, छीलना ॥

श्यति * श्येत् * श्यतु * अश्यत् * शशौ शशतुः शशुः । शशिथ, शशाथ । शशथुः । शश ॥ शशौ शशिव शशिम * शायात् * शाता * शास्यति * अशास्यत् * अशासीत् अशासिष्टाम् इत्यादि अथवा–अशात् अशाताम् अशुः । अशाः अशातम् अशात । अशाम् अशाव अशाम ॥

९५–छो = छेदन, बांधना ॥

छ्यति * छ्येत् * छ्यतु * अछ्यत् * चच्छौ चच्छतुः * छायात् * छाता * छास्यति * अच्छास्यत् * अच्छात् इत्यादि वा-अच्छासीत् इत्यादि ॥

९६—षो = अन्तकर्म, नाश करना ॥

स्यति * स्येत् * स्यतु * अस्यत् * ससौ ससतुः * सायात् * साता * सास्यति * शेष रूप "शो" के तुल्य ॥

९७- दो = तोडना, खण्डित करना ॥

द्यति * द्येत् * द्यतु * अद्यत् * ददौ ददतुः * देयात् देयास्ताम् इत्यादि * शेष रूप "शो" के तुल्य ॥

९८—व्यध = ताडना, दुःख देना, बाधना, सताना ॥

विध्यति * विध्येत् * विध्यतु * अविध्यत् * विव्याध विविधतुः विविधुः । विव्यधिथ, विव्यद्ध । विविधथुः । विविध ॥ विव्याध, विव्यध । विविधिव । विविधिम * विध्यात् * व्यद्धा व्यद्धारौ * व्यत्स्यति * अव्यत्स्यत् * अव्यात्सीत् अव्याद्धाम् अव्यात्सुः । अव्यात्सीः अव्याद्धम् । अव्याद्ध । अव्यात्सम् अव्यात्स्व अव्यात्स्म ॥

९९—पुष = पुष्टि, पालन, मज़बूत करना ॥

पुष्यति * पुष्येत् * पुष्यतु * अपुष्यत् * पुपोष पुपुषतुः * पुष्यात् * पोष्टा * पोक्ष्यति * अपोक्ष्यत् * अपुषत् अपुषताम् अपुषन् । अपुषः अपुषतम् अपुषत । अपुषम् अपुषाव अपुषाम ॥

१००—शुष = शोषण, सुखाना, शुश्क करना ॥

शुष्यति * शुष्येत् * शुष्यतु * अशुष्यत् * शुशोष इत्यादि * शुष्यात् * शोष्टा * शोक्ष्यति * अशोक्ष्यत् * अशुषत् ॥

१०१- नश = अदर्शन, नाश ॥

नश्यति * नश्येत् * नश्यतु * अनश्यत् * ननाश नेशतुः नेशुः । नेशिथ, ननंष्ठ नेशथुः नेश । ननाश, ननश नेशिव नेशिम * नश्यात् * नंष्टा * नंक्ष्यति * अनंक्ष्यत् * अनशत् ॥

(भाषा बनाओ)

अक्षैर्दीव्यति दुष्टः । सूच्या सीव्यति वस्त्राणि । नृत्यन्ति निर्लज्जाः गणिकाः । अवृष्ट्या त्रस्यति लोकः । तक्षकः काष्ठं श्यति । छ्यति पाशान् दुःखस्य ।

स्यति सुखानि पापीयान् । द्यन्ति भाण्डानि वानराः। विव्याध शरै रिपून्भटः। पुष्यति बालं जननी । शुष्यति सरोऽनावृष्टया । दिनानि नश्यन्ति वृथा दुरात्मनः । इत्यादि ॥

इति परस्मैपदप्रकरणम् ॥

अथात्मनेपदप्रकरणम् ॥

१०२–षू(ङ्) = प्राणिप्रसव, प्राणी का जनना ॥

लट्–सूयते * लिङ्–सूयेत * लोट्–सूयताम् * लङ्–असूयत * लिट्–सुषुवे सुषुवाते सुषुविरे । सुषुविषे सुषुवाथे सुषुविध्वे । सुषुवे सुषुविवहे सुषुविमहे * आशीर्लिङ्–सोषीष्ट * लुट्–सोता, सविता * लृट्–सोष्यते, सविष्यते * लृङ्–असोष्यत, असविष्यत * लुङ्– असविष्ट, असोष्ट ॥

१०३–दू(ङ्) = परिताप, दुःखी होना ॥

दूयते दूयेते दूयन्ते। दूयसे दूयेथे दूयध्वे । दूये दूयावहे दूयामहे * दूयेत दूयेयाताम् दूयेरन् । दूयेथाः दूयेयाथाम् दूयेध्वम् । दूयेय दूयेवहि दूयेमहि * दूयताम् दूयेताम् दूयन्ताम् । दूयस्व दूयेथाम् दूयध्वम्। दूयै दूयावहै दूयामहै * अदूयत अदूयेताम् अदूयन्त । अदूयथाः अदूयेथाम् अदूयध्वम् । अदूये अदूयावहि अदूयामहि * दुदुवे दुदुवाते इत्यादि * दविषीष्ट दविषीयास्ताम् इत्यादि * दविता दवितारौ दवितारः । दवितासे दवितासाथे दविताध्वे । दविताहे दवितास्वहे दवितास्महे * दविष्यते दविष्येते दविष्यन्ते। दविष्यसे इत्यादि * अदविष्यत अदविष्येताम् अदविष्यन्त इत्यादि * अदविष्ट अदविषाताम् अदविषत । अदविष्ठाः अदविषाथाम् अदविध्वम् । अदविषि अदविष्वहि अदविष्महि ॥

१०४–दी(ङ्) = क्षय, नाश ॥

दीयते * दीयेत * दीयताम् * अदीयत * दिदीये दिदीयाते दिदीयिरे । दिदीयिषे दिदीयाथे दिदीयिध्वे । दिदीये दिदीयिवहे दिदीयिमहे * दासीष्ट * दाता * दास्यते * अदास्यत * अदास्त अदासाताम् अदासत । अदास्थाः इत्यादि ॥

१०५–डी(ङ्) = उड़ना, आकाशगति ॥

डीयते * डीयेत * डीयताम् * अडीयत * डिड्ये डिड्याते डिड्यिरे। डिड्यिषे इत्यादि * डयिषीष्ट * डयिता * डयिष्यते * अडयिष्यत * अडयिष्ट ॥

१०६—पीङ्=पान, पीना ॥

पीयते * पीयेत * पीयताम् * अपीयत * पिप्ये * पेषीष्ट * पेता * पेष्यते * अपेष्यत * अपेष्ट ॥

(भाषा बनाओ)

सूयते गौर्वत्सम्। दूयेत चित्तं पापेन। दीयतां पापिनः सम्पत्। अडीयन्त पक्षिणः। पिप्ये मधु च राक्षसः। सोषीष्ट पुत्रं तव धर्मपत्नी। दविताऽस्मि न पुण्यकर्मणा। दास्यन्ते पापिसम्पदः। सस्यानि अखादिष्यन् उदडयिष्यन्त पक्षिणः। अपेषातां बालौ यथारुचि दुग्धम् ॥

१०७—माङ्=मान, मानना, मापना, नाप ॥

मायते * मायेत * मायताम् * अमायत * ममे * मासीष्ट * माता * मास्यते * अमास्यत * अमास्त ॥

१०८—जनी=प्रादुर्भाव, पैदा होना, प्रकट होना, उत्पत्ति ॥

जायते * जायेत * जायताम् * अजायत * जज्ञे—जज्ञिवहे जज्ञिमहे * जनिषीष्ट * जनिता * जनिष्यते * अजनिष्यत * अजनि, अजनिष्ट। अजनिषाताम्। अजनिषत इत्यादि ॥

१०९—दीपी=दीप्ति, चमकना, प्रकाश ॥

दीप्यते * दीप्येत * दीप्यताम् * अदीप्यत * दिदीपे * दीपिषीष्ट * दीपिता * दीपिष्यते * अदीपिष्यत * अदीपि, अदीपिष्ट। अदीपिषाताम् इत्यादि ॥

११०—पद=गति—ज्ञान, गमन, प्राप्ति ॥

पद्यते * पद्येत * पद्यताम् * अपद्यत * पेदे पेदाते इत्यादि * पत्सीष्ट * पत्ता * पत्स्यते * अपत्स्यत * अपादि अपत्साताम् अपत्सत इत्यादि ॥

१११—विद=सत्ता, विद्यमानता, होना ॥

विद्यते * विद्येत * विद्यताम् * अविद्यत * विविदे * वित्सीष्ट * वेत्ता * वेत्स्यते * अवेत्स्यत * अवित्त अवित्साताम् अवित्सत। अवित्थाः अवित्साथाम् अविद्ध्वम्। अवित्सि अवित्स्वहि अवित्स्महि ॥

११२—बुध=अवगमन, समझना, जानना ॥

आशीर्लिङ्—भुत्सीष्ट * लुट्—बोद्धा * लृट्—भोत्स्यते * लृङ्—अभोत्स्यत * लुङ्—अबोधि, अबुद्ध । अभुत्साताम् अभुत्सत । अबुद्धाः अभुत्साथाम् अभुद्ध्वम् । अबोधि अबुध्वहि अबुध्महि शेष रूप "दीप" धातुके तुल्य जानो ॥

११३—युध = लड़ना, युद्धकरना, संग्राम ॥

युध्यते * युध्येत * युध्यताम् * अयुध्यत * युयुधे * युत्सीष्ट * योद्धा* योत्स्यते * अयोत्स्यत * अयुद्ध ॥

११४—सृज = विसर्ग, त्याग, छोड़ना ॥

सृज्यते * सृज्येत * सृज्यताम् * असृज्यत * ससृजे ससृजाते ससृजिरे इत्यादि * सृक्षीष्ट * स्रष्टा * स्रक्ष्यते * अस्रक्ष्यत * असृष्ट असृक्षाताम् इत्यादि ॥

(भाषानुवाद करो)

पुत्रः पितरं मातरं च मायते (मानता है)। राजानः पृथ्वीं मास्यन्ते (मापेंगे) न कस्यापि गृहे कुपुत्रो जायेत । सूर्य्यवत् दीप्यतां भवान् । अर्थमपद्यत । ग्रासं पेदे । धनं पत्सीष्ट भवान् विद्यांच । पत्ता भवान् श्वोऽस्य फलं कृतस्य । वेत्स्येऽहमपि जङ्गले । वादं चेदभोत्स्यत वितण्डां नाकरिष्यत् । अयुत्सत वीराः संगरे । सृज्येते घटौ कुलालः ॥

॥ इति आत्मनेपदिनः ॥

अथोभयपदिनः ॥

११५—मृष = तितिक्षा, सहना ॥

मृष्यति ॥ मृष्यते * मृष्येत् ॥ मृष्येत * मृष्यतु ॥ मृष्यताम् * अमृष्यत् ॥ अमृष्यत * ममर्ष ममृषतुः ममृषुः । ममर्षिथ ममृषथुः ममृष । ममर्ष ममृषिव ममृषिम ॥ ममृषे ममृषाते इत्यादि * मृष्यात् ॥ मर्षिषीष्ट * मर्षिता मर्षितारौ मर्षितारः । मर्षितासि मर्षितास्थः मर्षितास्थ । मर्षितास्मि मर्षितास्वः मर्षितास्मः ॥ मर्षिता मर्षितारौ मर्षितारः । मर्षितासे मर्षितासाथे मर्षिताध्वे । मर्षिताहे मर्षितास्वहे मर्षितास्महे * मर्षिष्यति ॥ मर्षिष्यते* अमर्षिष्यत् ॥ अमर्षिष्यत * अमर्षीत् ॥ अमर्षिष्ट ॥

११६—नह् = बन्धन, बान्धना ॥

नह्यति । नह्यते * नह्येत् । नह्येयत * नह्यतु । नह्यताम् * अनह्यत् । अनह्यत * ननाह नेहतुः नेहुः । नेहिथ, ननद्ध नेहथुः नेह । ननाह, ननह नेहिव नेहिम ॥ नेहे नेहाते इत्यादि * नह्यात् । नत्सीष्ट * नद्धा । नद्धा * नत्स्यति । नत्स्यते * अनत्स्यत् । अनत्स्यत * अनात्सीत् अनाद्धाम् अनात्सुः । अनात्सीः अनाद्धम् अनाद्ध । अनात्सम् अनात्स्व अनात्स्म ॥ अनद्ध अनत्साताम् अनत्सत । अनद्धाः अनत्साथाम् अनद्ध्वम् । अनत्सि अनत्स्वहि । अनत्स्महि ॥

(भाषानुवाद करो)

मृष्यति स्वामी भृत्यानामपराधान् । नह्यते रज्जुः काष्ठानि । मृष्येत् स्तुतिनिन्दे उभे अपि साधुः । पुस्तकं सम्यक् नह्येयत् छात्रः । ममृषिरे सीतारामलक्ष्मणा बहुदुःखजातानि वने ॥

इति दिवादयः ॥

—:×:×:—

अथ स्वादिगणप्रकरणम् ॥

तत्रोभयपदिनः ॥

११७—षुञ् = अभिषव, अर्क खींचना ॥

सुनोति सुनुतः सुन्वन्ति । सुनोषि सुनुथः सुनुथ । सुनोमि सुन्वः, सुनुवः सुन्मः, सुनुमः ॥ सुनुते सुन्वाते सुन्वते । सुनुषे सुन्वाथे सुनुध्वे । सुन्वे सुनुवहे, सुन्वहे सुनुमहे, सुन्महे, * सुनुयात् इत्यादि ॥ सुन्वीत सुन्वीयाताम् सुन्वीरन् । सुन्वीयाः सुन्वीयाथाम् सुन्वीध्वम् । सुन्वीय सुन्वीवहि सुन्वीमहि * सुनोतु, सुनुतात् । सुनुताम् । सुन्वन्तु ॥ सुनु, सुनुतात् । सुनुतम् । सुनुत ॥ सुनवानि । सुनवाव । सुनवाम ॥ सुनुताम् सुन्वाताम् सुन्वताम् । सुनुष्व सुन्वाथाम् सुनुध्वम् । सुनवै सुनवावहै सुनवामहै * असुनोत् असुनुताम् असुन्वन् । असुनोः असुनुतम् असुनुत । असुनवम् असुन्व, असुनुव असुन्म, असुनुम ॥ असुनुत असुन्वाताम् असुन्वत । असुनुथाः असुन्वाथाम् । असुनुध्वम् ।

असुन्वि असुन्वहि, असुनुवहि असुन्महि, असुनुमहि * सुषाव सुषुवतुः सुषुवुः। सुषविथ, सुषोथ सुषुवथुः सुषुव। सुषाव, सुषव सुषुविव सुषुविम ॥ सुषुवे सुषुवाते सुषुविरे। सुषुविषे सुषुवाथे सुषुविध्वे। सुषुवे सुषुविवहे सुषुविमहे * सूयात्। सोषीष्ट * सोता। सोता * सोष्यति। सोष्यते * असोष्यत्। असोष्यत * असावीत् असाविष्टाम् असाविषुः। असावीः असाविष्टम् असाविष्ट। असाविषम् असाविष्व असाविष्म ॥ असोष्ट असोषाताम् असोषत। असोष्ठाः असोषाथाम्। असोढ्वम्। असोषि असोष्वहि असोष्महि * ॥

११८—चिञ् = चयन, चिनना ॥

चिनोति चिनुतः इत्यादि। चिनुते चिन्वाते इत्यादि * चिनुयात्। चिन्वीत * चिनोतु। चिनुताम् * अचिनोत्। अचिनुत * चिचाय चिच्यतुः चिच्युः। चिचयिथ, चिचेथ चिच्यथुः चिच्य। चिचाय, चिचय चिच्यिव चिच्यिम अथवा—चिकाय चिक्यतुः इत्यादि। चिच्ये चिच्याते वा—चिक्ये चिक्याते इत्यादि * चीयात्। चेषीष्ट * चेता। चेता * चेष्यति। चेष्यते * अचेष्यत्। अचेष्यत * अचैषीत् अचैष्टाम् अचैषुः। अचैषीः अचैष्टम् अचैष्ट। अचैषम् अचैष्व अचैष्म ॥ अचेष्ट अचेषाताम् अचेषत अचेष्ठाः अचेषाथाम् अचेढ्वम्, अचेषि अचेष्वहि अचेष्महि ॥

११९—स्तृञ् = आच्छादन, ढकना ॥

स्तृणोति। स्तृणुते * स्तृणुयात्। स्तृण्वीत * स्तृणोतु। स्तृणुताम् * अस्तृणोत्। अस्तृणुत * तस्तार तस्तरतुः तस्तरुः। तस्तरिथ, तस्तर्थ तस्तरथुः तस्तर। तस्तार, तस्तर तस्तरिव तस्तरिम ॥ तस्तरे तस्तराते तस्तरिरे। तस्तरिषे इत्यादि * स्तर्यात् इत्यादि। स्तृषीष्ट इत्यादि वा—स्तरिषीष्ट इत्यादि * स्तर्त्ता। स्तर्त्ता * स्तरिष्यति। स्तरिष्यते * अस्तरिष्यत्। अस्तरिष्यत * अस्तार्षीत् अस्तार्ष्टाम् अस्तार्षुः। अस्तार्षीः अस्तार्ष्टम् अस्तार्ष्ट। अस्तार्षम् अस्तार्ष्व अस्तार्ष्म॥ अस्तरिष्ट अस्तरिषाताम् अस्तरिषत। अस्तरिष्ठाः अस्तरिषाथाम् अस्तरिध्वम्। अस्तरिषि अस्तरिष्वहि अस्तरिष्महि ॥ अथवा—अस्तृत अस्तृषाताम् अस्तृषत। अस्तृथाः अस्तृषाथाम् अस्तृढ्वम्। अस्तृषि अस्तृष्वहि अस्तृष्महि * ॥

१२०—धूञ् = कम्पन, कांपना वा कम्पाना ॥

धूनोति। धूनुते * धूनुयात्। धून्वीत * धूनोतु। धूनुताम् * अधूनोत् अधूनुत * दुधाव दुधुवतुः दुधुवुः। दुधविथ, दुधोथ दुधुवथुः दुधुव। दुधाव,

दुधुवतुः दुधुवुः । दुधविथ, दुधोथ दुधुवथुः दुधुव । दुधाव, दुधव दुधुविव दु-धुविम ॥ दुधुवे दुधुवाते इत्यादि * धूयात् । धोषीष्ट इत्यादि वा—धविषीष्ट इत्यादि * धोता वा—धविता । धोता वा—धविता * धोष्यति, धविष्यति । धोष्यते, धविष्यते * अधोष्यत्, अधविष्यत् । अधोष्यत, अधविष्यत * अ-धावीत् अधाविष्टाम् अधाविषुः इत्यादि । अधविष्ट, अधोष्ट इत्यादि दो दो रूप जानो ॥

(भाषा बनाओ)

अध्वर्युः सोमं सुनोति यज्ञाय । किमर्थं दश मूलानि सुनुषे? । ज्वरितः पर्पटं सुनुयात् पिबेच्च । (पर्पट=पित्तपापड़ा नाम ओषधि का नाम है) चिनु-यादिष्टका वेद्याम् । स्तृणुयात्कुशैर्मण्डपम् । धूनोति चम्पकवनानि वायुः । सुषुवे वैद्य ओषधीः । चिकाय भित्तिं महतीं चमूपः । अचैष्म यज्ञे समिधः समन्तात् । स्तृषीष्ठा यशसा दिवम् । इत्यादि ॥

(संस्कृत बनाओ)

मैंने तुम्हारे लिये पञ्चमूलको अर्कखींचा है । तुम अपने लिये मकान छवाओ । वृक्षको हिलाओ फल गिरेंगे । कर्मकार भीतको चिनते हैं । हम सोमको अर्कखीचेंगे । उससे दीर्घजीवी होवेंगे । रक्षक चोरको बान्धता है । महात्मा लोग सुख और दुःख दोनोंको सहते हैं । वे दुःखमें अधीर नहीं होते । और सुखमें प्रमाद नहीं करते=कुर्वन्ति । शिष्य गुरुको नानते हैं । दर्ज़ी कपड़ा सींता है । पाप अवश्य प्रकट होते हैं । तथा पुण्य भी । विद्यार्थियो ! आपसमें मत लड़ो । आलस्य छोड़ो । द्वन्द्व सहो । अर्थ समझो । शिखा बान्धो । गुडूचीको अर्कखींचो । पुष्प चुनो । और ऐसेही सद्गुण चुनो । अपगुण त्यागो । देहको ढको । पांव मत हिलावो । इत्यादि ॥

इति तिङन्ते स्वादिगणप्रकरणम् ॥

—÷×*×÷—

अथ तिङन्ते तुदादयः ॥ तत्रोभयपदिनः ॥

१२१—तुद = व्यथन, दर्द, चुभना ॥

तुदति । तुदते * तुदेत् । तुदेत * तुदतु । तुदताम् * अतुदत् । अतुदत* तुतोद तुतुदतुः इत्यादि ॥ तुतुदे तुतुदाते इत्यादि * तुद्यात् । तुत्सीष्ट * तोत्ता । तोत्ता * तोत्स्यति । तोत्स्यते * अतोत्स्यत् । अतोत्स्यत * अतौत्सीत् अतौत्ताम् अतौत्सुः । अतौत्सीः इत्यादि ॥ अतुत्त अतुत्साताम् अतुत्सत । अतुत्थाः अतुत्साथाम् अतुद्ध्वम् । अतुत्सि अतुत्स्वहि अतुत्स्महि ॥

१२२—णुद = प्रेरणा करना, उसकाना ॥

नुदति इत्यादि "तुद"के तुल्य जानो ॥

१२३—भ्रस्ज = पकाना, पाक ॥

भृज्जति । भृज्जते * भृज्जेत् । भृज्जेत * भृज्जतु । भृज्जताम् * अभृज्जत् । अभृज्जत * बभर्ज बभर्जतुः बभर्जुः । बभर्जिथ, बभर्ष्ठ बभर्जथुः बभर्ज । बभर्ज बभर्जिव बभर्जिम ॥ अथवा—बभ्रज्ज बभ्रज्जतुः बभ्रज्जुः । बभ्रज्जिथ, बभ्रष्ठ बभ्रज्जथुः बभ्रज्ज । बभ्रज्ज बभ्रज्जिव बभ्रज्जिम ॥ बभर्जे बभर्जाते इत्यादि । अथवा—बभ्रज्जे बभ्रज्जाते इत्यादि * भृज्ज्यात् भृज्ज्यास्ताम् इत्यादि ॥ भ्रक्षीष्ट वा भर्क्षीष्ट इत्यादि * भर्ष्टा वा—भ्रष्टा * भ्रक्ष्यति, भर्क्ष्यति । भ्रक्ष्यते, भर्क्ष्यते* अभ्रक्ष्यत्, अभर्क्ष्यत् । अभ्रक्ष्यत, अभर्क्ष्यत * अभ्राक्षीत्, अभार्क्षीत् । अभ्रष्ट अभ्रक्षाताम् इत्यादि वा—अभर्ष्ट अभर्क्षाताम् अभर्क्षत । अभर्ष्ठाः अभर्क्षाथाम् अभर्ड्ढ्वम् । अभर्क्षि अभर्क्ष्वहि अभर्क्ष्महि ॥

१२४—कृष = विलेखन, खोदना, हलकर्म ॥

कृषति । कृषते * कृषेत् । कृषेत * कृषतु । कृषताम् * अकृषत् । अकृषत* चकर्ष चकृषतुः चकृषुः । चकर्षिथ, चकर्ष्ठ चकृषथुः चकृष । चकर्ष चकृषिव चकृषिम ॥ चकृषे चकृषाते चकृषिरे इत्यादि * कृष्यात् । कृक्षीष्ट * क्रष्टा वा—कर्ष्टा * क्रक्ष्यति वा—कर्क्ष्यति । क्रक्ष्यते, कर्क्ष्यते * अक्रक्ष्यत्, अकर्क्ष्यत् । अक्रक्ष्यत, अकर्क्ष्यत * अक्राक्षीत् अक्राष्टाम् अक्राक्षुः । अक्राक्षीः अक्राष्टम् अक्राष्ट । अक्राक्षम् अक्राक्ष्व अक्राक्ष्म ॥ अथवा—अकार्क्षीत् अकार्ष्टाम् इत्यादि ॥ अकृष्ट अकृक्षाताम् अकृक्षत । अकृष्ठाः अकृक्षाथाम् अकृड्ढ्वम् । अकृक्षि अकृक्ष्वहि अकृक्ष्महि । अथवा—अकृक्षत अकृक्षाताम् अकृक्षन्त । अकृक्षथाः इत्यादि ॥

१२५—मिल = सङ्गम, मिलना ॥

मिलति । मिलते * मिलेत् । मिलेत * मिलतु । मिलताम् * अमिलत् । अमिलत * मिमेल मिमिलतुः इत्यादि ॥ मिमिले मिमिलाते इत्यादि * मिल्यात् । मेलिषीष्ट * मेलिता । मेलिता * मेलिष्यति । मेलिष्यते * अमेलिष्यत् । अमेलिष्यत * अमेलीत् अमेलिष्टाम् अमेलिषुः । अमेलीः इत्यादि ॥ अमेलिष्ट अमेलिषाताम् अमेलिषत । अमेलिष्ठाः इत्यादि ॥

(भाषा बनाओ)

हस्तिपोऽङ्कुशेन हस्तिमस्तकं तुदति । तुदन्ति बाणा मर्मस्थाः । तुतुदे रावणवाहिनीं स रामः । न तुदेत परस्य मर्मगूढम् । तुत्सीष्ट शत्रुहृदयानि नृपः । अश्वं नुदति । चणकं भृज्जति । क्षेत्रं कृषति । मित्रेण मिलति । रामरावणयोर्युद्धे रामोऽतौत्सीद्रिपोश्चमूम् । बभ्रज्जे तपसा पापम् । स चकर्ष महीमेताम् । श्वोमेलितास्मि । प्रातर्मेलितास्महे । क्षेत्रं तावत् सम्यक् कृषेत तदनु बीजं वपेत् ॥

(संस्कृत बनाओ)

किसीका हृदय मत दुखाओ । संसार को धर्मसे प्रेरणा करो । खेत को अच्छे प्रकारसे खोदो (जोतो) । सबसे प्रीतिसे मिलो । दुष्ट ! तेरा हृदय बाणसे बींध दूंगा । यदि गुरु भी पापमें प्रेरणा करे तो मत मानो ॥

१२६—मुचॢ(ऌ)=मोचन, छोड़ना ॥

मुञ्चति । मुञ्चते * मुञ्चेत् । मुञ्चेत * मुञ्चतु । मुञ्चताम् * अमुञ्चत् । अमुञ्चत * मुमोच मुमुचतुः ॥ मुमुचे * मुच्यात् । मुक्षीष्ट * मोक्ता । मोक्ता * मोक्ष्यति । मोक्ष्यते * अमोक्ष्यत् । अमोक्ष्यत * अमुचत् अमुचताम् अमुचन् । अमुचः इत्यादि ॥ अमुक्त अमुक्षाताम् अमुक्षत । अमुक्थाः अमुक्षाथाम् अमुग्ध्वम् । अमुक्षि अमुक्ष्वहि अमुक्ष्महि ॥

१२७—लुपॢ(ऌ)=छेदन, काटना, दो करना ॥

लुम्पति । लुम्पते * लुम्पेत् । लुम्पेत * लुम्पतु । लुम्पताम् * अलुम्पत् । अलुम्पत * लुलोप । लुलुपे * लुप्यात् । लुप्सीष्ट * लोप्ता । लोप्ता * लोप्स्यति लोप्स्यते * अलोप्स्यत् अलोप्स्यत * अलुपत् ॥ अलुप्त अलुप्साताम् अलुप्सत । अलुप्थाः अलुप्साथाम् अलुब्ध्वम् इत्यादि ॥

१२८—विदॢ (ऌ)=लाभ, लेना, पाना ॥

विन्दति इत्यादि * लिट्—विवेद । विविदे * विद्यात् । वित्सीष्ट * वेत्ता। वेत्ता * वेत्स्यति इत्यादि * लुङ्—अविदत् ॥ अवित्त अवित्साताम् इत्यादि॥ किन्हीं के मतमें—वेदिषीष्ट * वेदिता * वेदिष्यति * अवेदिष्यत् * अवेदीत्॥ अवेदिष्ट इत्यादि प्रकारसे भी होता है ॥

१२९—षिच=क्षरण, बिखरना, टपकना, चूना वा सींचना॥

सिञ्चति इत्यादि * सिषेच * सिच्यात् । सिक्षीष्ट * सेक्ता * सेक्ष्यति इत्यादि * असिचत् ॥ असिक्त असिक्षाताम् इत्यादि ॥

१३०—लिप=उपदेह, लीपना, पोतना, देह बढ़ाना ॥

लिम्पति इत्यादि (१२७) "लुप" के तुल्य जानो ॥

(भाषा बनाओ)

हठं मुञ्च । क्षेत्रं लुम्प । विद्यां विन्द । वृक्षवाटिकां सिङ्ग्ध्वम् । वेदिं लिम्पताम् । मोक्ष्यामि गृहबन्धनात् । मोक्ष्ये निगडबन्धनात् (निगड=जेल)। लुलुपे पुस्तकानि मूषकः । कृतस्य विन्दते फलम् । वारिदोऽयं सेक्ष्यति सकलं भारतं वर्षम् । तदा सुभिक्षं वेत्स्यामहे । तैलेन लिम्पति देहं मल्लः ॥

(संस्कृत बनाओ)

हठ छोड़ो । मूर्खताके जालको छेदो (काटो) । पूर्वकर्मोंका फल पावो। आंगन लीपो (आंगन=अङ्गण=स्थानादिका सहन)। खेत सींचो । घृत टपकाओ मत । दूध मत बखेरो । यह अमृत है ॥

इत्युभयपदप्रकरणम् ॥ अथ परस्मैपदिनः ॥

१३१—कृती=छेदन, कृन्तन, काटना ॥

कृन्तति * कृन्तेत् * कृन्ततु * अकृन्तत् * चकर्त्त चकृततुः चकृतुः । चकर्त्तिथ चकृतथुः चकृत । चकर्त्त चकृतिव चकृतिम * कृत्यात् * कर्त्तिता * कर्त्तिष्यति * अकर्त्तिष्यत् * अकर्त्तीत् अकर्त्तिष्टाम् अकर्त्तिषुः । अकर्त्तीः इत्यादि॥

१३२—खिद=दुःखपाना, खेद, कष्ट ॥

खिन्दति इत्यादि * चिखेद चिखिदतुः इत्यादि * खिद्यात् * खेत्ता * खेत्स्यति * अखेत्स्यत् * अखैत्सीत् अखैत्ताम् अखैत्सुः । अखैत्सीः अखैत्तम् अखैत्त । अखैत्सम् अखैत्स्व अखैत्स्म ॥

१३३–पिश = अवयव, टुकड़ेकरना, पीसना ॥

पिंशति * पिंशेत् * पिंशतु * अपिंशत् * पिपेश * पिश्यात् * पेशिता * पेशिष्यति * अपेशिष्यत् * अपेशीत् ॥

१३४ (ओ) व्रश्चू = छेदन, काटना ॥

वृश्चति * वृश्चेत् * वृश्चतु * अवृश्चत् * वव्रश्च वव्रश्चतुः वव्रश्चुः । वव्रश्चिथ, वव्रष्ठ वव्रश्चथुः वव्रश्च । वव्रश्च वव्रश्चिव वव्रश्चिम * वृश्च्यात् * व्रश्चिता, व्रष्टा * व्रश्चिष्यति, व्रक्ष्यति * अव्रश्चिष्यत्, अव्रक्ष्यत् * अव्रश्चीत् ॥

१३५–व्यच = व्याजीकरण, बहानेबाज़ी, ठगई ॥

विचति * विचेत् * विचतु * अविचत् * विव्याच विविचतुः विविचुः । विव्यचिथ विविचथुः विविच । विव्याच, विव्यच विविचिव विविचिम * विच्यात् * व्यचिता * व्यचिष्यति * अव्यचिष्यत् * अव्याचीत्, अव्यचीत् ॥

(भाषानुवाद करो)

चणकं पिंशति वृद्धा । पापेन खिद्यति लोकः । वृश्चिको मनुष्यं पादे वृश्चति (वृश्चिक=बिच्छू) । विचति खलः पथिकान् । कृन्तति मूलं वृक्षस्य तक्षकः (बढ़ई) इत्यादि ॥

(संस्कृतानुवाद करो)

बुढ़िया गोधूम पीसती थी । पापी दुःख पाते हैं । बिच्छू अङ्गुलिमें काटता है । धूर्त्त बहकाता था । दुष्ट का शिर काटो । मित्रसे स्नेह करोइत्यादि ॥

१३६–उच्छि = उञ्छ, शिलाचुगना ॥

उञ्छति * उञ्छेत् * उञ्छतु * औञ्छत् * उञ्छाञ्चकार उञ्छाञ्चक्रतुः इत्यादि वा–उञ्छामास उञ्छामासतुः वा–उञ्छाम्बभूव उञ्छाम्बभूवतुः इत्यादि * उञ्छ्यात् * उञ्छिता * उञ्छिष्यति * औञ्छिष्यत् * औञ्छीत् ॥

१३७–ऋच्छ = गति, मूर्च्छा, मूर्त्तिभाव, अचेतनता ॥

ऋच्छति * ऋच्छेत् * ऋच्छतु * आर्च्छत् * आनर्छ आनर्छतुः आनर्छुः । आनर्छिथ आनर्छथुः आनर्छ । आनर्छ आनर्छिव आनर्छिम * ऋच्छ्यात् * ऋच्छिता * ऋच्छिष्यति * आर्च्छिष्यत् आर्च्छीत् ॥

१३८–उज्झ = त्याग, छोड़ना, उत्सर्ग ॥

भवानी प्रसाद

उज्झति * उज्झेत् * उज्झतु * औज्झत् * उज्झाञ्चकार, उज्झामास, उज्झाम्बभूव * उज्झ्यात् * उज्झिता * उज्झिष्यति * औज्झिष्यत् * औज्झीत् ॥

१३९–लुभ = लुभाना, मोहित होना ॥

लुभति * लुभेत् * लुभतु * अलुभत् * लुलोभ लुलुभतुः लुलुभुः । लुलोभिथ लुलुभथुः लुलुभ । लुलोभ लुलुभिव लुलुभिम * लुभ्यात् * लोभिता, लोब्धा * लोभिष्यति * अलोभिष्यत् * अलोभीत् ॥

१४०।१४१–तृप । तृम्फ = तृप्ति, तृप्त होना ॥

तृपति * तृपेत् * तृपतु * अतृपत् * ततर्प ततृपतुः * तृप्यात् * तर्पिता * तर्पिष्यति * अतर्पिष्यत् * अतर्पीत् ॥ तृम्फति * इत्यादि । ततृम्फ ततृम्फतुः । शेष " तृप " के तुल्य ॥

१४२।१४३–मृड । पृड = सुखीकरना, सुखपाना ॥

मृडति * मृडेत् * मृडतु * अमृडत् * ममर्ड ममृडतुः * मृड्यात् * मर्डिता * मर्डिष्यति * अमर्डिष्यत् * अमर्डीत् ॥ इसी प्रकार "पृड" ॥

१४४–शुन = गति–ज्ञान, गमन, प्राप्ति ॥

शुनति * शुनेत् * शुनतु * अशुनत् * शुशोन शुशुनतुः * शुन्यात् * शोनिता * शोनिष्यति * अशोनिष्यत् * अशोनीत् ॥

१४५–इषु = इच्छा, चाहना ॥

इच्छति * इच्छेत् * इच्छतु * ऐच्छत् * इयेष ईषुतुः * इष्यात् * एषिता, एष्टा * एषिष्यति * ऐषिष्यत् * ऐषीत् ॥

(भाषानुवाद करो)

ऋषय उञ्छन्ति स्म । ग्राममृच्छति पान्थः । ऋच्छति रोगी । आनर्छ शस्त्रपातेन । उज्झति जलम् । लुभति परधनं दृष्ट्वा पापीयान् । तृपन्ति ब्राह्मणाः यजमानगृहे । तृम्फन्ति भिक्षुकाः उदरमात्रपूर्त्या । मृडति सम्पत्त्या लोकः । पृडति ज्ञानेन तत्त्ववित् । ग्रामं शुनति । अर्थं शुनेत् । वेदान् शुनतु ब्राह्मणः । धनमिच्छन्ति लोलुपाः । इत्यादि ॥

(संस्कृतानुवाद करो)

कणाद ऋषि शिला चुगता था । उससे ही तृप्त होता था । और वैशेषिक दर्शनको बनाता था (समपादीत्) । राहगीर (पथिक) चीनको जाता

है। वाणसे मूर्छित होता है। लोभको त्यागो। विद्या और धर्मको लुभाओ। अपने ही पदार्थांसे तृप्त होओ। जो परान्न और परधनसे तृप्त होते हैं वे पुरुषार्थहीन होते हैं। दुःख पाते हैं। सुखी कभी नहीं होते। वेदार्थको जानो। इस लोक और परलोकमें सुखी होओगे। यश और धर्मको चाहो। इत्यादि ॥

अथ तुदाद्यन्तर्गताः कुटादयः ॥

१४६—कुट = कुटिलपना, कौटिल्य, खोटाई ॥

कुटति * कुटेत् * कुटतु * अकुटत् * चुकोट चुकुटतुः चुकुटुः। चुकुटिथ चुकुटथुः चुकुट। चुकोट चुकुटिव चुकुटिम * कुट्यात् * कुटिता * कुटिष्यति * अकुटिष्यत् * अकुटीत् ॥

१४७—पुट = संश्लेषण, चिपटना, चिपटाना ॥

१४८—स्फुट = विकसन, फटना, खिलना ॥

१४९—स्फुर = संचलन, फुरकना, चलना ॥

१५०—स्फुल „ „ „

इन सबके रूप "कुट" के तुल्य जानो। परन्तु निर्, नि और वि से आगे इन धातुओं का सकार मूर्धन्य (ष) भी होता है। जैसे—निस्फलति। निष्फुलति। निस्फुरति, निष्फुरति। इत्यादि ॥

१५१—णू = स्तुति, प्रशंसा करना ॥

नुवति * नुवेत् * नुवतु * अनुवत् * नुनाव नुनुवतुः नुनुवुः। नुनविथ नुनुवथुः नुनुव। नुनाव, नुनव नुनुविव नुनुविम * नूयात् * नुविता * नुविष्यति * अनुविष्यत् * अनुवीत्।

(इति कुटादयः)

१५२—(टु) मस्जो = शुद्ध होना वा मांजना ॥

मज्जति * मज्जेत् * मज्जतु * अमज्जत् * ममज्ज ममज्जतुः ममज्जुः। ममज्जिथ ममज्जथुः ममज्ज। ममज्ज ममज्जिव ममज्जिम * मज्ज्यात् * मङ्क्ता * मङ्क्ष्यति * अमङ्क्ष्यत् * अमाङ्क्षीत् अमाङ्क्ताम् अमाङ्क्षुः। अमाङ्क्षीः अमाङ्क्तम् अमाङ्क्त। अमाङ्क्षम् अमाङ्क्ष्व अमाङ्क्ष्म ॥

१५३—रुजो = भङ्ग होना, टूटना, खराबी ॥

रुजति इत्यादि * रुरोज रुरुजतुः * रुज्यात् * रोक्ता * रोक्ष्यति * अरोक्ष्यत् * अरौक्षीत् अरौक्ताम् अरौक्षुः । अरौक्षीः अरौक्तम् अरौक्त । अरौक्षम् अरौक्ष्व अरौक्ष्म ॥

१५४–भुजो=कौटिल्य, खोटापन, कुटिलता ॥

भुजति इत्यादि "रुज" के तुल्य रूप जानो ॥

(भाषानुवाद करो)

कुटन्ति वेश्याः । पुटति घृतं शिरसा तैलं वा । स्फुटन्ति पुष्पाणि वसन्ते । स्फुरति रुधिरं नाडीषु । स्फुलन्ति मण्डूकाः सरस्सु । नुवत परमात्मानं सर्वदा स एको गुरुः सर्वस्य । उपास्यश्च स एव । निमज्जेत् प्रातः प्रातर्नित्यं जलाशयेषु । देहो रुजति पीडया । भुजति सर्पः । इत्यादि ॥

(संस्कृतानुवाद करो)

मूर्ख कुटिलता करते हैं । कज्जल वस्त्र पर लिपट जाता है । आम बौरते हैं । अङ्ग फरकते हैं । आंख फुरकती है । धर्मात्मा लोग परमात्मा की स्तुति करते हैं । प्रातःकाल नित्य जलाशयमें देह शुद्ध करे । शिर दुखता है । सर्प गंडलाते हैं । इत्यादि ॥

१५५–विश = प्रवेश, घुसना ॥

विशति * विशेत् * विशतु * अविशत् * विवेश विविशतुः विविशुः । विवेशिथ विविशथुः विविश । विवेश विविशिव विविशिम * विश्यात् * वेष्टा * वेक्ष्यति * अवेक्ष्यत् * अवेक्षीत् ॥

१५६–मृश = आमर्शन, छूना, स्पर्शकरना ॥

मृशति इत्यादि * ममर्श ममृशतुः * मृश्यात् * म्रष्टा, मर्ष्टा * म्रक्ष्यति, मर्क्ष्यति * अम्रक्ष्यत्, अमर्क्ष्यत् * अम्राक्षीत्, अमार्क्षीत् । अम्राष्टाम्, अमार्ष्टाम् । अम्राक्षुः, अमार्क्षुः इत्यादि अथवा–अमृक्षत् अमृक्षताम् अमृक्षन् । अमृक्षः इत्यादि ॥

१५७–षद् (ऌ) विशरण=बिखरना । गति–ज्ञान, गमन, प्राप्ति । दुःखी होना ॥

सीदति * सीदेत् * सीदतु * असीदत् * ससाद सेदतुः सेदुः । सेदिथ सेदथुः सेद । ससाद ससद सेदिव सेदिम * सद्यात् * सत्ता * सत्स्यति * असत्स्यत् * असदत् असदताम् ॥

१५८—शद् (ऌ) शातन, बिखरना, विशीर्णता ॥

यह धातु लट् लिङ् लोट् और लङ् में आत्मनेपदी है आगे परस्मैपदी॥ शीयते शीयेते शीयन्ते। शीयसे * शीयेत शीयेयाताम् * शीयताम् शीयेताम् शीयन्ताम् * अशीयत अशीयेताम् अशीयन्त। अशीयथाः * शशाद शेदतुः* शद्यात् * शत्ता * शत्स्यति * अशत्स्यत् * अशदत् ॥

१५९—कॄ = विक्षेप, बखेरना ॥

किरति * किरेत् * किरतु * अकिरत् * चकार चकरतुः चकरुः। चकरिथ चकरथुः चकर। चकार, चकर चकरिव चकरिम * कीर्यात् * करिता, करीता* करिष्यति, करीष्यति * अकरिष्यत्, अकरीष्यत् * अकारीत् अकारिष्टाम् ॥

"उप" उपसर्गसे परे कॄ धातु हो तो छेदन अर्थमें—उपस्किरति * उपस्किरेत् * उपस्किरतु * उपास्किरत् * तथा उपचस्कार इत्यादि सकारयुक्त प्रयोग होते हैं ॥

"उप" और "प्रति" उपसर्गसे परे भी कॄ धातुके रूप हिंसा अर्थमें—प्रतिस्किरति * प्रतिस्किरेत् * प्रतिस्किरतु * प्रत्यस्किरत् * प्रतिचस्कार इत्यादि प्रकारसे ही होते हैं ॥

१६०—गॄ = निगरण, निगलना ॥

गिरति, गिलति * गिरेत्, गिलेत् * गिरतु, गिलतु * अगिरत्, अगिलत् * जगार, जगाल। जगरतुः, जगलतुः। इत्यादि * गीर्यात्, गिल्यात् * गरिता, गरीता, गलिता, गलीता * गरिष्यति, गरीष्यति, गलिष्यति, गलीष्यति * अगरिष्यत्, अगलिष्यत्, अगरीष्यत्, अगलीष्यत् * अगारीत्, अगालीत् ॥

१६१—पृच्छ = पूंछना, ज्ञीप्सा, जानने की इच्छा ॥

पृच्छति * पृच्छेत् * पृच्छतु * अपृच्छत् * पप्रच्छ पप्रच्छतुः पप्रच्छुः। पप्रच्छिथ, पप्रष्ठ पप्रच्छथुः * पृच्छयात् * प्रष्टा * प्रक्ष्यति * अप्रक्ष्यत् * अप्राक्षीत् अप्राष्टाम् अप्राक्षुः। अप्राक्षीः ॥

(भाषानुवाद करो)

घृतं मृशति तदनु शुष्यति। अन्नं सीदति। अन्नं विना सीदति लोकोऽनावृष्टौ। शेदुः शिरांसि रणे वीराणाम्। किरति सर्षपम्=सरसोंको। उपस्किरति कण्टकं पादम्। उपस्किरति माणवकं व्याघ्रः। प्रतिचस्करुर्श्वानरा बालम्।

उरोविदारं (पेट फाड़कर) प्रतिचस्करे नखैः। आत्मनेपदप्रयोगोऽपि दृश्यते। गिरति नक्रो बालम्। माणवकं पन्थानं पृच्छति। पृच्छ धातुके दो कर्म होनेसे द्विकर्मक कहाता है॥

(संस्कृतानुवाद करो)

जलको छुओ। क्षेत्रमें बीज बखेरो। चित्तमें मत कुढ़ो। दुग्ध मत बखेरो। मित्रको मत मारो तुम साधु हो। बन्धन काटो। सिंह वन्य पशुओंको मारता है और खाता है, तथा मनुष्योंको भी। सर्प मण्डूकको निगलता है। गुरुसे धर्म पूछो। इत्यादि॥

इति परस्मैपदिनः॥ अथात्मनेपदिनः॥

१६२–मृ (ङ्) = प्राणत्याग, मरना॥

इस धातुके रूप भी प्रथम ४ लकारमें आत्मनेपदस्थ होते हैं आगे परस्मैपदस्थ। म्रियते * म्रियेत * म्रियताम् * अम्रियत * ममार मम्रतुः मम्रुः। ममर्थ * म्रियात् * मर्त्ता * मरिष्यति * अमरिष्यत् * लुङ्में भी आत्मनेपद होता है जैसे–अमृत अमृषाताम् अमृषत। अमृथाः अमृषाथाम् अमृध्वम्। अमृषि अमृष्वहि अमृष्महि॥

१६३–पृ (ङ्) = व्यायाम, व्यापार, काम करना॥

यह धातु विशेष करके व्या (ङ्) पूर्वक रहता है। जैसे–व्याप्रियते * व्याप्रियेत * व्याप्रियताम् * व्याप्रियत * व्यापप्रे व्यापप्राते व्यापप्रिरे * व्यापृषीष्ट * व्यापर्त्ता * व्यापरिष्यते * व्यापरिष्यत * व्यापृत व्यापृषाताम्॥

१६४–जुषी = प्रीति और सेवा करना॥

जुषते * जुषेत * जुषताम् * अजुषत * जुजुषे * जोषिषीष्ट * जोषिता* जोषिष्यते * अजोषिष्यत * अजोषिष्ट अजोषिषाताम् अजोषिषत। अजोषिष्ठाः अजोषिषाथाम् इत्यादि॥

१६५–(ओ) विजी = भय और चलना॥

प्रायः यह धातु "उत्" उपसर्गपूर्वक रहता है॥ उद्विजते * उद्विजेत * उद्विजताम् * उदविजत * उद्विविजे * उद्विजिषीष्ट * उद्विजिता * उद्विजिष्यते * उदविजिष्यत * उदविजिष्ट उदविजिषाताम् उदविजिषत। उदविजिष्ठाः उदविजिषाथाम् इत्यादि॥

(भाषानुवाद करो)

म्रियन्ते रोगिणः। व्याप्रियते वैश्यः। धर्मं जुषते। भार्य्यां जुषते। उद्विजते हृदयं दुरात्मनः। इत्यादि ॥

(संस्कृतानुवाद करो)

निर्धन अन्न विना मरते हैं। धनी रोगोंसे मरते हैं। मैं दिन और रात्रिमें भी काम करता हूं। तुम सत्यको सेवन करो और मैं भी सेवन करूं। मेरा हृदय पापसे डरता है इत्यादि ॥

इति तुदादिगणप्रकरणम् ॥

—÷×※×÷—

अथ तिङन्ते रुधादिगणप्रकरणम् ॥

तत्रोभयपदिनः ॥

१६६–रुधिर् = आवरण, छादन, रोकना, ढकना ॥

लट्–रुणद्धि रुन्द्धः रुन्धन्ति। रुणत्सि रुन्द्धः रुन्द्ध। रुणध्मि रुन्ध्वः रुन्ध्मः ॥ रुन्द्धे रुन्धाते रुन्धते। रुन्त्से रुन्धाथे रुन्द्ध्वे। रुन्धे रुन्ध्वहे रुन्ध्महे * लिङ्–रुन्ध्यात् ॥ रुन्धीत * लोट्–रुणद्धु, रुन्द्धात्। रुन्द्धाम्। रुन्धन्तु। रुन्धि, रुन्द्धात्। रुन्द्धम्। रुन्द्ध। रुणधानि रुणधाव रुणधाम ॥ रुन्द्धाम् रुन्धाताम् रुन्धताम्। रुन्त्स्व रुन्धाथाम् रुन्द्ध्वम्। रुणधै रुणधावहै रुणधामहै * लङ्–अरुणत् अरुन्द्धाम् अरुन्धन्। अरुणत्, अरुणः अरुन्द्धम् अरुन्द्ध। अरुणधम् अरुन्ध्व अरुन्ध्म ॥ अरुन्द्ध अरुन्धाताम् अरुन्धत। अरुन्द्धाः अरुन्धाथाम् अरुन्द्ध्वम्। अरुन्धि अरुन्ध्वहि अरुन्ध्महि * लिट्–रुरोध रुरुधतुः रुरुधुः। रुरोधिथ, रुरोद्ध रुरुधथुः रुरुध। रुरोध रुरुधिव रुरुधिम ॥ रुरुधे रुरुधाते रुरुधिरे इत्यादि * आशीर्लिङ्–रुध्यात् ॥ रुत्सीष्ट * लुट्–रोद्धा ॥ रोद्धा * लृट्–रोत्स्यति ॥ रोत्स्यते * लृङ्–अरोत्स्यत् ॥ अरोत्स्यत * लुङ्–अरौत्सीत् अरौद्धाम् अरौत्सुः। अरौत्सीः अरौद्धम् अरौद्ध। अरौत्सम् अरौत्स्व अरौत्स्म ॥ अथवा–अरुधत् अरुधताम् अरुधन्। अरुधः इत्यादि ॥ अरुद्ध अरुत्साताम् अरुत्सत इत्यादि ॥

१६७–भिदिर् = विदारण, फाड़ना, चीरना ॥

भिनत्ति भिन्तः भिन्दन्ति। भिनत्सि इत्यादि ॥ भिन्ते भिन्दाते भिन्दते। भिन्त्से भिन्दाथे भिन्द्ध्वे। भिन्दे भिन्द्वहे भिन्द्महे * भिन्द्यात् ॥ भिन्दीत * भिनत्तु, भिन्तात्। भिन्ताम्। भिन्दन्तु। भिन्धि, भिन्तात्। भिन्तम्। भिन्त। भिनदानि भिनदाव भिनदाम ॥ भिन्ताम् भिन्दाताम् भिन्दताम्। भिन्त्स्व भिन्दाथाम् भिन्द्ध्वम्। भिनदै भिनदावहै भिनदामहै * अभिनत् अभिन्ताम् अभिन्दन्। अभिनः, अभिनत् अभिन्तम् अभिन्त। अभिनदम् अभिन्द्व अभिन्द्म ॥ अभिन्त अभिन्दाताम् अभिन्दत इत्यादि * बिभेद बिभिदतुः बिभिदुः। बिभेदिथ बिभिदथुः इत्यादि ॥ बिभिदे बिभिदाते बिभिदिरे। बिभिदिषे इत्यादि * भिद्यात् ॥ भित्सीष्ट * भेत्ता ॥ भेत्ता * भेत्स्यति ॥ भेत्स्यते * अभेत्स्यत् ॥ अभेत्स्यत * अभैत्सीत् अभैत्ताम् अभैत्सुः। अभैत्सीः अथवा–अभिदत् इत्यादि ॥ अभित्त अभित्साताम् ॥

१६८–छिदिर् = द्वैधीकरण, छेदन, फोड़ना ॥

छिनत्ति ॥ छिन्ते * छिन्द्यात् ॥ छिन्दीत * छिनत्तु ॥ छिन्ताम् * अच्छिनत् ॥ अच्छिन्त * चिच्छेद ॥ चिच्छिदे * छिद्यात् ॥ छित्सीष्ट * छेत्ता ॥ छेत्ता * छेत्स्यति ॥ छेत्स्यते * अच्छेत्स्यत् ॥ अच्छेत्स्यत * अच्छैत्सीत् अथवा–अच्छिदत् ॥ अच्छित्त अच्छित्साताम् ॥

१६९–युजिर् = योग, जुड़ना ॥

युनक्ति ॥ युङ्क्ते * युञ्ज्यात् ॥ युञ्जीत * युनक्तु ॥ युङ्क्ताम् इत्यादि ॥

१७०–रिचिर् = विरेचन, दस्तआना, खालीकरना ॥

रिणक्ति ॥ रिङ्क्ते * रिञ्च्यात् ॥ रिञ्चीत * रिरेच ॥ रिरिचे इत्यादि ॥

१७१–विचिर् = पृथग्भाव, पृथक् होना ॥

विनक्ति ॥ विङ्क्ते * विञ्च्यात् ॥ विञ्चीत * विनक्तु ॥ विङ्क्ताम् * विवेच इत्यादि ॥

१७२–क्षुदिर् = संपेषण, पसिना, चूरा करना ॥

क्षुनत्ति ॥ क्षुन्ते * क्षुन्द्यात् ॥ क्षुन्दीत * क्षुनत्तु ॥ क्षुन्ताम् * चुक्षोद इत्यादि ॥

१७३–उच्छृदिर् = दीप्ति और देवन = प्रकाश, चमकना और खेलना ॥

उत् उपसर्ग पूर्वक छृद् धातु है। उच्छृणत्ति ॥ उच्छृन्ते * उच्छृन्द्यात् ॥ उच्छृन्दीत * उच्छृणत्तु ॥ उच्छृन्ताम् * उदच्छृणत् ॥ उदच्छृन्त * उच्चच्छर्द ॥ उच्चच्छृदे * उच्छृद्यात् ॥ उच्छर्दिषीष्ट * उच्छर्दिता * उच्छर्दिष्यति वा—उच्छर्त्स्यति * उदच्छर्दिष्यत् वा—उदच्छर्त्स्यत् * उदच्छृदत्, उदच्छर्दीत् ॥

(भाषानुवाद करो)

मार्गं रुरुधिरे दुष्टाः। वाचं रुणद्धि कुशलः। भिनत्ति जलं कमलम्। बिभिदे भित्तिं चौरः। छिनत्ति पापबन्धनम्। युनक्ति चित्तमीश्वरे। रिणक्ति स्थानं गृही। विनक्ति यती गृहात्। क्षुनत्ति मृदम्। उच्छृणत्ति सूर्यः बालो वा। तृणत्ति व्याघ्रः इत्यादि ॥

(संस्कृतानुवाद करो)

छिद्रको रोको। मोहजालको तोड़ो। रज्जु (रस्सी) काटो। मकान खाली करो। घरसे पृथक् होता है। तड़ागको खोदता है। तारा चमकती हैं। बालक खेलते हैं। इत्यादि ॥

१७४–(उत) तृदिर् = हिंसा और अनादर ॥

तृणत्ति ॥ तृन्ते * तृन्द्यात् ॥ तृन्दीत * तृणत्तु ॥ तृन्ताम् * अतृणत्। अतृन्त * ततर्द ॥ ततृदे * तृद्यात् ॥ तर्दिषीष्ट * तर्दिता * तर्दिष्यति * अतर्दिष्यत् * अतृदत् अतर्दीत् ॥ अतर्दिष्ट ॥

इत्युभयपदिनः ॥

अथ परस्मैपदिनः ॥

१७५–कृती = वेष्टन, लपेटना ॥

कृणत्ति इत्यादि * चकर्त्त * कृत्यात् * कर्त्तिता * कर्त्तिष्यति * अकर्त्तिष्यत् * अकर्त्तीत् ॥

१७६।१७७–तृह, हिसि = हिंसा, मारना, वध ॥

तृणेढि तृण्ढः तृंहन्ति। तृणेक्षि तृण्ढः तृण्ढ। तृणेह्मि तृंह्वः तृंह्मः ॥ तृंह्यात् * तृणेढु, तृण्ढात्। तृण्ढाम्। तृंहन्तु। तृण्ढि, तृण्ढात्। तृण्ढम्। तृण्ढ। तृणहानि तृणहाव तृणहाम ॥ अतृणेट् अतृण्ढाम् अतृंहन्। अतृणेट् अतृण्ढम् अतृण्ढ। अतृणहम् अतृंह्व अतृंह्म * ततर्ह * तृह्यात् * तर्हिता * तर्हि-

ष्यति * अतहिंष्यत् * अतहीत् ॥ हिनस्ति * हिंस्यात् * हिनस्तु * अहिनत् * जिहिंस * हिंस्यात् * हिंसिता * हिंसिष्यति * अहिंसिष्यत् * अहिंसीत् ॥

१७८–उन्दी = क्लेदन, भिगोना, गीला करना ॥

उनत्ति उन्तः उदन्ति । उनत्सि * उन्द्यात् * उनत्तु * औनत् औन्ताम् औन्दन् । औनः औन्तम् औन्त । औनदम् औन्द्व औन्द्म * उन्दाञ्चकार इत्यादि वा उन्दामास इत्यादि वा उन्दाम्बभूव इत्यादि * उद्यात् * उन्दिता * उन्दिष्यति * औन्दिष्यत् * औन्दीत् ॥

१७९–अञ्जू = प्रकट होना, चिकनाना, इच्छा, गति ॥

अनक्ति अङ्क्तः अञ्जन्ति * अञ्ज्यात् * अनक्तु, अङ्क्तात् । अङ्क्ताम् । अञ्जन्तु । अङ्ग्धि, अङ्क्तात् । अङ्क्तम् । अङ्क्त । अनजानि * आनक् आङ्क्ताम् आञ्जन् । आनक् आङ्क्तम् आङ्क्त । आनजम् आञ्ज्व आञ्ज्म * आनञ्ज आनञ्जतुः आनञ्जुः । आनञ्जिथ, आनङ्क्थ इत्यादि * अज्यात् * अञ्जिता, अङ्क्ता * अञ्जिष्यति, अङ्क्षयति * आञ्जिष्यत् , आङ्क्षयत् * आञ्जीत् आञ्जिष्टाम् आञ्जिषुः ॥

१८०–तञ्चू = सङ्कोचन, सकोड़ना ॥

तनक्ति * तञ्च्यात् * तनक्तु * अतनक् * ततञ्च * तच्यात् * तञ्चिता, तङ्क्ता * तञ्चिष्यति, तंक्षयति * अतञ्चिष्यत् , अतङ्क्षयत् * अतञ्चीत् , अताङ्क्षीत् ॥

१८१–(ओ) विजी = भय और कांपना ॥

विनक्ति विङ्क्तः विञ्जन्ति * विञ्ज्यात् * विनक्तु * अविनक् * विवेज * विविजतुः विविजुः । विविजिथ इत्यादि * विज्यात् * विजिता * विजिष्यति * अविजिष्यत् * अविजीत् अविजिष्टाम् ॥

१८२–शिष् (लृ) विशेषण, विशेष, बचना ॥

शिनष्टि शिंष्टः शिंषन्ति * शिंष्यात् * शिनष्टु, शिंष्टात् । शिंष्टाम् । शिंषन्तु । शिण्ढि, शिंष्टात् । शिंष्टम् । शिंष्ट । शिनषाणि * अशिनट् अशिंष्टाम् अशिंषन् * शिशेष * शिष्यात् * शेष्टा * शेक्ष्यति * अशेक्ष्यत् * अशिषत् ॥ इसी प्रकार :–

१८३–पिष् (लृ) = सञ्चूर्णन, पीसना ॥

१८४–भञ्जो = आमर्दन, भङ्गकरना, तोड़ फोड़ ॥

भनक्ति भङ्क्तः भञ्जन्ति । भनक्षि * भङ्ग्यात् * भनक्तु * अभनक् * बभञ्ज । बभञ्जिथ, बभङ्क्थ * भज्यात् * भङ्क्ता * भङ्क्ष्यति * अभङ्क्ष्यत् * अभाङ्क्षीत् अभाङ्क्ताम् अभाङ्क्षुः । अभाङ्क्षीः ॥

(भाषानुवाद करो)

कृणत्ति पुस्तकं छात्रः । तृणेढि बालं व्याघ्रः । हिनस्ति मृगान् व्याधः । उनत्ति वस्त्राणि । अनक्ति सौन्दर्यम् । अञ्जन्ति पयसा शिरः । अनक्तु विद्याम् । तनक्ति कारं लुब्धः । विनक्ति रोगभीत्या लोकः । विञ्जन्ति वातेन वृक्षाः । शिनष्टि शिष्यं गुरुः । पिनष्टि गोधूमान् वराकी (बेचारी) । बभञ्ज रामोधनुर्जनकपुरे शिवस्य । इत्यादि ॥

(संस्कृतानुवाद करो)

वस्त्रोंको बांधो । शत्रुको मारो । कपड़ा भिगोओ । स्वरूप मत दिखाओ । शिरको तैलसे चिकनाओ । धन और कीर्त्तिको चाहो । ग्रामको चलो । रस्सी सकोड़ो । मत डरो । मत काम्पो । अपनेको विद्यासे विशेषकरो । बुढिया चक्की पीसती है । लकड़ी तोड़ो । इत्यादि ॥

इति परस्मैपदिनः ॥

अथात्मनेपदिनः ॥

१८५–भुज = पालन और अभ्यवहार = भोजन ॥

यह धातु पालन अर्थमें परस्मैपदी है जैसेः– भुनक्ति * भुञ्ज्यात् * भुनक्तु * अभुनक् * बुभोज * भुज्यात् * भोक्ता * भोक्ष्यति * अभोक्ष्यत् * अभौक्षीत् अभौक्ताम् इत्यादि ॥ और पालन अर्थको छोड़ भोजन अर्थमें, वा–धातुओंके अनेकार्थ होनेसे अन्य किसी अर्थमें आत्मनेपदी रहता है जैसेः– भुङ्क्ते * भुञ्जीत * भुङ्क्ताम् * अभुङ्क्त ** बुभुजे * भुक्षीष्ट * भोक्ता * भोक्ष्यते * अभोक्ष्यत * अभुक्त अभुक्षाताम् अभुक्षत इत्यादि ॥

१८६–(ञि) इन्धी = दीप्ति,चमकना, प्रज्वलित होना ॥

इन्द्धे * इन्धीत * इन्द्धाम् * ऐन्द्ध * इन्धाञ्चक्रे इन्धाञ्चक्राते * इध्यात् * इन्धिता * इन्धिष्यते * ऐन्धिष्यत * ऐन्धिष्ट ॥

१८७–विद = विचारना ॥

विन्ते * विन्दीत * विन्ताम् * अविन्त * विविदे * वित्सीष्ट * वेत्ता* वेत्स्यते * अवेत्स्यत * अवित्त अवित्साताम् ॥

(भाषानुवाद करो)

महीं भुनक्ति भूपालः । ओदनं भुङ्क्ते बालः । इन्धेत वेद्यां समिधः । विन्ते वेदान् श्रोत्रियः इत्यादि ॥

(संस्कृतानुवाद करो)

गृहस्थो ! कुटुम्बको पालो । धर्मार्जित अन्न खाओ । इन्धन जलता है । सत्याऽसत्योंको विचारो । इत्यादि ॥

इति रुधादिगणप्रकरणम् ॥

—÷×*×÷—

अथ तिङन्ते तनादिगणप्रकरणम् ॥

तत्रोभयपादिनः ॥

१८८—तनु = विस्तार, फैलाना ॥

तनोति तनुतः तन्वन्ति । तनोषि तनुथः तनुथ । तनोमि तन्वः, तनुवः तन्मः, तनुमः ॥ तनुते तन्वाते तन्वते । तनुषे तन्वाथे तनुध्वे । तन्वे तनुवहे, तन्वहे तनुमहे, तन्महे * तनुयात् ॥ तन्वीत तन्वीयाताम् तन्वीरन् । तन्वीथाः * तनोतु, तनुतात् । तनुताम् । तन्वन्तु । तनु, तनुतात् । तनुतम् । तनुत । तनवानि तनवाव तनवाम ॥ तनुताम् तन्वाताम् तन्वताम् । तनुष्व * अतनोत् अतनुताम् अतन्वन् । अतनोः अतनुतम् अतनुत । अतनवम् अतन्व, अतनुव अतन्म, अतनुम ॥ अतनुत अतन्वाताम् अतन्वत । अतनुथाः अतन्वाथाम् अतनुध्वम् । अतन्वि अतनवहि, अतन्वहि अतनुमहि, अतन्महि * ततान तेनतुः तेनुः । तेनिथ, ततन्थ तेनथुः तेन । ततान, ततन तेनिव तेनिम ॥ तेने तेनाते * तन्यात् ॥ तनिषीष्ट * तनिता ॥ तनिता * तनिष्यति ॥ तनिष्यते * अतनिष्यत् ॥ अतनिष्यत * अतानीत्, अतनीत् ॥ अतत, अतनिष्ट अतनिषाताम् अतनिषत । अतथाः, अतनिष्ठाः अतनिषाथाम् अतनिध्वम् । अतनिषि अतनिष्वहि अतनिष्महि ॥

१८९—षणु = दान, देना ॥

सनोति ॥ सनुते * सनुयात् ॥ सन्वीत * सनोतु ॥ सनुताम् * असनोत् ॥ असनुत * ससान ॥ सेने * सन्यात्, सायात् ॥ सनिषीष्ट * सनिता ॥ सनिता * सनिष्यति ॥ सनिष्यते * असनिष्यत् ॥ असनिष्यत * असानीत्, असनीत् ॥ असात, असनिष्ट । असनिषाताम् । असनिषत । असाथाः, असनिष्ठाः । असनिषाथाम् इत्यादि ॥

१९०—क्षणु = हिंसा ॥

क्षणोति इत्यादि * लिट्—चक्षाण चक्षणतुः चक्षणुः । चक्षणिथ, चक्षन्थ ॥ चक्षणे चक्षणाते * क्षणयात् ॥ क्षणिषीष्ट * क्षणिता ॥ क्षणिता * क्षणिष्यति॥ क्षणिष्यते * अक्षणिष्यत् ॥ अक्षणिष्यत * अक्षणीत् अक्षणिष्टाम् ॥ अक्षत, अक्षणिष्ट इत्यादि ॥

१९१—क्षिणु = हिंसा ॥

क्षिणोति इत्यादि किन्हींके मतमें क्षेणोति इत्यादि * चिक्षेण चिक्षिणतुः ॥ चिक्षिणे * क्षिणयात् ॥ क्षेणिता ॥ क्षेणिता * क्षेणिष्यति ॥ क्षेणिष्यते * अक्षेणिष्यत् ॥ अक्षेणिष्यत * अक्षेणीत् ॥ अक्षित, अक्षेणिष्ट अक्षेणिषाताम् अक्षेणिषत । अक्षिथाः, अक्षेणिष्ठाः इत्यादि ॥

१९२—तृणु = अदन, चरना, खाना ॥

तृणोति वा तर्णोति इत्यादि * ततर्ण ततृणतुः ॥ ततृणे * तृणयात् ॥ तर्णिषीष्ट * तर्णिता ॥ तर्णिता * तर्णिष्यति ॥ तर्णिष्यते * अतर्णिष्यत् ॥ अतर्णिष्यत * अतर्णीत् ॥ अतृत, अतर्णिष्ट । अतृथाः अतर्णिष्ठाः ॥

१९३—(डु) कृ(ञ्) = करण, करना, बनाना ॥

करोति कुरुतः कुर्वन्ति । करोषि कुरुथः कुरुथ । करोमि कुर्वः कुर्मः ॥ कुरुते कुर्वाते कुर्वते । कुरुषे कुर्वाथे कुरुध्वे । कुर्वे कुर्वहे कुर्महे * कुर्यात् ॥ कुर्वीत* करोतु, कुरुतात् कुरुताम् कुर्वन्तु । कुरु, कुरुतात् कुरुतम् कुरुत । करवाणि करवाव करवाम ॥ कुरुताम् कुर्वाताम् कुर्वताम् । कुरुष्व कुर्वाथाम् कुरुध्वम् । करवै करवावहै करवामहै * अकरोत् अकुरुताम् अकुर्वन् । अकरोः अकुरुतम् अकुरुत । अकरवम् अकुर्व अकुर्म ॥ अकुरुत अकुर्वाताम् अकुर्वत । अकुरुथाः अकुर्वाथाम् अकुरुध्वम् । अकुर्वि अकुर्वहि अकुर्महि * चकार चक्रतुः चक्रुः ।

स्कर्ष ॥ चक्रे चक्राते चक्रिरे * क्रियात् ॥ कृषीष्ट * कर्त्ता ॥ कर्त्ता * करिष्यति ॥ करिष्यते * अकरिष्यत् ॥ अकरिष्यत * अकार्षीत् अकार्ष्टाम् अकार्षुः। अकार्षीः अकार्ष्टम् अकार्ष्ट । अकार्षम् अकार्ष्व अकार्ष्म ॥ अकृत अकृषाताम् अकृषत । अकृथाः अकृषाथाम् इत्यादि ॥

सम् और परि उपसर्गसे परे "कृ" धातुको सुट् (स्) आगम होता है भूषण और समवाय अर्थमें जैसेः—

सम्+करोति=संस्करोति । परिष्करोति ॥

उप उपसर्गसे परे भी कृ धातुको सुट् आगम होता है प्रतियत्न, वैकृत, वाक्याध्याहार, भूषण और समवाय अर्थोंमें । जैसेः—प्रतियत्नमें—उदकस्योपस्कुरुते=जलको गुणयुक्त करता है, अपगुण दूर करके गुणाधान करता है। वैकृतमें—उपस्करोति अन्नम्=अन्नको विकृत करता है। उपस्कृतं ब्रूते=वाक्यों के अध्याहारपूर्वक उच्चारण करता है। उपस्कृता कन्या= भूषिता इत्यर्थः। उपस्कृता ब्राह्मणाः=ब्राह्मण इकट्ठे हैं ॥

(भाषानुवाद करो)

तनोति वस्त्रं तन्तुवायः । सनोति दक्षिणां यजमानः । क्षणोति, क्षिणोति, क्षेणोति वा माणवकं व्याघ्रः । तृणवन्ति वने गावः । कुरुते घटं कुलालः ॥

(संस्कृतानुवाद करो)

कपड़ा बुनो । ऋण दो । दुर्बलको मत मारो । गाय चरती है । इत्यादि ॥

इत्युभयपदप्रकरणम् ॥

अथात्मनेपदप्रकरणम् ॥

१९४—वनु = याचन, मांगना ॥

वनुते इत्यादि १८८ के तुल्य * ववने ववनाते * वनिषीष्ट * वनिता * वनिष्यते * अवनिष्यत * अवत, अवनिष्ट अवनिषाताम् अवनिषत । अवथाः, अवनिष्ठाः इत्यादि ॥

१९५—मनु = अवबोधन, समझना, मानना ॥

मनुते इत्यादि * मेने मेनाते मेनिरे * मनिषीष्ट इत्यादि वनु १९४ के तुल्य है॥

(भाषानुवाद करो)

वनुते विद्यार्थी । आत्मानं पण्डितं मनुते । इत्यादि ॥

(संस्कृतानुवाद करो)

भिक्षा मत मांगो । अर्थ समझो इत्यादि ॥

इति तनादिगणप्रकरणम् ॥

अथ तिङन्ते क्र्यादिगणप्रकरणम् ॥

—÷×*×÷—

१९६–(डु) क्री (ञ्) = द्रव्यविनिमय, खरीदना ॥

क्रीणाति क्रीणीतः क्रीणन्ति । क्रीणासि क्रीणीथः क्रीणीथ । क्रीणामि क्रीणीवः क्रीणीमः ॥ क्रीणीते क्रीणाते क्रीणते । क्रीणीषे क्रीणाथे क्रीणीध्वे । क्रीणे क्रीणीवहे क्रीणीमहे * क्रीणीयात् ॥ क्रीणीत इत्यादि * क्रीणातु, क्रीणीतात् क्रीणीताम् क्रीणन्तु । क्रीणीहि, क्रीणीतात् क्रीणीतम् क्रीणीत । क्रीणानि क्रीणाव क्रीणाम ॥ क्रीणीताम् क्रीणाताम् । क्रीणताम् । क्रीणीष्व क्रीणाथाम् क्रीणीध्वम् । क्रीणै क्रीणावहै क्रीणामहै * अक्रीणात् अक्रीणीताम् अक्रीणन् । अक्रीणाः अक्रीणीतम् अक्रीणीत । अक्रीणाम् अक्रीणीव अक्रीणीम ॥ अक्रीणीत अक्रीणाताम् अक्रीणत । अक्रीणीथाः अक्रीणाथाम् अक्रीणीध्वम् । अक्रीणि अक्रीणीवहि अक्रीणीमहि * चिक्राय चिक्रियतुः चिक्रियुः । चिक्रेथ चिक्रियथुः चिक्रिय । चिक्राय, चिक्रय चिक्रियिव चिक्रियिम ॥ चिक्रिये चिक्रियाते चिक्रियिरे । चिक्रियिषे चिक्रियाथे चिक्रियिध्वे । चिक्रिये चिक्रियिवहे चिक्रियिमहे * क्रीयात् ॥ क्रेषीष्ट * क्रेता ॥ क्रेता * क्रेष्यति ॥ क्रेष्यते * अक्रेष्यत् ॥ अक्रेष्यत * अक्रैषीत् ॥ अक्रेष्ट अक्रेषाताम् इत्यादि ॥

१९७–प्री (ञ्) = तर्पण, तृप्त करना, प्रीति और इच्छा ॥

प्रीणाति ॥ प्रीणीते * प्रीणीयात् ॥ प्रीणीत * प्रीणातु ॥ प्रीणीताम् * अप्रीणात् ॥ अप्रीणीत * पिप्राय ॥ पिप्रिये * प्रीयात् इत्यादि " क्री " के तुल्य ॥ इसी प्रकारः–

१९८–श्री (ञ्) = पाके, पकना ॥

१९९–मी (ञ्) = हिंसा ॥

इस धातुके प्रयोगोंमें न को ण होजाता है जब कि प्रादि उपसर्गस्थ रेफादि निमित्त से परे हो । जैसेः–प्रमीणाति । परिमीणाति इत्यादि * लिट्– ममौ मिम्यतुः मिम्युः । ममिथ, ममाथ मिम्यथुः मिम्य । ममौ मिम्यिव

सिम्यिस ॥ मिम्ये सिम्याते * मीयात् ॥ मासीष्ट * माता ॥ माता * मास्यति ॥ मास्यते * अमास्यत् ॥ अमास्यत * अमासीत् ॥ अमास्त अमासाताम् ॥

२००–षि (त्र्) = बन्धन, बांधना ॥

सिनाति ॥ सिनीते * सिनीयात् ॥ सिनीत * सिनातु ॥ सिनीताम् * असिनात् ॥ असिनीत * सिषाय सिष्यतुः सिष्युः । सिषेथ ॥ सिष्ये सिष्याते * सीयात् ॥ सेषीष्ट * सेता ॥ सेता * सेष्यति ॥ सेष्यते * असेष्यत् ॥ असेष्यत * असैषीत् असैष्टाम् ॥ असेष्ट असेषाताम् ॥

२०१–स्कु (त्र्) = आप्लवन, कूदना, उछलना ॥

स्कुनाति ॥ स्कुनीते * स्कुनीयात् ॥ स्कुनीत * स्कुनातु ॥ स्कुनीताम् * अस्कुनात् ॥ अस्कुनीत * अथवा–स्कुनोति स्कुनुतः स्कुन्वन्ति इत्यादि स्वादिगणके तुल्य ॥ लिट्–चुस्काव चुस्कुवतुः इत्यादि * स्कूयात् ॥ स्कोषीष्ट * स्कोता इत्यादि ॥

२०२।२०३।२०४।२०५–स्तन्भ, स्तुन्भ, स्कन्भ, स्कुन्भ=रोकना ॥

ये ४ धातु परस्मैपदी सौत्र हैं । जैसेः– स्तभ्नाति स्तभ्नीतः * स्तभ्नीयात् * स्तभ्नातु, स्तभ्नीतात् स्तभ्नीताम् स्तभ्नन्तु । स्तभान, स्तभ्नीतात् स्तभ्नीतम् इत्यादि * अस्तभ्नात् * तस्तम्भ तस्तभतुः तस्तभुः । तस्तम्भिथ तस्तभथुः तस्तभ । तस्तम्भ तस्तभिव तस्तभिम * स्तभ्यात् * स्तम्भिता * स्तम्भिष्यति * अस्तम्भिष्यत् * अस्तभत् अस्तभताम् वा अस्तम्भीत् अस्तम्भिष्टाम् इत्यादि ॥ इसीप्रकार स्तुभ्नाति इत्यादि * तुष्टुम्भ तुष्टुभतुः तुष्टुभुः * इत्यादि ॥ तथा–स्कभ्नाति इत्यादि * चस्कम्भ चस्कभतुः इत्यादि ॥ स्कुभ्नाति इत्यादि * चुस्कुम्भ चस्कुभतुः इत्यादि ॥

२०६–यु (त्र्) = बन्धन, बांधना ॥

युनाति ॥ युनीते * युनीयात् ॥ युनीत युनीयाताम् * युनातु ॥ युनीताम् * अयुनात् ॥ अयुनीत * युयाव युयुवतुः युयुवुः । युयोथ, युयविथ युयुवथुः युयुव । युयाव, युयव युयुविव युयुविम ॥ युयुवे युयुवाते इत्यादि * यूयात् ॥ योषीष्ट * योता इत्यादि * अयौषीत् अयौष्टाम् अयौषुः । अयौषीः इत्यादि ॥ अयोष्ट अयोषाताम् ॥

२०७–क्नू (त्र्) = शब्द, बोलना, कूं कूं करना ॥

क्नूनोति इत्यादि * चुक्नाव चुक्नुवतुः चक्नुवुः। चुक्नविथ ॥ चुक्नुवे चुक्नुवाते * क्नूयात् ॥ क्नविषीष्ट * क्नविता इत्यादि * अक्नावीत् अक्नाविष्टाम्॥ अक्नविष्ट ॥

२०८—दॄ (ञ) = हिंसा ॥

दृणाति इत्यादि * ददार ददरतुः ॥ ददरे ददराते * दीर्यात् ॥ दरिषीष्ट * दरिता, दरीता इत्यादि * अदारीत् ॥ अदरिष्ट ॥

२०९—द्रू (ञ) = हिंसा ॥

द्रूणाति इत्यादि * दुद्राव दुद्रुवतुः ॥ दुद्रुवे * द्रूयात् ॥ द्रविषीष्ट * द्रविता इत्यादि * अद्रावीत्, अद्रवीत्॥ अद्रविष्ट ॥

२१०—पू (ञ) पवन, शोधन, शुद्ध करना ॥

पुनाति इत्यादि * पुपाव पुपुवतुः ॥ पुपुवे * पूयात् ॥ पविषीष्ट * पविता इत्यादि ॥

२११—स्तॄ (ञ) = आच्छादन, ढकना ॥

स्तृणाति इत्यादि * तस्तार तस्तरतुः ॥ तस्तरे * स्तीर्यात् ॥ स्तीर्षीष्ट स्तरिता, स्तरीता इत्यादि * अस्तारीत् ॥ अस्तरिष्ट अस्तरिषाताम् इत्यादि वा अस्तीर्ष्ट अस्तीर्षाताम् अस्तीर्षत इत्यादि ॥

२१२—कॄ (ञ) हिंसा ॥

कृणाति इत्यादि * चकार चकरतुः ॥ चकरे * आगे "दॄ" २०८ के तुल्य है ॥ इसी प्रकारः—

२१३—वॄ (ञ) वरण, स्वीकार ॥

वृणाति इत्यादि * ववार ववरतुः इत्यादि ॥ ववरे ववराते * वूर्यात् ॥ वरिषीष्ट, वूर्षीष्ट * वरिता, वरीता ॥ वरिता, वरीता * वरिष्यति, वरीष्यति इत्यादि * लुङ्—अवारीत् अवारिष्टाम् अवारिषुः ॥ अवरिष्ट अवरिषाताम् वा—अवरीष्ट अवरीषाताम् वा अवूर्ष्ट अवूर्षाताम् इत्यादि ॥

२१४—धू (ञ) = कम्पन, काम्पना, हिलना ॥

धुनाति ॥ धुनीते * धुनीयात् ॥ धुनीत * धुनातु ॥ धुनीताम् * अधुनात् ॥ अधुनीत * दुधाव दुधुवतुः ॥ दुधुवे * धूयात् ॥ धविषीष्ट, धोषीष्ट * धविता, धोता * धोष्यति, धविष्यति * अधविष्यत्, अधोष्यत * अधावीत् अधाविष्टाम् ॥ अधविष्ट, अधोष्ट ॥

२१५–ग्रह = उपादान, लेना, ग्रहण करना, पकड़ना ॥

गृह्णाति ॥ गृह्णीते * गृह्णीयात् ॥ गृह्णीत * गृह्णातु, गृह्णीतात् गृह्णीताम् गृह्णन्तु । गृहाण, गृह्णीतात् गृह्णीतम् इत्यादि * अगृह्णात् ॥ अगृह्णीत * जग्राह जगृहतुः जगृहुः ॥ जगृहे जगृहाते * गृह्यात् ॥ ग्रहीषीष्ट * ग्रहीता * ग्रहीष्यति * अग्रहीष्यत् * अग्रहीत् अग्रहीष्टाम् ॥ अग्रहीष्ट अग्रहीषाताम् अग्रहीषत । अग्रहीष्ठाः इत्यादि ॥

(भाषानुवाद करो)

अन्नं क्रीणाति । फलानि विक्रीणीते । पितरौ प्रीणीतो बालम् । ओदनं श्रीणाति । मीनाति बको मीनान् । सिनाति रत्नकश्चौरम् । स्कुनोति स्कुनाति वा मण्डूकस्तडागे । स्तभ्नाति खड्गम् । स्तुभ्नाति शत्रुहस्तं धीरः । स्कभ्नाति हस्तिनमङ्कुशेन । स्कुभ्नाति गा दण्डेन । युनाति पशून् । क्नूनन्ति श्वशावकाः (कुतियाके पिल्ले) । दृणाति सिंहोऽजम् । दॄणाति व्याघ्रो गाम् । पुनाति यज्ञधूमो गृहाणि सताम् । स्तृणन्ति यज्ञे कुशान् ऋत्विजः । कृणन्ति शूराः संग्रामे । वृणाति कन्या युवानं पतिम् । धुनाति वृक्षान् वायुस्तीव्रः । गृह्णाति दक्षिणामाचार्यः । इत्यादि ॥

(संस्कृतानुवाद करो)

गोधूम ख़रीदो । सरसों बेचो । आचार्य्यको प्रसन्न करो । सूप (दाल) और भात पकाओ । मछली मत मारो । अन्य अदुष्ट प्राणियोंको भी मत मारो । दुष्टोंको मारो । भोजनार्थ अन्न बांधो । गर्वसे मत उछलो । खड्गप्रहारको रोको । शत्रुको हटाओ । घोड़ेको थांभो । कूं कूं क्यों करते हो । शत्रुका वक्षःस्थल फाड़ो । जल और वायु तथा गृहको शुद्ध करो । जलपात्र और घृतपात्रको ढको । शिर ढको ॥ विना अपराध किसीको मत मारो । आचार्यका वरण करो । पांव मत हिलाओ । मज़बूत पकड़ो । इत्यादि ॥

इत्युभयपदप्रकरणम् ॥

अथ परस्मैपदप्रकरणम् ॥

२१६–कुष = निष्कर्ष, निकालना, दबाना, निचोड़ना ॥

कुष्णाति इत्यादि * लोट्–मध्यमपुरुषैकवचन–कुषाण * लिट्–चुकोष चुकुषतुः ॥ चुकुषे * कुष्यात् ॥ कोषिषीष्ट * कोषिता इत्यादि * अकोषीत् ॥

२१७—अश = भोजन, खाना ॥

अश्नाति इत्यादि * लोट्—मध्यमैकवचन—अशान * लिट्—आश आशतुः * अश्यात् * अशिता * अशिष्यति * आशिष्यत् * आशीत् ॥

२१८—मुष = स्तेय, चुराना ॥

मुष्णाति इत्यादि * लोट्—मध्यमैकवचन—मुषाण * मुमोष * मुष्यात् * मोषिता इत्यादि ॥

इति परस्मैपदप्रकरणम् ॥

अथात्मनेपदप्रकरणम् ॥

२१९—वृ (ङ्) = संभक्ति, सेवा करना ॥

वृणीते * वृणीत * वृणीताम् * अवृणीत * वव्रे वव्राते * वरिषीष्ट * वरिता, वरीता * वरिष्यते, वरीष्यते * अवरिष्यत, अवरीष्यत * अवरिष्ट, अवरीष्ट, अवृत । अवृषाताम् इत्यादि ॥

(भाषानुवाद करो)

कुष्णाति वस्त्रम् तिलान्वा । अश्नन्ति ब्राह्मणाः पायसम् । मुष्णन्ति तस्कराः परधनम् । वृणीते पतिं वधूः । इत्यादि ॥

(संस्कृतानुवाद करो)

धोती निचोड़ो । सरसोंसे तैल निकालो । अभक्ष्य मत खाओ । किसी की वस्तु मत चुराओ । गुरुको सेवो । इत्यादि ॥

इति क्र्यादिगणप्रकरणम् ॥

——:×*×:——

अथ तिङन्ते चुरादिगणप्रकरणम् ॥

२२०—चुर = स्तेय, चुराना ॥

चोरयति ॥ चोरयते * चोरयेत् ॥ चोरयेत * चोरयतु ॥ चोरयताम् * अचोरयत् ॥ अचोरयत * चोरयाञ्चकार चोरयाञ्चक्रतुः, चोरयामास चोरया-

मासतुः, चोरयाम्बभूव चोरयाम्बभूवतुः इत्यादि * चोर्य्यात् ॥ चोरयिषीष्ट * चोरयिता ॥ चोरयिता * चोरयिष्यति ॥ चोरयिष्यते * अचोरयिष्यत् * अचोरयिष्यत * अचूचुरत् ॥ अचूचुरत ॥

२२१—कथ = बोलना, कहना, वाक्यप्रबन्ध ॥

कथयति इत्यादि * आशीर्लिङ्—कथ्यात् * लुङ्—अचकथत् ॥ अचकथत * शेष रूप "चुर" के तुल्य हैं ॥

२२२—गण = सङ्ख्या करना, गिनना ॥

गणयति इत्यादि "कथ" के तुल्य है परन्तु लुङ् में अजीगणत् वा अजगणत् ॥ अजीगणत, अजगणत । इत्यादि दो २ रूप होते हैं ॥

(भाषानुवाद करो)

पापः परधनं चोरयति । सत्यं कथयति धर्मात्मा । परापराधान् न गणयन्ति साधवः । इत्यादि ॥

(संस्कृतानुवाद करो)

किसीके वस्त्रादि मत चुराओ । सत्य कहो । रुपये गिनो इत्यादि ॥

इति तिङन्ते चुरादिगणप्रकरणम् ॥

—*—

दशगणाः समाप्ताः ॥

—÷×:o:×÷—

अथ तिङन्ते ण्यन्तप्रक्रिया ॥

कर्त्तासे कोई क्रिया कराना अर्थात् कर्त्ताको प्रेरणा करके कोई क्रिया कराना णयन्तका अर्थ है। जैसे—"घटो भवति" से "घटं भावयति"=घड़ेको हुवाता अर्थात् बनाता है। "अश्वो ग्रासं खादति„से "अश्वं ग्रासं खादयति"=घोड़ेको ग्रास खिलाता है। इत्यादि ॥

[इस णयन्त अवस्थामें पूर्वावस्थाका कर्त्ता, प्रायः कर्म बन जाता है ॥]

१—भू = होना ॥

भवति इत्यादि भ्वादिगणमें कह आये हैं। यहां—परस्मैपदमें—भावयति भावयतः इत्यादि * भावयेत् भावयेताम् इत्यादि * भावयतु, भावयतात् इत्यादि * अभावयत् इत्यादि * भावयाञ्चकार, भावयामास, भावयाम्बभूव इत्यादि * भाव्यात् * भावयिता * भावयिष्यति * अभावयिष्यत् * अबीभवत् अबीभवताम् अबीभवन्। अबीभवः इत्यादि ॥ आत्मनेपदमें—भावयते * भावयेत * भावयताम् * अभावयत * भावयाञ्चक्रे * भावयिषीष्ट * भावयिता * भावयिष्यते * अभावयिष्यत * अबीभवत अबीभवेताम् इत्यादि ॥

२—ष्ठा = ठहरना।

तिष्ठति इत्यादि कह आये हैं। यहां—स्थापयति * स्थापयेत् इत्यादि भावयति आदिके तुल्य हैं। लुङ्—अतिष्ठिपत् ॥ अतिष्ठिपत इत्यादि ॥

३—घट = चेष्टा, बनाव ॥

घटते इत्यादि भ्वादिगणमें। यहां—घटयति * इत्यादि। लुङ्—अजीघटत् ॥ अजीघटत इत्यादि ॥

४—ज्ञप = ज्ञान, जानना ॥

चुरादिगणस्थ है। यहां—ज्ञापयति इत्यादि ॥ इसी प्रकार—आतयति * आतितत् ॥ आदयति * आदिदत् ॥ हावयति * अजीहवत् ॥ देवयति * अदीदिवत् ॥ सावयति * असीषवत् ॥ तोदयति * अतूतुदत् ॥ रोधयति * अरूरुधत् ॥ तानयति * अतीतनत् ॥ क्रापयति * अचिक्रियत् ॥ चोरयति * अचूचुरत् ॥ इत्यादि सब गणोंसे सब धातुओंके रूप समझने चाहियें ॥

स्मरण रहे कि इस पुस्तकमें उस २ गणके सब धातु नहीं लिखे परन्तु धातुपाठके बहुतसे ऐसे धातु भी जो इस पुस्तकमें नहीं लिखे, अपने २ गणके मुख्य

धातुके प्रायशः तुल्य हैं और जिन २ में कुछ विशेष है वह व्याकरणकी इस से अगली बड़ी पुस्तकोंके पढ़नेसे समझमें आवेगा। परन्तु लघुकौमुदीमें जितने धातु दिये हैं प्रायः वे सब हमने भी यहां लिख दिये हैं ॥

उदाहरणानि–घटं भावयति=घड़ेको बनाता है। साधुं स्थापयति गृहे=साधुको ठहराता है घरमें। घटयति कम्बलम्=कम्बलको बनवाता है। अर्थं ज्ञापयति=अर्थको जतलाता है। मिष्टनादयति=मिठाई खिलाता है। दापयति दक्षिणाम्=दक्षिणा दिलाता है। देवयति बालकान्=बालकोंको खेलाता है। सोमं सावयति=सोमको अर्क खिंचवाता है। तोदयति रथी सारथिनाऽश्वान्=रथी, सारथिसे घोड़ोंको व्यथित कराता है। रोधयति भृत्यैः पथिकान्=नौकरोंसे पथिकोंको रुकवाता है। यज्ञार्थमासनानि स्तारयति=यज्ञार्थ आसन बिछवाता है। सर्षपं क्राययति=सरसों ख़रीदवाता है। चोरयति खलः परधनम्=दुष्ट पराये धनको चुरवाता है इत्यादि ॥

इति ण्यन्तप्रक्रिया ॥

—※—

अथ तिङन्ते सन्नन्तप्रक्रिया ॥

जब धातुके अर्थमें इच्छार्थ पाया जावे तब सन्नन्त प्रयोग होता है। जैसे भवति से–बुभूषति=होना चाहता है इत्यादि ॥

१–पठ = पढ़ना ॥

पिपठिषति * पिपठिषेत् * पिपठिषतु * अपिपठिषत् * पिपठिषाञ्चकार * पिपठिष्यात् * पिपठिषिता * पिपठिषिष्यति * अपिपठिषिष्यत् * अपिपठिषीत् इत्यादि ॥

२–अद (घस्लृ) = भक्षण । जिघत्सति इत्यादि ॥

३–कृ(ञ्) = करना ॥

चिकीर्षति * चिकीर्षेत् * चिकीर्षतु * अचिकीर्षत् * चिकीर्षाञ्चकार इत्यादि ॥

४–भू = होना ॥

बुभूषति * बुभूषेत् * बुभूषतु * अबुभूषत् * बुभूषाञ्चकार * बुभूष्यात् इत्यादि ॥ इसी प्रकार–जुहूषति । दिदेविषति । सुषूषति । तुतुत्सति ।

रुरुत्सति । तितनिषति । चिक्रेषति । चुचोरयिषति इत्यादि जानो ॥

उदाहरणानि—पिपठिषति वेदान् श्रोत्रियः=श्रोत्रिय (वेदपाठी) वेदोंको पढ़ना चाहता है । चिकीर्षति रिक्तं गृहं गृही । गृहस्थ घरको ख़ाली करना चाहता है । छात्रः पण्डितो बुभूषति=विद्यार्थी पण्डित होना चाहता है । जिघत्सति मिष्टं ब्राह्मणः=ब्राह्मण मिठाई खाना चाहता है । पान्थो ग्रामं जिगमिषति=पथिक ग्रामको जाना चाहता है । जुहूषति दक्षिणां यजमानः=यजमान दक्षिणाको देना चाहता है । जुहूषति हव्यमग्निः=अग्नि हव्य को खाना (फूंकना) चाहता है । बालाः दिदेविषन्ति=बालक खेलना चाहते हैं । अहं गुडूचीं सुसूषामि=मैं गिलोयका अर्क खींचना चाहता हूं । तुतुत्सति खलः साधून्=दुष्ट, सत्पुरुषोंको दुःख देना चाहता है । रुरुत्सति शत्रुं वीरः=शूरवीर, शत्रुको रोकना चाहता है । तितनिषति जालं वञ्चकः=ठग जालको फैलाना चाहता है । व्यापारी चिक्रेषति गोधूमराशिम्=व्यापारी गोधूमकी ढेरीको ख़रीदना चाहता है। चुचोरयिषति चौरः परधनानि=चौर पराये धनोंको चुराना चाहता है । इत्यादि । प्रायः इसी प्रकार अन्य धातुओंके रूप जानो ॥

इति सन्नन्तप्रक्रिया ॥

—※—

अथ तिङन्ते यङन्तप्रक्रिया ॥

जो धातु एक स्वर वाले और व्यञ्जनादि हैं उनके अर्थमें जब अतिशयता वा बारंबारका अर्थ रहता है तब यङन्त प्रयोग होता है । जैसेः—बोभूयते=बहुतायतसे होता है वा बारंबार होता है ॥ इत्यादि ॥

बोभूयते ※ बोभूयेत ※ बोभूयताम् ※ अबोभूयत ※ बोभूयाञ्चक्रे ※ बोभूयिषीष्ट ※ बोभूयिता ※ बोभूयिष्यते ※ अबोभूयिष्यत ※ अबोभूयिष्ट अबोभूयिषातास् ॥

जिन धातुओंका "गति" अर्थ है उनका सन्नन्त प्रयोग कुटिलता अर्थमें होता है । क्रियासमभिहारमें नहीं । जैसेः—

वाव्रज्यते ※ वाव्रज्येत ※ वाव्रज्यताम् ※ अवाव्रज्यत ※ वाव्रजाञ्चक्रे ※ वाव्रजिषीष्ट ※ वाव्रजिता ※ वाव्रजिष्यते ※ अवाव्रजिष्यत ※ अवाव्रजिष्ट इत्यादि ॥

वरीवृत्यते ※ वरीवृत्येत ※ वरीवृत्यताम् ※ अवरीवृत्यत ※ वरीवृताञ्चक्रे ※

वरीवृतिषीष्ट * वरीवृतिता * वरीवृतिष्यते * अवरीवृतिष्यत * अवरीवृतिष्ट ॥

नरीनृत्यते * नरीनृत्येत * नरीनृत्यताम् * अनरीनृत्यत * नरीनृताञ्चक्रे * नरीनर्त्तिषीष्ट * नरीनर्त्तिता इत्यादि ॥

जरीगृह्यते * इत्यादि ॥ जरीगृहाञ्चक्रे * जरीगृहिषीष्ट * जरीगृहिता इत्यादि ॥ इसी प्रकारः—

जङ्घन्यते । जोहूयते । देदीव्यते । सोषूयते । तोतुद्यते । रोरुध्यते । तन्तन्यते । चेक्रीयते । चोचूर्य्यते । इत्यादि जानो ॥

उदाहरणानि—वर्षासु बोभूयते मेघः=वर्षामें मेघ वारंवार वा बहुतायतसे होता है । वाव्रज्यतेऽश्वः=घोड़ा तिरछा चलता है । वरीवृत्यतेऽन्नम्=अन्न बहुतायतसे वर्त्तमान है । नरीनृत्यते गणिका=रण्डी वारंवार नाचती है । अजरीगृहिष्ट चौरं रक्षकः=वारंवार पकड़ा चोरको चौकीदारने । जङ्घन्यते पक्षिणो वधिकः=वधिक पक्षियोंको बहुतायतसे मारता है । जोहूयते दानं दाता=दाता बहुतायतसे दान देता है । जोहूयते घृतमग्निः=अग्नि घृतको बहुतायतसे जलाता है । अक्षैर्देदीव्यन्ते खलाः=दुष्ट बहुतायतसे पाशे खेलते हैं । सोषूयते ऋत्विक् सोमम्=ऋत्विज् (यज्ञकर्त्ता) सोमको अधिकतासे अर्क खींचता है । तोतुद्यतेऽश्वान् सारथिः=कोचमैन घोड़ोंको बहुत वा वारंवार बींधता है, चाबुक मारता है । दस्यवो मार्गं रोरुध्यन्ते=डाकू रास्ता बहुत रोकते हैं । चेक्रीयन्ते वणिजोऽन्नम्=बनिये नाज बहुत ख़रीदते हैं । चोचूर्य्यन्तेऽमावस्यायाम् चौराः=चौर अमावसमें बहुत चुराते हैं । इत्यादि ॥

इति यङन्तप्रक्रिया ॥

—※—

अथ तिङन्ते यङ्लुक्प्रक्रिया ॥

[यङन्तके ही अर्थमें दूसरे प्रकारके प्रयोग यङ्लुङ्के भी होते हैं ॥]

भू = होना ॥

बोभवीति, बोभोति बोभूतः बोभुवति । बोभवीषि, बोभोषि बोभूथः बोभूथ । बोभवीमि, बोभोमि बोभूवः बोभूमः * बोभूयात् बोभूयाताम् बोभूयुः इत्यादि * बोभवीतु, बोभोतु, बोभूतात् । बोभूताम् । बोभुवतु । बोभूहि, बोभूतात् बोभूतम् बोभूत । बोभवानि * अबोभवीत्, अबोभोत्

अबोभूताम् अबोभवुः । अबोभवीः, अबोभोः अबोभूतम् अबोभूत । अबोभवम् अबोभूव अबोभूम * बोभवाञ्चकार, बोभवामास, बोभवाम्बभूव * बोभूयात् बोभूयास्ताम् * बोभविता * बोभविष्यति * अबोभविष्यत् * अबोभवीत्, अबोभोत् अबोभूताम् अबोभूवुः । अबोभवीः, अबोभोः इत्यादि ॥

इसी प्रकार–जङ्घनीति, जङ्घन्ति । जोहवीति, जोहोति । देदेवीति । सोषवीति, सोषोति । तोतोदीति, तोतोत्ति । रोरोधीति, रोरोद्धि । तन्तनीति, तन्तन्ति । चेक्रयीति, चेक्रेति । चोचोरीति इत्यादि जानो ॥

उदाहरण यङन्तके तुल्य हैं ॥

इति यङ्लुक्प्रक्रिया ॥

—*—

अथ तिङन्ते नामधातुप्रक्रिया ॥

नामधातु उसे कहते हैं जो प्रथम प्रातिपदिक (संज्ञा) हो और फिर विशेष क्रियार्थके योगमें धातुके समान तिङन्त प्रयुक्त होवे ॥

१–जिन शब्दोंका वर्णन प्रथमा द्वितीयादि विभक्तियों सहित तृतीय पुस्तकमें कर आये हैं वे और उनके सदृश अन्य प्रातिपदिक जो सुबन्तदशामें थे, जब कि अपने लिये इच्छा (क्रिया) के कर्म हों तब उनके इस प्रकार रूप होते हैं। जैसे "अपने लिये पुत्रकी इच्छा करना" यहां इच्छाका कर्म पुत्र है तो पुत्रशब्दसे क्यच् प्रत्यय लगा कर–

पुत्रीयति पुत्रीयतः इत्यादि * पुत्रीयेत् पुत्रीयेताम् * पुत्रीयतु * अपुत्रीयत् * पुत्रीयाञ्चकार, पुत्रीयामास, पुत्रीयाम्बभूव * पुत्रीय्यात् * पुत्रीयिता * पुत्रीयिष्यति * अपुत्रीयिष्यत् * अपुत्रीयीत् अपुत्रीयिष्टाम् इत्यादि॥

राजीयति * राजीयेत् * राजीयतु * अराजीयत् * राजीयाञ्चकार इत्यादि ॥

वाच्यति * वाच्येत् * वाच्यतु * अवाच्यत् * वाच्याञ्चकार * वाच्य्यात्, वाच्यात् * वाच्यिता, वाचिता इत्यादि ॥

गीर्यति ॥ पूर्य्यति ॥ दिव्यति ॥ गीर्यिता, गिरिता ॥ पूर्यिता, पूरिता॥ दिव्यिता, दिविता इत्यादि ॥

समिध्यति * समिध्येत् इत्यादि * समिध्यिता, समिधिता * समिध्यिष्यति, समिधिष्यति इत्यादि ॥

२–पूर्वोक्त अर्थमें काम्यच् प्रत्यय भी लगाते हैं। जैसे–पुत्रकाम्यति ॥ राजकाम्यति ॥ वाक्काम्यति॥ गीः काम्यति॥ पूःकाम्यति ॥ समित्काम्यति इत्यादि॥

पुत्रीयति मे पत्नी=मेरी पत्नी अपने लिये पुत्र चाहती है। राजीयन्ति प्रजाः=प्रजायें अपने लिये राजा चाहती हैं। वाच्यति मूकः=गूंगा अपने लिये (वाच्) वाणी चाहता है। गीर्य्यति माणवकः=बालक अपने लिये (गिर्) वाणी चाहता है। पूर्य्यन्ति कृषकाः=किसान लोग अपने लिये (पुर्) नगरी चाहते हैं। मुमुक्षुर्न दिव्यति=मोक्षका इच्छुक नहीं स्वर्ग (दिव्) चाहता है। समिध्यति अग्निः=अग्नि अपने लिये लकड़ी (समिध्) चाहता है। दशरथः पुत्रकाम्याञ्चकार इयाज चाश्वमेधेन=दशरथने अपने लिये पुत्र चाहा था और अश्वमेधसे यजन किया था। समित्काम्यन्ति अग्निहोत्रिणः=अग्निहोत्री लोग समिधा चाहते हैं। पूः काम्यन्ति दरिद्राः=दरिद्र लोग पुरी चाहते हैं। राज्यकाम्यन्ति सम्पन्नाः=सम्पन्न लोग राज्य चाहते हैं। बुद्धिकाम्येत् छात्रः=विद्यार्थी बुद्धिको चाहे। इत्यादि ॥

३–आचरण अर्थमें जिससे उपमा दी जावे (उपमानवाचक शब्द) उस कर्म से भी क्यच् प्रत्यय लगाते हैं। जैसे–"विद्यार्थीको पुत्रके समान आचरण करता है" इस अर्थमें–पुत्रीयति इत्यादि ॥ दुग्धीयति जलम्=जलको दूधके तुल्य आचरण करता (वर्त्तता) है। पित्रीयति आचार्य्यम्=आचार्य्यको पिता के सदृश आचरण करता है ॥ अमृतीयति मिष्टम्=मिठाईको अमृतके समान आचरण करता है ॥

४–प्रातिपदिकमात्रसे आचारार्थमें क्विप् प्रत्यय लगाते हैं। जैसे–कृष्णति * कृष्णेत् * कृष्णतु इत्यादि ॥ स्वति ॥ इदामति ॥ राजानति ॥ पथीनति इत्यादि॥ कृष्णन्ति कृष्णभक्ताः=कृष्णभक्त कृष्णके तुल्य आचरण करते हैं। रामति रामभक्तः। स्वन्ति परकीयाः=पराये लोग अपने (स्व) सा आचरण करते हैं। राजानति दस्युः=डांकू, राजा कैसा आचरण करता है। पथीनति जलम्=पानी मार्ग सा जान पड़ता है। इत्यादि ॥

५–"कष्टके लिये उद्योग करना" अर्थमें कष्ट शब्दसे क्यङ् प्रत्यय लगाते हैं। जैसे:–कष्टायते * कष्टायेत * कष्टायताम् * अकष्टायत * कष्टायाञ्चक्रे * कष्टायिषीष्ट * कष्टायिता * कष्टायिष्यते * अकष्टायिष्यत * अकष्टायिष्ट ॥ कष्टायते पापी=पापी कष्टके लिये उद्योग करता है ॥

६–शब्द, वैर, कलह, अभ्र, कण्व और मेघ शब्दोंसे "करने" अर्थमें क्यङ्

प्रत्यय लगाते हैं। जैसे:—शब्दायते=शब्द करता है। वैरायते=वैर करता है। कलहायते=कलह करता है इत्यादि ॥

७—करने और कहने अर्थमें कर्मवाचक प्रातिपदिकसे णिच् प्रत्यय लगाते हैं। जैसे:—घटयति=घड़ेको बनाता है वा कहता है इत्यादि ॥

इति नामधातुप्रक्रिया ॥

—*—

अथ कण्ड्वादिप्रक्रिया ॥

कण्डू (ञ्) गात्रविघर्षण, खुजलाना ॥

कण्डूयति ॥ कण्डूयते * कण्डूयेत् ॥ कण्डूयेत * कण्डूयतु ॥ कण्डूयताम् * अकण्डूयत् ॥ अकण्डूयत * कण्डूयाञ्चकार ॥ कण्डूयाञ्चक्रे * कण्डूय्यात् ॥ कण्डूयिषीष्ट * कण्डूयिता * कण्डूयिष्यति ॥ कण्डूयिष्यते * अकण्डूयिष्यत् ॥ अकण्डूयिष्यत * अकण्डूयीत् ॥ अकण्डूयिष्ट इत्यादि ॥

कण्डूयन्ति पशवो भित्त्या=पशु दीवारसे खुजाते हैं इत्यादि ॥

मन्तु = अपराध करना ॥

मन्तूयति इत्यादि ५२ धातु, धातुपाठान्तर्गत कण्ड्वादिगणमें लिखे हैं उन सबके रूप इसी प्रकार हैं ॥

इति कण्ड्वादिप्रक्रिया ॥

—*—

अथात्मनेपदप्रक्रिया ॥

* क्रियाके अदला बदल (विनिमय) अर्थमें आत्मनेपद होता है।

लू = छेदन ॥

व्यतिलुनते कृषकाः=कृषक लोग परस्पर अदला बदलीसे काटते हैं अर्थात् वह उसका और वह उसका काटता है। व्यतिपाठयन्ते छात्राः=विद्यार्थी परस्पर पढ़ाते हैं।

* गति और हिंसार्थक धातुओंसे उक्तार्थमें आत्मनेपद नहीं होता । व्यतिगच्छन्ति पथिकाः=मुसाफ़िर एक दूसरेके मार्गको अदल बदल कर जाते हैं। यहां आत्मनेपद न हुवा । ऐसे ही व्यतिघ्नन्ति दुरात्मानः=पापी एक दूसरे को वध करते हैं । इत्यादि ॥

* नि उपसर्गसे आगे विश धातुसे आत्मनेपद होता है। निविशते=वह प्रवेश करता है । इत्यादि ॥

* परि, वि और अव उपसर्गोंसे आगे क्री धातुसे आत्मनेपद होता है। परिक्रीणीते=मोल लेता है । विक्रीणीते=बेचता है । अवक्रीणीते=ख़रीदता है इत्यादि ॥

* वि और परा उपसर्गोंसे आगे जि धातुसे आत्मनेपद होता है । विजयते=जीतता है । पराजयते=हारता है ॥

* सम्, अव, प्र और वि उपसर्गोंसे परे जो स्था धातु उससे आत्मनेपद होता है । संतिष्ठते=मरता है । अवतिष्ठते=ठहरता है । प्रतिष्ठते=इज़्ज़त पाता है । वितिष्ठते=विचलता है । उपसर्गके योगसे प्रायः धातुका अर्थ और हो जाता है ॥

* छिपाने अर्थमें ज्ञा धातुसे आत्मनेपद होता है। शतम् अपजानीते=शत १००) को छिपाता है ॥

* अकर्मक ज्ञा धातुसे भी आत्मनेपद होता है । सर्पिषः जानीते=घृत (उपाय) से प्रवृत्त होता है। यहां ज्ञा धातुका कर्म कोई नहीं इससे अकर्मक है ॥

* तृतीयान्त पदके साथ चर धातुसे आत्मनेपद हो जब कि सम् उपसर्ग पूर्व हो। रथेन सञ्चरते=रथके साथ चलता है ॥

* सम् उपसर्गसे परे जो दा (ण्) धातु उससे आत्मनेपद हो यदि तृतीयान्तपदका योग हो और वह तृतीया विभक्ति, चतुर्थी विभक्तिके अर्थमें हो । दास्या संयच्छते कामी=कामी पुरुष दासीके लिये देता है ॥

* सन्नन्त प्रक्रियामें धातुसे वही पद होता है जो कि पूर्व (दशगणोंमें) कह आये हैं। अर्थात् परस्मैपदी धातुसे परस्मैपद, आत्मनेपदीसे आत्मनेपद। जैसे भू धातु परस्मैपदी है उससे सन्नन्तसे भी बुभूषति यह परस्मैपद हुवा। तथा एध् धातु आत्मनेपदी है उससे सन्नन्तसे भी एदिधिषते यह आत्मनेपद हुवा । नि पूर्वक विश धातु आत्मनेपदी है तो निविविक्षते यह सन्नन्त भी आत्मनेपदी रहा ॥

* कृञ् धातुसे आत्मनेपद होता है; गन्धन, अवक्षेपण, सेवन, साहसिक्य, प्रतियत्न, प्रकथन और उपयोग अर्थोंमें। जैसे—गन्धन=चुग़ली करना। उत्कुरुते=चुग़ली करता है। अवक्षेपण=धमकाना। श्येनो वर्त्तिकामुत्कुरुते भर्त्सयतीत्यर्थः। हरिमुपकुरुते सेवते इत्यर्थः। साहसिक्य=बलात्कार, ज़बर्दस्ती। परदारान् प्रकुरुते दुष्टः=परस्त्रियोंको बलात्कार करता है दुष्ट। प्रतियत्न=सुधारना। एधोदकस्योपस्कुरुते=लकड़ी पानीको सुधारती है। कथां प्रकुरुते=कथा कहता है। शतं प्रकुरुते=सौ (धर्मार्थ) लगाता है॥

इत्यात्मनेपदप्रक्रिया॥

अथ तिङन्ते परस्मैपदप्रक्रिया॥

* अनु और परा उपसर्गसे परे कृञ् धातुसे परस्मैपद होता है। अनुकरोति=नक़ल करता है। पराकरोति=दूर करता है॥

* अभि, प्रति और अतिसे परे क्षिप धातुसे परस्मैपद होता है। अभिक्षिपति प्रतिक्षिपति अतिक्षिपति॥

* प्र से परे "वह" धातुसे परस्मैपद होता है। प्रवहति=बहता है॥

* परि से परे मृष धातुसे परस्मैपद होता है। परिमृषति=सहता है॥

* वि, आ (आङ्), उप और परि से परे रम धातुसे परस्मैपद होता है। विरमति=थमता है। आरमति। परिरमति। उपरमति॥

इति परस्मैपदप्रक्रिया॥

—*—

अथ तिङन्ते भावकर्मप्रक्रिया॥

* भाव और कर्म ति तः आदि प्रत्ययोंके साथ एकार्थ हों तो धातुसे आत्मनेपद होता है॥

प्रथम दशगणोंमें जो रूप लिखे हैं वे कर्त्तृवाच्य हैं। जैसे—गच्छति देवदत्तः=देवदत्त जाता है। यहां जाता है का एकार्थ देवदत्तसे है और देवदत्त गति क्रिया का कर्त्ता जाने वाला है इस लिये गच्छति यह रूप कर्त्तृवाच्य हुआ। इसी प्रकार—छात्रो वेदं पठति=विद्यार्थी वेदको पढ़ता है। यहां पढ़ता

है का एकार्थ छात्रसे है अर्थात् पढ़ता है, कौन पढ़ता है? छात्र पढ़ता है और छात्र पठ क्रियाका कर्त्ता–पढ़ने वाला है इस लिये पठति यह कर्त्तृवाच्य रूप हुवा॥ परन्तु जब पठ धातुका कर्मवाच्य रूप बनायेंगे तब "वेदः पठ्यते छात्रेण" ऐसा होगा अर्थात् "छात्रसे वेद पढ़ा जाता है" पढ़ा जाता है, क्या पढ़ा जाता है? वेद पढ़ा जाता है। और वेद पठ क्रियाका कर्म जो पढ़ा जाता है, वह है। इस लिये पठ्यते यह कर्मवाच्य रूप हुवा॥

क्रियाका करने वाला कर्त्ता, जो काम किया जाय वह कर्म और काम करना वा होना आदि भाव कहलाता है॥

भाव–जैसे "अहं तिष्ठामि=मैं ठहरा हूं" यह कर्त्तृवाच्य है अब इसको भाववाच्य बनाना हो तब "मया स्थीयते=मुझसे ठहरा जाता है," यहां ठहरा जाता है। यह क्रिया ही अपना वाच्य है। इत्यादि॥

* प्रायः अकर्मक धातुओंसे (होना, बैठना, वसना, रहना, ठहरना, खेलना, कूदना, हंसना, हर्ष आदि अर्थ वाले जिनका कर्म नहीं होता) भाववाच्य रूप बनते हैं। और सकर्मक धातुओं (जाना, खाना, सोचना, पढ़ना, मारना, फूंकना आदि अर्थ वाले जिनका कर्म होता है) से कर्मवाच्य रूप होता है। इन्हींको कर्त्तामें प्रत्यय, भावमें प्रत्यय और कर्ममें प्रत्यय है, इस प्रकार वैयाकरण लोग कहा करते हैं॥

इस भावकर्मप्रक्रियामें वे रूप लिखे जायंगे जो भावमें प्रत्यय वा कर्ममें प्रत्यय लगा कर बनते हैं जैसेः–

भू–भूयते * भूयेत * भूयताम् * अभूयत * बभूवे * भाविषीष्ट, भविषीष्ट * भाविता, भविता * भाविष्यते, भविष्यते * अभाविष्यत, अभविष्यत * अभावि॥

जिस कारण धातुका अर्थ जो क्रिया वा भाव है उसमें द्विवचन और बहुवचन नहीं इस लिये परिशेषसे एकवचन ही होता है और मध्यम पुरुष तथा उत्तम पुरुष भी नहीं होते हैं इस लिये परिशेषसे प्रथम पुरुष ही होता है अन्य नहीं॥

अनु उपसर्ग पूर्व लगनेसे भू धातुका अनुभव करना अर्थ हो जाता है इस लिये "अनुभू" यह सकर्मक रहता है। अनुभूयते अनुभूयेते अनुभूयन्ते। अनुभूयसे इत्यादि * अनुभूयेत अनुभूयेयाताम् अनुभूयेरन् इत्यादि * अनुभूयताम् अनुभूयेताम् अनुभूयन्ताम् इत्यादि * शेष अपने आप समझने

चाहियें ॥ यहां सकर्मक होनेसे कर्ममें एकत्व द्वित्व और बहुत्व होते हैं तथा युष्मद् और अस्मद् भी कर्म (अवस्थामें) वाच्य रहते हैं इस लिये तीनों पुरुष और तीनों वचन होकर सब रूप होते हैं ॥ जैसे–भूयते पण्डितेन=पण्डितसे हुवा जाता है। यह भाववाच्य होनेसे एक ही प्रयोग होता है। और सुखमनुभूयते धनिना=धनीसे सुख भोगा जाता है। त्वमनुभूयसे राज्ञा=तू राजासे आज़माया जाता है। अहमनुभूये सभया= मैं सभासे अनुभव किया जाता हूं इत्यादि। ऐसे ही द्विवचन और बहुवचन समझो ॥

णिजन्त भू धातुसे–भाव्यते भाव्येते * भाव्येत * भाव्यताम् * अभाव्यत * भावयाञ्चक्रे, भावयामासे, भावयाम्बभूवे * भाविषीष्ट * भाविता * भाविष्यते * अभाविष्यत * अभावि अभावयिषाताम् अभावयिषत। अभावयिष्ठाः अभावयिषाथाम् इत्यादि ॥

भाव्येते घटौ कुलालेन=कुम्हारसे दो घड़े बनाये जाते हैं। भाव्यसे त्वं पण्डितो गुरुणा=गुरुसे तू पण्डित बनाया जाता है। भाव्येऽहं निपुणः शिक्षकेण=शिक्षकसे मैं निपुण बनाया गया हूं। इत्यादि ॥

सन्नन्त भू धातुसे–बुभूष्यते * बुभूष्येत * बुभूष्यताम् * अबुभूष्यत * बुभूषाञ्चक्रे * बुभूषिषीष्ट * बुभूषिता * बुभूषिष्यते * अबुभूषिष्यत * अबुभूषि ॥

भावमें प्रत्यय होनेसे प्रथम पुरुष और एक वचन ही होता है। बुभूष्यते पुरुषेण धनिना=पुरुषसे धनी होना चाहा जाता है। इत्यादि ॥

यङन्त भू–बोभूय्यते बोभूय्येते * बोभूय्येत * बोभूय्यताम् * अबोभूय्यत * बोभूयाञ्चक्रे * बोभूयिषीष्ट * बोभूयिता * बोभूयिष्यते * अबोभूयिष्यत * अबोभूयि ॥ तत्र मया, त्वया, तेन वा बोभूय्यते=वहां मुझसे, तुझसे वा उससे हुवा जाता है। इत्यादि ॥

ष्टु (स्तु) धातु = स्तुति करना ॥

स्तूयते स्तूयेते स्तूयन्ते। स्तूयसे इत्यादि * स्तूयेत * स्तूयताम् * अस्तूयत * तुष्टुवे * स्ताविषीष्ट, स्तोषीष्ट * स्ताविता, स्तोता * स्ताविष्यते, स्तोष्यते * अस्ताविष्यत, अस्तोष्यत * अस्तावि, अस्तोषाताम्, अस्ताविषाताम् इत्यादि ॥

स्तूयसे त्वं मया=तू मुझसे स्तुत किया जाता है। स्तूयेऽहं संसारेण=मैं संसारसे स्तुत किया जाता हूं। स्तूयते मया जगदीश्वरः=परमेश्वर मुझसे स्तुत किया जाता है। इत्यादि ॥

ऋ = गति ॥

अर्यते अर्य्यते अर्यन्ते इत्यादि * अर्येत * अर्य्यताम् * आर्य्यत * आरे * आरिषीष्ट, अर्षीष्ट * आरिता, अर्त्ता * आरिष्यते, अर्ष्यते * आरिष्यत, आर्ष्यत * आरि आरिषाताम्, आर्षाताम् । इत्यादि ॥

अर्यते ग्रामो देवदत्तेन=देवदत्तसे ग्राम जाया जाता है ॥

स्मृ = स्मरण ॥

स्मर्यते स्मर्यते * स्मर्येत * स्मर्यताम् * अस्मर्यत * सस्मरे * स्मारिषीष्ट, स्मर्षीष्ट * स्मारिता, स्मर्त्ता । इत्यादि ॥ स्मर्यते माता पुत्रेण=पुत्रसे माता स्मरण की जाती है इत्यादि ॥

स्रंसु = गिरना, चूना, टपकना ॥

स्रस्यते * स्रस्येत * स्रस्यताम् * अस्रस्यत * सस्रंसे * स्रंसिषीष्ट * स्रंसिता * स्रंसिष्यते * अस्रंसिष्यत * अस्रंसि ॥

स्रस्यते जलेन घृतेन वा=घृत वा जलसे टपका जाता है इत्यादि ॥

(टु) णदि = समृद्धि, आनन्द ॥

नन्द्यते * नन्द्येत * नन्द्यताम् * अनन्द्यत * ननन्दे * नन्दिषीष्ट इत्यादि ॥ ब्राह्मणेन नन्द्यते=ब्राह्मणसे आनन्दित हुवा जाता है इत्यादि ॥

यज । इज्यते इज्येते इज्यन्ते * इज्येत * इज्यताम् * ऐज्यत * ईजे ईजाते * यक्षीष्ट * यष्टा * यक्ष्यते * अयक्ष्यत * अयाजि ॥ इज्यन्ते वाय्वादयो देवाः होमेन=होमसे वाय्वादि देव पूजे जाते हैं (सुधारे जाते हैं) इत्यादि ।

तनु = विस्तार ॥

तायते, तन्यते * तायेत, तन्येत * तायताम्, तन्यताम् * अतायत, अतन्यत * तेने * तनिषीष्ट * तनिता * तनिष्यते * अतनिष्यत * अतानि अतनिषाताम् ॥ तन्यन्ते तन्तवः=तार फैलाये (पूरे) जाते हैं । इत्यादि ॥

तप । तप्यते * तप्येत * तप्यताम् * अतप्यत * तेपे * तप्सीष्ट * तप्ता * तप्स्यते * अतप्स्यत * अतप्त, अतापि ॥ अनुताप अर्थमें अतप्त ही होता है । जैसे अन्वतप्त पापेन=पापीने अनुताप (पछतावा) किया ॥

दा । दीयते दीयेते दीयन्ते * दीयेत * दीयताम् * अदीयत * ददे * दासीष्ट, दायिषीष्ट * दायिता, दाता * दायिष्यते, दास्यते * अदायिष्यत, अदास्यत * अदायि । अदायिषाताम्, अदासाताम् । यदायिषत, अदासत ।

अदायिष्ठाः, अदास्थाः । अदायिषाथाम्, अदासाथाम् । इत्यादि ॥ दीयतेऽन्नं धनिना बुभुक्षितेभ्यः=धनी से भूखों के लिये अन्न दिया जाता है । इत्यादि ॥ भञ्जो । भज्यते * भज्येत * भज्यताम् * अभज्यत * बभञ्जे * भङ्क्षीष्ट * भङ्क्ता * भङ्क्ष्यते * अभङ्क्ष्यत * अभाजि, अभञ्जि । अभङ्क्षाताम् अभङ्क्षत । अभङ्क्थाः अभङ्क्षाथाम् इत्यादि ॥ भज्यन्ते वानरैर्वृक्षाः=वानरों से वृक्ष तोड़े जाते हैं । इत्यादि ॥

लभ । लभ्यते * लभ्येत * लभ्यताम् * अलभ्यत * लेभे * लप्सीष्ट * लब्धा * लप्स्यते * अलप्स्यत * अलाभि, अलम्भि । अलप्साताम् । इत्यादि ॥ लभ्यते लक्ष्मीर्व्यापारिणा=व्यापारी से लक्ष्मी पाई जाती है । इत्यादि ॥

इति भावकर्मप्रक्रिया ॥

——*——

अथ तिङन्ते कर्मकर्त्तृप्रक्रिया ॥

अब कर्म के तुल्य क्रियाफल वाला कर्त्ता हो तब कर्त्ता—कर्मवत् हो । अर्थात् कर्म में प्रत्यय होने पर जैसे कार्य होते वैसे ही यहां भी हों ॥ जैसे—कर्त्ता में प्रत्यय की दशा में "फलं पचति" होता है अब कर्मकर्त्तृ में "पच्यते फलम्" ऐसा होगा । पच्यते * पच्येत * इत्यादि सब रूप 'कर्म में प्रत्यय' के सदृश जैसे इस से पूर्व भावकर्मप्रक्रिया में बने वैसे ही यहां भी जानो ॥ फलं पच्यते=फल आपसे ही पकता है । काष्ठं भिद्यते=लकड़ी आप से ही फटती है । इत्यादि ॥

इति कर्मकर्तृप्रक्रिया ॥

——*——

अथ तिङन्ते लकारार्थप्रक्रिया ॥

अब लकारार्थ प्रक्रिया में दश लकारों के अर्थ का व्याख्यान किया जायगा । यद्यपि दश गण और प्रक्रियाओं में उस २ लकार के रूपों के सामने भाषार्थ प्रायः लिखा गया है । उस से विद्यार्थियों को कुछ २ अर्थ का ज्ञान हो भी गया तथापि लट् आदि लकारों के व्याख्यापूर्वक विशेष अर्थों के बोधार्थ इस प्रक्रिया में नियम (सूत्र) देते हैं ॥

१–जब कि स्मरणार्थ पद समीप में हो तब धातु से भूतानद्यतन काल में लृट् होता है। जो काल बीत गया वह भूत कहाता है। और प्रातःकाल जगने के समय से रात्रि में सोने के समय पर्य्यन्त जितना काल है वह "अद्यतन" है अथवा गतरात्रि के अगले दो प्रहर, समस्त दिन और आगामिनी रात्रि के प्रथम के दो प्रहर यह "अद्यतन" है (जिसे भाषा में "आज" कहते हैं) और अद्यतन (आज) को छोड़कर जो भूतकाल है वह " अनद्यतन " भूतकाल कहाता है॥

उदाहरण–स्मरसि वत्स! मथुरायां वत्स्यामः=याद है प्यारे! हम मथुरा में बसते थे। यहां "स्मरसि" के समीप में "वत्स्यामः" यह लृट् प्रयोग होता है। इसी प्रकार–बुध्यसे यूरोपं गमिष्यामः=याद है? कि यूरोप को गये थे। चेतयसे कलाः पठिष्यामः=तू स्मरण करता है कि हम कलाओं को पढ़ते थे?। इत्यादि॥

२–परन्तु 'यत्' शब्द के योग में उक्त प्रकार लृट् नहीं होता। जैसे–अभिजानासि यद्वने अभुञ्ज्महि=याद है कि जो वन में भोजन किया था (हमने)। 'यत्' शब्द आने से "भोक्ष्यामहे" न हुवा॥

३–'स्म' के योग में अनद्यतन भूत परोक्ष काल में लट् लकार होता है। जैसे–यजति स्म युधिष्ठिरः=युधिष्ठिर ने यज्ञ किया था॥

४–वर्त्तमान के समीप का जो भूत और भविष्यत् उस में भी विकल्प करके वर्त्तमान के सदृश लट् लकार होता है। जैसे–कदाऽऽगतोऽसि=तू कब आया है। यहां आगमन क्रिया यद्यपि भूतकाल की है तथापि बहुत देर न होने से वर्त्तमान के समीप है इसीलिये "असि" यह लट् का प्रयोग हुवा। अयमागच्छामि आगमं वा=यह आया हूं। यहां यद्यपि आगमन हो चुकने से भूतकालस्थ है तथापि वर्त्तमान के समीप में 'आगच्छामि' ऐसा प्रयोग होता है और दूसरे पक्ष में 'आगमम्' यह लुङ् का प्रयोग भी। एष गच्छामि, गमिष्यामि वा=यह जाता हूं। यहां जाना क्रिया यद्यपि भविष्य में होगी तथापि वर्त्तमान के समीप होने से 'गच्छामि' यह लट् का प्रयोग भी होता है॥

५–हेतु हेतुमान् अर्थ में भविष्यत्काल में लिङ् लकार होता है। जैसे–परमात्मानं नमेच्चेत् आनन्दमाप्नुयात्=यदि परमात्मा को नमस्कार करेगा तो आनन्द को प्राप्त होगा। यहां नमस्कार करना हेतु और आनन्द पाना हेतुमान् है दोनों में 'नमेत्, और 'आप्नुयात्' ये लिङ् लकार के प्रयोग हुवे॥

६–विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, अधीष्ट, सम्प्रश्न और प्रार्थन इन अर्थों में लिङ् लकार होता है। विधि, भृत्य आदि अपने से छोटों को आज्ञा देना

प्रेरणा करना। जैसे–त्वं ग्रामं गच्छेः=तू ग्राम को जावे। निमन्त्रण, किसी आवश्यक कार्य्य में नियुक्त करना। जैसे–मम गृहे भुञ्जीत भवान्=मेरे घर में आप भोजन कीजिये। अधीष्ट, सत्कारपूर्वक किसी से कुछ निवेदन करना। जैसे–पुत्रमध्यापयेद्भवान्=आप पुत्र को पढ़ाइये। सम्प्रश्न, पूछना। जैसे–भो वेदमधीयीय वा तर्कम्?=क्योंजी! वेद पढ़ूं वा तर्क?। प्रार्थन। जैसे–मह्यमन्नं, विद्यां, शिक्षां वा दद्यात=मेरे लिये अन्न, शिक्षा वा विद्या देओ। इसी प्रकार इन्हीं अर्थों में लोट् लकार भी जानो॥

इति लकारार्थप्रक्रिया ॥

समाप्तं चेदं तिङन्तप्रकरणम् ॥

अथ कृदन्ताः ॥

इस प्रकरण में जो प्रत्यय धातु से आगे लगाये जायंगे वे 'कृत्, कहाते हैं इसी लिये इस प्रकरण को 'कृदन्त, कहते हैं । कृदन्त को प्रातिपदिक संज्ञा हो कर सुबन्त शब्द बन जाते हैं ॥

इस प्रकरण में यदि एक प्रत्यय का अपवाद दूसरा प्रत्यय कहें और वह प्रत्यय एक दूसरे से भिन्न स्वरूप का हो तौ बारी २ से दोनों ही प्रत्यय होते हैं, यह नहीं कि एक का अपवाद दूसरा कहने पर प्रथम की बाधा हो जावे, परन्तु यह नियम स्त्रीप्रत्ययों के लिये नहीं है ॥

अब अक और ल्युच् प्रत्यय पर्य्यन्त जो प्रत्यय कहेंगे वे 'कृत्य, भी कहाते हैं ॥

१–धातु से तव्य और अनीय प्रत्यय लगाये जाते हैं भाव और कर्म अर्थ में। जैसे–एधितव्यम् । एधनीयम् । चेतव्यः । चयनीयः । पक्तव्यः । पचनीयः । भेत्तव्यः । भेदनीयः । स्नातव्यम् । स्नानीयम् । दानीयम् । दातव्यम् । इत्यादि ॥

२–इसी अर्थ में एलिम प्रत्यय भी लगाते हैं । पचेलिमः । भिदेलिमः । इत्यादि ॥

३–कृत्य प्रत्यय और ल्युट् (अन) प्रत्यय बहुल करके होते हैं । बहुल का लक्षण–

क्वचित्प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद्विभाषा क्वचिदन्यदेव ।
विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति ॥१॥

अर्थ–१–जो कार्य्य किसी विधि ने न कहा हो और हो जावे । २–जो होना चाहिये परन्तु न हो । ३–नित्य कहा हो परन्तु विकल्प से होवे । ४–और कहीं इन प्रकारों के अतिरिक्त और भी कुछ व्यवहार होना । ये ४ प्रकार का "बाहुलक„ कहाता है । जैसे–दानीयोविप्रः=जिस के लिये दान दिया जाय वह दानीय ब्राह्मण । यहां दा धातु से अनीय प्रत्यय नहीं हो सक्ता था परन्तु हो गया । क्योंकि भाव और कर्म में ही उक्त प्रत्यय का नियम था, ब्राह्मण न तौ भाव है न कर्म किन्तु सम्प्रदान है (सम्प्रदान उसे कहते हैं जिसे दान दिया जावे) तथापि अनीय प्रत्यय होगया । स्नान्ति येन तत् स्नानीयम् जलम्=स्नान करते हैं जिस से वह जल स्नानीय है । यहां भी जल न तौ

भाव है न कर्म किन्तु करण है (करण उस साधन को कहते हैं जिस से कोई काम किया जावे) तथापि स्नानीय में स्ना धातु से अनीय प्रत्यय होगया ॥

४—स्वरान्त धातु से उक्त अर्थ में यत् (य) प्रत्यय होता है । जैसे—चि-चेयम् । दा—देयम् । ग्ला—ग्लेयम् । इत्यादि ॥

५—जो धातु पवर्गान्त हैं और उन में अन्त से पूर्व अक्षर अकार है उन धातुओं से उक्त अर्थों में यत् (य) प्रत्यय हो । जैसे—शप—शप्यम् । लभ—लभ्यम् ।

६—इ स्तु शास् वृ दृ जुष् इन से उक्त अर्थ में क्यप् (य) प्रत्यय होता है । इ—इत्यः स्तु—स्तुत्यः । शास्—शिष्यः । वृ—वृत्यः । आ (ङ्) दृ—आदृत्यः । जुष्—जुष्यः ॥

७—मृज धातु से विकल्प करके क्यप् (य) प्रत्यय होता है । जैसे—मृज्यः,मार्ग्यः ॥

८—ऋवर्णान्त और व्यञ्जनान्त धातुओं से (य) ण्यत् प्रत्यय होता है । कृ—कार्यम् । हृ—हार्यम् । धृ—धार्यम् । मृज्—मार्ग्यः । भुज्—भोज्यम्=भक्ष्य । भोग्यम्=पालनीय ॥ एधितव्यं धर्मेण=धर्म से बढ़ना चाहिये । एधनीयं वा । चेतव्यो धर्मः=चुनना चाहिये धर्म । चयनीयाः समिधो वेद्याम्=चुननी चाहियें समिधा वेदी में । पक्तव्यः सूपस्त्वया=तुझ को दाल पकानी चाहिये । पक्तव्यम् पायसम्=खीर पकानी चाहिये । पचेलिमः ओदनः सुष्ठु=भात भले प्रकार पकाना चाहिये । भेत्तव्यो रिपुमूर्द्धा वीरेण=छिन्न करना चाहिये शत्रु-शिर वीर को । भेदनीयं न जलम्=पानी न तोड़ना चाहिये । स्नातव्यं प्रत्यहं प्रातः=प्रातःकाल नित्य स्नान करना, स्नानीयं वा । भिक्षुकेभ्यो भोजनं दातव्यं दानीयं देयं वा=भिक्षुकों के लिये भोजन देना । भिदेलिमा भित्तिः=भींत तोड़नी । चेयं धनं धर्माय=धर्म के लिये धन संचय करना । ग्लेयं पापात् धर्मात्मना=धर्मात्मा को पाप से ग्लानि करनी । सभ्येन सभायां निरर्थकं न शप्यम्=सभ्य को सभा में व्यर्थ न बोलना । लभ्यं धनं वाणिज्येन=वाणिज्य से धन प्राप्त करना । इत्यो ग्रामो मया=मुझ को ग्राम जाना । स्तुत्यो गुरुः शिष्येण=शिष्य को गुरु स्तुत करना । शिष्यो गुरुणा छात्रः=गुरु को विद्यार्थी सिखाना चाहिये । वृत्यः पुरुषः कन्यया=वरना चाहिये पुरुष कन्या को । आदृत्याः सर्वे जनाः=आदर किये जावें सब मनुष्य । मृज्यम् पात्रम्=वर्त्तन मांजना चाहिये । कार्य्यो धर्मः=करना चाहिये धर्म । सभा कार्य्या=सभा करनी । कार्य्यं गृहम्=घर करना, बनाना । हार्य्यं न कस्यापि धनम्=किसी का भी धन नहीं चुराना । धार्यं तेजः=तेज धारना । मार्ग्यः सूपः=दाल साफ़ करनी । भोज्य ओदनः=भात खाना । भोग्या प्रजा=प्रजा पालनी । इत्यादि ॥

इति कृत्यप्रक्रिया ॥

९–कर्त्ता अर्थ में धातु से ण्वुल् (अक) और तृच् प्रत्यय होते हैं। जैसे–कृ–यः करोति सः–कारकः। तृच्–कर्त्ता। हर्त्ता। भर्त्ता। वक्ता। पक्ता। भोक्ता। गन्ता। याता। दाता। ग्रहीता। भविता। चेतिता। अत्ता। होता। देविता। सोता। तोत्ता। तनिता। क्रेता। चोरिता। हारकः। वाचकः। पाचकः। भोजकः। गमकः। दायकः। ग्राहकः। भावकः। चेतकः। तोदकः। इत्यादि॥

१०–पचादि धातुओं से कर्त्ता अर्थ में अच् प्रत्यय होता है। पचादि गण की पहचान स्वरूप से ही करनी होगी तथापि कुछ रूप लिखे जाते हैं–पचः। नदः। नदी। चोरः। चोरी। देवः। देवी। जारभृ–जारभरा। श्वन् पच्–श्वपचा। यङन्त क्री–चेक्रियः। नी–नेन्यः। लू–लोलुवः। लुप–लोलुपः। पू–पोपुवः। सृज–सरीसृजः। चर–चराचरः। चल–चलाचलः। पत–पतापतः। वद–वदावदः। हन्–घनाघनः। चरः। पतः। वदः। हनः। रात्रि–चर–रात्रिञ्चरः। रात्रिचरः। इत्यादि॥

११–ग्रह आदि धातुओं से णिनि (इन्) प्रत्यय होता है। जैसे–ग्राही। स्थायी। मन्त्री। विशयी। विषयी। परि भू–परिभावी, परिभवी। वाची। वादी। प्रतिवादी। इत्यादि॥

१२–नदि आदि धातुओं से ल्यु (अन) प्रत्यय होता है। नदि–नन्दनः। लवणः। छेदनः। भेदनः। वचनः। करणः। इत्यादि॥

उदाहरणानि–

घटस्य कर्त्तारं बोधयामि=घड़े के बनाने वाले को समझाता हूं। धनस्य हर्त्तारं दण्डयामि। राज्यस्य भर्त्तारं नमामि। वक्तारो व्याख्यास्यन्ते। पक्तारः पक्ष्यन्ति। भोक्तारो भोक्ष्यन्ते। गन्तारो गमिष्यन्ति। यातारो यास्यन्ति। दातारो दास्यन्ति। ग्रहीतारो ग्रहीष्यन्ति। भवितारो भविष्यन्ति पण्डिताः। चेतितारश्चेतिष्यन्ति। अत्तारोऽत्स्यन्ति। होतारौ होष्यतः। देवितारः क्रीडिष्यन्ति। सोता सोष्यति सोमम्। तोत्ता जनानां न सुखं समेधते। शाकंपच आगतः। वशंवदा किं कथयति। नदे नद्यां वा बहु जलं प्रवहति। वृद्धेयं चोरी वर्त्तते। कल्माषपादोऽयं चोरोऽस्ति। वायुर्देवोऽस्ति। उषा देवी राजते। जारभरा कुलटा नेयं कुलाङ्गना। श्वपचा चाण्डाली। श्वपचः पुमांश्चाण्डालः। चेक्रियो रेलीभ्राता=रेलीब्रादर (एक प्रसिद्ध व्यापारी का नाम) अत्यन्त ख़रीदार है। नेन्यः सहि अन्नस्य=वही अन्न का अतिशय पहुंचाने वाला है। लोलुवः क्षेत्रेषु प्रशस्यते=अतिकाटने वाला क्षेत्रों में प्रशंसा पाता

है। लोलुपः साधुषु निन्द्यते। पोपुवः प्रशस्यते। सरीसृजः पात्राणां भृत्योऽयम्। चराचरो दूतोऽयम्। पतापतो निर्बुद्धिः। वदावदः पण्डितोऽयम्। घनाघनः शूरः। रात्रिञ्चरा राक्षसा भवन्ति इत्यादि॥

भूतकाल में धातु से क्त, प्रत्यय लगाया जाता है कर्म अर्थ में। कृ=करना से, जो किया गया सो—कृतः। मृतः। धृतः। दत्तः। जितः। पराजितः। दृष्टः। श्रुतः। ज्ञातः। उक्तः। कथितः। गृहीतः। मारितः। पाठितः। अध्यापितः। अधीतः। मतः। इत्यादि॥

भूतकाल में धातु से कर्त्ता अर्थ में क्तवतु प्रत्यय लगाते हैं। जैसे—जिस ने पढ़ लिया वह—अधीतवान्। जिस ने चल लिया वह—गतवान्। कृतवान् अध्यापितवान्। दत्तवान्। हतवान्। दृष्टवान्। ज्ञातवान्। उक्तवान्। कथितवान्। क्रीतवान्। चोरितवान्। इत्यादि॥

अकर्मक और गति अर्थ वाले धातुओं से कर्त्ता अर्थ में क्त प्रत्यय लगाते हैं। जैसे—गतः। मृतः। भूतः। स्थितः। भीतः। आङ् रुह—आरूढ़ः। इत्यादि॥

धातु से तुमुन् (तुम्) प्रत्यय लगाते हैं जब कि वह क्रिया किसी दूसरी क्रिया का प्रयोजन हो। जैसे भुज्—भोक्तुं गच्छति=खाने को जाता है। यहां भोजन क्रिया प्रयोजन है गमन क्रिया का। इसी प्रकार—स्थातुम्। पठितुम्। अध्येतुम्। मारितुम्। सीवितुम्। भवितुम्। अत्तुम्। होतुम्। देवितुम्। श्रोतुम्। चोरितुम्। क्रेतुम् इत्यादि शब्द अव्यय बन जाते हैं॥

जब कि दो क्रियाओं में एक पूर्वकाल की दूसरी उत्तरकाल की क्रिया हो तो पूर्वकाल की क्रिया में वर्त्तमान धातु से क्त्वा प्रत्यय लगाते हैं। जैसे—भुज्—क्त्वा—भुक्त्वा पठति=खाकर पढ़ता है। यहां भोजन और पठन दो क्रियाओं में भोजन क्रिया का पूर्वकाल और पठन क्रिया का उत्तर काल है इस लिये भुज् धातु से क्त्वा प्रत्यय हुवा। इसी प्रकार, कृत्वा। मत्वा। पठित्वा। गत्वा। स्थित्वा। इत्यादि॥

पूर्वोक्त अर्थ में क्त्वा के स्थान में ल्यप् (य) रहता है जब कि नञ् छोड़ कर कोई अन्य पद धातु से मिला हो। जैसे—उत्—स्था—उत्थाय। प्र—णम्—प्रणम्य। सम्—कृ—संस्कृत्य। उत्—लिख—उल्लिख्य। इत्यादि शब्द भी अव्यय बन जाते हैं॥

इस कृदन्त प्रकरण को यहीं समाप्त करते हैं। हमारी समझ में इस चतुर्थ-पुस्तक को पढ़ चुकने पर विद्यार्थी संस्कृत पुस्तक से ही संस्कृत पढ़ने की योग्यता रखेंगे अतः इस कृदन्त प्रकरण को संस्कृत में ही जो व्याकरण हैं तथा एक उत्तम पुस्तक संस्कृत में ही हम भी प्रकाशित करेंगे उसी द्वारा भी पढ़ना उत्तम होगा। यह प्रकरण विस्तृत अवश्य है परन्तु सुगम होने से संस्कृत द्वारा पढ़ना सुलभ है॥

इति कृदन्ताः॥

अथ कारकप्रकरणम् ॥

अब प्रथमा द्वितीयादि ७ विभक्तियों के स्थान का वर्णन करेंगे। किस २ स्थान में कौन २ विभक्ति होनी चाहिये सो २ आगे लिखे अनुसार जानो॥

"कारक" उसे कहते हैं जिस का क्रिया से साक्षात् (डैरेक्ट वा सीधा) सम्बन्ध हो। जैसे—कुलालो घटं करोति। यहां कुलाल कर्त्ता, घट कर्म, और करोति क्रिया पद है। करना रूप क्रिया का, कुलाल और घट दोनों से साक्षात् सम्बन्ध है। क्योंकि न तौ कुलाल विना करना बन सक्ता न कर्म घट विना करना बन सक्ता है। इसी प्रकार करण सम्प्रदान अपादान और अधिकरण ये ४ मिल कर सब ६ कारक होते हैं। इन सब का अर्थ उस २ कारक के अवसर में करेंगे॥

१—जब किसी प्रातिपदिक का अर्थमात्र वा उस का स्त्री पुरुष नपुंसक इन में से कोई लिङ्गमात्र वा एक द्वि बहु इन में से कोई वचनमात्र ही दिखलाना हो अन्य कोई कारक न हो तब उस प्रातिपदिक से प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—घटः। स्त्री। कुलम्। रामलक्ष्मणौ। वनानि। इत्यादि। यहां इन शब्दों का अर्थ लिङ्ग और वचनमात्र ही बतलाया गया है किन्तु ये घटादि पदार्थ बनते, विगड़ते, रखे, फेंके, फोड़े, गये, आये आदि किसी क्रिया विशेष से सम्बद्ध नहीं हैं। अर्थात् संस्कृत में जब किसी वस्तु का नाममात्र भी लेना होता है तौ विना प्रथमा विभक्ति के प्रयोग नहीं होता॥

२—सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—हे राम। भो बालकौ। हे शिष्याः इत्यादि॥

३—कर्त्ता, क्रिया के फल को जिस पर अत्यन्त चाहे वह 'कर्म' कहाता है और उस में द्वितीया विभक्ति होती है। परन्तु यदि कर्म में ही प्रत्यय हुवा हो तब तौ कर्म में प्रथमा ही होती है। जैसे—वेदं पठति। यहां पढने वाला पठन क्रिया के फल को वेद पर चाहता है कि पठन से वेद पठित होजावे इसलिये वेद कर्म है उस में द्वितीया विभक्ति हुई। ऐसे ही, ग्रामं गच्छति। घृतं स्पृशति। मिष्टं खादति। पायसं जुहोति। अश्वं तुदति। सोमं सुनोति। पुत्रं सूते। वस्त्रं तनोति। कटं करोति। कम्बलं क्रीणाति। धनं चोरयति इत्यादि॥

परन्तु जब कर्म में प्रत्यय होता है तब इन सब कर्मों में प्रथमा होती है जैसे—वेदः पठ्यते=वेद पढ़ा जाता है। ग्रामो गम्यते। घृतं स्पृश्यते। सूपः खाद्यते। पायसो हूयते। उष्ट्रस्तुद्यते। सोमः सूयते। पुत्री सूयते मात्रा। सन्तवस्तन्यन्ते। कटः क्रियते। कम्बलः क्रीयते। मुद्राश्चोर्यन्ते इत्यादि ॥

४—और अकथित कर्म में भी द्वितीया होती है। अथितकर्म—जैसे, दुह याच, पच, दण्ड, रुध, प्रच्छ, चि, ब्रू, शास, ब्रु, जि, मन्थ और मुष तथा इन्हीं के समानार्थ वाले अन्य धातुओं के दो कर्म होते हैं एक कथित दूसरा अकथित अर्थात् एक मुख्य दूसरा गौण। इस सूत्र से गौण कर्म में भी द्वितीया होती है यह कहा गया है। जैसे—गां दुग्धं दोग्धि=गौ से दूध को दुहता है। यहां दूध तो मुख्यकर्म है और गौ गौणकर्म है उस में भी द्वितीया विभक्ति हुई। ऐसे ही, धनिनं कम्बलं याचते भिक्षुः। तण्डुलानोदनं पचति सूदः। अपराधिनं शतं दण्डयति। गां गोष्ठं रुणद्धि। बालं पन्थानं पृच्छ। वृक्षं फलानि अवचिनुहि। शिष्यं धर्मं ब्रूहि। पुत्रं धर्मं शाधि। शत्रुं ग्रामं जयति। दुग्धं घृतं मथ्नाति। धूर्त्तो धनिनं शतं मुष्णाति। अजां ग्रामं नयति। इत्यादि ॥

५—जिस साधन की सहायता से कर्त्ता अपना काम करे वह करण कहाता है और काम करने में जो स्वतन्त्र हो वह कर्त्ता कहाता है। कर्त्ता और करण इन दोनों में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—वीरेण असिना शत्रुर्हतः=वीरने खड्ग से शत्रु मारा। यहां वीर पुरुष मारने के काम में स्वतन्त्र है इस से कर्त्ता है उस में तृतीया हुई और खड्ग मारने का साधन है इस से असि (खड्ग] में भी तृतीया हुई ॥

परन्तु यदि कर्त्ता वा करण में प्रत्यय हो तब इन दोनों में भी प्रथमा ही होती है। जैसे—वीरो हन्ति। यहां हन् धातु से कर्त्ता में तिङ् प्रत्यय है और वीर कर्त्ता है इसलिये उस में प्रथमा हुई। करण में प्रत्यय का उदाहरण कृदन्त पूर्ण पढ के आवेगा ॥

६—दाता जिस के लिये दान करे वह सम्प्रदान कहाता है उस में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—ब्राह्मणाय गां ददाति यजमानः। विद्यार्थिने पुस्तकं विद्यां च ददति पण्डिताः। शीतार्त्ताय कम्बलं देयम्। बुभुक्षितायान्नं दातव्यम्। पिपासवे जलं दानीयम्। इत्यादि ॥

७—नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् और वषट् इन के अर्थ से जिस

शब्द का योग हो उस से चतुर्थी विभक्ति होती है । जैसे—परमात्मने नमः । राज्ञे स्वस्ति । अग्नये वायवे वरुणाय इन्द्राय प्रजापतये सूर्य्याय चन्द्रमसे वा स्वाहा । पितृभ्यः स्वधा । अलम्=पर्य्याप्त, काफ़ी—अलं मल्लोऽयमपरमल्लाय । अलमन्नमिदं क्षुधायै । अलं जलं पिपासायै । इन्द्राय वषट्=इन्द्र के लिये पूजा सत्कार । इत्यादि ॥

८—दो पदार्थों का विभाग जब होता है तो जहां से विभाग हो उसे अपादान कहते हैं अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है । जैसे—वृक्षात् फलानि पतन्ति । यहां वृक्ष और फल का विभाग वृक्ष अवधि से हुवा है अतः वृक्षसे पञ्चमी हुई । अश्वात् पतति । पर्वतात् गङ्गा अवतरति । ग्रामादागच्छति । गृहादागतः । इत्यादि ॥

९—शेष अर्थात् प्रातिपदिकार्थ मात्रादि जहां प्रथमा होती है उस से तथा, कर्त्ता कर्म करण सम्प्रदान अपादान और अधिकरण इन सब कारकों और सम्बोधन से शेष रहा जो "सम्बन्ध" उस में षष्ठी विभक्ति होती है । जैसे—मम वस्त्रम् । यहां मेरा वस्त्र के साथ सम्बन्ध है । गुरोश्चरणयोः कृपा । यहां गुरु का चरणों से और चरणों का कृपा से सम्बन्ध है । पितुः पुत्रः । देवदत्तस्याश्वः । विष्णुमित्रस्य पुस्तकम् । इत्यादि ॥

१०—आधार को अधिकरण कहते हैं उस में सप्तमी विभक्ति होती है । और दूर समीप शब्द और इन्हीं के अर्थ वाले अन्य शब्दों से भी सप्तमी होती है । अधिकरण को कोई लोग ३ प्रकार का मानते हैं १—ऊपर २—विषय में ३—भीतर । जैसे—आसने उपविशति=आसन के ऊपर बैठता है । मोक्षे बुद्धिरस्ति=मोक्षविषय में बुद्धि है । तिलेषु तैलमस्ति । गृहे गृहिणी अस्ति । घर के भीतर स्त्री है । दूरे वसामि । समीपे तिष्ठामि । अन्तिके पठामि इत्यादि ॥

इति कारकविभक्तयः ॥

अथ उपपदविभक्तयः ॥

उपपद विभक्ति किसी समीपस्थ पद के कारण से हुवा करती हैं । जैसे—

११—पृथक्, विना और नाना के योग में तृतीया, पञ्चमी वा द्वितीया होती है । जैसे—गृहात् पृथक् तिष्ठ । मां पृथक् गच्छ । रामेण पृथक् लक्ष्मणः ।

पापं विना न दुःखम् । पुण्येन विना न सुखम् । भ्रातुर्विना कः सुखकारकोऽस्ति। इत्यादि ॥

१२—हेतु शब्द और तस के योगमें षष्ठी होती है । जैसे—भोजनस्य हेतोस्तिष्ठति भिक्षुः । पठनस्य हेतोर्गच्छामि इत्यादि ॥

१३—उपरि अधि अधस् प्रति आदि के योग में द्वितीया होती है । जैसे:—गृहमुपरि शेते । ग्राममधितिष्ठति । भूमिमधः पातालम् । कं प्रतिवदति । मां प्रत्युक्तम् । इत्यादि ॥

इत्युपपदविभक्तयः ।

समाप्तश्च कारकप्रकरणम् ॥

अथ समासप्रकरणम् ॥

समास छः प्रकार का होता है, यथा—अव्ययीभाव तत्पुरुष द्वन्द्व बहुव्रीहि कर्मधारय और द्विगु। इन में से द्विगु और कर्मधारय ये दोनों तत्पुरुष के अन्तर्गत होकर चार समास रहते हैं। उन में प्रथम—

अव्ययीभाव ॥

अव्यय प्रकरण में अव्यय पढ आये हैं। विभक्ति, समीप, समृद्धि, व्यृद्धि, अर्थाभाव, अत्यय, असम्प्रति, शब्दप्रादुर्भाव, पश्चात्, यथा, आनुपूर्व्य, यौगपद्य, सादृश्य, सम्पत्ति, साकल्य और अन्तवचन इन अर्थों वाला कोई अव्यय शब्द किसी सुबन्त के साथ जोड़ा जावे वह अव्ययीभाव *समास कहाता है जैसे—७विभक्ति के अर्थ में अधि अव्यय का हरि के साथ समास किया तो अधिहरि=हरि में। अधिहरि आदि अव्ययीभाव समास किये हुवे समस्त शब्द नपुंसक लिङ्ग और प्रथमा के एकवचनान्त ही रहते हैं। अधिस्त्रि=स्त्री में। अधिगृहम्=घर में। समीप—कृष्णस्य समीपे=उपकृष्णम्। उपकुम्भम्। इत्यादि। समृद्धि—धनस्य समृद्धिः=सुधनम्। सुरूपम्। सुलक्ष्मि। इत्यादि। व्यृद्धि—यवनानां व्यृद्धिः=दुर्यवनम्। पापानां व्यृद्धिः=दुष्पापम् इत्यादि। अर्थाभाव—मक्षिकाणामभावः=निर्मक्षिकम्। धनस्याभावः=निर्धनम्। निर्जलम्। निर्विघ्नम्। निःशकटम्। निःपशु। निर्मनुजम्। निर्मनुष्यम्। इत्यादि। अत्ययो नाशः—हिमस्याऽत्ययः=अतिहिमम्। निद्राया अत्ययः=अतिनिद्रम्। अतिक्षुधम्। अतिहिमम् इत्यादि। असम्प्रति—निद्रा सम्प्रति न युज्यते=अतिनिद्रम् इत्यादि। शब्दप्रादुर्भाव—हरिशब्दस्य प्रादुर्भावः प्रकाशः=इतिहरि इत्यादि। पश्चात्—विष्णोः पश्चात्=अनुविष्णु। अनुशिवम्। यथा—यथा शब्द के ४ अर्थ हैं। योग्यता, वीप्सा, पदार्थानतिवृत्ति और सादृश्य। इन में से योग्यता—रूपस्य योग्यम्=अनुरूपम् इत्यादि। वीप्सा—अर्थमर्थं प्रति=प्रत्यर्थम्=अर्थ अर्थ के प्रति, हरएक अर्थ के प्रति इत्यादि। पदार्थानतिवृत्ति—किसी पदार्थ

* अनेक पदों का एक पद बनाना समास कहाता है।

को उल्लङ्घन न करना । जैसे—शक्तिमनतिक्रम्य=यथाशक्ति=शक्ति के अनुसार वा शक्ति को न उल्लङ्घन करके इत्यादि । सादृश्य—ब्राह्मणस्य सादृश्यम्=यथाब्राह्मणमधीते शूद्रः=शूद्र ब्राह्मण के सदृश पढ़ता है इत्यादि । आनुपूर्व्य—ज्येष्ठस्यानुपूर्व्येण=अनुज्येष्ठम्=ज्येष्ठ—बड़े के अनुक्रमपूर्वक । इत्यादि । यौगपद्य—एक साथ—जैसे—चक्रेण युगपत्=सचक्रम् भ्राम्यति पिपीलिका=कीड़ी चक्र के साथ घूमती है इत्यादि । सादृश्य—सदृशः सख्या=ससखि । इत्यादि । सम्पत्ति—क्षत्रियाणां सम्पत्तिः=सक्षत्रियम् इत्यादि । साकल्य—तृणमपरित्यज्य=सतृणम् भुङ्क्ते=तृण न निकाल कर खाता है किन्तु सकल—सब खाता है इत्यादि । अन्तवचन—न्यायपर्य्यन्तम्=सन्यायमधीते=न्याय तक पढ़ता है ॥

अव्ययीभाव समास में अकारान्त शब्द समास होकर नपुंसक लिङ्ग प्रथमैकवचनान्त रहते हैं परन्तु पञ्चमी तृतीया और सप्तमी के रूप भिन्न २ होते हैं जैसे—५—उपकुम्भात् ३—उपकुम्भेन ७—उपकुम्भे । इसी प्रकार अन्य शब्दों के भी रूप जानो ॥

संख्यावाचक शब्दों का नदीवाचक शब्दों के साथ समास होता है वह अव्ययीभाव समास कहाता है । जैसे—पञ्च गङ्गाः=पञ्चगङ्गम् । द्वियमुनम् । इत्यादि ॥

जब अव्ययीभाव समास में शरद् आदि शब्दोंका अव्यय के साथ समास होता है तब शरद् आदि व्यञ्जनान्त शब्द टच् प्रत्यय होकर अकारान्त बन जाते हैं । जैसे—शरदः समीपम्—उपशरदम् । विपाशं प्रति=प्रतिविपाशम् । विपाश् शब्द शकारान्त से अकारान्त होगया । यह एक नदी का नाम है । इत्यादि ॥

अव्ययीभाव में जरा शब्द को जरस् हो जाता है । जरायाः समीपम्=उपजरसम् इत्यादि ॥

अव्ययीभाव में अन्नन्त शब्द भी टच् प्रत्यय होकर अकारान्त बन जाते हैं । राज्ञः समीपम्=उपराजम् । आत्मानमधिकृत्य=अध्यात्मम् । इत्यादि ॥

परन्तु जो नपुंसक लिङ्ग नकारान्त हैं वे अव्ययीभाव में विकल्प से अकारान्त बनते हैं । जैसे चर्मन् शब्द नपुंसक लिङ्ग है उस का उप के साथ समास हुवा तो—चर्मणः समीपम्=उपचर्मम्, उपचर्म । इत्यादि ॥

जिन शब्दों के अन्त में वर्गों के प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ अक्षर हों, वे शब्द अव्ययीभाव में विकल्प से अकारान्त होजाते हैं । ककुभः समीपम्=उ-

पककुप्, उपककुभम् । समिधः समीपम्=उपसमित्, उपसमिधम् । स्रजः समीपम्=उपस्रक्, उपस्रजम् । त्वचः समीपम्=उपत्वक्, उपत्वचम् इत्यादि ॥

इत्यव्ययीभावः ॥

अथ तत्पुरुषः ॥

श्रित अतीत पतित गत अत्यस्त प्राप्त और आपन्न ये सुबन्त, द्वितीयान्त सुबन्त के साथ मिलाये जाते हैं तो तत्पुरुष समास होता है । परमात्मानं श्रितः=परमात्मश्रितः । राम शब्द के तुल्य ७ विभक्तियां होंगी । ऐसे ही दृष्टिम् अतीतः=दृष्ट्यतीतः । इन्द्रियातीतः । कूपं पतितः=कूपपतितः । ग्रामं गतः=ग्रामगतः । दिशमत्यस्तः=दिगत्यस्तः । ग्रामं प्राप्तः=ग्रामप्राप्तः । विपदमापन्नः=विपदापन्नः । इत्यादि ॥

किसी ऐसे सुबन्त से तृतीयान्त का समास हो, जो उस तृतीयान्त से ही किया हुवा और गुणवाचक हो तो तत्पुरुष समास होता है । जैसे शङ्कुलया खण्डः=शङ्कुलाखण्डः । यहां शङ्कुला—सरोंते से ही किया हुवा खण्ड—टुकड़ा जो गुणवाचक है समास को प्राप्त हुवा अतः यह तत्पुरुष समास कहाया ॥

तृतीयान्त सुबन्त, अर्थ सुबन्त के साथ समास पावे तो तत्पुरुष होता है । पठनेन अर्थः=पठनार्थः । धान्यार्थः । भोजनार्थः । कर्त्ता और करण कारक के सुबन्त (जो कि तृतीयान्त होते हैं, देखो कारक) कृदन्त सुबन्त के साथ मिलते हैं तो तत्पुरुष समास होता है । जैसे—ईश्वरेण रक्षितः=ईश्वररक्षितः । यहां ईश्वरेण कर्त्ता है और रक्षितः यह उस का कर्म कृदन्त है । नखैः विदारितः=नखविदारितः । यहां नखैः करण है और विदारितः कर्म कृदन्त है । इत्यादि ॥

चतुर्थी विभक्त्यन्त सुबन्त, तदर्थ अर्थ बलि हित सुख और रक्षित सुबन्तों से मिले तो तत्पुरुष होता है । तदर्थ—यूपाय दारु=यूपदारु । यूप—यज्ञस्तम्भ । द्विजार्थः सूपः । भूतेभ्यो बलिः=भूतबलिः । गवे हितम्=गोहितम् । मनुष्येभ्यः सुखम्=मनुष्यसुखम् । गुरवे रक्षितम्=गुरुरक्षितम् । इत्यादि ॥

पञ्चम्यन्त सुबन्त, भय सुबन्त से मिले तो तत्पुरुष होता है । चोरात् भयम्=चोरभयम् । इत्यादि ॥

पञ्चम्यन्त जो स्तोक अन्तिक दूर और दूरार्थवाचक तथा कृच्छ्र सुबन्त, क्तप्रत्ययान्त सुबन्त के साथ मिलें तो तत्पुरुष होता है । और पञ्चमी विभक्ति

एक पद होने पर भी बीच में बनी रहती है। जैसे—स्तोकात् आगतः=स्तोकादागतः। अन्तिकादागतः। अभ्यासादागतः। दूरादागतः। कृच्छ्रान्मुक्तः। इत्यादि ॥

षष्ठ्यन्त सुबन्त, किसी सुबन्त से मिले तो तत्पुरुष होता है। राज्ञः मन्त्री=राजमन्त्री। इत्यादि ॥

पूर्व अपर अधर उत्तर ये सुबन्त जब कि अवयववाचक हों और अवयवी के साथ मिलें तो तत्पुरुष समास होता है। यदि अवयव अवयवी में जुड़ा हो (एक ही अधिकरण हो)। जैसे—पूर्वं कायस्य=पूर्वकायः। यहां काय अवयवी और पूर्व उस का अवयव है और दोनों अर्थात् काय (अवयवी) और पूर्व (अवयव) इकट्ठे हैं। ऐसे ही—अपरकायः। अधरकायः। उत्तरकायः इत्यादि। यदि एकाधिकरण न कहते तो, पूर्वः छात्राणाम्। यहां भी समास होजाता ॥

अर्ध सुबन्त (आधे का वाचक), सुबन्त से नपुंसक लिङ्ग में मिले तो तत्पुरुष होता है। अर्धं पिप्पल्याः=अर्धपिप्पली इत्यादि ॥

सप्तम्यन्त सुबन्त, शौण्डादि सुबन्तों से मिले तो तत्पुरुष होता है। अक्षेषु शौण्डः=अक्षशौण्डः। द्यूते निपुणः=द्यूतनिपुणः। इत्यादि ॥

दिशा और संख्या के वाचक सुबन्त, समानाधिकरण सुबन्त से मिलें और मिलकर कोई संज्ञा बने तो तत्पुरुष समास होता है। पूर्वः इषुकामशमी=पूर्वेषुकामशमी। पूर्वला इषुकामशमी (ग्रामविशेष)। सप्त ऋषयः=सप्तर्षयः। इत्यादि। जहां संज्ञा नहीं वहां समास नहीं होता। जैसे—पञ्च ब्राह्मणाः। उत्तराः वृक्षाः। इत्यादि ॥

तद्धितार्थ का विषय हो, उत्तर पद परे हो वा समाहार वाच्य हो तो दिशा और संख्या के वाचक शब्द समास को प्राप्त हों वह तत्पुरुष समास हो। तद्धित का अर्थ स्पष्ट करके तद्धित प्रकरण में जाना जायगा तथापि भव (होने) आदि अर्थों में जो प्रातिपदिकों से आगे प्रत्यय लगाये जाते हैं वे तद्धित कहाते हैं। तद्धितार्थ—पूर्वस्यां शालायां भवः—पौर्वशालः=पञ्च गावो धनं यस्य=पञ्चगवधनः।

समानाधिकरणों का जो तत्पुरुष वह कर्मधारय=समास कहाता है। एक ही अर्थ को जो शब्द कहें वे समानाधिकरण कहाते हैं। जैसे—रक्ता लता=रक्तलता। वृद्धः पुरुषः=वृद्धपुरुषः। इत्यादि ॥

जिस तत्पुरुष में पूर्व पद संख्यावाचक हो वह द्विगु कहाता है। द्वौ गावौ समाहृतौ=द्विगवम्। पञ्चगवम्। इत्यादि ॥

उपमान वाचक सुबन्त, सामान्य सुबन्तों से मिले तो कर्मधारय समास होता है। घन इव श्यामः=घनश्यामः। इत्यादि ॥

शाकपार्थिवादि शब्दों में मध्यमपद का लोप होजाता है। शाकप्रियः पार्थिवः=शाकपार्थिवः। देवप्रियः ब्राह्मणः=देवब्राह्मणः। इत्यादि ॥

न (ञ्) का सुबन्त के साथ समास हो। न ब्राह्मणः=अब्राह्मणः। न शुभम्=अशुभम्। न अश्वः=अनश्वः। न उत्तमः=अनुत्तमः। इत्यादि ॥

कु आदि भी, सुबन्तों के साथ नित्य समस्त होते हैं। कु पुरुषः=कापुरुषः, कुपुरुषः। सु पुरुषः=सुपुरुषः। दुः पुरुषः=दुष्पुरुषः। प्र मादः=प्रमादः। ऊरी कृत्य=ऊरीकृत्य। इत्यादि ॥

अति आदि शब्द, द्वितीयान्त सुबन्तों के साथ समास को प्राप्त होते हैं क्रान्तादि अर्थों में। अतिक्रान्तोमालाम्=अतिमालः। इत्यादि ॥

अवादि उपसर्ग, तृतीयान्त सुबन्तों के साथ समास को प्राप्त हों क्रुष्टादि अर्थों में। अवक्रुष्टः कोकिलया=अवकोकिलः। कोयल से बुलाया गया। इत्यादि॥

परि आदि उपसर्ग, चतुर्थ्यन्त सुबन्तों से मिलें ग्लानादि अर्थों में। अध्ययनाय परिग्लानः=पर्य्यध्ययनः ॥

निर् आदि उपसर्ग, क्रान्तादि अर्थों में पञ्चम्यन्त सुबन्त के साथ समास को प्राप्त हों। मथुरायाः निष्क्रान्तः=निर्मथुरः ॥

कृदन्तों के साथ उन के उपपदों का समास होता है। जैसे—कुम्भं करोति=कुम्भकारः। भारं वहति=भारवाट्। जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद संख्यावाचक और अव्यय हों तथा उत्तरपद अङ्गुलि हो तो समासान्त अ (च्) प्रत्यय लगाते हैं। द्वे अङ्गुली प्रमाणमस्य=द्व्यङ्गुलम्। निर्गतमङ्गुलिभ्यः=निरङ्गुलम् इत्यादि ॥

जब अहन् शब्द का रात्रि के साथ द्वन्द्व समास हो (जिसे आगे कहेंगे) तथा सर्व, एकदेशवाचक, संख्यात और पुण्य शब्दों से आगे रात्रि शब्द का समास हो तब समासान्त अच् प्रत्यय लगाते हैं। जैसे—अहश्च रात्रिश्च=अहोरात्रः। सर्वा रात्रिः=सर्वरात्रः। पूर्वं रात्रेः=पूर्वरात्रः। यहां पूर्व शब्द रात्रि के एकदेश का वाचक है। संख्याताः रात्रयः=संख्यातरात्रः।

जिस रात्रि के पूर्व संख्यावाचक शब्द हो वह नपुंसक लिङ्ग होता है।

जैसे–द्वे रात्री=द्विरात्रम्। तिस्रः रात्रयः=त्रिरात्रम्। पञ्चरात्रम्। इत्यादि॥

राजन् अहन् और सखि शब्द जिनसे आगे हों उन का तत्पुरुष टच् (अ) प्रत्ययान्त होता है। राज्ञां परमः=परमराजः। महान् राजसु=महाराजः देवदत्तस्य सखा=देवदत्तसखः। अहस्सु द्वादशः=द्वादशाहः। इत्यादि॥

अथ बहुव्रीहिः ॥

अन्यपद का अर्थ जिस में पाया जाय वह बहुव्रीहि समास अनेक सुबन्तों का सुबन्तों के साथ होता है। जैसे–कण्ठे कालो यस्य सः=कण्ठेकालः। त्वचिसारो यस्य सः=त्वचिसारः। प्राप्तम् उदकं यं सः=प्राप्तोदकः। ऊढो रथो येन सः=ऊढरथः वृषभः। उद्धृतम् ओदनं यस्याः सा=उद्धृतौदना स्थाली। पीतम् अम्बरं यस्यः सः=पीताम्बरः। वीराः पुरुषा यस्मिन् सः=वीरपुरुषकः। प्र पतितानि पर्णानि यस्य सः=प्रपर्णः। न पुत्रो यस्य सः=अपुत्रः। चित्राः गावो यस्य सः=चित्रगुः। रूपवती भार्य्या यस्य सः=रूपवद्भार्य्यः। वामोरूः भार्य्या यस्य सः=वामोरुभार्यः। कल्याणी पञ्चमी यासां ताः=कल्याणीपञ्चमाः। स्त्री प्रमाणी यस्य सः=स्त्रीप्रमाणः। कल्याणी प्रिया यस्य सः=कल्याणीप्रियः। दीर्घे सक्थिनी यस्य सः=दीर्घसक्थः। कमले इव अक्षिणी यस्य सः=कमलाक्षः। जलजाक्षः। स्वक्षः। दुरक्षः। द्व्यक्षः। चतुरक्षः। दीर्घे सक्थिनी यस्य तत्=दीर्घसक्थि। यह प्रयोग जड पदार्थों की वाच्यता में होता है। स्थूले अक्षिणी यस्यां सा=स्थूलाक्षा यष्टिः। द्वौ मूर्द्धानौ यस्य सः=द्विमूर्द्धः। त्रिमूर्द्धः। अन्तः लोमानि यस्य सः=अन्तर्लोमः। बहिर्लोमः। व्याघ्रस्य पादौ इव पादौ यस्य सः=व्याघ्रपात्। द्वौ पादौ यस्य सः=द्विपात्। चतुष्पात्। सु (शोभनौ) पादौ यस्य सः=सुपात्। उत् (उच्चैः) काकुदं यस्य सः=उत्काकुत्। विकाकुत्। पूर्णकाकुत्, पूर्णकाकुदः। सु (शोभनं) हृदयं यस्य सः=सुहृद्। दुर्हृद्। व्यूढम् उरो यस्य सः=व्यूढोरस्कः। विशालोरस्कः। स्थूलोरस्कः। दृढोरस्कः। प्रियं सर्पिः यस्य सः=प्रियसर्पिष्कः। युक्तः योगः येन सः=युक्तयोगः। महत् यशो यस्य सः=महायशस्कः, महायशाः इत्यादि॥

अथ द्वन्द्वः ॥

च के अर्थ में सुबन्तों का सुबन्तों के साथ द्वन्द्व समास होता है। जैसे–वटश्च पिप्पलश्च=वटपिप्पलौ। धर्मश्च अर्थश्च=धर्मार्थौ। अर्थधर्मौ। हरिश्च हरश्च=हरिहरौ। ईशविष्णू। इन्द्राबृहस्पती। इन्द्रावरुणौ। इन्द्राग्नी। सूर्य्या-

चन्द्रमसौ । शिवकेशवौ । मातापितरौ । पितरौ । पाणी च पादौ च=पाणिपादम् । मार्दङ्गिकपाणविकम् । रथिकाश्वारोहम् । वाक् च त्वक् च=वाक्त्वचम् । त्वक्स्रजम् । शमीदृषदम् । छत्रोपानहम् । प्रावृट्शरदौ । इत्यादि ॥

इति समासप्रकरणम् ॥

अथ तद्धितप्रकरणम् ॥

१ अश्वपत्यादि प्रातिपदिकों से अपत्यादि अर्थों में अण् प्रत्यय होता है । जैसे अश्वपतेः अपत्यम्=आश्वपतम् । गणपतेः अपत्यम्=गाणपतम् । दितेः अपत्यम्=दैत्यः । अदितेः अपत्यम्=आदित्यः । प्रजापतेः अपत्यम्=प्राजापत्यः । देवस्यापत्यम्=दैव्यम्, दैवम् । बहिः भवम्=बाह्यम्, बाहीकम् । गोः अपत्यम्=गव्यम् । उत्सस्यापत्यम्=औत्सः । स्त्रियाः अपत्यम्=स्त्रैणः । पुंसोऽपत्यम्=पौंस्नः । उपगोः अपत्यम्=औपगवः ॥

अपत्य नाम सन्तान का है परन्तु पुत्र पुत्री तक अपत्य कहाती हैं इस के पश्चात् पौत्र प्रपौत्रादि जो सन्तान उस को गोत्र कहते हैं । उपगोः गोत्रम्=औपगवः । गर्गस्य गोत्रम्=गार्ग्यः गार्ग्यौ गर्गाः । गार्ग्यम् गार्ग्यौ गर्गान् इत्यादि बहुवचन में प्रत्यय नहीं रहता परन्तु उस का अर्थ रहता है । वत्सस्यापत्यम् गोत्रम्=वात्स्यः । इत्यादि ॥

जो सन्तान पूर्वज के जीवनकाल में सम्भव हो वह युवापत्य कहाता है । गर्गस्य युवापत्यं गार्ग्यायणः । दक्षस्य युवापत्यम्=दाक्षायणः । दक्षस्यापत्यम्=दाक्षिः । बहोरपत्यम्=बाहवः । उडुलोम्नः अपत्यम्=औडुलोमिः । विदस्य गोत्रम्=वैदः । पुत्रस्यापत्यम्=पौत्रः । दुहितुः अपत्यम्=दौहित्रः । शिवस्यापत्यम्=शैवः । गङ्गायाः अपत्यम्=गाङ्गः । वसिष्ठ–वासिष्ठः । विश्वामित्र–वैश्वामित्रः । श्वफल्क–श्वाफल्कः । वसुदेव–वासुदेवः । नकुल–नाकुलः । सहदेव–साहदेवः । द्वयोः मात्रोः अपत्यम्=द्वैमातुरः । षष्–मातृ–षाण्मातुरः । सम्–मातृ–सांमातुरः । भद्र–मातृ–भाद्रमातुरः । विनता–वैनतेयः । कन्या–कानीनः । राज्ञः जातिः=राजन्यः । श्वशुर–श्वाशुर्य्यः । क्षत्र–क्षत्रियः । रेवती–रैवतिकः । पञ्चाल–पाञ्चालः । पञ्चालानां राजा=पाञ्चालः । पूरोः राजा अपत्यं वा=पौरवः ।

पाण्डोः राजा=पाण्ड्यः । कुरोः राजा=कौरव्यः । निषधस्य राजा=नैषध्यः ॥ राजा अर्थ में हुवे प्रत्यय का लोप कर के शब्द का पूर्वस्वरूप ही रह जाता है बहुवचन में, स्त्रीलिङ्गों को छोड़ कर । जैसे—पाञ्चालः पाञ्चालौ पञ्चालाः । कौरव्यः कौरव्यौ कुरवः । नैषध्यः नैषध्यौ निषधाः । इत्यादि ॥

कम्बोज शब्द से सर्वत्र ही राजार्थक प्रत्यय नहीं रहता परन्तु उस का अर्थ रहता है । कम्बोजस्य राजा=कम्बोजः कम्बोजौ कम्बोजाः । इत्यादि ॥

जिन २ शब्दों से ऊपर जो २ प्रत्यय कहे हैं वे २ प्रत्यय अपत्य(सन्तान) अर्थ के अतिरिक्त भव आदि अन्य अर्थों में भी जानने । जैसे—मथुरा—माथुरः । यह रूप मथुरायां भवः=माथुरः=मथुरा में जो होवे वह । मथुरायाः आगतः=माथुरः=मथुरा से जो आया वह माथुर । मथुरायां जातः=माथुरः=मथुरा में जो जन्मा वह माथुर । इसी प्रकार अन्य प्रातिपदिकों से यथासम्भव अन्य अर्थों में प्रत्यय की कल्पना करनी चाहिये ॥

भाव अर्थ में प्रातिपदिक से त वा त्व प्रत्यय लगाते हैं । जैसे—ब्राह्मणस्य भावः=ब्राह्मणता, ब्राह्मणत्वम्=ब्राह्मणपना । दरिद्रस्य भावः=दरिद्रता, दरिद्रत्वम्=दरिद्रपना । गुरोर्भावः=गुरुता, गुरुत्वम्=गुरुपना । इसी प्रकार, प्रभुता । प्रभुत्वम् । दीनता । दीनत्वम् । लघुता । लघुत्वम् । पशुता । पशुत्वम् । चतुरता । चतुरत्वम् । दुष्टता । दुष्टत्वम् । धीरता । धीरत्वम् । इत्यादि ॥

"वह जिस का वा जिस में वा जिस के पास है,, ऐसे अर्थ में किन्हीं प्रातिपदिकों से वतु किन्हीं से मतु और इन् प्रत्यय लगाये जाते हैं । जैसे धन जिस के पास है वह धनवान् । धनिन्—धनी । गुणवान् । गुणी । ज्ञानवान् । ज्ञानी । अग्निमान् । बुद्धिमान् । रूपवान् । शीलवान् । श्रीमान् । लक्ष्मीवान् धीमान् । दण्डी । चक्री । हली । इत्यादि ॥

इसी अर्थ में असन्तों तथा माया मेधा और स्रज् प्रातिपदिकों से विन् प्रत्यय लगाते हैं । जैसे—असन्त—यशस्—यशस्वी । तेजस्वी । मनस्वी । तपस्वी । मायावी । मेधावी । स्रग्वी इत्यादि ॥

अतिशयार्थ में प्रातिपदिक से आगे तर वा तम प्रत्यय लगाते हैं । जैसे—अतिशयितः स्थूलः=स्थूलतरः । स्थूलतमः=अतिस्थूल । ऐसे ही—दृढतरः । दृढतमः । चतुरतरः । चतुरतमः । मूर्खतरः । मूर्खतमः । श्रेष्ठतरः । श्रेष्ठतमः इत्यादि ॥

"जिस से जो बना है" इस अर्थ में मय प्रत्यय लगाते हैं। मृत् से जो बना है वह—मृण्मयः। सुवर्ण से जो बना है वह—सुवर्णमयः। लोहमयः। रजतमयः। जलमयः। शोकमयः। बुद्धिमयः। धनमयः। तेजोमयः। मायामयः। छलमयः इत्यादि॥

प्रकार अर्थ में धा और था प्रत्यय लगाते हैं। जैसे—एकधा=एक प्रकार। द्विधा। त्रिधा। चतुर्धा। पञ्चधा। षोढा। सप्तधा। अष्टधा। नवधा। दशधा॥ अन्यथा=अन्य प्रकार। सर्वथा। इतरथा। उभयथा। यथा। तथा। इत्यादि। ये शब्द अव्यय होजाते हैं॥

तुल्यता अर्थ में वत् प्रत्यय लगाते हैं यदि क्रिया में तुल्यता हो। जैसे—ब्राह्मण के तुल्य—ब्राह्मणवत्। क्षत्रियवत्। मूर्खवत्। पण्डितवत्। पुत्रवत्। शिष्यवत्। गुरुवत्। मातृवत्। पितृवत्। चन्द्रवत्। सूर्य्यवत्। दुर्बलवत् प्रबलवत्। दुष्टवत्। सुहृद्वत्। मित्रवत् इत्यादि॥

तद्धित प्रकरण भी कृदन्त के समान बड़ा प्रकरण है और सुगम है इस लिये इस को भी विशेष न लिख कर यहीं समाप्त करते हैं आगे संस्कृत में बने हुवे व्याकरणपुस्तकों द्वारा स्वयं पढ़लेना कठिन नहीं है॥

स्वामि तुलसीराम शर्म विरचितं चतुर्थ पुस्तकं समाप्तम्॥

"वेदप्रकाश" मासिक पत्र मेरठ ॥

इस में वेदोक्तधर्मप्रतिपादन और वेदविरुद्धमत निराकरणविषयक लेख प्रकाशित होते हैं, वेदमन्त्रों के व्याख्यान द्वारा वैदिकधर्म का प्रचार इस का उद्देश्य है। अग्रिम वार्षिक मूल्य १) पश्चात् १॥)

स्वामियन्त्रालय मेरठके पुस्तकोंका सूचीपत्र ॥

यजुर्वेदभाष्य सजिल्द २७) भूमिका विनाजिल्द २॥) सजिल्द २॥।-) पञ्चम-
[हा]यज्ञविधि ≡)॥ सजिल्द ।-)।। उणादिकोष ॥=) निरुक्त १) संस्कारविधि १।)
[स]जिल्द १॥) निघण्टु ।=) शतपथ १ काण्ड ॥) वर्णोच्चारणशिक्षा -) आर्य्याभि-
विनय ।) सजिल्द ।=) आर्य्यसमाज के नियमोपनियम)। हवनमन्त्र)॥

क्या स्वामी दयानन्द मक्कार था)॥। ईशादि ७ उपनिषद्भाष्य ३) गीता
[भ]ाष्य २।) गणरत्नमहोदधि १॥) लघुकौमुदी भाषाटीका सहित २) कपड़ेकी जिल्द
[स]हित २।) न्यायदर्शनवात्स्यायनभाष्य सहित १) जिल्द सहित १।) वैशेषिक-
[द]र्शन प्रशस्तपाद भाष्य ॥) एकादशोपनिषद् बड़े मूल, कपड़े की जिल्द १।) भ-
[र्तृ]हरिनीति, वैराग्यशतक भा० टी०।)॥ कात्यायनसूत्र पूर्वार्द्ध ॥।) सीताचरित्र
[न]ावल हिन्दी प्रथ० ॥।) वेश्यानाटक ।)॥ आर्य्यसमाजके नियम ≡)। सैंकड़ा
[व्य]ाख्यानका विज्ञापन =) सैंकड़ा । दमयन्तीस्वयंवरनाटक ≡) धर्मप्रचार)॥
[व]ायुमण्डल)। हारमोनियमगाइड ।=) वैदिकट्रैक्ट अंग्रेज़ी ३ का सैट -) सत्य-
[द]र्पण =) सभाप्रसन्न ।) स्वामी जी का चित्र (रङ्गीन) -)॥ पं० गुरुदत्तका चित्र
[(]रङ्गीन) -)॥ सादेचित्र दोनों प्रत्येक -) खेती की विद्या के मुख्यसिद्धान्त ॥=)
[र]सायण का आह्लखण्ड)। प्रबन्धार्कोदय ।-) नित्यकर्मविधि)। अष्टाध्यायी
[मू]ल ≡) भर्तृहरिनीतिशतक ≤) अङ्कगणितार्य्यमा ≡)॥ ऐतिहासिकनिरीक्षण
[(]पं० लेखराम) =) विवाहव्यवस्था =) मांसभो० प्रथम भाग का खण्डन -)॥
[द्वि]तीयभाग =)॥ तृतीय ≡)। आयुर्वेदशब्दार्णव ।।=) यमयमीसूक्त भाष्य =)
[न्य]ायदर्शनमूल ≡) अबलाविनय ≤)॥

संस्कृतकी प्रथम पुस्तक)॥। द्वितीय पुस्तक -)। तृतीय =)॥। चतुर्थ ॥)
[च]ाणक्यनीतिसार भाषाटीका -)। प्रश्नोत्तररत्नमाला भाषाटीका और आर्य्य-
[मं]ङ्गलाष्ट -) आर्य्यचर्पटपञ्जरी)। भजनेन्दु -) महन्त ब्रह्मकुशल के उत्तर
[मे]ं ऋगादिभाष्यभूमिकेन्दूपरागेप्रथमोंशः -)॥ तथा द्वितीयोंशः -)॥। नास्ति-
[क]ाविष्कार (तोप बन्दूक और बारूद भारत में इजाद हुई थी))॥। वैदिक-
[दे]वपूजा -)॥ देवनागरीवर्णमाला पु०)। तथा १) में १००, स्वामी दया० जी कृत
[पु]स्तकें छोड़ कर अन्य पुस्तकों पर कमीशन—४) में ५) के ७) में १०) के २०) में
[३]०) के दिये जायंगे ॥ पता—पं० तुलसीराम स्वामी । स्वामी प्रेस मेरठ

स्वामी औषधालय

१–योगराजगु...

प्रसिद्ध औषध है । भिन्न २ अनुपानों से अनेक रोगों पर ... और नित्यप्रति की बदहज़मी जो प्रायः लिखने पढ़ने आदि बैठने का करने वालों को रहती है १ गोली सायंकाल नित्य खाने से सर्वथा दू गी १०८ गोली का मूल्य १)

२ ज्वरघ्न भस्म का विधानपत्र ॥

एक छोटी पुड़ी, बड़ी पुड़ी के भीतर मिलेगी पूरी ख़ूराक उसे जाने १२ वर्ष से न्यून ६ वर्ष से अधिक अवस्था हो तो आधी पुड़ी देनी, पां से न्यून को न दो । भोजन से १ घंटा प्रथम व २ घंटा पीछे तक न चाहिये, गर्भवती को भी न दो । गर्मी करे तो गौ वा बकरी का दुग्ध भोजन मूंग की दाल चावल या देश काल अवस्था देख करे, इसी ख़ूराक भी बढ़ा घटा लो । ज्वर जाड़े में १ घंटा पूर्व खाय, जीर्णज्वर प्रातः खाय, यदि शीत का डर हो तो पान या अदरख के रस में खा न्यथा पान में, तुलसीपत्र में, शहद में खाय, कुछ न मिले तो सूखी भी नित्य ज्वर वा तेइया में रामवाण है चातुर्थक में भी कुछ २ काम देती १) प्रति तोला ।

३ "अतीसारारि चूर्ण"

यह चूर्ण सब प्रकार के दस्तों में जब २ दिशा से आओ हाथ कर ८ मासे की फंकी करलो ।।) डिब्बी

४ दद्रुघ्न ॥

दाद को धो कर नित्य लगा दो तीन दिन में आराम होगा ॥

५ अर्क प्रसूतारि ॥

यह अर्क सभी वैद्य जानते हैं मूर्ख नहीं, आधी छटांक प्रातः सा सौभाग्यशुंठीपाक इसके साथ बड़ा उपकारी है १) बोतल १

७ सुरमा सुधांजन ॥

इसे नेत्रों में लगाने से सब नेत्ररोग नष्ट होते हैं कुछ दिन फुल्ली तक जाती रहती है । नेत्र साफ़ होते हैं ॥) तोला ॥

६ खांसी की गोली ।

मुख में गेर घुलती रहेगी आठ घड़ी तक रखने से आराम भ है १०८ का दाम १) पता–पं० छुट्टनलाल स्वामी परीक्षितगढ़ ज़ि

we studied abou
phageal cancer.
d the comparati
diation of 150-
s performed and
fect was differ
cation of the c
s high grade va
ship of this ch
ose-time-relati
1300 rad. x $T^{0.}$
0-3000 rad. / 1
3-4 days (conc
ct of the irrad
than 80% of cas
one week after
h methods were
concentrated me
and this means
t on the operat
ch were operate
was 10% and was
h preoperative
val rate (1957
showed 14.3% (
ted cases showe
3-4 days or 200
long term resu
d routinely.

